
ब्रह्मज्ञानकी-लावणी

प्रस्तावना.

ख्याल वा लावनी ब्रह्मज्ञान उपासनाज्ञान भक्तिमार्ग गंगालहरी और सब देवताओंकी स्तुति भाषा बोलीमें यह सब मत वर्णन किये हैं. इसमें वेदांत वैष्णवमत, शैवमत, शाक्तादि सब मत हैं. और उर्दू बोलीमें इश्क मार्फत अर्थात् खुदाकी इबादत और मतलब तौहीद अर्थात् वेदांत ब्रह्मज्ञान यह सब लोगोंके भलेके वास्ते प्रसिद्ध कियाहै इसको जो कोई पढे या सुनेगा वह बहुत खुश होगा और भी लोगोंने लावनी बनाई हैं कोई कलँगी और कोई तुर्रा कोई ढुंडा और कोई छत्तर कोई मुकुट यह सब लोग अपना अपना पंथ चलातेहैं परंतु सब पक्षवादी हैं वो लोग ज्ञान या वेदांत कुछभी नहीं जानते आपसमें गाते बजाते और लडते भिडते रहते हैं परंतु मेरी इस पुस्तकमें भक्ति निर्गुणके सिवाय और कुछ पक्षवाद नहीं है इसके छापनेका हक सिवाय **खेमराज श्रीकृष्णदासके** और किसीको नहीं है क्योंकि हमने दोसौ पुस्तक लेके इनको रजिस्टरी करा दियाहै ।

और जिस जिसने छापीहै नवलकिशोरसे आदिलेके और सब पोथीवालोंने अशुद्ध बहुत छापीहै इस अशुद्धके छापनेसे मुझको बहुत दुःख हुवा और मैं चार महीने यहां रहके एक एक अक्षर देखके अपनी कुल पोथीका एक ग्रंथ जिसमें सब आगे पीछेके ख्याल हैं और नवीनभी हैं कुल्लियात छपवा दिये ।

इस अनुपम पुस्तकके पढनेमें यह कहावत बहुतही सच है कि, (आँबके आँब और गुठलीके दाम) रसिक जन तो पढतेही रससे तरबतर हो जाते हैं और ज्ञानी लोग ज्ञानमें निमग्न हो अपार ब्रह्मज्ञानका सुख लूटते हैं इस पञ्चमावृत्तिको और भी अत्यंत शुद्धतापूर्वक उत्तम रीतिसे छापाहै आशाहै कि, सभी बाल वृद्ध इसकी एक २ प्रति अङ्गीकार कर तनमनसे प्रसन्न हो दोनों लोकमें आनंदपूर्वक अपार सुखके भागी होंगे ।

श्रीमत् काशीगिर बनारसी परमहंस
आश्के इक्कानीने ईश्वरकी कृपासे बनायाहै.

दोहा।

लिखो पढो मैं नहिं कछू, गुरु प्रसाद मोहिं दीन।
राम कृष्णके नामते, भयों ब्रह्ममें लीन॥ १॥
रुद्ररूप मैं आप हों, शक्ती यह संसार।
यह मेरी माया प्रबल, जाको वार न पार॥ २॥
चौदह विद्या ग्रंथमें, सो मैं लिखी बनाय।
ब्रह्मज्ञान भक्ती सहित, दियो सकल दरशाय॥ ३॥
जो कोइ याको पढ़ैगो, प्रेमसहित मन लाय।
भुक्ति मुक्ति पावै वही, जन्म मरण छुट जाय॥ ४॥
याको जो कोइ रागमें, गान करैंगे लोग।
वाको या संसारमें, कभी न व्यापे शोग॥ ५॥



श्रीगणेशाय नमः ।

लावनी ब्रह्मज्ञान ।

स्तुति गणेशजीकी.

बहेर लँगडी ।

हाथ जोड़ दंडवत करूं श्रीगणपति बुद्धि विनायकजी ॥
मुझ पापीको तारदो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥
दीनदयालु है नाम तुम्हारा ऋद्धि सिद्धि देनेवाले ॥
भजन आपका है ऐसा कोटि व्याधि क्षणमें टाले ॥
मोहनी मूरत सतोगुणी तुम सदाके हो भोले भाले ॥
सदा शारदा आपकी जिह्वापर बोले चाले ॥
विघ्नविनाशन भजन तुम्हारा सदासे है शुभदायकजी ॥
मुझ पापीको तार दो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ १ ॥
चतुरभुजी मूरत सुंदर तनु शीश चंद्रका उजियाला ॥
तीन नेत्र हैं गलेमें सोहे मुक्तनकी माला ॥
रत्नजडित भूषण अनगिनती मणिमय बने हैं अति आला ॥
जगमग जगमग आपके भवनमें जगती है ज्वाला ॥
प्रथम देवता तुम्हींको पूजें तुम हो सबके नायकजी
मुझ पापीको तार दो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ २ ॥
गिरिजानंदन असुर निकंदन संतनके हो सुखदाई ॥
अनंत तुम्हारे नाम ए महिमा वेदोंने गाई ॥
दूध पिलावे गौरी तुमको जो है त्रिभुवनकी माई ॥
महादेवने तुम्हें दी तीन लोककी प्रभुताई ॥

वेद पुराणके ऊपर तुम्हरा नाम है सदा सहायकजी ॥
मुझ पापीको तारदो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ ३ ॥
धूप दीप नैवेद्य लगाकर करे आरती पारवती ॥
पूजे तुमको चढावे चंदन चावल बेलपती ॥
मोदकका सब भोग लगावें ऋषी मुनी और यती सती ॥
कहे देवीसिंह जो तुमको सुमरे उसकी होय गती ॥
बनारसी कहे कष्ट हरो मेरे मैं तुम्हारा पायकजी ॥
मुझ पापीको तार दो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ ४ ॥

स्तुतिकृष्णजीकी-बहेरलँगडी ।

सिवा कृष्ण महाराजके मेरा बाबा मैया कोई नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा औ अपना भैया कोई नहीं ॥
यह संसार अपार है इसका पार करैया कोई नहीं ॥
सिवा कृष्णके जन्म और मरण छुडैया कोई नहीं ॥
लाखों मूरती हैं पर ऐसा कुँवर कन्हैया कोई नहीं ॥
विश्वरूपका जगत्में और दिखैया कोई नहीं ॥ १ ॥
शैर--महाभारतमें उठाया वो रथका पैया है ॥
विना हथियार लड़ा ऐसा वह लड़ैया है ॥
बना अर्जुनका सारथी वह रथ हँकैया है ॥
मेरा मन रातो दिन उसीकी ले बलैया है ॥
बड़े बड़े पापियोंका ऐसा पाप छुड़ैया कोई नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा और जगत्में भैया कोई नहीं ॥ २ ॥
दारिद्रीको देवे धन ऐसा तो दिवैया कोई नहीं ॥
कहे सुदामा ऐसा भंडार भरैया कोई नहीं ॥
नखपर गिरिवर धारो ऐसा गिरिका उठैया कोई नहीं ॥
डूबत ब्रजको राखो ऐसा तो रखैया कोई नहीं ॥

शैर-रमा सबमें वोही ऐसा वह रमैया है ॥
बिना कानोंसे सुने ऐसा वह सुनैया है ॥
फक्त वह अपनेही एक नामका रखैया है ॥
यह जगत् रातो दिन उसीकी दे दुहैया है ॥
इंद्रके मानको मारो ऐसा गर्व गिरैया कोई नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा और जगत्में भैया कोई नहीं ॥ ३ ॥
सब ग्वालोंसे पूँछो ऐसा गाय चरैया कोई नहीं ॥
माखन मिसरीका उनके सिवा खवैया कोई नहीं ॥
गोपी भी कहैं मोहन ऐसा दही चुरैया कोई नहीं ॥
मानके मटकीको ताड़ ऐसा तुड़ैया कोई नहीं ॥

शैर-लोग कहते हैं यशोदा भी उसकी मैया है ॥
वह तो अलख है न उसका कोई लखैया है ॥
वेद वेदांतका वही तो खुद बनैया है ॥
और उसके अर्थका आपी वही लगैया है ॥
मुझे है रटना उसके नामकी ऐसा रटैया कोई नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा और जगत्में भैया कोई नहीं ॥ ४ ॥
लूट लियो गोपियोंका यौवन ऐसा लुटैया कोई नहीं ॥
माँग्यो दधिको दान ऐसा तो मँगैया कोई नहीं ॥
देवीसिंह कह बनारसीसा ख्याल बनैया कोई नहीं ॥
अजब कहन है प्रेमकी ऐसा तो कहैया कोई नहीं ॥

शैर-मेरा दिल साफ किया ऐसा वह धुलैया है ॥
दूईको भूलगया ऐसा वह भुलैया है ॥
बसाहै दिलमें मेरे मनका वह बसैया है ॥
मेरा मन उसके भजनका बना गवैया है ॥

अपनी आत्मा देखू निशि दिन ऐसा दिखैया कोई नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा और जगत्में भैया कोई नहीं ॥ ९ ॥

लावनी पापनाशिनी–बहेरलँगड़ी ।

राम कृष्णका सुमिरन करनेसे पातक सब जाते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥
मैंने पाप किये बहुतेरे जिसका कुछ नहिं आदि रु अंत ॥
विषय वासनामें डूबा झूठ मूठ कहलाया संत ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह यह पांचों मेरे बने महंत ॥
इनहींके वशमें रहा. सद्गुरुकी कुछ नहीं पढी पढंत ॥
युवा अवस्थामें नहिं समझ वृद्ध भए पछताते हैं ॥
धन्य वह नर है कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ १ ॥
मात पिताका कहा न माना पढ़ा न पिंगल वेद पुरान ॥
बना कवीश्वर औ मैंने दग्ध छंद किये बहुत बखान ॥
मैंने कहा मैं परमेश्वर हूं ऐसा मुझे व्यापा अभिमान ॥
सत्य न बोला उम्र भर बका बहुतसा झूठ तुफान ॥
धन पाया तो धर्म किया नहिं भीख माँग अब खाते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ २ ॥
ब्रह्महत्या या बालहत्या या करे जो कोई गोहत्या ॥
राम भजनसे दूर हो जाय नहीं फिर हो हत्या ॥
मैंने जीव बहुतसे मारे लगी जो वह मुझको हत्या ॥
कृष्ण कहेसे भस्म होगई करी जो जो हत्या ॥
अपना बीता हाल सुनो हम सबका सत्य सुनाते हैं ॥
धन्य वो नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ ३ ॥
सब अपराध क्षमा कर मेरे राम कृष्ण जी वारंवार ॥
तुम हो दयानिधि दया करके करदो मेरा उद्धार ॥

रामदयाल

अधम पापियोंको तारा अब मुझको भी तुम दीजे तार ॥
आगे मरजी आपकी जो चाहे करिये करतार ॥
अब मुझसे कछु बन नहिं पडता आपका भजन बनाते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ ४ ॥
जो जो पाप किये मैंने प्रभु तुम जानो या जाने हम ॥
और कोई क्या जानता किसके आगे कहूँ रकम ॥
किये पाप देवीसिंहने तरगये अपन करा करम ॥
श्रीगंगाके तीर तनु त्यागा जाने कुल आलम ॥
बनारसी कहे हम भी तो उनके मुरीद कहलाते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोइ राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥ ५ ॥

लावनी विभूती योग बहेर लँगडी।

रामकृष्ण महाराज मेरे अब अन्तर्यामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्त्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥
कंसा छेदन कौरव मारन पांडव तारन तुम्हीं तो हो ॥
नारसिंह हो दुष्टका उदर विदारन तुम्हीं तो हो ॥
बूडत व्रजको राख लियो गोवर्द्धन धारन तुम्हीं तो हो ॥
गजको उबारन ग्राहके मारन कारन तुम्हीं तो हो ॥
शैर–तुम्हीं सर्वज्ञ हो और सबसे तो न्यारे हो तुम्हीं ॥
जो कोई भगत है उस्केभी तो प्यारे हो तुम्हीं ॥
मेरे अपराध क्षमा करके मुझे तारो तुम ॥
मैंहूं सेवक और स्वामी तो हमारे हो तुम्हीं ॥
तुम्हीं तो वृन्दावनके बसैया गोकुल ग्रामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्त्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ १ ॥
दैत्योंमें प्रह्लाद और सिद्धोंमें कपिल मुनि तुम्हीं तो हो ॥

चार वेदमें श्यामकी सुनी अजब ध्वनि तुम्हीं तो हो ॥
अक्षर में हो मकार और सुन्नोंमें महासुन तुम्हीं तो हो ॥
और पांडवमें धनुषधारी वह अर्जुन तुम्हीं तो हो ॥
शैर–दशों इन्द्री में जो देखा तो यह मन आपही हैं ॥
पवित्र करनेमें देखा तो पवन आपही हैं ॥
अधमके तारनेको आप बने परमेश्वर ॥
मैंने जाना कि वह तारन तरन आपही हैं ॥
अनंत हैं गे नाम आप के ऐसे नामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्त्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ २ ॥
वीरोंमें जी महावीर रुद्रोंमें शंकर तुम्हीं तो हो ॥
और कवियोंमें वो शुक्राचार्य कवीश्वर तुम्हीं तो हो ॥
ज्योतीमें हो सूर्य अवतारोंमें शशि सुन्दर तुम्हीं तो हो ॥
तांत्रिक मतमें श्री बलदाऊजी हलधर तुम्हीं तो हो ॥
शैर–ज्ञानवानों में तो वह ब्रह्मज्ञान आपही हैं ॥
ध्यान करनेमें वो योगी का ध्यान आपही हैं ॥
नरोंके बीचमें राजा हो तुम्हीं चक्रवर्ती ॥
पुण्य करनेमें तो वो ज्ञान दान आपही हैं ॥
सबकी कामना पूरण करते ऐसे कामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्त्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ ३ ॥
देवऋषिमें नारद और गुरुवोंमें बृहस्पति तुम्हीं तो हो ॥
वाक् वाणीमें कीर्त्ती और सरस्वती तुम्हीं तो हो ॥
वृक्षोंमें पीपल हो पत्रोंमें वह वेलपती तुम्हीं तो हो ॥
अधमका करते आप उद्धार वह गति तुम्हीं तो हो ॥
शैर–सकारमें तुम्हें देखा तो विश्वरूप हो तुम ॥

जहां सुन्दर है कोई उसकाभी स्वरूप हो तुम ॥
कहांलौं आपकी महिमाको देवीसिंह कहे ॥
सगुणमें रूपहो निर्गुणमें तो अरूप हो तुम ॥
बनारसी कहै वासुदेव वसुधा अभिरामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो॥४॥

लावनी श्रीअंजनीजीकीस्तुति बहेरलँगडी ।

आदि कुवाँरी मात अंजनी जो चाहे सो तू भरदे ॥
जय श्री दुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भरदे ॥
जो मेरे शत्रू हैं उनका एक पल भरमें क्षय करदे ॥
तीन लोकमें तू माता साधु संतकी जय करदे ॥
तू है कालिका काल कालका कालसेभी निर्भय करदे ॥
जो तू ब्रह्म है तो अपने बीचमें मुझको लय करदे ॥
और न कुछ तुझसे माँगूँ तू जो चाहे मुझको वरदे ॥
जय श्री दुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भरदे ॥ १ ॥
अद्भुत तेरा ध्यान है अब उसको मेरे मनमें करदे ॥
सकल वीरका जोर माता मेरे तनुमें करदे ॥
सब दुष्टोंको संहारूं ऐसा तू मुझे रणमें करदे ॥
कभी न भूलूं मुझे हुशियार तू हरफनमें करदे ॥
निर्भय होकर विचरूं निशि दिन कभी नहीं मुझको डरदे ॥
जय श्री दुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भरदे ॥ २ ॥
जो कुछ इस जिह्वासे निकले सिद्धि मेरी पाणी करदे ॥
शरणागतहूं तेरी अब दया तू महारानी करदे ॥
जलको तू अग्नि करदे और अग्नीको पानी करदे ॥
तू जो चाहे तो एक दमभरमें फनाफानी करदे ॥
काट काट दुष्टोंके शिरको अपने खप्परमें धरदे ॥

जयश्रीदुर्गे अटल भंडार मेरा अब तू भरदे ॥ ३ ॥
सब कुछ तेरे हाथमें है जो भावे सो मुझको तू दे ॥
चित्तमें तेरे मात जो आवे सो मुझको तू दे ॥
जो वस्तु नहीं मेरे हाथसे जावे सो मुझको तू दे ॥
ये जिह्वा जो तेरा गुण गावे सो मुझको तू दे ॥
कभी न खाली हाथ रहूं माता मुझको इतना जर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भरदे ॥ ४ ॥
जो तू अपनी कृपा करे माता मुझको ऐसा यश दे ॥
ब्रह्मज्ञानका मेरी इस रसनाके ऊपर रस दे ॥
देवीसिंहके सब वशमें होवें उनको ऐसा वश दे ॥
गाय औ कुत्ते जो कोई हने उन्हें तू अपयश दे ॥
बनारसीको श्रीमाता दरबार तू वह अमृतसर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भरदे ॥ ५ ॥

लावनी बहरजीकी शापमोचन ।

दुर्वासाजीका तो शाप होगया वह उन्हें अशीश ॥ तर गये यादव विश्वे वीसजी॥तीर्थके ऊपर आये यादव करनेको स्नान॥ वहां मचगया युद्ध घमसानजी ॥ आपसमें सब लड़े कटे देखते रहे भगवान ॥ आया फिर सबके लिये विमानजी॥अपनाभी तनु त्यागा हरिने किया न कुछ अरमान॥धरो तुम श्रीकृष्णका ध्यानजी ॥ सारे कुलको तार दिया कोई करै क्या उनकी रीस ॥ तर गये यादव विश्वे बीसजी ॥ १ ॥ यादव तो सब स्वर्ग गये गये परम धाम हरि आप॥वोही सर्वज्ञ रहे हैं व्यापजी॥भार उतारा पृथ्वीका सब दूर किया संताप॥न उनका पुण्य न उनको पापजी॥अशीश करके माना प्रभुने दुर्वासाका शाप॥जपो सब नारायणका जापजी॥वेद शास्त्र यह कहे वही थे नारायण जगदीश॥तर गये या-

दव विश्वे बीस जी ॥२॥ युद्धमें मरना बड़ा धर्म है यह क्षत्रीका काम ॥इसीसे मचा वहां संग्रामजी ॥ मर्त्यलोकको तजा मिला वह स्वर्गका उत्तम धाम ॥ यहां से वहां है बड़ा आरामजी॥मौत-से जो सब मरते तो फिर होजाते बदनाम ॥ युद्धमें मरे तो पाया नामजी ॥ इस कारण श्रीकृष्णने अपने कुलका कटाया शीश ॥ तरगये यादव विश्वे बीसजी॥३॥ अबतो भार बड़ा पृथ्वी पर चारों तरफ है काल ॥ सूख गये नद्दी नाले तालजी ॥ कोयलों की है खान बहुत सी गुप्त होगये लाल ॥ नोटने लूट किया धन माल-जी ॥ देवीसिंह कहे बनारसी से जपो नाम गोपाल ॥ देखिये कब प्रकटैं नँदलालजी ॥ दुरवासा और श्रीकृष्ण यह दोनों एकथे ईश तर गये यादव विश्वे बीस जी ॥ ४ ॥

वनकायामेंमनमृगचारोंतरफचौकडीभरताहै ॥ विनापैरसेदौडताविनमुखचाराचरताहै॥ विनानेत्रसेदेखेसबकोविनादांतदानाखावै॥सबकहींजावेऔरयहकहींनहींआवै जावै॥ बिनजिह्वासेबातकरै और विनाकंठगानागावै॥विनासींगसेलडैऔरबडेबडेदलहटावै ॥ बहुतसिंहडरतेइससेयेकिसीसेभीनहिंडरताहै॥ विनापैरसेदौडताविनमुखचाराचरताहै॥१॥विनखुरखोदेसकलजगतकोऐसायहमदमाताहै॥विनइंद्रीसेभोगकरतहैयहीयतीकहलाताहै॥नहींइसकेकोईतातमात:नहींकुटुंबकबीलानाताहै ॥ आपीपैदाहोयवोआपीमेंआपसमाताहै॥ सबरंगोंसेन्याराहैऔरहरएकरूपकोधरताहै॥विनापैरसेदौडताविनमुखचाराचरताहै॥२॥ विनाजीवकामांसखाययेकिसीकोभीनहिंमारैहै ॥ जिसकोमारेएकपलभरमें उसे सुधारैहै ॥ विनाकानसेसुनतासबकीजोकोईउसेपुकारैहै ॥ ऐसेज्ञानकीकोईभीसा-धूसंतविचारैहै ॥ तीनोंलोकमेंफिरतायहमृगभवसागरमेंतिरताहै॥ विनापैरसेदौडताविनमुखचाराचरताहै ॥३॥ विनानासिकालेवैवा

सनाहरएकचीजकीखुशबोई ॥ आपीआपहैअकेलाऔरनइस्केसँग कोई ॥ देवीसिंहयहकहै कि जिसनेबुद्धिनिर्मलकरधोई ॥ अपनी आत्माजानताइसमृगकोजाने सोई ॥ बनारसीनेदेखायहमृगनहिं जन्मेंनहिंमरताहै ॥ बिनापैरसेदौडताबिनमुखचाराचरताहै ॥४॥

रहसमंडलनिर्गुण–बेहेरलँगडी ।

इसतनुमेंआत्माकृष्णहै और गोपीग्वालोंकादल॥सुनोकानदेब-नाहैतनुमेंमेरेरहसमंडल॥ विश्वकर्मानेआज्ञापाकरशीशमहलतैया-रकिया॥अनहदबाजोंकाउसमेंसम्पूरणविस्तारकिया॥चारोंखंभेल गायेउस्मेंऐसासुन्दरकारकिया॥ खुशीहुयेहमतोमैंनेरहसकावहीवि चारकिया॥सबकोसाथलेआयामैंदिखलायाउन्हैंभवनउज्ज्वल ॥ सुनो कानदेबनाहैतनुमें मेरेरहसमंडल॥१॥मनऊधोजीमित्रहमारे सदासेहैं आज्ञाकारी॥ बुद्धिराधिकासोमेरेप्राणोंकोहै अतिप्यारी ॥ नेत्रकरण मुखदन्तकण्ठसबसखाहमारेहितकारी॥लग्नहैललिताबहु तसुन्दरशोभासबसेन्यारी ॥ बलहैसोबलभद्रहमारेभ्राताजिनका अटूटहैबल॥सुनोकानदेबनाहैतनुमेंमेरेरहसमंडल ॥२॥ हजारइ-कीसछःसैश्वासासोसबसखियांसँगआईं ॥ वोतोसमझीहमेंयेकृष्ण-हमारेहैंसाईं ॥ गलेसेमेरेलपटलपटक्याक्याहीतानसुंदरगाईं ॥ बजाईवंशीजोमैंनेअनहदतोसब विलमाईं॥प्रेममेंमगनभईंब्रजवनि-ताकामनेकियाबहुतव्याकुल ॥ सुनो कानदेबनाहैतनुमेंमेरेरहसमं-डल॥३॥नौनारीथींपतिब्रतासोभीआईंसबपासमेरे ॥ रोमरोमको सखासमझोयासमझोदासमेरे॥ मेरी लीलादेखदेखनहिंहोतेमित्रउ-दासमेरे॥ वर्णनकरतेहैंगुणकोजगतमेंवेदव्यासमेरे॥ मैंतोहौं अत्मा-कृष्णयेशरीर मेराहैमंडल॥सुनोकानदेबनाहैतनुमेंमेरेरहसमंडल४॥
आये वहांगोपिकाबनकेज्ञानरूपश्रीगोपेश्वर ॥
मैंनें उनको लखा ओ गोपी नहीं है शिवशंकर ॥

पूजन करके पासबिठाया रहसदिखाया अतिसुंदर ॥
कहां लौं वर्णनकरूं इस कायामेंहै चराचर ॥
बनारसीसच्चिदानंदचैतन्यरूपनिर्गुण निर्मल ॥
सुनो कानदे बनाहै तनुमें मेरे रहसहमंडल ॥ ९ ॥

लावनी सुदामा चरित्र.

बहेर छोटी।

श्रीकृष्णने देखा आये मित्र सुदामा॥करजोर खडे होगये वसुधा अभिरामा ॥ नंगे पैरों तनु दुर्बल वस्त्र मलीना ॥ कुछ शोच न कियो लगाय कंठसे लीना॥अँसुवन जलसे प्रभु सींचत चरण प्रवीना॥विनती करके हरि बोले वचन अधीना॥इतने दिन तुम कहांरहे कहो क्या कीना ॥ दुखको सुख समझे धन्य तुम्हारा जीना॥तुमने पवित्र यह कियो मेरो सब ग्रामा ॥ करजोर खड़े होगये वसुधा अभिरामा ॥ १ ॥

उबटन करके गंगाजलसे नहलाया ॥ फिर रत्नसिंहासन पर उनको बिठलाया॥षट्रस भोजन अतिप्रेमसे उन्हें जिमाया॥फिर कहा मुझे भावजने क्या भिजवाया॥लिये खोल वह तंदुल रुचि रुचि भोग लगाया॥दोफंके मार दिखाई अपनीमाया॥तीसरीवार रुक्मिणीने करको थामा॥करजोरखड़े होगये वसुधा अभिरामा२॥

फिर लडकैयाँकी सारी कही कहानी॥ वहकर बात और सुनैं रुक्मिणी रानी॥कहे रुक्मिणी यह हैं सखा तुम्हारे ज्ञानी॥यह त्यागीभी हैं और हैं निरअभिमानी॥ इनके प्रतापसे मिली तुम्हें रजधानी॥ सारी वसुधा मैंने इनहींकी जानी॥कहैं कृष्ण रुक्मिणी धन्य हैं उनको जामा॥करजोर खडे होगये वसुधा अभिरामा३॥

कहैं कृष्ण सखा तुम थके वाटके हारे॥अब शयन करो यह

बिछे हैं पलँग तुम्हारे॥ फूलोंकी सेज फूलोंके तकिये न्यारे॥भये मगन सुदामा उसपर आप पधारे॥श्रीकृष्णने उनके चरण दबाये सारे॥और अंगर सब मला वह ऐसे प्यारे॥दिनभर उनकी सेवा की और सब कामा ॥ करजोर खडे होगये वसुधा अभिरामा४॥

जब साँझभई तब मेवा और मिठाई॥ वह रत्नजडित थालीमें आप लगाई॥लेगये सुदामाके आगे यदुराई॥जो रुची होय तो खाव हमारे भाई॥मैं कहांतलकसे आपकी करूं बडाई ॥ जिसने तुम्हें जाया धन्य तुम्हारी माई ॥ मैं आठपहरभूलों नहीं तुम्हारो नामा ॥ करजोर खडे होगये वसुधा अभिरामा ॥ ५ ॥

फिर बुलायके गंधर्वसुनायागाना॥ वो हिंडोल मेघमलार और राग शहाना ॥ कहे कृष्ण कोईसे तुमभी वीन बजाना ॥ यह मित्र हमारे इनको खूब रिझाना ॥ बजी सारंगी सहनाई और रबाना॥ कोई मूरख नहीं था सबीलोगथेदाना॥कहे कृष्ण सुदामासे तुमहो निःकामा॥करजोर खडे होगये वसुधा अभिरामा ॥ ६ ॥

फिर सोये सुदामा सुखसे रैन गुजारी ॥ भया भोर तौ लाये हरि कंचन की झारी॥मुखधोय सुदामाने यह बात विचारी॥ जो मुझे कृष्ण कुछ देतो लज्जा भारी ॥ वह अंतर्यामी आप श्रीगिरिधारी ॥ पहिलेही उनकेघर भेजदी मायासारी॥ चलतीबिरियां तौ दियो न एकौदामा ॥ करजोर खडेहोगये बसुधाअभिरामा ॥ ७ ॥

फिर चले सुदामा घरको नंगे पैयां॥यह भया शकुन मिलगई राहमें गैयां ॥ पानीभी बरस और बादल की छैयां ॥ करें याद कृष्णकी और अपनी लडकैयां ॥ जो मुझे कृष्ण कुछ देते मेरे सैंया ॥ तौ बडी शर्म मुझे होती मेरे गुसैयां॥मुझे सब कुछ दियो कियो मुझे प्रणामा॥कर जोर खडे होगये वसुधा अभिरामा८॥

फिर जाय सुदामा पहुँचे अपने घरको॥नहीं मिली कुटी देखा

कंचन मंदिरको ॥ नारीने उनकी देखा अपने वरको ॥ कहा डरो नहीं तुम आजावो भीतरको ॥ वह आप उतर आई और पकड लिया करको ॥ कहा सुनो पती तुम देख आये गिरिधरको॥ फिर कही द्वारकाकी सब बात सुदामा ॥ कर जोर खड़े होगये वसुधा अभिरामा ॥ ९ ॥

जो इस चरित्रको सुने और कोइ गावे॥ वह भुक्ति मुक्ति संपूर्ण पदारथ पावे ॥ जो प्रेम सहित भक्तीके छंद बनावे ॥ वह अंतकालमें अमरलोक पुर पावे ॥ कहे देवीसिंह श्रीकृष्णसे जो लव लावे ॥ सुन बनारसी वह आपमें आप समावे॥ संपूर्ण सुदामाके हरिने किये कामा ॥ करजोर खडे होगये बसुधा अभिरामा ॥ १० ॥

होलीकृष्णवियोगकी विरहिननायीका ।

बहेरछोटा ।

गयेकृष्णद्वारिकाअबमतहोलीगावो॥सुनसखीचलोहोलीमेंआगलगावो॥अँसुवनसेभरकरनयननकीपिचकारी॥अबइसीरंगसोंभिजोलोचूनरसारी॥रोरोकैपुकारोकहांगयेगिरिधारी ॥ सबदेखेंअँखियाँलालगुलालतिहारी॥छातीकोपीटकरबाजनवहीबजावो॥सुनसखीचलोहोलीमेंआगलगावो॥ १॥ जिसविधिसेसुलगेंहोलीमेंअंगारे॥ उसविधिसेछातीजलेविरहकेमारे॥ऊधोमाधोकोलेकरकहांपधारे ॥ औरनंदभीआयेपलटकवोअपनेद्वारे ॥ फेंकोअबीरअबशिरपरधूल-उड़ावो॥ सुनसखीचलोहोलीमेंआगलगावो २ बिनकृष्णसखीको अपनीगालीखावै ॥ मोहनबिनसबकोकंठसेकौनलगावै ॥ हैंफूटे अपनेभाग्यनफागसुहावै॥ वोबेहायाबेशरमजोहोलीगावै ॥ ऐसीहोलीजलगईकोऔरजलावो॥सुनसखीचलोहोलीमेंआगलगावो ३॥ जोविधनानेकुछलिखासोहोनीहोली ॥ गयेकृष्णद्वारिकामारविरहकीगोली॥मोहनबिनअबहमकिससेकरेंठठोली ॥ किसविधिमन-

कोसमझावैंभालीभोली ॥ कहेबनारसीअबब्रजसेफागउड़ावो ॥
सुनसखीचलोहोलीमेंआगलगावो ॥ ४ ॥

लावनी रामकृत रामायण-बहेर लँगड़ी ।

इंद्रजीतको कौन जीतता जो पै लषण नहिं होते वीर ॥
महाबीरसे कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥
रावणके घरमें तो कोई नहीं इंद्रजीतसा था बलवान ॥
त्रिलोकीमें कोईको मिला नहीं ऐसा वरदान ॥
बारह बरस नहीं शयन करे नहीं करे जगत्में खानोपान ॥
रहे जितेंद्रिय कहैं यह रामचंद्र सुन लो हनुमान ॥
शेर-लषण नहीं साथमें होते तो वह मारा नहीं जाता ॥
तो लंकासे मैं सीताको अवधमें किसविधि लाता ॥
बड़ी प्रारब्धसे मुझको मिले ऐसे मेरे भ्राता ॥
यह जियकी कोखमें जन्मे वह इनकी धन्य हैं माता ॥
इंद्रजीतको छेदन करदिया श्रीलक्ष्मणके ऐसे तीर ॥
महावीरसे कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥ १ ॥
इंद्रने रावणको बांधा तो इंद्रजीत ले गया छुड़ाय ॥
बड़ा बलीथा वह जिस्के तेजसे त्रिलोकी थर्राय ॥
शक्तिबाणथा पासमें उस्के कालदेख जिस्को भयखाय ॥
धन्य यह लक्ष्मणके ऐसी चोट किसीसे सहीनजाय ॥
शेर-यह मेरे प्राण बीती जो इनको मूर्छा आई ॥
कहा मैंने मिलैंगे किस विधि मुझको मेरे भाई ॥
मरेगा किस विधि रावणका सुत निश्चय वह दुखदाई ॥
मैं इनके शोकमें भूला जो कुछथी मेरी प्रभुताई ॥
हाथ पांव सब शिथिल होगये थमें नहीं नयनोंसे नीर ॥

महावीरसे कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥ २ ॥
कुंभकर्ण रावणका मारना तुच्छथा सो मैंने मारा ॥
मेघनादके मारनेमें न चला मेरा चारा ॥
ऐसा कोई नहीं बली था वह जिस जिस्को मैंने सँहारा ॥
इंद्रजीतसे इंद्रभी लडा तौ एक पलमें हारा ॥
शैर–भरोसाथा फक्त रावणको अपने सुतके तीरोंका ॥
मरा जिसवक्त वह बल घटगया सबके शरीरोंका ॥
हुवा तप क्षीण एक क्षणमें वह सब रावनके वीरोंका ॥
मुकुटभी गिरपड़ा रावणके शिरसे था जो हीरोंका ॥
पडा शोक रावणकी लंकमें कोई धरै नहीं मनमें धीर ॥
महावीरसे कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥ ३ ॥
रामचंद्र यह कथा कहैं और हनूमान सुनते चितलाय ॥
रोम रोममें वह उनके नाम रामका रहा समाय ॥
श्रीलक्ष्मणके प्रतापसे रावणको जीते श्रीरघुराय ॥
कहैं देवीसिंह अब उसके अर्थ कोई क्या सके लगाय ॥
शैर–यह शोभा लक्ष्मणजीकी बखानी रामने आपी ॥
और जो सामर्थ्य थी उनमें वह जानी रामने आपी ॥
करी स्तुति कही सुंदर वह वाणी रामने आपी ॥
वह जो थी बात लक्ष्मणकी वह मानी रामने आपी ॥
बनारसी कहे इंद्रजीतको हना लषन ऐसे रणधीर ॥
महावीरसे कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥ ४ ॥

होलीनिर्गुण–बेहरलँगडी ।

साधुसंत खेलैं होली निशिदिन अपनी आत्माके संग ॥
भीजरहाहै वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥

प्रेमकी पिचकारी जिसको मारें उसकी रंग लाल करें ॥
एक दम भरमें वह तो कंगालको मालामाल करें ॥
ज्ञान गुलालसे भरदें झोरी सब जगकी प्रतिपाल करें ॥
जन्म मरणका दूर इस दुनियासे जंजाल करें ॥
शैर–उन्हें कुछ काम न दुनियाकी इस लड़ाईसे ॥
बुराईसेभी न मतलब न कुछ भलाईसे ॥
उन्हें कुछ लाख गालियां दे तो ओ कुछ न कहें ॥
सदा वह हँसते रहें जगत्की हँसाईसे ॥
उनके साथमें खेले होली श्रीगंगाजीकी ओ तरंग ॥
भीजरहाहै वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥ १ ॥
संत तो हैं वे लोग किसीसे कभी नहीं रखते वह लाग ॥
धन्य वह नर हैं जो कोई खेलें वह सतगुरुसे फाग ॥
कभी नहीं सोवें निशि दिन वह ज्ञान रात्रीमें रहे जाग ॥
जिनके मनमें प्रेम और प्रीतिका है पूरण वैराग ॥
शैर–सदा वह रामकृष्णजीका भजन गाते हैं ॥
दुरंगी छोड़दी एकरंगमें रँगराते हैं ॥
उन्हें कुछ इंद्रके पदवीसे सरोकार नहीं ॥
वह अपनी मस्तीमें हैं मस्त और मदमाते हैं ॥
काम क्रोधका मार कुमकुमा करें वो अपने मनमें जंग ॥
भीजरहा है वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥ २ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब लेलेके अबीर ॥
खेलें होली वह निर्गुण संग साधु संतनकी भीर ॥
ज्ञानमें हैं मदमाते और रँगराते उनके शुद्ध शरीर ॥
कबीर देखें वह होली कबीर भी फिर कहें कबीर ॥

शैर--पहनके भक्तीके भूषणका वह शृंगार करें ॥
गले निर्गुणके लगें ब्रह्मका विचार करें ॥
ज्ञानकी आगमें वह कर्मकी होली दें जला ॥
न पुण्य पापसे मतलब वह यह पुकार करें ॥
जब जब जन्म धरें पृथ्वीपर तबतब उनको यही उमंग ॥
भीज रहाहै वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥ ३ ॥
दया धर्मकी खेल धुरैहरी होलीका उद्धार करें ॥
ऐसे साधू जो हैं वह कभी न मारामार करें ॥
प्रह्लादने खेली होली यह देवीसिंह पुकार करें ॥
पूरे साधू जो हैं वह परमेश्वरको यार करें ॥
शैर--जो कोई योगसे करताहै भोग होलीमें ॥
॥ उसे होता न कभी कष्ट रोग होलीमें ॥
जो कोई मेरी यह होलीके अर्थ जानेगा ॥
उसे होगा न कभी यारो सोग होलीमें ॥
बनारसीने ऐसी होली कही कि होलका होगयी दंग ॥
भीज रहाहै वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥ ४ ॥

ख्याल गौकीरक्षा श्रीकृष्णकरें–बहेर छोटी।

गोपा हो तो सब गौवोंको पालो ॥ दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥ यह तृण चुगलेवें अमृत दूधको देवें ॥ यह सबको देवें कोईसे कुछ नहिं लेवें ॥ हैं धन्य वह उनके भाग्य जो इनको सेवें ॥ उनकी नैया भवसागरमें हरि खेवें ॥ सारे कसाइयोंके अब वरको घालो ॥ दुष्टों को मारो तनिक न देखो भालो ॥ १ ॥

गये कितनेही युग बीत इन्हें दुखभारी ॥ यह बिना गुन्हा तकसीर हैं जाती मारी ॥ निश्चय कर देखो यह सबकी महतारी ॥

यह अर्ज मेरी अब सुनलीजे गिरिधारी ॥ सारी पृथ्वी परसे यह पाप उठालो ॥ दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥ २ ॥

हो कोई जात जो माँस गायका खावे ॥ तो उसे वह मालिक दोजखमें पहुँचावे ॥ नहीं कहींपर ऐसा लिखा जो मुझे दिखावे ॥ वह बेईमान बदजात जो इन्हें सतावे ॥ जो इनको मारे उसे कत्ल कर डालो ॥ दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥ ३ ॥

हैं बडे वह उनके सींग न तनिक चलावें ॥ जो जराभी घुरको बहुतसा यह डरजावें ॥ माता मरजाय फिर यही तो दूध पिलावे यह देवीसिंह और बनारसी सचगावे ॥ गौवोंके द्रोहीको श्रीकालिका खालो ॥ दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥ ४ ॥

बहेर लँगडी ।

उधर राधिका सखियोंके सँग इधर ग्वाल ले कृष्णमुरार ।
खेलैं होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ॥
उधरतो केसरका रंग बरसे और वह सुंदर पडे फुहार ॥
इधरसे चलते कुमकुम दोऊ तरफों मारामार ॥
उधरसे राधा दौडके आवें संगलिये सब ब्रजकी नार ॥
इधरसे झपटे कृष्ण संग ग्वाल बालके करें बहार ॥
शेर–उधरसे राधिका कृष्णजी को प्यार करें ॥
इधरसे कृष्णभी राधाके संग विहार करें ॥
वह होली होरही दोनों तरफसे रंग भरी ॥
गगनमें देवते देखें तो ये बिचार करें ॥
इनकी महिमा लखी न जावे ये दोऊहैं अपरंपार ॥
खेलैं होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ॥ १ ॥
उधर राधिका अद्भुत तन पर किये वह मणियोंकेश्रृंगार ॥
इधर कृष्णके शीशपर मोर मुकुटकी लटक अपार ॥

उधर भीज रही कुसुंभ सारी गलेमें वह मोतियनके हार ॥
इधर पीतपट वह तर और वनमाला शोभित गुलजार ॥
शैर–उधरसे राधिका श्रीकृष्णसे पुकार करें ॥
इधरसे कृष्णभी ग्वालोंके संग गोहार करें ॥
वह होली होरही मधुबनमें जिसका अंत नहीं ॥
और ऐसी होलीकी महिमा भी वेद उचार करें ॥
थकित होगई शेषकी जिह्वा हजार मुखसे व दोहजार ॥
खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ॥ २ ॥
उधरसे राधा गुलाल फेंके भरभर मुट्ठी विनासुमार।
इधरसे मोहन वह मारें तक तक पिचकारिनकी धार ॥
उधरसे राधा दें सीठनी और सखियन खडी कतार ॥
इधरसे गावें वह गाली गोविंद और सब उनके यार ॥
शैर–उधरसे श्रीराधिका श्रीरागका उच्चार करें ॥
इधरसे कृष्णभी वंशीकी वह झनकार करें ॥
उधर तो बजरहे डफ ढोल इस धडाकेसे ॥
इधरसे ग्वालभी शंखोंकी धुधुकार करें ॥
उधरसे तो गावें हिंडोल मिलके इधरसे गावें मेघ मलार ॥
खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ॥ ३ ॥
उधर नाचती सखी तथैथ देंदे ताली वारंवार ॥
इधर थिरकते ग्वाल सबलिये हाथमें बीनसितार ॥
उधर राधिका देख कृष्णको अपना तनमन धनदेवार ॥
इधर कृष्णभी वह मोहित श्रीराधाको रहे निहार ॥
शैर–उधर क्या राधिका श्रीकृष्णसे करार करें ॥
इधरका भेद बतावो तो बेड़ा पार करें ॥

उदरसे राधिकाजीको जो भजे भक्ति मिलें ॥
इधरसे कृष्णभी भक्तोंका वह उद्धार करें ॥
देवीसिंह कहे बनारसी हरि अब पृथ्वीका उतारो भार ॥
खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ॥ ४ ॥

होलीबहेर बहुतछोटी अद्भुत ।

खेलते होली ब्रजमें नंदलाल ॥ मचो वह खूब धमाल ॥
चलें वह हँसहँसके लटपट चाल ॥ हाथमें लिये गुलाल ॥
बजावें बंशीसी देदेके ताल गावें ध्रुपद ख्याल ॥
शैर–कृष्ण तो हाथमें लेकर बहुत अबीर चले ॥
गुलाल भरके वह झोली सुनो बलबीरचले ॥
उधरसे राधिका सखियोंको साथले धाईं ॥
इधरसे साथमें इनके बहुत अहीर चले ॥
गालियां गावें हँस हँस गोपाल ॥ मचो वह खूब धमाल ॥
बहुतसा राधा रंग दीनों डाल ॥ बने कृष्णजी लाल ॥
मल मुखरोरी और चूमेगाल ॥ सखियां भईं निहाल ॥
शैर–कोईको होशभि मुतलक न रहा होलीमें ॥
गलीमें कुंजनकी औ रंग बहा होलीमें ॥
कोई लपटें कोई झपटें व कोई शोर करें ॥
कोई बेहोश हुई कुछ न कहा होलीमें ॥
हाल कोईका होगया बेहाल ॥ मचो वह खूब धमाल ॥
कोईके मुखडेपर बिखरे बाल ॥ पडा हो जैसे जाल ॥
कोईके माथेपर केशर भाल ॥ कोईके बिंदीलाल ॥
शैर–कोई गाते और बजाते वह लिये ढोल चले ॥
हरेक साथमें अपना वह लिये गोल चले ॥

किसीके हाथमें केशरकी भरी पिचकारी ॥
कोई तो रंगभी टेसूका बहुत घोल चले ॥
सुनो तुम ब्रजका सारा अहेवाल ॥ मचो वह खूब धमाल ॥
कोई दौलतवर कोई कंगाल ॥ सबका रूप विशाल ॥
कहे यह देवीसिंह अद्भुत ख्याल ॥ बजा चंग करताल ॥
शेर--यह ढंग सबसे निराला बनारसीका सुनो ॥
ख्यालभी सबसे हैं आला बनारसीका सुनो ॥
किसीकी शायरीमें लुत्फ कहां होता है ॥
सखुन यह सबपै है बाला बनारसीका सुनो ॥
मगनभये सुनके यह तीनों ताल ॥ मचो वह खूब धमाल॥

योगाभ्यास।

सुख मनमें तो तब होवे जब प्राणायाम परायण हो।
ऊर्द्धमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायण हो ॥
षट्चक्रके ऊपर उत्तम सप्तम चक्र सुदरशन है ॥
निराकार अव्यय अविनाशी ज्योतिरूपका दरशन है ॥
द्वैत नहीं उसमें किंचित् अद्वैत यह दरशन परशन है ।
और कामहै सहज कठिन यह वोही तो आकरषण है ॥
अनहदबाजे बजें वहांपर दीपक रागका गायन हो ।
ऊर्द्धमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायण हो ॥ १ ॥
नाभिकमलमें ब्रह्मा और हिरदेमें विष्णु भोग करैं ।
मस्तकमें शिवकरैं तपस्या तपैं और पूरण योग करैं ॥
जो प्राणी तीनोंगुणसे हो रहित और सदा वियोग करैं ।
परमहंसके दरशन तो इस जगतमें वोही लोग करैं ॥
चाहे स्त्री पुरुष होय या योग यती गोसाँयन हो।
ऊर्द्धमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायण हो ॥ २ ॥

जहां अग्नि नहिं पवन न पानी औ नहिं नद्दी नाला है ॥
चले न चन्दा सूर्य वहांपर आपी आप उजाला है ॥
सत्य चित्त आनंदरूप वह गोरा नहीं न काला है
हर रंगमें हर झलक रहा पर सबसे रहे निराला है ॥
जब प्राणी यह जन्म लेय तो पैदा उलटे पाँयन हो ।
ऊर्द्धमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायण हो ॥ ३ ॥
खुले आँख जब भीतरकी तब दिव्य दृष्टि होजाय उसे ॥
महाकाल वह आप बने औ कालनहीं फिर खाय उसे ॥
देवीसिंह यह कहे देख तो ब्रह्मको ध्यान लगाय उसे ॥
बनारसी तू वही तो है सद्गुरुने दिया लखाय उसे ॥
लखचौरासीसे छुटजावें भूत प्रेत नहिं डायन हो ॥
ऊर्द्धमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायण हो ॥ ४ ॥

त्याग देह अभिमानका—बहेर खडी ।

नहींमिलें हरि धन त्यागे नहीं मिले रामजी जाल तजे ।
नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजे ।
सुत दारा या कुटुंब त्यागे या अपना घरबार तजे ॥
नहीं मिले प्रभु कदापि जगत्का सब व्यवहार तजे ॥
कन्द मूल फल खायरहे और अन्नकाभी आहार तजे ।
वस्त्रको त्याग नग्न हो रहे और पराइ नारि तजे ॥
तौभी हरि नहिं मिलें यह त्यागे चाहे अपने प्राण तजे ॥
नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजे ॥ १ ॥
तजे पलँग फूलका और चाहे हीरे मोती लाल तजे ॥
जातको अपनी तजे और कुलकी सारी चाल तजे ॥
वनमें निशि दिन विचरे और इस दुनियाका जंजाल तजे ॥
देहको अपनी जलावे शरीरकीभी खाल तजे ॥

ब्रह्मज्ञान नहीं हो तोभी चाहे वो अपनी सान तजै ॥
नारायण तो मिलैं उसको जो देह अभिमान तजै ॥२॥
रहे मौन बोलै नहिं मुखसे अपनी सारी बात तजै ॥
बालपनेसे योग ले तात तज या पात तज ॥
शिखा सूत्र त्यागन करदे और उत्तम अपनी मात तजै ॥
कभी जीवको न मारे घात तजे अपघात तजे ॥
इतना तजे तो क्या होवे जो देहका नहीं गुमान तजै ॥
नारायण तो मिलैं उसको जो देह अभिमान तजै ॥ ३ ॥
रहे रात दिन खड़ा न सोवे पृथ्वीकीभी शैन तजै ॥
कष्ट उठावे रहे बेचैन औ सारी चैन तजे ॥
मीठा होकर बोले सबसे कडुवे अपने बयन तजे ॥
इतना त्यागे देह अभिमान नहीं दिनरैन तजे ॥
बनारसी कहै उसे मिलैं नहीं हरि चाहे सकल जहान तजे ॥
नारायण तो मिलैं उसको जो देह अभिमान तजै ॥ ४ ॥ :

होली संतमार्गीनिर्गुण-बेहर लँगड़ी ।

संत खेलते होली जिसमें इज्जत हुरमत लाज रहे ॥
गुणी जनोंके अगाड़ी अनहद बाजे बाज रहे ॥
ज्ञान गुलालके बादल छाय प्रेम रंग नित बरषामें ॥
ब्रह्मबादसे लड़ें और भरम धूलको लडामें ॥
धीरजका डफ बाजे सङ्गसे नाम नारायणका गामें ॥
क्रोध कुमकुमा मारके कामशत्रुको हटामें ॥
दयाकी दौलत देते सबको सङ्गमें सभी समाज रहे ॥
गुणी जनोंके० ॥ १ ॥
अमर अबीरको साध लगावें मुक्तरूप पहन माला ॥
भस्मके भूषण झलकते तनपर मनमें उजिआला ॥
मंत्र मिठाई सन्त पावते बहुत खूब सर्बस आला ॥

अमृत रसको पियें और खोल देइ घटका ताला ॥
नेह नाचको देखैं हरिजन सत्त साजको साज रहे ॥
गुणी जनोंके० ॥ २ ॥
लौकी लकड़ी लूटले आये आतमकी अगनी धरते ॥
हरहर होली जगावैं वही नहीं जन्मे मरते ॥
विज्ञानकी गाली देते हैं सन्त किसीसे नहिं डरते ॥
कष्टके कपड़े पहिनकर कायाको निर्मल करते ॥
शील सितार सुनावैं साधू नाम नक्कारे गाज रहे ॥
गुणी जनोंके अगाडी अनहद बाजे बाज रहे ॥
राम नामका शोर चलावें पर स्वारथकी पिचकारी ॥
जिसको मारें उसीके मुखपर लगती है प्यारी ॥
मिलें गले गोविंदसे चलके जाप जपें गिरिवरधारी ॥
भाव भोगको करें हैं वही यती वही ब्रह्मचारी ॥
शुद्ध सिंहासन पर चढ़ बैठे तीन लोक में राज रहे ॥
गुणी जनोंके० ॥ ३ ॥
तीरथकी फेरी फिरते हैं सुमत सामग्री ले जाते ॥
पूजे होली गुणीजन ब्रह्मज्ञानमें मदमाते ॥
देवीसिंह यों कहैं कि ऐसी होली जो कोई गाते ॥
भवसागरके पारहो परमधाम पदवी पाते ॥
बनारसीने हरिको पाया किसीके नहीं मौःताज रहे ॥
गुणी जनोंके अगाड़ी अनहद बाजे बाजरहे ॥ ४ ॥

ख्याल श्री दुर्गाजीका चारोंपदार्थ देनेवाला।

बहेर लँगडी।

सरस्वती विद्या देवे और अन्नपूरणा अन देवे ॥
ज्ञानदे गौरी और धौलागढ़वाली धन देवे ॥

यमुना यमसे छुटादे और गंगा परमगती देवे ॥
नाम नर्मदादे और सीता सुमत मती देवे ॥
ब्रह्मानी दे ब्रह्मविद्या रुद्रानी बड़ी रती देवे ॥
कमला देवे कामना प्रेम वोह पारवती देवे ॥
मंगल दे मंगलादेवी ललिता मुझे लगन देवे ॥
ज्ञान दे गौरी और धौलागढवाली धन देवे ॥
विन्ध्यवासिनी विन्द दे और योग योगमाया देवे ॥
कृपा कमक्षा दे काली निर्मल काया देवे ॥
ज्वाला दे जिह्वापर यश माता पूरण माया देवे ॥
दया दे दुर्गा भवानी मेरे मन भाया देवे ॥
विद्या दे वेदांतसार भैरवी तो मोहिं भजन देवे ॥
ज्ञान दे गौरी और धवलागढ़वाली धन देवे ॥
त्रिकुटा त्रैगुण छुटा देवे और तुलसी परम तत्त्व देवे ॥
अष्टभुजी दे आठ सिद्धि और सती सत्त देवे ॥
वागेश्वरी दे वाक वाणी भगवती तो मोहिं भक्ति देवे ॥
तांत्र दे तारा और जयंती जीत जगत देवे ॥
कोट कांगडा कोटिन वरदे रमाभिराम चरण देवे ॥
ज्ञान देवे गौरी और धवलागढवाली धन देवे ॥
नयना देवी नयनमें सुख दे नारायण नीत देवे ॥
कहे देवीसिंह मुझे तो पुण्यागिरी प्रीत देवे ॥
बनारसीको जयजयवंती तीनों लोक जीत देवे ॥
गायत्री दे सकल गुण गोदावरी गीत देवे ॥
हिरदेमें श्री हिंगलाज हितसे अपना दर्शन देवे ॥
ज्ञान दे गौरी और धवलागढवाली धन देवे ॥

ख्याल भगवतीका-बहेर लँगडी ।

नाम तुम्हारा गौरी हैं पर काहे रूप धरा काली ॥
रक्त बरणहो शारदा बनी रहे जगमें लाली ॥
तीनों गुणसे रहित है तू पर त्रयगुण तेरे हैं आधीन ॥
इस कारणते भगवती धरे रूप ये तुमने तीन ॥
सद्गुणसे पालनाकरै और रजसे राज करै परवीन ॥
तमगुणसे तो करै संहार तू है सबमें लवलीन ॥
भक्ति मुक्तिकी दाता है तू ऋद्धि सिद्धि देनेवाली ॥
रक्त बरण हो शारदा बनी रहै जगमें लाली ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब तुझको ध्यावें ॥
अपार माया है तेरी पार न सुर नर मुनि पावें ॥
धन्य धन्य वह पुरुष हैं जो हिरदेसे तेरा गुण गावें ॥
नंगे चरणों तेरे दरबारमें इंद्रादिक आवें ॥
सप्तद्वीप नवखंड और चउदो भुवनमें तेरी उजियाली ॥
रक्त बरण हो शारदा बनी रहै जगमें लाली ॥
ब्रह्मा तेरी गोदमें खेलैं विष्णुको दूध पिलावे तू ॥
शिवशंकर को तांडव नृत्यका नाच नचावे तू ॥
बडे बडे असुरों को मारकर मुंडकी माल बनावे तू ॥
कोटिन तेरी भुजा और असंख्य शस्त्र चलावे तू ॥
रक्तबीजका रक्त पिया एक बुंद न पृथ्वी पर डाली ॥
रक्त बरण हो शारदा बनी रहैं जगमें लाली ॥
जिस्को तूने चक्रसे मारा चक्रवर्ती वह कहलाया ॥
पार न जिस्का कोई पावे वह है तेरी माया ॥
त्रिशूलसे छेदा जिस्को त्रिभुवनका राज्य उसने पाया ॥
कहै देवीसिंह तूने वैरियोंको भी सुख दिखलाया ॥

बरनासी कहै दयावंत श्री दुर्गे तू भोली भाली ॥
रक्तवरणहो शारदा बनी रहै जगमें लाली ॥

ख्याल निर्गुण कालीजीका–बहेर लँगडी ।

यह काया कलका कलकत्ता इसीमें है कृष्णाकाली ।
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बड़ी शोभावाली ॥
मन मंदिरमें आप बिराजे खुशी खड्ग खप्पर धारे ॥
सत्तसिंह पर आनकर बैठी पद्मासन मारे ॥
मंत्र मधुर मधुपानकरे त्रिलोकमें होरहे जयकारे ॥
झपट झपटके काम और क्रोध दैत्य सब संहारे ॥
समताका शृंगार सजे तनुपर मनमें रहे खुशियाली ॥
तीनों गुणके तीनहैं नेत्र बडी शोभावाली ॥
चमत्कारकी चार भुजा और रचना मुंडोंकी माला ॥
तेज और तपका खडा त्रिशूल जगतसे निरियाला ॥
चित्तका चक्र वह घूमें चारों तरफ मेरी जय जय ज्वाला ॥
दुर्बुद्धीको मारकर टुकडे टुकडे कर डाला ॥
दृढताका डमरू बाजे और सत्त ताल बजती ताली ॥
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभा वाली ॥
बोधके वस्त्रको पहिने तनु पर प्रीत पुष्पके हार गले ॥
बुद्धि वेदको पढे और दया धर्मकी चाल चले ॥
लोभ मोह दो चंड मुंडे हैं इन दोनोंके दल्ल दले ॥
ऐसी काली बसे कायामें अगमकी लाट बले ॥
जगमग जगमग जगे ज्योति यश कीरतिकी है उजियाली ॥
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥
करे भलाईके भोजन और ज्ञान गंगजल नित्त पिये ॥
जोगकी जोगन भावके भूत और भैरव संग लिये ॥

विद्याके बीडे चाबे और तिलसमातके तिलक दिये ॥
कहे देवीसिंह हैं उनके बडे भाग्य जिन दरश किये ॥
बनारसी यह कहे मेरे वह घटमें करती रखवाली ॥
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभा वाली ॥

ख्याल शरीरकी रक्षा-बहेर लँगडी ।

हिरदेमें है हिंगलाज करैं काज लाज रखने वाली ॥
नयना देवी नयनमें बसैं हँसैं देदे ताली ॥
शीशमें सीता सती बिराजै सावित्री संकटा रानी ॥
मस्तक में रहै आप श्रीमहाविद्या और महारानी ॥
भ्रुकुटीमें करै वास भैरवी भयमानै सब अभिमानी ॥
ब्रह्ममें अपने विराजे विन्ध्याचल ओर ब्रह्मानी ॥
बसैं नासिकामें नवदुर्गे नगर कोट लाटों वाली ॥
नयनादेवी नयनमें बसैं हँसैं देदे ताली ॥
मुखमें बसै मंगला देवी सब कारज करदे मंगल ॥
होठमें हेमावती रहैं क्षणमें काट देवे कलिमल ॥
जिह्वामें जाह्नवी और यमुना सरस्वती सबसे निर्मल ॥
गलेमें गौरी और गायत्रीका जपनाम अटल ॥
कंठमें बसै कालिका देवी कंकाली और महाकाली ॥
नयनादेवी नयनमें बसैं हँसैं देदे ताली ॥
करणमें कमला और कात्यायनी कृपारूप अद्भुत माया ॥
दोनों भुजामें भवानी बसे बडा सुख दिखलाया ॥
उरमें बसैं उमा उत्तरायणी उग्रतेज उनका छाया ॥
कहांलग वर्णूं लखी नहीं जाती है अपनी काया ॥
बुद्धिमें बसे विधाता माता बडी बुद्धि देनेवाली ॥
नयना देवी नयनमें बसै हँसैं देदे ताली ॥

रोमरोम में रमी रमा और नाभि कमलमें निर्वानी ॥
कहै देवीसिंह इसे कोइ पहिचाने चातुर ज्ञानी ॥
श्वास श्वासमें शक्ती बोले ध्यान धरे पूरे ध्यानी ॥
बनारसी कहे मुझे भगवतीकी भक्ति मन मानी ॥
मेवा और मिष्टान्न हार फूलोंकी नित्य चढती डाली ॥
नयना देवी नयनमें बसैं हँसै देदे ताली ॥

रामचंद्रके स्वरूपका वर्णन—बहेर लँगडी।

निर्गुण ब्रह्म श्रीरामचंद्र भये सगुण ब्रह्म और श्याम वरण ॥
आनन परते मैं हरीके वारूं रविकी कोटि किरण ॥
घूँघरवाली अलकनपर मैं श्याम घटा वारूं और घन ॥
शेषनागकी भी जिह्वा वारूं और कालीका फण ॥
मस्तक पर शशि वारूं केशर मुश्क और मलयागिरि चंदन ॥
भ्रुकुटी परसे धनुष वारूं और करूं फिर मैं धन धन ॥
शैर—रामके नामपै वारूं मैं सैकडों रावण ॥
फिर वारूं इंद्रजीत और वह बली कुंभकरण ॥
और उनके ध्यानपै वारूं मैं योगियोंकी यतन ॥
बडे हैं सबमें वही जिनकी है प्रभुसे लगन ॥
पलकोंपर मैं बाण वारूं और चितवन पर वारूं खंजन ॥
आनन परते मैं हरिके वारूं रविकी कोटि किरण ॥
नेत्रपर उनके कमलको वारूं और जंगलके काले हरिण ॥
अमृत वारूं हलाहल वारूं और मदिराकी फबन ॥
खांडा बिछुवा खंजर वारूं औ वांकका वारूं वांकपन ॥
अपने नेत्रभी मैं वारूं स्वामीका करके दर्शन ॥
शैर—रागके रूपपर वारूं मैं सोलहों लक्षन ॥
औ उनके तेजपै वारूं मैं विश्वभर की अगन ॥

बातपर उनकी बनाकर मैं वारूं कोटि भजन ॥
दयापै रामकी वारूं कुबेरका सब धन ॥
वारूं नासिकाके ऊपर मैं बुला बुलाकर हीरामन ॥
आनन परते मैं हरिके वारूं रविकी कोटि किरण ॥
करणपै वारूं सूरजके कुंडल ओठ पै वारूं लाली यमन ॥
चमक दांतकी पै दामनी वारूं और चौदहों रतन ॥
दोकपोलपै रवि शशि वारूं जिसका तेज छाया त्रिभुवन ॥
जिह्वापरसे वेदवारूं मैं रामका कर सुमरन ॥
शेर–रामके बाणपै वारूं मैं तीनों लोकका रण ॥
धनुषपै उनके मैं वारूं जो धनुष निकले गगन ॥
औ उनके क्रोधपै वारूं मैं कालो रुद्रका मन ॥
राजपै रामके वारूं वह जोहै इंद्रासन ॥
कंठपै वारूं छहों राग औ तीस रागनीकी सब परन ॥
आनन परते मैं हरिके वारूं रविकी कोटि किरन ॥
हाथपै वारूं दान पुण्य जो राजा बलिसे अधिक कठिन ॥
हिरदे परसे मैं उनके वारूं जोबनका जोबन ॥
नाभि कमलपै भवँरको वारूं कटिपै केहरिकी लचकन ॥
जंघा परसे मैं उनके वारूं कजरी थंबके वन ॥
शेर–रामकी चालपै वारूं हरएकका चालो चलन ॥
चरणपर अप्सरा वारूं मैं उनको छूके चरण ॥
वह उनके काव्यपै वारूं कवीश्वरोंकी कथन ॥
मैं उनके विश्वरूप पर ये वारूं चौदहों भुवन ॥
देवीसिंह कहै बनारसी तेरी रहै रामसे लगी लगन ॥
आनन परते मैं हरिके वारूं रविकी कोटि किरन ॥

निर्गुण रामायण—बहेर लँगड़ी ।

घटमें शिवके रकारहै और मुखमें हरके मकार है ॥
राम नामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥
रकारसे दे ऋद्धि सदाशिव मकारसे देते मुक्ती ॥
ऐसे भोले हैं जिनके पासमें दोनों जुगती ॥
रकार रक्षा करै सदा औ मकार से ममता रुक्ती ॥
शिवशंकरके पास नानाप्रकारकी है उक्ती ॥
अष्टपहर दिनरैन सदा दोनों अक्षरका विचार है ॥
राम नामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥
रकारसे हर हरें रोग और मकारसे देते माया ॥
विश्वनाथके हिरदेमें राम नाम है समाया ॥
रकार रम रहा रोम रोममें मकार मेरे मन भाया ॥
दो अक्षरका आदि और अंत किसीने नहिं पाया ॥
रकार रचना करै औ महिमा मकारकी भी अपार है ॥
राम नामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥
मकारमें है रकारका रस रकारका है मकार मन ॥
विश्वनाथजी इसीसे रामनामका करैं भजन ॥
रकारने राक्षस संहारे मकारने मारे दुर्जन ॥
रामनामके रटेसे नीलकंठ रहे सदा मगन ॥
विचार करके देखा मैंने चारवेदका ये सार है ॥
रामनामका सदा श्रीमहादेवको अधार है
रकारके हैं रंग सभी और मकारका मत ज्ञानी है ॥
रामकी लीला सिवा शिवके नहीं किसीने जानी है ॥
रामके नामका अंत नहीं है थकी शेषकी वानी है ॥
बनारसीने कीर्त्ती रामकी सदा बखानी है ॥

पलपल छिन छिन निशि दिन मुझको दो अक्षरकी पुकार है ॥
राम नामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥

श्रीकृष्णके अँगुलीकी स्तुति–बहेर लँगडी ।

श्रीकृष्णके हाथमें क्या नाजुकहै भोली भाली अँगुली ॥
रंगरंगके जवाहरसे है रंग वाली अँगुली ॥
कभी अँगुठी पहेर लालकी दिखलाती लाली अँगुली ॥
कभी विरोजोंसे होजाती है जंगाली अँगुली ॥
जबके जमरुंदके छल्लों में हरीने वो डाली अँगुली ॥
हरी होगई दिखाने लगी व हरियाली अँगुली ॥
जितने रंग हैं इस पृथ्वीपर किसीसे नहीं खाली अँगुली ॥
रंग रंगके जवाहरसे ओ रंगवाली है अँगुली ॥
एक तो बाले कृष्ण एक उनसे उनकी बाली अँगुली ॥
दूजी दूधसे यशोदाने उनकी पाली अँगुली ॥
तीजी त्रयगुण रहित औ चौथी चौथे पदवाली अँगुली ॥
चार पदारथ चारोंमें एक से एक आली अँगुली ॥
अर्थ धर्म और काम मोक्ष सबके देनेवाली अँगुली ॥
रंग रंगके जवाहरसे वह रंगवाली अँगुली ॥
कभी पहेन हीरोंके छल्ले हरिने चमकाली अँगुली ॥
किरण सूर्यकी देखकर होगई मतवाली अँगुली ॥
चित्र विचित्रके लक्षण जिस्में ऐसी करढाली अँगुली ॥
धन्य वह विधनाके जिसने सांचेमें डाली अँगुली ॥
चंद्रकला नखमें जिनके शोभित है वह आली अँगुली ॥
रंगरंगके जवाहरसे वह रंगवाली अँगुली ॥
एकसमय राधाने कृष्णकी अँगुलीमें डाली अँगुली ॥
गंगा यमुना मिलगई वह गोरी काली अँगुली ॥

श्याम कहैं श्यामासे तुम्हारी चंद्रसे उजियाली अँगुली ॥
श्यामा बोलैं आपकी अद्भुत बनमाली अँगुली ॥
देवीसिंह कहै बनारसीने वह देखी भाली अँगुली ॥
रंगरंगके जवाहरसे वह रंगवाली अँगुली ॥

गंगा लहरी-बहेर खडी।

ब्रह्मा रचते सृष्टि पालना विष्णु करैं शिव संहारे ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारैं ॥
गणेशजी विद्याका वरदैं बुद्धि बुद्धिका दान करैं ॥
सूर्य तेज दैं शरीरमें इस जगत्में सब सन्मान करैं ॥
शीतलतायी देय चन्द्रमा सतगुणको परधान करैं ॥
हनूमानजी चाहैं तो यक पलभरमें बलवान करैं ॥
भैरवजी भय हरैं डरैं नहिं दुर्जनको पलमें मारैं ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारैं ॥
इन्द्रका स्मरण करे तो पावे सुंदरसी अबला नारी ॥
दुर्वासाजी पवन अहारी कामीको करैं ब्रह्मचारी ॥
कुबेरके जो भक्त हैं वह तो बडे बडे माया धारी ॥
धर्मराजजी धर्म बतावैं जो हैं इनके हितकारी ॥
शेषजी अपने सहस्र मुखसे नये नाम नित उच्चारैं ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारैं ॥
तनुका रोग दूर कर देते बडे वैद्य अश्विनी कुमार ॥
वेदव्यास पुराणके मुनि हैं वेदका निशि दिन करैं विचार ॥
बालपनेसे त्याग बतावैं सनक सनंदन सनत्कुमार ॥
करो शनिश्चरकी पूजन तो सकल विपत्को देवैं टार ॥
जितने देवते हैंगे सो सब गुरू बृहस्पति को धारैं ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारैं ॥

तेंतिस कोटि देवते सब अपना अपना देतेहैं फल ॥
अति प्रसन्न होते हैं इनपर चढ़ताहै जब गंगाजल ॥
देवीसिंह ये कहे न भूलों मैं श्रीगंगाको यक पल ॥
सबसे ऊंचे शिवजी उनके शीशके ऊपर गंग अचल ॥
बनारसीके अधम पापको धोवें गंगाकी धारें ॥
धन्य धन्य श्री गंगाजी जो अधम पापियोंको तारें ॥

गंगालहरी—बहेर खडी।

पापी एक मरा गंगापर हुई वो उसकी तैयारी ॥
महिमा सुनो कान दै जैसी निकली वाकी असवारी ॥
आयो कंचनको विमान सुंदर और वाम रत्न जडे ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब लेनेको खडे ॥
उधरसे आये यमके दूत वो लेले हाथमें शस्त्र बडे ॥
देखतही दल श्रीगंगाका भागे यमके पांव पडे ॥
वह जो पापी था सो तो तनु त्यागके बनगया त्रिपुरारी ॥
महिमा सुनो कानदै जैसी निकली वाकी असवारी ॥
अद्भुत भूषण कुबेरजी झटपट सो आपी ले आये ॥
पीत वस्त्र नख शिख लौं उत्तम उनके तनुमें पहिराये ॥
चोवा चंदन अतर अरगजा सभी देवते ले धाये ॥
पत्र पुष्पसे पूजन करकर मगन भये मंगल गाये ॥
तीन लोक चौदहों भुवनकी पाई उसने सरदारी ॥
महिमा सुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल गलेमें वैजयंती माला ॥
शीश छत्र सोबरनका झूमें जयजय शब्दकि ध्वनि आला ॥
कंठ कौस्तुभ मणीहार गज मुक्ताका उरमें डाला ॥
बाजूबंद नवरत्न और करमें कंगनका उजियाला ॥

भरे अटल भंडार उसे गंगाने माया दी सारी ॥
महिमा सुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
जब वह बैठा विमानमें तब ब्रह्माजी मुरछल लाये ॥
इंद्र डुलावैं पंखा सब देवतोंने पुष्प अति बरसाये ॥
शिव और विष्णुने करी शंखध्वनि ऐसे फल उसने पाये ॥
धन्य भाग्य हैं उनके जो कलिकालमें गंगाजी न्हाये ॥
करें नृत्य गंधर्व सकल मिल बाजे बजन लगे भारी ॥
महिमा सुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
अष्ट सिद्धि नवनिद्धि सभी कर जोर जोर आईं आगे ॥
जिन त्यागे गंगाके तीर तनु उनके भाग्य ऐसे जागे ॥
जब वह उठा विमान तो गोले अनहदके दगने लागे ॥
नंदीगण और गरुड सिंह गज विमानके नीचे लागे ॥
और सकल वाहन कांधा देने लागे बारी बारी ॥
महिमा सुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
हनूमानजी खवास बनगये भैरव बनगये अगमानी ॥
गणेशजी डंकाले आगे चले महा योगी ध्यानी ॥
छप्पनकोटि मेघने मिलके रस्तेमें छिडका पानी ॥
चंद्र सूर्यने करी रोशनी सब देवतोंके मन मानी ॥
तेतिस कोटि फौज सब सँगमें चली और छबि न्यारी न्यारी ॥
महिमा सुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
जब वह पहुँचा अमर लोकपुर सब फिर आये अपने धाम ॥
मिला ज्योतिमें ज्योति रूप होय श्रीगंगाको करो प्रणाम ॥
याही ते मैं कहत जात हों जपो सकल गंगाको नाम ॥
और कोई नहीं अंत समयमें आवेगो अब तुम्हारे काम ॥
बनारसी यह कहै कभी तो आवेगी मेरी बारी ॥

महिमा सुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी ॥

गंगालहरी—बहेर खडी ।

भोजन कर या भूखा रहुँ या वस्त्र पहेन या फिर नंगा ॥
जौलों जिये तू कहु इस मुखसे जय गंगा श्रीजयगंगा ॥
नेम धर्म और कर्म अकर्मसे योग भोगमें कहो गंगा ॥
दुखमें सुखमें भले बुरेमें रोग अरोगमें कहो गंगा ॥
सोवत जागत राह बाटमें हर्ष शोकमें कहो गंगा ॥
मात पिता दारा सुत बिछुडें तौ वियोगमें कहो गंगा ॥
धन दौलत या राज पाट हो या फिर बन जाय भिखमंगा ॥
जौलों जिये तू कहो इस मुखसे जय गंगा श्रीजयगंगा ॥
रोवत हँसत नगर और बनमें जहां रहे तू कहो गंगा ॥
संपति विपति कुपति और पत नर सभी सहे तू कहो गंगा ॥
डूबत तीरत मरत या जीवत मेरे कहे तू कहो गंगा ॥
यह मन मूढ समझ अब झट मेरो मन चहे तू कहो गंगा ॥
जो तेरे मन बसे कार्य यह लगे तेरे चितमें चंगा ॥
जौलों जिये तू कहो इस मुखसे जय गंगा श्रीजयगंगा ॥
खेलत कूदत उछलत फाँदत अपने मनमें कहो गंगा ॥
बाल जवानी और बुढापा तीनों पनमें कहो गंगा ॥
नाचत गावत गाल बजावत हर रागनमें कहो गंगा ॥
सातद्वीप नवखंड और चवदहों भवनमें कहो गंगा ॥
अंधा हो या बहिरा हो या लूलाहो या इकटंगा ॥
जौलों जिये तू कहु इस मुखसे जयगंगा श्रीजयगंगा ॥
घटी नफेमें दिवस रात्रिमें आदि अंतमें कहो गंगा ॥
संग कुसंगमें रंग कुरंगमें साधु संतमें कहो गंगा ॥
चराचर चैतन और जडमें तू अनंतमें कहो गंगा ॥

चाहे सबमें बैठके कहो चाहे एकांतमें कहो गंगा ॥
बनारसी यह कहे चाहे तू गरीब बन या करदंगा ॥
जौलों जिये तू कहो इस मुखसे जय गंगा श्री जयगंगा ॥

गंगालहरी–बहेर खडी।

और सकल देवतोंसे फल जो मांगोगे तो पावोगे।
बिन मांगे देइ हैं गंगा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥
शिवजीकी जो करो तपस्या मनमें ध्यान लगावोगे ॥
और वह श्री गंगा का जल जब उनके शीश चढावोगे ॥
बेलपत्र अरु आक धतूरा मंदिरमें ले जावोगे ॥
तब वह होइहैं प्रसन्न जब तुम दोनों गाल बजावोगे ॥
वह कहिहैं कुछ मांगो तब तुम उनसे मांगके लावोगे ॥
बिन मांगे देहै गंगा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥
ठाकुरद्वारे जाय जाय जब विष्णुको शीश झुकावोगे ॥
पत्र पुष्पसे पूजन कर कर मालाको पहिरावोगे ॥
धूप दीप नैवेद्य लगाकर और विष्णुपद गावोगे ॥
तब वह रीझेंगे तुमसे जब उनको भजन सुनावोगे ॥
वह कहिहैं कुछ हमसे लेव तब तुम करको फैलावोगे ॥
बिन मांगे देहैं गंगा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥
ब्रह्माजीका सुमिरण कर कर लाखन वर्ष बितावोगे ॥
कंद मूल फल खाय खायके बहुतहि कष्ट उठावोगे ॥
यह काया कंचन तनुअपनाइस्को खूब सुखावोगे ॥
तब वह दर्शन देइहैं पैहो फल जो कुछ तुम चाहोगे ॥
वह कहिहैं कुछ मांगो तब तुम माँगोगे शरमावोगे ॥
बिन मांगे देहैं गंगा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥
करिहो पृथ्वी पैकर्मा और चारों धाम फिर आवोगे ॥

जगन्नाथ और रामेश्वरमें जायके पांव थकावोगे ॥
और द्वारकामें छापे खासाके बदन जलावोगे ॥
जैहो बद्री केदार तब तुम क्योंकर शीत बचावोगे ॥
वहां तो तुम आपै मंगिहो मांगनमें बहुत लजावोगे ॥
बिन मांगे देहैं गंगा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥
और कहीं जो पाप कर्म करि हो तो पाप उठावोगे ॥
गंगाजीमें देह भी धोइहो तोभी नहीं पछताओगे ॥
लात लगावो कूदो फांदो बहुतै धूम मचावोगे ॥
तौ भी माता प्रसन्न होइ हैं, वाके पुत्र कहावोगे ॥
बनारसी कहै अंतमें मुक्ति आपीसे तुम पावोगे ॥
बिन मांगे देहैं गंगा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥

गंगालहरी—बहेर खडी ।

आज युद्धकी करो तयारी श्री गंगाजी तुम हमसे ॥
मैं पापी तुम तारणहारी बनिहैं पाप बहुत हमसे ॥
मेरा पाप है पहाडके सम समर करनमें वीर बडा ॥
देखौं मैं अब आयके कैसो ह्वगो तुम्हरो तीर बडो ॥
रणमें लड़े हटे नहिं कबहूं मेरो पाप रणधीर बडो ॥
तुम तो येही कहत हौ मुखसे मेरी रेणुका नीर बडो ॥
देखो उनको पुरुषारथ जो लडिहैं आय मेरे तमसे ॥
मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥
जबसे जन्म भया पृथ्वीपर कभी न हरिको नाम लियो ॥
सेवा की नहिं मात पिताकी साधनको नहिं काम कियो ॥
हरो बहुत धन ठगठगके नहिं हाथसे एको दाम दियो ॥
कियो बहुत विषपान न अमृतकोभी एको याम पियो ॥
कैसे बचिहौं कालसे मैं अब कौन छुटैहै मोहिं यमसे ॥

मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥
वेद पुराण बखानत निशि दिन अधम पापियोंको तारा ॥
किया बहुत संग्राम कालते औ यमदूतोंको मारा ॥
सुनी बात यह श्रवणसे मैंने किये पाप अपरंपारा ॥
करिहौं और बहुतसे अघ देखों कैसे हो निस्तारा ॥
अब तो येही लड़ाई ठानी है गंगाजी मैं तुमसे ॥
मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥
अइहैं जब यमदूत लेनको बड़े बड़े योधा भारी ॥
जब तुम मोहिं बचैहो तब मैं जैहौं तुम्हरी बलिहारी ॥
तुम्हरे गण हैं पुष्प लिये औ यमके दूत शस्त्रधारी ॥
इसका उत्तर देवकि सेना किसविधिसे यमकी हारी ॥
कहो मुझे समझाय के झटपट छुट जाऊं मैं इस भ्रमसे ॥
मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥
फिर गंगाजी बोलीं मेरी एक रेणुका असंख्यवान ॥
भगिहैं सब यमदूत बुलैहौं मैं तुमको भेजके विमान ॥
एक बिंदु गंगाजलसे जल जाँय पाप नहिं रहे निसान ॥
किये पाप देवीसिंहने यह पाप भी होगये पुष्प समान ॥
वारंवार ये कहत जात हो क्यों बनारसी तुम हमसे ॥
मैं पापी तुम तारणहारी बनिहैं पाप बहुत हमसे ॥

गंगालहरी-बहेर खडी ।

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सबने किया भजन ॥
तब आई ब्रह्ममंडलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥
ब्रह्मरूप निर्भय निर्वानी अखंड गंगाकी धारा ॥
विष्णुसे ब्रह्माके पास आई तब शिवजीने धारा ॥
जटाको उनके शोभा दियो रूपभी सुंदर सुधारा ॥

आगे कहूंगा वृत्तान्त जिस विधि तीन लोकको उद्धारा ॥
अस्तुति करिकै आप ईशने शीश चढाई भये मगन ॥
तब आई ब्रह्म मंडलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥
भागीरथने करी तपस्या मगन भये शंकर भोला ॥
कहा मांग कुछ हमसे तब भागीरथ ये मुखसे बोला ॥
गंगा देउ नाथजी मुझको शुद्ध करो कुलका चोला ॥
तब फिर अपनी जटाको शिवने अपने हाथनसे खोला ॥
एक बिंदु गंगाजल निकला जटासे जब अति किया जतन ॥
तब आई ब्रह्म मंडलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥
एक बिंदुकी तीन धार भईं धारा एक गई पाताल ॥
शेषनागने दर्शन पाये जीवनमुक्त भये सब व्याल ॥
एकधार आकाश गई सब देवते देख भये खुशहाल ॥
हाथ जोड दंडवत करी गंगाने उन्हें तारा तत्काल ॥
एक धार भगीरथ लाये मृत्युलोक तारन कारन ॥
तब आई ब्रह्ममंडलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥
मृत्युलोकमें चलीं वेगसे तब समुद्रने किया विचार ॥
हाथ जोड गंगासे कहा तुम्हरे बलका नहिं पारावार ॥
ये मुझसे नहिं जाय सम्हारा बहुत सिंधुने करी पुकार ॥
तब गंगाने प्रसन्न होकर धारा अपनी करी हजार ॥
नाम पडा गंगासागर कहै बनारसी नित कर दरशन ॥
तब आई ब्रह्ममंडलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥

लावनी ।

श्री गंगाजीके तीर नीर पीने को नाग यक आया ॥
था बडा व विषधरनाग भाग्य कछु वादिन वाके जागे ॥
जब जल पीने वो लगा तो मेंढक देख देख कर भागे ॥
इतनेमें आये गरुड चोंचसे पकडके खाने लागे ॥

झटपट वाको गये निगल प्राण तत्कालै वाने त्यागे ॥
मरतही विष्णु तनु धारा ॥ चढ़ गरुड़ पै यही पुकारा ॥ अब वाहन मिला हमारा ॥
धन धन गंगाको बिंदु मुझे गोविंदै आप बनाया ॥
श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥
शिर मोर मुकुटकी लटक कानमें कुंडल अधिक बिराजै ॥
गल वैजंतीमाल पीत पीतांबर तनुपर साजै ॥
वो शंख चक्र औ गदा पद्मकी सम्पूरण छबि छाजे ॥
यह चरित्र वाके देख देखकर गरुडजी मनमें लाजे ॥
कुछ कहत नहीं बन आवे ॥ गंगा जो चाहे बनावे ॥ चाहे शिवको रूप धरावे ॥
है महिमा अपरंपार पार नहिं सुर नर मुनिने पाया ॥
श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥
फिर श्री गंगाकी आप स्तुती करी गरुडने मुखसे ॥
भई प्रसन्न गंगामात तो वाणी बोलीं यक सन्मुखसे ॥
था बहुत कष्टमें नाग छुटाया मैंने इसको दुखसे ॥
अब तुम इसको वैकुंठ पहुँचावो बसै जाय यह सुखसे ॥
ये गरुड़ने आज्ञा मानी ॥ तब उडे बडे बलवानी ॥ गंगाकी महिमा जानी ॥
झटपट पहुँचे उड़ धाय उसे वैकुंठके बीच बिठाया ॥
श्री गंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥
जो ये स्तुती गंगाकी कानदे सुने औ मुखसे गावे ॥
वो भुक्ती मुक्ती संपूर्ण पदारथ मन मांगे फल पावे ॥
गंगासे बड़ा नहिं और देव कोइ मेरी दृष्टीमें आवे ॥
हैं धन धनवाके भाग जो दर्शन करै और गंग नहावे ॥
कहैं देवीसिंह भजगंगा ॥ तब तेरो मन होय चंगा ॥ मन बनारसीने रंगा ॥
गंगाजीमें तन बोर बोर झकझोरके पाप बहाया ॥
श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥

गंगालहरी अधर-बेहर छोटी ।

सागरकी गिनी जाँय लहर गिने जाँय तारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥
षट शास्त्र गिने जाँय गिने जाँय नर नारी ॥
दश दिशा गिनी जाँय सृष्टिगिनी जाय सारी ॥
सिध साध गिने जाँय गिने जाँय आचारी ॥
राजा रानी गिने जाँय खलक सरकारी ॥
गिने जाँय शाह शाहानी गिने हलकारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥
गिने जाँय नदी नद सिंधु गिने जाँय नाले ॥
गिने जाँय श्वेतरंग लाल गिने जाँय काले ॥
दरखतडाली जाँय गिनी गिने जाँय डाले ॥
छत्तीस रागिनी राग सकल गिन डाले ॥
गिनते गिनते कई हजार शायर हारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥
खग चरिंद जाते गिने गिने जाँय चातर ॥
हरजात गिनी जाँय नगर गिने जाँय घर घर ॥
कागज स्याही जाय गिनी गिने जाँय अक्षर ॥
सरदार गिने जाँय गिने जाँय सागर सर ॥
क्या जाने गंगने कितने शठ निस्तारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥
दिनरात गिने जाँय गिनी जाँय तिथि घडी ॥
शायरी गिनी जाँय गिनी छन्दकी लडी ॥
शायर कायर जाँय गिने गिने जाँय कडी ॥
जंगल खेडा गिनाजाय गिनी जाँय जड़ी ॥

यह सत्य सत्य छंद काशीगिर ललकारे ॥
नहिं जाँय गिने श्री गंगाजी के तारे ॥

यमराजका विष्णुसे श्रीगंगापर फिर्याद करना ।

अब विष्णुसे जाकर यमने यही पुकारा ॥
गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥
लाखों पापी पृथ्वी पै रोज मरते हैं ॥
क्या कहों मैं वो यक क्षणभर में तरतेहैं ॥
मेरे भयसे भी जरा नहीं डरतेहैं ॥
गंगाके गण उनकी रक्षा करते हैं ॥
बिन भजन किये होता उनका निस्तारा ॥
गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥
हिन्दू या तुर्क या बेहना डोम कसाई ॥
भंगी धोबी हडफोड या होवे नाई ॥
गंगाकी लहर जिसे दूरसे दी दिखलाई ॥
फिर अंत समय में उसने मुक्ती पाई ॥
दर्शन करतेही तरा महा हत्यारा ॥
गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥
जो मेरे दूत पापियोंको जाँय पकड़ने ॥
तो गंगाके गण आवें उनसे लड़ने ॥
वो देख देख दूतोंको लगे अकड़ने ॥
और मारे बाण तनु बीचलगे वो गड़ने ॥
मैं लड़लड़के कई लाख लड़ाई हारा ॥
गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥
गंगासे सौ योजन पर एक नगर था ॥
उस नगर में इक पापी का ऊंचा घर था ॥

वह पाप कर्म कर करता रोज गुजर था ॥
मरगया तो उसपर पड़ा एक वस्तर था ॥
गंगाका धोया उसीने उसको तारा ॥
गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥
यह सुनी बात तब विष्णुजी यमसे बोले ॥
गंगाकी महिमा कहां लों कोई खोले ॥
इस नेत्रसे दरशन श्री गंगाके जोले ॥
वैकुंठमें वह फिर झूले सदा हिंडोले ॥
कुछ बस नहीं मेरा चले न चले तुम्हारा ॥
गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥
जब मृत्युलोकसे गंगा आप सिधारि हैं ॥
तब वह पापी फिर कौन विधी कर तारि हैं ॥
उसकालमें जो कोइ पाप कर्म कर मारि हैं ॥
वह आन आनकर नरक तुम्हारो भारि हैं ॥
यमराजजी अब थोडे दिन करो गुजारा ॥
गंगाने बंद करदिया नरक का द्वारा ॥
यह सुनी बात यमराजने घर फिर आये ॥
कुछ हँसे और कुछ कुछ मनमें पछताये ॥
मनमारके यह गंगाको वचन सुनाये ॥
अब तो तुम्हरे थोडे दिन रहने पाये ॥
कहें बनारसी कुछ यमका चला न चारा ॥
गंगाने बंद करदिया नरक का द्वारा ।

बहेर छोटी ।

जौलों पृथ्वीपर है गंगाकी धारा ॥
तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥

मत डरो कोई यमदूतसे मेरे भाई ॥
रक्षा करनेको है श्री गंगा माई ॥
जबसे शंकरने अपने शीश चढाई ॥
तब ईश और जगदीशकी पदवी पाई ॥
शिव बना वोही जिसने यक गोता मारा ॥
तौलौं यमराजा करि हैं कहा तुम्हारा ॥
कुछ जोर न यमको चले पाप नहिं लागे ॥
औ काल भी देखे दूरसे तो वह भागे ॥
जो गंगाके दर्शन कर काया त्यागे ॥
वह अमरलोक पुर बसे अलख हो जागे ॥
ये निश्चय करके मानो वचन हमारा ॥
तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥
चाहे हो पुत्र कुपुत्र तो माता पाले ॥
कुछ कर्म अकर्म न उसके देखे भाले ॥
जो एक बार प्राणी गंगामें न्हाले ॥
तो जन्म मरणके सकल पापको टाले ॥
गंगाके बलसे दल सब यमका हारा ॥
तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥
मत चलो हमारे मित्र किसीसे डरके ॥
निर्भयहो दर्शन श्री गंगा के करके ॥
कहै देवीसिंह गंगाको ध्यानमें धरकै ॥
जैहो भवसागर सहजै आप उतरकै ॥
गंगाकी महिमा जगमें अपरंपारा ॥
तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥

स्तुति श्रीकृष्णके बाँसुरीकी–बहेर तवीर ॥

हरि प्रथम बजाई जब बँसुरी राधावर कुंजविहारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठ धाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
पडीभनक श्रवण मुरलीकी जब तब सब सखियां उठधायचलीं ॥
कोउ एक दृगमें सुरमा देकर कोउ यककर मेहँदी लगाय चलीं ॥
कोइके आधे दांतन मिस्सी कोउ आधा शीश गुँथाय चलीं ॥
कोउ आधीसारी तन ढांके कोउ योवन खोल देखाय चलीं ॥
कोऊ लट छिटकाय चलीं झटपट लज्जा तज सकल विचारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
कोउ पाँवनसे बांधे पहुँची कोउ हाथन पायल डाल चलीं ॥
कोउ कंठमें धारे किंकिणिको और कोउ कटि पहने मालचलीं ॥
कोउके कानन नथुनी लटकन कोउ खोले शिरके बाल चलीं ॥
कोउके नाकन बाली झुमके जो चलीं तो सब बेहाल चलीं ॥
जब पहुँची कृष्णनिकट सखियां तबहिं लखा गिरिवरधारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
फिर बोले कृष्ण कौन हो तुम कैसे तुमने शृङ्गार किये ॥
पाँयन पहुँची हाथन पायल क्यों कटि मुक्ता के हार किये ॥
काननमें नथुनी और लटकन ये भूषण बिना विचार किये ॥
नाकनमें बाली और झुमके काहे तुमने ब्रजनार किये ॥
ये सुनत वचन तब दिया जवाब ब्रजकी युवती दो चारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
जब तनुकी सुध कछु नाहिं रही तब भूषण कौन सुधार चले ॥
मन तो अटका इस बँसुरीमें दृगसे अँसुवनकी धार चले ॥
तुम राग बजाओ राग करो ऐसा नहिं कोउ विहार करे ॥
मँझधारमें नांव पडी हमरी तुम बिन को बेडा पारकरे ॥

तुमपति हमरे हम दासी सब ये दिया ज्वाब दुखयारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
लख प्रेम सकल ब्रजवनिता का फिर कृष्णने मुरली अधर धरी॥
मोहन भी वादिन मोह गये वह तान जो निकली राग भरी ॥
तन मनकी सुध कछु नहीं रही जब श्री राधापर दृष्टि परी ॥
कहे बनारसी बोलो संतो जय कृष्ण रधिका हरी हरी ॥
ऐसी लीला नहिं करी कोउ जैसी करी हरि औतारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥

स्तुति श्रीकृष्णकी बाँसुरीकी–बहेर तवीर ।

हरिबँसुरीकीध्वनिसुनब्रजयुवतींचलींझुंडकेझुंडमगनमनकर ॥
धन्यधन्य हरी धन्यधन्य सखी धनधनबँसुरी तन मन लियोहर॥
मनप्रेम प्रबल अति तनु सुंदर सब वेद सुरति अस गुण गावें ॥
तजलाजसकलगृहकाजछोडचलीं हरिपदपंकजमनभावें ॥
हरिआननचन्द्रचकोरसखीछबिनिरखिनिरखिकरसकुचावें ॥
कुछ कहि न सकैं हितकी बतियां अति लज्जितमनमें मुसकावें॥
अतिव्याकुलगातमदनमदकरसखिचाहतमिलैंमनोहरवर ॥
धन्यधन्यहरीधन्यधन्यसखीधनधनबँसुरीतनमनलियोहर ॥
मनकी वांछा लख मुर्लीधर व्रज युवतिनसंग विहार करें ॥
यक एक हरी यक एक सखी यकयकके कर यकयक पकरें ॥
यक यक मुर्ली दैगोपिकनको हरि कहत बजाओ तबहिं बरें ॥
ये प्रेम कथा सुन हँस हँस कर मुखधरत न बजत प्राण बिखरें ॥
कहैं व्रजयुवतिनहमकीन्हकहा अबतुमहिं बजाओ नटनागर ॥
धन्यधन्यहरी धन्यधन्यसखी धनधनबँसुरी तनमनलियो हर ॥
यक यक तरुवरतर यकयक हरियकयकयुवतिनसँग बात हरें ॥
इत घर आवें यशुदाके पास उत गोपियनबीच प्रभात करें ॥

हरिढीठ पकड मुखचूमैं और बात सखी सकुचात करैं ॥
यह माँगतवर विनती करकर विधना नित ऐसी रात करैं ॥
जब तिनके पति आवत सब गृह पावत अपनी पत्नी घरघर ॥
धन्यधन्यहरी धन्यधन्यसखीधनधनबँसुरी तनमनलियोहर ॥
शिवनारदआदिसकलऋषिमुनिसबदेखतगगनविमानधरे ॥
कौतुक गिरिधरके लख न परें तन मानुषब्रह्म अखंडहरे ॥
युवतीतनुनारी वेद सुरति रविलीलाब्रजमें खेलकरे ॥
हरिपुण्यनपापदुःखनसुखकछुवेदान्तकेकर्ताखेदपरे ॥
रचिछंदयहकाशीगिरिस्तुतिकारि मांगत भक्ति पदारथवर ॥
धन्यधन्यहरी धन्यधन्यसखीधनधनबँसुरी तनमनलियोहर ॥

निर्गुण पलँग-बहेर खड़ी ।

चलोआज हिलमिलके सोवें प्रीतम प्यारेके अब संग ॥
सात द्वीप नव खंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥
पंचतत्त्वसे अलग है वो और तीनों गुणसे न्यारा है ॥
दिव्यरूप सुंदरसे सुंदर अपना प्रीतम प्यारा है ॥
दरवाजे पर चौकीदेता जिसके कुतुब सितारा है ॥
जहां न चंदा सूर्य अग्नी और पवनका तनिक गुजाराहै ॥
सो मेरे इस शरीर में है उसीसे है अपना सत्संग ॥
सात द्वीप नवखंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥
सदैव एक रंग बनारहै नहीं वृद्ध होय नहिं बाला है ॥
उसीसे चंदा सूर्य्य अग्निमें प्रकाश और उजियाला है ॥
उसीसे तू कर नेह अरी बुद्धी वो भोला भाला है ॥
इस शरीर की सेजमें है वो पर इससे निरियाला है ॥
गले उसीसे लगके सोऊं अपने मनमें यही उमंग ॥

सात द्वीप नवखंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥
नेइ निवारसे बिना है वो और कंचनके चारों पाये ॥
लगे हैं जिसमें पँचरँग तकिये तहां सजन वो दरशाये ॥
योगयुक्तिसे शीश महलमें जो प्राणी आये जाये ॥
अपने पतिसे वही मिले जो प्राणायामसे लवलाये ॥
सोवत जागत चित्त उसीमें लगारहै सुख पावे अंग ॥
सात द्वीप नवखंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥
पतिव्रता है वही जो कोई ऐसे पतिसे भोग करे ॥
दोनों सुख पावैं उससे मिल भोगकरे और योग करे ॥
जन्म मरणके दुःखसे छूटे दूर जगतका रोग करे ॥
देवीसिंह कहै आवागमन मिटजाय न मनमें शोक करे ॥
बनारसी सोवे अपने साईंके संग और नहावे गंग ॥
सात द्वीप नवखंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥

निर्गुण वर्षा—बहेर खडी।

निरआसरे है निरंकार जहँ अमृतकी वर्षा वरसे ॥
निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥
निरआसरे अनहद घन गरजे नाद वीन बोले चाले ॥
निरआसरे अपनी हरियाली आपी वो देखे भाले ॥
निरआसरे उलटे बहते हैं ब्रह्मांड में नदी नाले ॥
निरआसरे दामिन दमकें चलें निरआसरे बादल काले ॥
निरआसरे वर्षे आषाढ सावन भादों उसके घरसे ॥
निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥
निरआसरे स्वाती की बूँद जब प्राण पपैहा पान करे ॥
तभी मिटै तृष्णा उसकी जब नारायणका ध्यान करे ॥
निरआसरे हो मुक्त उसीसे वह मुक्ताकी खान करे ॥

निरआसरे हैं असोज जो सारी वर्षा में पान करे ॥
निरआसरे हो गजमुक्ता स्वाती की बूँद जब गज परसे ॥
निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥
निरआसरे ब्रह्मा विष्णु औ वो महेश उसमें नहाते हैं ॥
निरआसरे श्री सूर्य्य किरणोंते अमृत जल बरसाते हैं ॥
निरआसरे हैं नक्षत्र जो सब वर्ष वर्ष सुख पाते हैं ॥
निरआसरे हैं चन्द्र जडीको सदा पियूष पिलाते हैं ॥
निरआसरे गंगाजल बरसें शिव जो जटा खोलें करसे ॥
निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु वरसे ॥
निरआसरे दक्षिण मैं कंचन गायत्रीने बरसाया ॥
निरआसरे हैं शक्ती और हैं निरआसरे उसकी माया ॥
निरआसरे हैं आदि ब्रह्म ये देवीसिंहने छंद गाया ॥
निरआसरे हैं बनारसी जिसने घटमें दर्शनपाया ॥
निरआसरे वो चिरंजीव जिस जिसकी लगन लागी हरिसे ॥
निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥

लोकालोककी वर्षा–बहेरखड़ी ।

चन्द्रलोकसे अमृत बरसे सूर्यलोकसे बरसे ज्ञान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान वरसे सोहं करते हैं पान ॥
इंद्रलोकसे वर्षा बरसे सकल सृष्टिका हो कल्यान ॥
कुबेरके घरसे धन बरसे पावे तो होवे धनवान ॥
आषाढ सावन भादों कुँवार ये चार महीने दो ऋतु जान ॥
स्वातीसे बरसे मुक्ता और अनेक ओषधिकी वो खान ॥
विष्णुलोकसे भक्ती बरसै पूजा जप तीरथ और दान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥
सत्यलोकसे धर्म बरसता सत्य बात बोले गुणवान ॥

स्वर्गलोकसे स्वरूप बरसे सुंदरताई तनमें जान ॥
शिवके लोकसे तप बरसे जो करे सो होवे भानु समान ॥
वेदसे बरसे गायत्री निशि दिन जपते हैं संत सुजान ॥
गौलोकसे गोरस बरसे लूटे ब्रजमें श्रीभगवान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥
सात स्वर्ग ते गंगा बरसे जिसमें सब करते स्नान ॥
यमके लोकसे यमुना बरसे वेद शास्त्र ये कहैं पुरान ॥
शक्तिलोकसे सरस्वती बरसे उत्तम जिसकाहै सुस्थान ॥
सो मेरी जिह्वा पै बैठके भाषा में करे वेद बखान ॥
गुणबरसे गणपती लोकसे औ विद्याका हो सन्मान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥
बरसे राग गंधर्वलोकसे करैं अप्सरा सुंदर गान ॥
सदा वो गावें भगवतके गुण सुनेसे होवें पवित्र कान॥
देवीसिंह कहै बनारसीके ख्यालसे बरसे मीठी तान ॥
कही ये मैंने निर्गुण वर्षा सुनो लगाओ ब्रह्ममें ध्यान ॥
सर्व लोक मेरे शरीर में मुझे दिखावे कृपानिधान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥

धर्म संन्यास वेदांतगोपिनी प्रश्न–बहेर खड़ी ।

सर्व धर्मसे परे वेदमें लिखाहै सुन संन्यासका धर्म्म ॥
क्या कोइ जाने पण्डित कि संन्यासीका कौन है कर्म्म ॥
ग्रहण करें तो बने नहीं और त्याग करें तौ क्या त्यागें ॥
सोवें तो निद्रा नहिं आवे जागें तो सोवत जागें ॥
युद्ध करें तो धर्म्म घटै औ पापलगै रणसे भागे ॥
त्रयलोकी के दाता हैं फिर क्यों भिक्षा घर घर माँगे ॥
उनकी गती वही जाने नहिं मिले किसीको जिनका मर्म ॥

क्या कोइ जाने पण्डित कि संन्यासीका कौन है कर्म ॥
मौनरहे पर बोलैं सबसे बरत करैं और सब खावें ॥
आसन दृढ होय बाट चलैं जित चाहें वो उतही जावें ॥
पढे नहीं एको अक्षर और वेदशास्त्र निशि दिन गावें ॥
आँख मूँद देखें सबको परे आप दृष्टिमें नहिं आवें ॥
वो क्या देखेंगे उनको जिनकी दृष्टिमें लगा है चर्म्म ॥
क्या कोइ जाने पण्डित कि संन्यासीका कौन है कर्म्म ॥
योग विषे वो भोग करैं और भोग विषे साधें वो योग ॥
शोक विषे वो हर्ष करैं और रोग विषे रहे सदा निरोग ॥
वियोगमें संयोग करैं संयोग विषे रहै बना वियोग ॥
लोक विषे परलोक सुधारें इसको समझें ज्ञानी लोग ॥
जिनकी मायासे सृष्टीमें व्याप रहाहै सबको भर्म ॥
क्या कोइ जाने पण्डित कि संन्यासीका कौन है कर्म ॥
देह विषे वो रहैं विदेही माया में रहें निर्माया ॥
देवीसिंह ए कहैं कि उनका पार किसीने नहिं पाया ॥
चार वेद षट शास्त्र अठारा पुराणने योंहीं गाया ॥
सर्व धर्मसे बड़ा धर्म संन्यास मेरे मनमें भाया ॥
बनारसी तीनों गुणसे है रहित न समझे धर्म अधर्म ॥
क्या कोइ जाने पण्डित कि संन्यासीका कौन है कर्म ॥

बहेरखडी (उत्तर) ।

कर्मकरै और फल नहिं चाहै यही तो है संन्यासका कर्म्म ॥
धर्म्म अधर्म्म को समकर देखे इससे परे न कोई धर्म ॥
करैं आत्माको वो ग्रहण और शरीरको त्यागें अभिमान ॥
सोवत जागत सुमिरण में रहैं सदा रूप देके निर्वान ॥
निर्बलसे नहिं लड़ें लड़ें उससे जो कोइ होवे बलवान ॥

कुबेर उनकी आज्ञामें रहैं भिक्षासे करते गुजरान ॥
जीव ब्रह्मको एक समझते तनिक न उनके मनमें भर्म ॥
धर्म अधर्म को समकर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥
गुह्य ज्ञान की बात करैं अज्ञानी नहिं समझन पावें ॥
येही बोलने में हैं मौन सब अर्थ तुम्हैं हम समझावें ॥
भोजन तो ये क्षुधा करैं हम कुछ नहिं खाँय और सब खावें ॥
बैठे रहैं एक आसनपर योग मार्गसे फिर आवें ॥
लोहेसे हैं कडा और मन मोमसे भी है जिनका नर्म ॥
धर्म अधर्मको समकर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥
इंद्रीका जो धर्म है वह अपना अपना करती है भोग ॥
अपने को कर्ता नहिं माने योग विषे है येही भोग ॥
शरीरको दुख सुख है आत्मा सदा अवध्यहै सदा निरोग ॥
जिनका ऐसा ज्ञान उनको एकहि है संयोग वियोग ॥
ब्रह्मज्ञानकी बात का कोई ब्रह्मज्ञानी पावे मर्म ॥
धर्म अधर्मको समकर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥
शरीरको धारे हैं पर वो आप नहीं बनते काया ॥
मायासे हैं वोहि रहित हैं जिनके बीच योगमाया ॥
देवीसिंह ये कहे की जिसने श्रीकृष्णका गुण गाया ॥
बनारसी सुन उस प्राणीने सहजहि परमधाम पाया ॥
जिनके मनमें द्वैत नहीं है वो क्या जाने धर्म अधर्म ॥
धर्म अधर्मको समकर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥

योगाभ्यास—बेहर नई ।

में सत्य सत्य कहू हाल सुनो अहेवाल तनका बयान ॥
हैब्रह्मांडमें बादशाहब्रह्मसोईआदि ज्योतिभगवानसोयमभगवान ॥
जहाँ महत्तत्त्व है पवन करो तुम श्रवण सोई है शक्त ॥

रहे पारब्रह्म के संग वह है अर्द्धंग बात कहूं सत्त ॥
हैं शीशमें श्रीमहादेव उन्हींको सेव करो तुम भक्त ॥
हैं वही ब्रह्मके खवास हाजिर रहैं वहां हरवक्त ॥
सुनप्यारे जहँ तरह तरहके रागरंग होते हैं ॥
सुन प्यारे उस बादशाहके सभी संग होतेहैं ॥
दोहा--हैं चार वो उसके वजीर उनका जुदा जुदा सुन नाम ॥
ब्रह्मा और विष्णु वो रुद्र करे श्री गणेश पूरण काम ॥
ये अगम अगोचर छंद हरफ कडीबंद ज्ञान विज्ञान ॥
है ब्रह्मांडमें बादशाह ब्रह्मसोई आदिज्योतिभगवानसोयमभगवान॥
दो नयन हैं चौकीदार बडे हुशियार फिर दिन रात ॥
हैं खबदार दो कान इधर धर ध्यान खबर ले जात ॥
नासिका मालनी दोई लिये खुशबोई पुष्प अरु पात ॥
वह ब्रह्म करै सब भोग कही ये महायोगकी बात ॥
तोडा--सुन प्यारे ये जिह्वापढके सभी वो हाल सुनावे ॥
सुन प्यारे और कंठ गंधब राग रागिनी गावे ॥
दोहा--हैं मुखमें वत्तीस दांत सोई हैं हीरे मोती लाल ॥
वह ब्रह्म पहेनके भूषण सुंदर सदा रहै खुशहाल ॥
दिल दलेल रहता संग करै वह जंग युद्ध घमसान ॥
है ब्रह्माण्डमें बादशाहब्रह्मसोईआदिज्योतिभगवानसोयमभगवान
पढ मुखसे चारों वेद खोल दिया भेद सो चारोंधाम ॥
ऋग्वेद है बद्रीनाथ और श्री जगन्नाथ हैं श्याम ॥
तीसरा अथर्वण वेद न कर निषेध भजो हरनाम ॥
सोई रामनाथ रमि रहे गुणीजन लहैं सिद्ध हो काम ॥
तोडा--सुन प्यारे हैं यजुर्वेदमें बनी द्वारका पुरी ॥
सुन प्यारे कहो अलख निरंजन छोडो बातें बुरी ॥

दोहा--मन घोडे पर असवारी करता ब्रह्म बादशाह राजा ॥
हिरदे हाथी को पारब्रह्मने खूब तरहसे साजा ॥
दमदिवान दफ्तर दार बडा पुरकार ज्ञान की खान ॥
हैब्रह्माण्डमेंबादशाहब्रह्मसोईआदिज्योतिभगवानसोयमभगवान ॥
हैं तरह तरहके महल औ सुंदर पहल हीरोंसे जडे ॥
औ सत्तर दोबहत्तर खाने नव दरवाजे खडे ॥
दशमी खिरकीमें आप रहा वो व्याप शब्द ध्वनि झडे ॥
बाजे नाद बीन और शंख आपनी शंख रहे निम छडे ॥
तोडा--सुन प्यारे हैं शीशमहल में आदि ब्रह्मका बासा ॥
सुन प्यारे अपनी इच्छा कर उसने जगत प्रकाशा ॥
दोहा--वह परात्पर है आप और नहिं कोई उससे परे ॥
औ अव्यय अविनाशी संन्यासी नहिं जन्में नहिं मरे ॥
है मुक्ति उसीके युक्ति उक्तिसे किया नाम नीसान ॥
है ब्रह्माण्डमेंबादशाहब्रह्मसोईआदिज्योतिभगवानसोयमभगवान॥
है,पांच तत्त्व का तख्तबना शुभबख्त तीन गुण भरा ॥
सब है मायाका खेल उसीमें मेल निरंजन करा ॥
ले तेज ताजको ईश आप जगदीशशीश परधरा ॥
जो धरता उसका ध्यान ज्ञानसे ओ भवसागर तरा
तोडा--सुन प्यारे रही कलाकीकलँगीझलकफलकसेदूनी ॥
सुन प्यारे उस पारब्रह्मकी अगम ज्योति है धूनी ॥
दोहा--तन तख्तके ऊपर बैठ बादशाह करै अदल इन्साफ ॥
चाहे जिसको दे सजा करै वह चाहे जिसको माफ ॥
हर निराकार निरधार वो है अपरंपार उसे पहिचान ॥
हैब्रह्माण्डमेंबादशाहब्रह्मसोईआदिज्योतिभगवान सोयमभगवान॥

सब रोम रोम है फौज कररही मौज कटे और बढे ॥
कोई पीछे को हटजाय कोई बढजाय कोई जाचढे ॥
हैं दोनों हाथ हथियार करैं सबकार हरीने गढे ॥
और शब्द नकारा चोबदार चित नाम नकीब पढे ॥

तोडा—सुन प्यारे ये फख्र फकीरां पारब्रह्मसे मांगे ॥
सुन प्यारे नाभी में सर है भराकमल सबलागे ॥

दोहा--बिनलिंग भग पैदा करै सकल संसार ब्रह्म ब्रह्मचारी ।
ओ आपी आप है एक नहीं वो पुरुष नहीं वो नारी ॥
हैं हलकारे दो पांव कहे सब नाम देवीसिंह जवान ॥
हैब्रह्माण्डमेंबादशाहब्रह्मसोईआदिज्योतिभगवानसोयमभगवान॥

योगाभ्यास गोपिनी—बहेर छोटी ।

है ऊपर कुआँ औ नीचे जिसके डोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ डोरीके ऊपर घिरनी चक्कर खावे ॥ वो मधुर-मधुर ध्वनि बोले मोहिं सुहावे ॥ जब तलक वो डोरी कुएँ में आवे जावे ॥ तब तलक कुआं वो नहीं सूखने पावे ॥ उस कुएँ के ऊपर खडी हजारों गोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ मुख बंद कुएँ का रहे और पानी दरशे ॥ वोहदेखे जिसकी डोर लगी रहे हरसे ॥ जब पनिहारिन कुछ काम न राखे घरसे ॥ तब अमृत जलको छके छुटे सब डरसे ॥ वह नित उठ गागर भरे बनी रहे कोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ जब उलटा डोल वह जाय तो पानी आवे ॥ फिर सींचे अपना बाग अमर फल पावे ॥ है काहे का वोह डोल औ कौन बनावै ॥ जो पूरा योगी होय तो मोहिं

बतावे ॥ उस कुएँके ऊपर नहीं चले बरजोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ उस कुएँ पै गंगा यमुना सरस्वती हैं ॥ औ महादेव अविनाशी पारवती हैं ॥ नौ नाथ चौरासी सिद्ध और बाल यती हैं ॥ नाना प्रकारकी उसमें बेलपती हैं ॥ है राह वहां की बहुते साकर खोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ लाखों पनिहारिन एकहै यहां पनिहारा ॥ उस पनिहारे ने सबको भरदी धारा ॥ जिसने पाया वह नीर तो जन्म सुधारा ॥ कहै बनारसी उसकी गति अपरंपारा ॥ वो न्हावें उसमें जिसका पंथ अघोरी। पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥

उत्तर–बहेर छोटी।

ब्रह्माण्ड कुआँ और श्वासा जिसकी डोरी॥जिह्वा पनिहारिनपिये अमीरस चोरी ॥ जो गुरु देवे उपदेश कानमें आप ॥ तो जिह्वा उसका करती गुपचुप जाप॥ सुमरन करनेसे दूरहोय संताप॥ ये वो चोरीहै जिसमें कुछ नहिं पाप ॥ मन मगन रहै गुण गावे नंद किशोरी॥ जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ कर प्राणायाम जब उलटा प्राण चढावे ॥ तब वह अमृत फिर उसी डोलमें आवे॥ मुँह उलटा उसका रहै बूँद टपकावे ॥ होजन्म मरणसे रहित अमर होजावे ॥ मैं सत्य सत्य कहूँ हाल बात सुन मोरी॥ जिह्वापनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ हैं नव दरवाजे खुले औ दशवां बंद ॥ जहाँ आदिज्योति है पूरण परमानंद ॥ जो देह भावको छोंड रहै निर्द्वंद ॥ वोह देख उसको कटै जगत्का फंद ॥ निशिदिन खेलैं फिरि आप ब्रह्मसँग होरी॥ जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरसचोरी॥ अनहद बाजोंके बीचमें घिरनी डोले ॥ हर श्वासश्वास पर मधुर मधुर ध्वनि बोले ॥ जो ज्ञानगंगते अपनी आत्माघोले॥ वह देखे जो भीतरकी आंखें खोले ॥ ज्ञानीसे काल भी नहीं करे

बरजोरी ॥ जिह्वापनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ सब सृष्टी है पनिहारी औ ब्रह्म पनिहारा ॥ है सबके बीचमें उसीका देखपसारा ॥ कहैं देवीसिंह वो सबमें सबसे न्यारा ॥ जिस जिसने उसको लखा वो उसका प्यारा ॥ उस नीरमें काया बनारसीने बोरी ॥ जिह्वापनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥

दवा नारायणके नामकी–बहेर खडी ।

हर एक ढूँढ़ते हैं जंगलमें दवा रसायनकी बूटी ॥
नारायण हैं संजीवन भाई वो बूटी हमने लूटी ॥
कोई ढूँढ़ता उस बूटी को जिसमें पारा तुरत मरे ॥
कोई खोजता जडीको जो तन कायाके दुःख हरे ॥
बहुत लोग खोदें पृथ्वीको वृक्ष काटते हरे भरे ॥
उनको भी फिर यम काटेगा कहे शब्द ये खरे खरे ॥
हरी हरी बूटी है समझो हरी नाम है सबसे परे ॥
उस बूटीको जिसने पाया वो भवसागर सहज तरे ॥
राम रसायन पाई हमने और रसायन सब छूटी ॥
नारायण है संजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ॥
कोई कहे हम सिंगरफ मारें और काढ़ें गंधकका तेल ॥
कोई देखते जडी बिरंगी कोई ढूँढ़ते अम्मर बेल ॥
हमने सबको देखा यारो ये तो हैं सब झूठे खेल ॥
अमर नाम है दत्त निरंजन उसको अपने मनमें मेल ॥
मनको मारके बना ले कुस्ता जो गुजरे रह दिलपर झेल ॥
तनको शोधके शुद्धकरो तुम तजो झूठ और तजो झमेल ॥
जौन शख्स फूंके धातुको उनके हिये कि हैं फूटी ॥
नारायण है संजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ॥
कोई मारते अभ्रख तांबा कोई फूँकते हैं हरताल ॥

हमने अपने मनको मारा मिले हमें गोविंद गोपाल ॥
कोई कहै हम चांदी मारें जिससे हो कुछ धन और माल ॥
इन कर्मोंको जो कोइ करता उसका होता हाल बेहाल ॥
कोई कहे हम सोना मारें और करें पैसों को लाल ॥
ठग ठग के लूटें दुनियाको उसको एक दिन ठगेगा काल ॥
बहुत घोटते खरलमें धातू संतोंने काया कूटी ॥
नारायण है संजीवन भाई वो बूटी हमने लूटी ॥
कोई मारते हैं कलई को जिसमें होवे पुष्ट शरीर ॥
घरको फूँकके तबाह किया वो अमीरसे होगये फकीर ॥
साधूका नहिं धर्म जो कि मारें धातू करके तदबीर ॥
कहे देवीसिंह हरी हरी कहो यह जिह्वा हैगी अकसीर ॥
खाक सारखी जबां रसायन इसमेंहै हर एक तासीर ॥
जबांसे वह मुर्देको जिलादे जबांसे देडाले जागीर ॥
बनारसी ये कहैं हमारी राम नाम हैगी घूँटी ॥
नारायण है संजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ॥

कामधेनु-बहेर लँगडी ।

यह काया है कामधेनु कर प्रेम प्रीति हमने पाली ॥
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देनेवाली ॥
मगन रूप मस्तक झलके संतोष सुमतके सींग खडे ॥
नहीं वो मारें किसीसे नहीं मरे और नहीं लडे ॥
हीरे मोती लाल और हरएक रतन रसनामें जडे ॥
कृपा और करुणाके दोनों कान नहीं छोटे न बडे ॥
त्रय गुणके हैं तीन चिह्न कहिं श्वेत श्याम कहिं है लाली ॥
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छाफल देने वाली ॥

दया धरमके दृग दोनों जैसे रवि शशिका उजियाला ॥
बनी नासिका नाम निश्चय रूपी सबसे आला ॥
अपार महिमाका मुख उसमें मंत्र रूप फिरती माला ॥
अपनी कायाको हमने कामधेनु करके पाला ॥
जस जिह्वा और दिव्य दंत कल्याण कंठ रेखाकाली ॥
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देनेवाली ॥
परमतत्त्वकी बनी पीठ और उग्रतेजका उद्र भला ॥
परमारथकी पूंछ हिलरही करे हर एक कला ॥
चतुराईके चारों थनमें सम दृष्टि सम दूध ढला ॥
चरचारूपी चरण चारों सुंदर सबसे अबला ।
जगमगात हिरदेमें जगमग ब्रह्मज्योतिकी उजियाली ॥
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छाफल देने वाली ॥
हमने धार दुही धीरजकी अब अपना उद्धार करा ॥
छान छानके दूधको हिरदेकी हांडी में भरा ॥
ज्ञानसे गरम किया इसको संजीवन जामन बीचधरा ॥
जमादहीको मथा छल छिद्र छाँछ नहिं रही जरा ॥
मुक्तिरूप माखनपाया हुई पूरी मनशा मनवाली ॥
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देनेवाली ॥
जो मांगे सो पावे इससे ऐसी काया कामधयन ॥
विश्वरूप है जो देखे इसको उसको होय चयन ॥
बनारसी कहै इसे देखकर खुशी हमारे हुये नयन ॥
रंग रंगकी पढें वाणी और बोलें मधुर बयन ॥
सबकी मनशा पूरण करती कोऊ नहिं फेरे खाली ॥
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ॥

ख्याल वेदांत-बहेर जीकी ।

सबके बीचमें है और देखाई नहीं दे गोविंद ॥
हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दजी ॥

भीतर की गईं फूट देय बाहरसे देख लाई, कहें ये बाप हैं ये माईजी ॥ मरजावें तो कोई साथ नहिं चले बहन भाई, या चाचा हो या हो ताईजी ॥

झूठ बात नहिं बोले बोले सत्य वचन ये रिंद ॥
हुआ दुनिया को मोतियाबिन्दजी ॥

गोदी में लडका औ ढिंढोरा शहेरमें फिरवाते, मसल जो है वोही हम गाते जी ॥ इसी तरहसे घटमें हर बाहर खोजन जाते मिलै नहिं उलटे फिर आतेजी ॥

मुसलमान मक्के जा भटके हिन्दू भटके हिंद ॥
हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दजी ॥

अरे मूढ़ अज्ञान तू क्यों भटकै है चारों धाम, तेरे है घटमें आत्मारामजी; उन्हें तू क्यों नहिं देखे जो हिरदेमें करे विश्राम, नाम जप तो तेरा हो नामजी ॥

घटमें आत्मा सूझपडे नहिं योंहि गमाई जिन्द ॥
हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दजी ॥

जगन्नाथ औ बद्रीनाथ सब हम भी फिर आये, कृष्ण इस हिर-देमें पायेजी ॥ देवीसिंहने ज्ञान ध्यानके सदा छंद गाये, रामके चरणों चित लायेजी ॥

बनारसीने ज्ञानदृष्टिसे दिया जगत्को नींद ॥
हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दजी ॥

शुद्ध वेदांत-बहेर जीकी ।

नहिं करों मैं ग्रहण और कुछ त्याग न हमसे होय ॥
न पाया कछु दीना खोय जी ॥

नहिं रैनिको सोवैं हम और दिनमें नहीं जागें, लड़ाई लड़े न हम भागेंजी ॥ ज्ञान अग्निमें दग्ध करें हम कर्मन तन दागें, न देवें दान न कुछ माँगेंजी ॥

सुखपावें तो हँसे नहीं दुखमें देवें रोय ॥

न पाया कछु न दीना खोय जी ॥

नहीं रैन वहाँ होय और जहां दिनका नहीं प्रकाश, हमारा निशिदिन वहीं निवासजी॥ नहीं किसीसे दूर बसें हम नहीं कोईके पास, न स्वामी बने न कोई के दासजी ॥

अनहोनी होनीसे परे हम सोहं पद है सोय ॥

न पाया कछु न दीना खोय जी ॥

नहीं शत्रुसे विरोध अपना मित्रसे नहीं सनेह, नहीं हम देह हैं नहीं विदेहजी ॥ वनमें अपना बास नहीं और नहीं हमारे गेह, न चाहें धूप न चाहें मेहजी ॥

मात पिता दारा सुत भगिनी, सब हैं और नहिं कोय ॥

न पाया कछु न दीना खोय जी ॥

धर्म्ममें हम नहिं पुण्य चाहैं, और अधर्ममें नहिं पाप, न दें वरदान न कोई को शापजी ॥ जिधरको देखें एक ब्रह्म सर्वज्ञ रहा है व्याप, अलखको लखा अलखभये आपजी ॥

बनारसी कहै एक है वह मत समझो उसको दोय ॥

न पाया कछु न दीना खोय जी ॥

श्रीकृष्ण और शिवजीका स्वरूप वर्णन–बहेर जीकी ।

शिव गौरा को सब कोइ कहते ये दोऊ येकी अंग ॥

कृष्ण शिव हम कहते अर्द्धंग भला ॥

आधे शीशपर जटा औ आधे लटके लट काली ॥

आधे शिव आधे वनमाली जी भला ॥

आधे मुख वेदांत और आधे वेदकी ध्वनि आली ॥
करें आपसमें बोला चाली जी भला ॥
दोहरा–कहें गौरजा सुनो लक्ष्मी देखो पतीका रूप ॥
ऐसा रूप नहीं देखाता सो देखो आज स्वरूप ॥
आधे शिर मुकुट आधे शिर गंग भला ॥
आधे शीशपर चन्द्र और आधे चंदनकाहै खौर ॥
इधर मुरछल और उधर हो चौंर भला ॥
आधे मुख माखन और आधे धतूरेकाहै कौर ॥
आधा अंग श्याम आधा अंग गौर भला ॥
दोहरा–आधे अंगमें भस्म लगी आधे अंग लगी सुगंध ॥
आधा अंग है क्रोधवंत और आधा अंग आनंद ॥
आधे अंग वस्त्र आधा अंग नंग भला ॥
आधे मुख मुरली बाजे आधे मुख बाजे नाद ॥
न उनका अन्त न उनका आदि भला ॥
आधे मुख अमृत और आधे हलाहलकाहै स्वाद ॥
दूर करैं क्षणमें विघ्न विषाद भला ॥
दोहरा–आधे अंगमें सर्प और आधे अंगमें भूषण हेम ॥
आधा अंग है कर्म रहित और आधे अंगमें नेम ॥
आधा ब्रह्मचर्य आधा शरभंग भला ॥
आधे कमरमें लँगोटा आधे कटकछनी कसे ॥
दोनों अंग एक अंगमें बसे भला ॥
आधा आसन गरुडपर आधा नंदीगणपर लसे ॥
ये शोभा देख मेरा मन हँसे भला ॥
दोहरा--अर्ध स्वरूप है महाकाल और आधा पालनहार ॥

काशीगिरि ये कहैं हैं उनकी महिमा अगम अपार ॥
देख सुर नर मुनि होगये दंग भला ॥

एक रूपमें चाररूप—बहेर लँगडी ।

आधे अंगमें कृष्ण लक्ष्मी आधे में शिव पारवती ॥
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती ॥
एक समय मैंने भक्ती कर कहा हरीहरसे भाई ॥
एक अंगमें मुझे तुम चार रूप देव दिखलाई ॥
शिवके बायें गौरि दाहिने श्री लक्ष्मी यदुराई ॥
भक्तके वशहैं प्रभु यह महिमा वेदोंने गाई ॥
ऐसाई रूप दिखाया मुझको लक्ष्मीवर और गवरपती ॥
एक अंगमें रूपहैं चार ये वर्णन करैं यती ॥
श्रीकृष्णके मोर मुकुट शिवका जूडा बँध रहा विशाल ॥
गौर को सोहैं हार फूलोंके रमाके मुक्तामाल ॥
शिव धारैं भस्मी माथेपर श्रीकृष्णके केसर भाल ॥
रमाको सोहैं वह भूषण दिव्य गवरके लपटे व्याल ॥
चारवेद चारोंकी स्तुति करैं न पावैं पाव रती ॥
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती ॥
श्रीकृष्णके शंख हाथमें शिवजी करमें लिये कपाल ॥
रमा बजावें वो चुटकी गौरा दो करसे दें ताल ॥
मनमोहनकी मुर्ली बाजे शिवका डमरू बजे धमाल ॥
गौरके माथे पै चंदन रक्त रमाके बिंदीलाल ॥
शिव योगी हरि ब्रह्मचारी लक्ष्मी कुँवरी और गौर सती॥
एक अंगमें रूप है चार ये वर्णन करैं यती ॥
श्रीकृष्णके चक्र सुदर्शन शिवजी करमें लिये त्रिशूल ॥
पार्वतीके हाथमें खड्ग रमाके कमलका फूल ॥

देवीसिंहने कहा ख्याल यह वेद पुराणोंके अनुकूल ॥
बनारसीके छन्दमें कभी न हरगिज निकले भूल ॥
जो इस पदको सुने औ गावै उसकी होजाय तुर्त गती ॥
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती ॥

हरिहरात्म मूर्त्ति–बहेर जीकी ।

श्रीकृष्ण शिव एक रूप हैं रहते एकी संग, हरि हर दोनों हैं अर्द्धांगभला॥ आधा अंगहै श्रीकृष्णका आधा शिवका जान, कहा ये परम पुरातन ज्ञान भला॥कृष्ण करैं शिवका स्मरण शिवधरे कृष्णका ध्यान, आत्मा एक एक स्थान भला ॥

दोहा--शिवजी साधैं योग, कृष्णजी करते भोग विलास ॥
योग भोग दोनों एकी, दोनोंका ब्रह्ममें वास ॥ वह पहने भूषण वह रहैं नंग भला॥ कृष्णपढैं गीता और शिवजी पढैं आप वेदांत, वो करते क्रोध वो रहते शांत भला ॥ कृष्णकरैं क्रीडा ब्रजमें शिव रहैं सदा एकान्त, दोनोंकी सुंदर शोभा कान्ति भला ॥

दोहा--शिवका सुमिरण करते करते कृष्णजी होगये श्याम ॥
शिवजी होगये श्वेत जपा करते हैं कृष्णका नाम॥ऐसा नहीं कोई का सत्संग भला॥कृष्ण बजावें मुरली मुख धर शिवजी गाते गान॥निकलैं दोनोंमें एकी तान भला ॥ कृष्ण भरें भंडार जगतके शिव देते वरदान,करैं दोनों जनका कल्याण भला ॥

दोहा--कृष्ण करैं वैराग तीव्र और शिव धारैं संन्यास ॥
वो उनको सेवक हैं और वो हैंगे उनके दास॥करैं राक्षसोंको दोनों दंग भला ॥ कृष्ण सोवते शेषकी सेज्या पर करके

आराम, करें शिव मशान में विश्राम भला ॥ कृष्ण करैं शिवकी सेवा शिव करैं कृष्ण का काम॥रटो दोनोंको आठों याम भला॥

दोहा--शिव पूजें विष्णु के चरण करैं कृष्ण लिंग पूजा ॥
हरी हरातम है यक मुरती और नहीं दूजा॥उनके शिरमुकुट उनके शिर गंग भला ॥ त्रयी गुणसे शिव रहित कृष्ण हैं तीन लोकसे परे, भजो चाहे हरि भजो चाहे हरे भला॥शिवने त्रिपुरासुरको मारा कृष्णने कौरवमारे, ये दोनों कोऊसे नहीं डरे भला॥

दोहा--शिवके संग रहैं सदा योगिनी और भूत वैताल ॥
कृष्ण लिये ग्वालनी संगमें ब्रजके सारे ग्वाल॥वो पीते दूध वो पीते भंग भला ॥ कृष्ण बने गौरा जी शिवजी बने लक्ष्मी आप॥न उनको पुण्य न उनको पाप भला॥कृष्ण हरैं बाधा तनकी शिव दूर करें संताप, मेरा मन दोनों में रहा व्याप भला ॥

दोहा--कृष्ण बने नंदीगण शिवजी गरुडरूपलें धार ॥ वो उनपर बैठें और ओ होते उनपर असवार॥ये दोनों एक हैं और बहु रंग भला॥कृष्ण पारथी पूजें शिवजी पूजें शालिग्राम॥बना दोनों का सुंदर धाम भला ॥ शिवकी काशी बनी बना श्रीकृष्णका गोकुल ग्राम॥देवीसिंह दोनों का ले नाम भला ॥

दो०--शिवका शिवाला बना कृष्ण का है ठाकुरद्वारा॥बनारसी ये कहे मुझे दोनोंका नाम प्यारा ॥ उठेहै मनमें येही तरंगभला ॥

लक्ष्मी गौराका-अभेद छंद ।

वोही लक्ष्मी वही गौराजी चार वेद में देख॥ शक्ति है एक जुदे दो वेष भला॥विष्णुके संग रहैं सदा लक्ष्मी शिवके संग पार्वती॥ लखी नहिं जाय दोनोंकी गती भला ॥ लक्ष्मीके पति इन्द्रजीत हैं गौरा के पति यती ॥ लक्ष्मी कुवाँरी गौरा सती भला ॥

दोहा–लक्ष्मी को चढैं पुष्प और गौराको चढैं बेलपती॥ उनकी बुद्धी निर्मल है और है उनकी मती सुमती॥ रूप दोनोंका अलख अलेख भला॥ लक्ष्मीके मस्तकपर सोहै सुंदर बेंदी भाल॥ गौरके मस्तक चन्द्र विशाल भला॥ लक्ष्मीके उर पडा हार है जिसमें मोती लाल॥ गौरिके कंठ मुंड की माल भला॥

दोहा--लक्ष्मी के दोनों करमें हैं कड़े जडाऊ पडे॥ गौरके कर सोहैं कंगन दोनों के भाग हैं बडे॥ लिखी विधनाने ऐसी रेख-भला॥ लक्ष्मीके सेवक हैं सो सब करते सुंदर भोग॥गौरिके सेवक साधैं योग भला॥ लक्ष्मीको जो सुमरे उसको कभी न व्यापे सोग॥ गौरि को भजे सो रहे निरोग भला॥

दोहरा--क्षीरसिंधुमें बसे लक्ष्मी नारायणके पास॥ गौर बसे शिव संग जहां सुंदर पर्वत कैलास॥ भक्तजन लेते उन्हें परेख भ-ला॥लक्ष्मीका शीतल स्वभावहै जल और चन्द्रमा जान॥ गौरि-को समझो अग्नि भानु भला॥ लक्ष्मी के हैं पासमें हीरे लाल मो-तिनकी खान॥ गौरिकी विभूती है धनवान भला॥

दोहरा--लक्ष्मीमें बसे गवर गवरमें करै लक्ष्मी वास॥सुनो इधर धर ध्यान तुम हमसे इनकी उनकी रास॥है उनकी कुंभ और उ-नकी मेष भला॥ श्री लक्ष्मी पहने तनुके ऊपर वस्तर लाल॥ गवरजा ओढ रहीं मृगछाल भला॥ कहीं भार्या बनी कहीं जननी हो करैं प्रतिपाल॥ बनी कहीं अंतकालका काल भला॥

दोहा–ब्रह्मा लिखते थके शेषजीने नहिं पाया पार॥ बनारसी ये कहै कहूं में कहांतलक विस्तार,मुझे दोनोंकी भक्ति विशेषभला॥

ख्याल अद्भुत–बेहर जीकी।

जो चाहे सो करै प्रभू उसकी गति लखी न जाय॥ कर्मके लिखे-को देय मिटाय जी॥कितनेही मरगये तो उनको पलमें दिया जि-

लाय ॥ कालको देखौ कालै खायजी ॥ लूला चढ़ै पहाड़के ऊपर बिना पौरुषसे धाय ॥ एक तृणमें त्रैलोक समाय जी ॥ सेतुबांध-के समुद्रमें हरि पत्थर दिये तराय ॥ कर्मके लिखे को देय मिटायजी ॥ मूरख चातुरको देता इक पलमें वेद पढ़ाय, जिये ओ सदा जो विषको खायजी॥मीन धूपमें मगन रहै नहिं पानी उसे सुहाय॥ कहो कोई इसके अर्थ लगायजी॥लोहा कंचनबने जो उसको पारस देव छुवाय ॥ कर्म के लिखे को देय मिटायजी ॥ विधवा होयसुहागिन उपजे पुत्र तो करे सहाय ॥ आगको पानी देय जलायजी॥ भूखा भोजन नहीं करें और पेट भरा सब खाय॥ शेरको भेडी देय-भगायजी ॥ भृंगी कीडेको अपने सम लेता आप बनाय॥कर्मकेलिखेको देय मिटायजी॥मार्कंडेयजी बारा बरसकी आपे उमर लिखाय ॥लिखी विधनाने बहुत चित लायजी॥सोतो होगये चिरंजीव मैं सत्यसत्य कहूं गाय॥प्रभुके आगे कर्म लजायजी॥बनारसी कहै नरसे प्राणी नारायण होजाय॥कर्मके लिखेको देय मिटायजी ॥

सिद्धान्त-बहेर जीकी ।

चार फरिस्ते हुकुममें हाजिर रहैं मेरे दरबार ॥ लिये वो चार चार तलवार जी॥जिधर इशारा करूं उधर दलके दल डारें मार॥ करें वो दुष्टों को मिसमारजी ॥ आंख उनकी लाल बनीरहैं उतरे नहीं खुमार ॥ है ताकत उनमें बिना सुमारजी ॥ कोई न पापी बचैं जडें जिस वक्त वोकातिलवार, लिये वो चार चार तलवारजी॥ कोई अगर छेडे औ करे कुछ मुझसे दारो मदार, दिखावें उसी को वोः फिर दार जी ॥ हत्यारों का तनुसे शिर करदें दम्में नादार ॥ हुकुम येहै दावरदादारजी ॥ मशारिगसे मगारिबतक घुमें चारों तरफ वो चार, लिये वो चार चार तलवारजी ॥ कोई नहीं जीते

उनसे जो लडे सो जावे हार ॥ करें वो चारों तरफ गोहारजी॥ जिस जिसको वो मारें उसका कर डालें आहार॥ चोट उनकी क्या सकें सहार जी ॥ एक हाथसे काटें वह काफिरकी लाख करतार॥ लिये वो चार चार तलवार जी ॥ नाम एंक का सुनो शनिश्चर दूजे मंगलाचार ॥ तीसरे को समझे एतवार जी ॥ एक बृहस्पति सदा सुखी रहें मेरे चारों यार ॥ उतारें कुल पृथ्वीका भारजी ॥ मेरे कहेसे दुर्बुद्धीका कर डालें संहार ॥ लिये वो चार चार तलवार जी ॥ कांप उठे आसमां जिसघडी मारें वह किलकार ॥ मरें सब दुनिया के मक्कारजी ॥ बनारसी कहे तीन लोकमें मचे वो जय जयकार॥बचे नहिं कोई भी बदकार जी ॥ सतयुग को दें राज और कलियुग को डारे फटकार ॥ लिये वो चार चार तलवार जी ॥

श्रीकृष्णके लटकी स्तुति ।

श्री गिरिधरने लटकाली लटकाली आनन पर आला ॥ अति विचित्र लटकी लटक लटककर अमृत रसको चाखैं॥ज्यों सर्प ओस जिह्वासे चाटके प्राणको अपने राखैं ॥ शशि मंडल कीसी शोभा उपमा वेद भी ऐसी भाखैं॥ राधे सखियनसे कहैं घूमके मनको मेरे सुलाखैं ॥

तोडा–मोहनी अलकनमें बसी–छबि भांति भांतिकी फँसी ॥
मानो बने कृष्ण महेश पहेन कर नागन कीसी माला ॥
श्री गिरिधरने लटकाली लटकाली आनन पर आला ॥
कोइ बाँबीमेंसे लपक चले कोइ गिडली मार के बैठे ॥
कोई उगलके मनको खडे और कोई संगनार के बैठे ॥
कोई फनसे फुफकारें और कोई केंचली उतार के बैठे ॥
मानो विष भरे भुजंग वो मलयागिरि विचार के बैठे ॥

तोडा–कोइ श्वेत लाल कोइ पीले रंग रंगके सर्प रँगीले ॥
रोली केशर चंदनसे चर्चके अद्भुत रंग निकाला ॥
श्री गिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला ॥
उपमा एक और कहूं जो सुनो कोउ कविसे कही न जावे॥
मानो कजलीबनसे सुगंध नाना प्रकारकी आवे ॥
एक तो मन उलझा काव्यमें दूज कृष्णकी लट उलझावे॥
जो कुंज कुंजमें परदेशी भूला नहिं रस्ता पावे ॥
तोडा–हरिकी लट भूलना वीरा--भूले ब्रजके नरनारी ॥
जो प्रेम जाल में फँसा वही वो बसा न गया निकाला ॥
श्री गिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला ॥
अति उत्तम छबि अलकनकी सुंदर श्याम घटासी दरशे ॥
जब कृष्ण करैं स्नान तो मोती झूम झूम के बरसे ॥
वो घूँघरवारेकेश छाये चहुँदेश बसे अंबरसे ॥
स्तुति कर करके थके शेष और महिमाको जी तरसे ॥
तोडा--जो इस पदको कोइ गावे--वो भुक्ति मुक्ति सब पावे ॥
कहै बनारसी भजराम कृष्ण गोविंद और श्री गोपाला ॥
श्री गिरिधरने लटकाली लटकाली आनन पर आला ॥

ख्याल अधर।

कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नया निकाला ॥
श्रीकृष्णकी अलकें अलख केशसे शेष लजत धरणीधर ॥
घन घटा देखकर घटत निशा अति छकत कहत धरणीधर॥
काली काली लट कला करै चित हरत तकत धरणीधर॥
रसना सहस्रसे रटत रटत दिन रात थकत धरणीधर ॥
तोडा--करसे गहकर छिटकाई--नागिना देख लहराई ॥ कालीने
शंका खाई--लेखनी लखना लिखत अलक जद दिखत कृष्ण की

आला ॥ कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नया निकाला ॥ दृग चंचल चतुर हरीके नेत्र लागत खंजनते नीके ॥ करै लहर लकीरें लाल लगत कोरैं अंजनते नीके ॥ गडगये कलेजेआय धायके चन्द्रकिरणते नीके ॥ रस सागरते अति सरस हरन चित लगत हरिनते नीके ॥

तोडा--शर चलत नेत्रते तीखे--जद लडत दृगनते दीखे ॥

हरिचरित्र कैसे सीखे ॥ कसकत हिरदे दिन रैन नयनने ऐन कलेजा शाला ॥ कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नया निकाला ॥ आननकी षटदश कला दिन्नते हीरे लाल लजाये ॥ दर्शन कारण षट दर्शन आसन त्याग त्याग करआये ॥ शंकर इन्द्रादिक सहित चरण नंगे कर करके धाये ॥ श्रीकृष्णकी लीला देख छंद आनंदसे कथ कथ गाये ॥

तोडा--तन चंदन हार चढ़ाये--अक्षत ले शीश लगाये ॥

हिरदे चरणन चितलाये ॥ नंदलाल कंसके काल काट दिया अंधकारका ताला ॥ कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नया निकाला ॥ हर निरधार चार कर त्रयी तालके करता ॥ षट राग तीस रागिनी नारायण तीन तालके करता ॥ सच्चिदानंद आनंद कालके काल कालके करता ॥ हैं आदि अनादि अगाध कृष्ण अक्षय अकालके करता ॥

तोडा--कहै काशी गिरी हरि हर हर दिनरैन ध्यान हिरदे धर ॥

रज चरणनकी अंजन कर ॥ कहा अधर छंद धर ध्यान ज्ञान दे दान नन्दके लाला ॥ कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नया निकाला ॥

श्रीकृष्णके विश्वरूप की मूर्ति ।

नँदनंदन ब्रजराज कि छबि अब कोटिन भानु प्रकाश करैं ॥
उदित करैं चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करैं ॥

कोटिन शीश नेत्र कोटिन अरु कोटिन कर्ण हरीके हैं ॥
कोटिन हैं नासिका हरीकी कोटिन वर्ण हरीके हैं ॥
कोटिन मुख कोटिन जिह्वा कोटिन गतिशर्ण हरीके हैं ॥
कोटिन भुजा उदर कोटिन अरु कोटिन चरण हरीके हैं ॥
शैर--कोटिन हरीके मुकुटहैं कोटिन हैं तिलक भाल ॥
कोटिन हरीके कंठहइ कोटिनहैं मुक्तामाल ॥
कोटिन मणी हरी की हैं कोटिन हरीके लाल ॥
कोटिन हरीके भाव हैं कोटिन हरीकी चाल ॥
कोटिन पग पाताल छुवे अरु कोटिन आश अकाश करैं॥
उदित करैं चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करैं ॥
कोटिन नाम हरीके हैं और कोटिन नाम हरीके हैं ॥
कोटिन कर्म हरीके हैं और कोटिन काम हरीके हैं ॥
कोटिन ग्राम हरीके हैं और कोटिन धाम हरीके हैं ॥
कोटिन शैव हरीके हैं और कोटिन बाम हरीके हैं ॥
शैर--कोटिन हरीके वेद हैं कोटिन हरीके मंत्र ॥
कोटिन हरीके शास्त्र हैं कोटिन हरीके तंत्र ॥
कोटिन हरीकी पूजा हैं कोटिन हरीके यंत्र ॥
कोटिन से हारिअंत्र हैं कोटिनसे हैं निरंत्र ॥
कोटिनको सुख देंय हरी कोटिनके मनमें त्रास करैं ॥
उदित करै चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करैं ॥
कोटिन इन्द्र हरीके हैं और कोटिन राज्य हरीके हैं ॥
कोटिन हैं गंधर्व हरीके कोटिन साज हरीकेहैं ॥
कोटिन माया हरीकी हैं कोटिन समाज हरीके हैं ॥
कोटिन मित्र हरीके हैं कोटिन मुहताज हरीके हैं ॥

शेर–कोटिन हरीके गज हैं और कोटिन खडे तुरंग ॥
कोटिन हरीके रथ हैं और कोटिन हैं रथके संग ॥
कोटिन हरीके वेष हैं कोटिन हरीके रंग ॥
कोटिन हरीकी लहर हैं कोटिन उठे तरंग ॥
कोटिन हरी वैकुंठ करैं चाहे कोटिन कैलास करैं ॥
उद्दित करैं चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करैं ॥
कोटिन हैं गोपिका हरीकी कोटिन ग्वाल हरीके हैं ॥
कोटिन धेनु हरीकी हैं कोटिन गोपाल हरीके हैं ॥
कोटिन सिंधु हरीकेहैं और कोटिन ताल हरीकेहैं ॥
कोटिन रत्न हरीके हैं और कोटिन थाल हरीके हैं ॥
शैर–कोटिन हरीके दैत्य हैं कोटिन हैं देवते ॥
कोटिन हरीके नामको हैं मुखसे लेवते ॥
हरीके नाम हैं कोटिन कोटिन हैं खेवते ॥
कोटिन हरीके चरणको हैं करसे सेवते ॥
देवीसिंह कहै बनारसीके घटमें हरी निवास करैं ॥
उद्दित करैं चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करैं ॥

श्रीसीताजीके वियोगमें-बेहर लँगडी ।

श्रीसीताजीके वियोगमें भये राम दुर्बल तनु छीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
उठें तो कांपें चरण खडे होवें तो लरजे सकल शरीर ॥
धनुष वो ताने तो छुटे चुटकीसे धीरजमें तीर ॥
क्रोधसे कांपे तीन लोक और जरे राक्षसनकी सब भीर ॥
रावण मनमें डरे देखै जो क्रोधित श्री रघुवीर ॥
शैर–प्रथम तो उनका राज पाट योगमें छूटा ॥
औ खानो पान सियाके वियोगमें छूटा ॥

अवधका वास गया तात स्वर्गको पहुँचे ॥
भरतका साथ भी देखो वो शोगमें छूटा ॥
शरीर तो पींजर सब बन गया मनरह सीतामें लवलीन॥
निर्बल होयके लड़े रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
दिवसको होय संग्राम निशाको करैं कहो किसविधि हरिशैन॥
मुख ढापें तो झरैं झरनासे प्रभुके वो दोउ नैन ॥
करैं जो मुखसे बात तो निकलैं जिह्वासे कुछके कुछ बैन ॥
लषण सुनैं तो लख प्रभु वियोग में हैं अति बेचैन ॥
शैर—ये कष्ट देखके लक्ष्मणने वो विचार किया ॥
मरैगा कल वो रावण मिलैगी आन सिया ॥
कालके वश है वोहीं जोकि प्रभुसे झगडा ॥
हमारे रामसे लडके ये जगमें कौन जिया ॥
दुर्बल भये तो मन नहिं हारा याहीते लेह सब छीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
भोर होत मुख धोय किया जब रामचन्द्रजीने स्नान ॥
पूजन विधिसे करी फिर उठा लिया वह धनुष औ बान॥
चले साथ देखने युद्ध लछमन भ्राता और श्रीहनुमान ॥
पहुँचे रण में जहां रथपर बैठा रावण बलवान ॥
शैर—रामको देखके रावणने धनुषको ताना ॥
औ मारे पांच बाण तब ये रामने जाना ॥
है इसकी आज मौत कालनें इसको घेरा ॥
तो रामजीने भी अपना धनुष संधाना ॥
अंग तो दुर्बल थाही पर सीताकी शक्तिथी परवीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभुआधीन ॥
आसौजका था मास और वोह शुक्लपक्ष दशमीका दिन ॥

राम औ रावणके उसदिन चले बाण कोटिन गिन गिन॥
रावणके बाणोंको राम काटैं तृणवत पल पल छिन छिन ॥
रावणके शिर कटैं उपजे इतनेमें छिप गया दिन ॥
शैर--हृदयमें अपने वो रखताथा ध्यान सीताका ॥
सो उसके मनसे गया पलमें ज्ञान सीताका ॥
उसी समयमें वोह मारे जो बाण दशप्रभुने ॥
रहा इस जगतमें देखो वह ःमान सीताका ॥
काटके उसके दशो शीश फिर अपनेही में करलियालीन॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
गिरा वह रथसे पृथ्वीपर तो कहा कहां है कहां है राम ॥
इस कारणसे मिला वह अंत समयमें उत्तम धाम ॥
किसी बहाने अंत समयमें राम रामका कहै जो नाम ॥
कहै देवीसिंह मिले वो राममें और पावे आराम ॥
शैर--ये छंद रामका अपने जो मुखसे गावैगा ॥
तरैगा वो भी इसे जो सुने सुनावैगा ॥
ये पूरी होगई रावणके मारनेकी कथा ॥
वोही समझेगा इसे जो कि लव लगावेगा ॥
रामचन्द्रने लेकै सीता लंक विभीषणको देदीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥

स्तुति शिवजीके त्यागकी-बहेर खडी ।

धन धन भोलानाथ तुम्हारे कौडी नहीं खजाने में ॥
तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे बीराने में ॥
जटा जूटका मुकुट शीशपर गलेमें मुंडोंकी माला ॥
माथेपर फूटासा चन्द्रमा कपालका करमें प्याला ॥

जिसे देखके भय व्यापे सो गले बीच लपटा काला ॥
और तीसरे नेत्रमें तुम्हारे महाप्रलयकी है ज्वाला ॥
पीनेको हरवक्त भांग और आक धतूरा खाने में ॥
तीन लोक बस्तीमें बसाये आप बसे वीराने में ॥
चर्म शेरका वस्त्र पुराना बूढा बैल सवारीको ॥
तिसपर तुम्हरी सेवा करती धन धन गौर विचारीको ॥
वो तो राजाकी पुत्री और व्याही गई भिखारी को ॥
क्या जाने क्या देखा उसने नाथ तेरी सर्दारी को ॥
सुनी तुम्हारे व्याहकी लीला भिखमंगों के गाने में ॥
तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे वीराने में ॥
नाम तुम्हारे अनेक हैं पर सबसे उत्तम है नंगा ॥
याही ते शोभा पाई जो विराजती शिरपर गंगा ॥
भूत प्रेत बैताल साथमें ये लश्कर सबसे चंगा ॥
तीन लोकके दाता होकर आप बने क्यों भिखमंगा ॥
अलख मुझे बतलाओ मिले क्या तुमको अलख जगाने में ॥
तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे वीराने में ॥
ये तो सर्गुणको स्वरूप है निर्गुणमें निर्गुण हो आप ॥
पलमें प्रलयकरो छिनमें रचना तुम्हें नहीं कुछ पुण्य न पाप ॥
किसीका सुमिरन ध्यान न तुमको अपनाही करते हो जाप ॥
अपने बीचमें आप समाये आपी आपमें रहे हो व्याप ॥
हुआ मेरा मन मगन ये सिठनी ऐसी नाथ बनाने में ॥
तीन लोक बस्तीमें बसाये आप बसे वीराने में ॥
कुबेर को धन दिया और तुमने दिया इन्द्रको इन्द्रासन ॥
अपने तनुपर खाक रमाई नागों के पहने भूषण ॥
भुक्ति मुक्तिके दाता हो मुक्ती भी तुम्हारे गहे चरन ॥

देवीसिंह कहे दास तुम्हारा हित चितसे नित करे भजन ॥
बनारसी को सब कुछ बख्शा अपनी जबां हिलाने में ॥
तीन लोक बस्तीमें बसाये आप बसे बीराने में ॥

ख्याल शिवजीका-निर्गुण खड़ी।

शिवजी तो कुछ सूम नहीं जो धनको धरैं खजाने में ॥
सारी वसुधा बाँट दई मशहूर है यही जमाने में ॥
राई भर चाँदी नहिं सोना हीरे मोती लाल नहीं ॥
जिह्वा से सब कुछ देदें जिस को वह हो कंगाल नहीं ॥
विभूतिमें जो कुछ उनके वह कुबेरके घर माल नहीं ॥
दीनके ऊपर दया करैं कोइ ऐसा दीनदयालु नहीं ॥
भागीरथ को गंगा देदी मुक्ती मिलै नहाने में ॥
सारी वसुधा बांट दई मशहूर है यही जमाने में ॥ १ ॥
वेद न जानैं भेद कुछ उनकी पुरान पावे पार नहीं ॥
शास्त्र न जानैं गति कुछ उनकी शिव सा कोइ अपार नहीं ॥
जहँ परहै उनका आसन ह्वाँ किसी का है विस्तार नहीं ॥
रवि शशि अग्नि पवनभी तो कोई उनके पहुँचे द्वार नहीं ॥
निर्गुण में तो ब्रह्म वोही हैं सगुण है लिंग पुजाने में ॥
सारी वसुधा बांट दई मशहूर है यही जमाने में ॥ २ ॥
तीन लोकके बीचमें कोई नहीं है ऐसा वरदानी ॥
कोई नहिं योगी ऐसा औ कोई नहिं ऐसा ध्यानी ॥
भिक्षुक वेष न देखो उनका वह स्वरूपहैं निरवानी ॥
सर्प न लिपटे जानो तनमें वह तो भक्त सब हैं ज्ञानी ॥
खुले आँख जब भीतर की तब आवे दरशन पानेमें ॥
सारी वसुधा बाँट दई मशहूर है यही जमाने में ॥ ३ ॥
निंदामें स्तुती करै तो इसी में वह होते हैं मगन ॥

रूप अमंगल मंगलदायक उनका तो उलटा है चलन ॥
प्रेम से उनको गाली दो तो उसी को वह समझे हैं भजन ॥
जो कोइ उनको जहर चढाये उसीको वह देते अन धन ॥
और कुछ उनको ख्वाहिश नहिं वह मगन हों गाल बजानेमें ॥
सारी वसुधा बाँट दई मशहूर है यही जमाने में ॥ ४ ॥
शीश न उनके लिंग न उनके चरण न उनके औ सब हैं ॥
ऐसा कोई विरला जन जाने उसे नहीं व्यापे फिर भय ॥
देवीसिंह यह कहै अरे नर कहु तू मुखसे जै शिव जय ॥
बनारसी जय जय करनेसे शिव स्वरूप में होगया लय ॥
राजा हिमचल दंग होगये पारबती के व्याहन में ॥
सारी वसुधा बाँट दई मशहूर है यही जमाने में ॥ ५ ॥

शिवजीका बाँटना—बहेर खड़ी।

धन धन भोलानाथ बांट दिये तीन लोक इक पल भरमें ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कोडी नहीं रखी घरमें ॥
प्रथम दिया ब्रह्मा को वेद वो बना वेदका अधिकारी ॥
विष्णु को देदिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मीसी सुंदर नारी ॥
इन्द्र को देदी कामधेनु और ऐरावतसा बलकारी ॥
कुबेर को सारी वसुधाका कर दिया तुमने भंडारी ॥
अपने पास पात्र नहिं रक्खा रक्खा तो खप्पर करमें ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घरमें ॥
अमृत तो देवतों को दिया और आप हलाहल पान किया ॥
ब्रह्मज्ञान देदिया उसे जिसने कुछ तुम्हारा ध्यान किया ॥
भागीरथको गंगा देदी सबजगने स्नान किया ॥
बडे बडे पापियों को तुमने यक पलमें कल्यान किया ॥
आप नशेमें चूर रहो और पियो भांग नित खप्परमें ॥

ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥
रावणको लंका देदी और बीसभुजा दशशीश दिये ॥
रामचन्द्रको धनुष बाण वो तुमहींतो जगदीश दिये ॥
मनमोहनको मोहनी देदी मोर मुकुट तुम ईश दिये ॥
मुक्ति हेतु काशीमें बास भक्तोंको विश्वावीस दिये ॥
अपने तनुपर वस्त्र न राखो मगन रहो वाघम्बर में ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥
नारदको दई बीन और गंधर्वोंको राग दिया ॥
ब्रह्मणको दिया कर्मकांड औ संन्यासीको त्याग दिया ॥
जिसपर तुम्हरी कृपा हुई उसको तुमने अनुराग दिया ॥
देवीसिंह कहै बनारसीको सबसे उत्तम भाग दिया ॥
जिसने पाया उसीने पाया महादेव तुम्हरे वरमें ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥

ख्याल श्रीहनुमानजीका पंचमुखी कवचका माहात्म्य इसके पढने से होगा॥

बहेरखडी—तीन तीन मिसरेका चौक।

प्रथममुखकी स्तुति ॥ १ ॥

महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम् ॥
ज्ञानवान अभिमान रहित निर अहंकार हर योगी ॥
इंद्रीजीत कामनात्यागी नचकामी नचभोगी ॥
रूप आनंदम् परमानंदम् महावीर मस्तकम् ॥

द्वितीयमुखकी स्तुति ॥ २ ॥

दशकंधर अभिमान हनन् लंका दाहन बजरंगी ॥
पूरणब्रह्म अखंड सच्चिदानंद साध सत्संगी ॥
नाम उचारत नित गोविंदम् ॥
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम् ॥

तृतीयमुखकी स्तुति ॥ ३ ॥

रक्तम् चीर गदा कर शोभित पुष्पमाल उरधारन ॥
दैत्यन दलन हननदुष्टन दल सकल शत्रु संहारन ॥
शब्द ध्वनि गर्जत हरि हरि बम् बम् बम् बम् ॥
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम् ॥

चतुर्थमुखकी स्तुति ॥ ४ ॥

शिवशंकर सर्वज्ञ स्वरूपम् विश्वेश्वरम् विशालम् ॥
परमवैष्णव शुद्ध आत्मा कालंकाल अकालम् ॥
बहु विस्तारम् मम किम् वर्णम् ॥
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम् ॥

पञ्चममुखकी स्तुति ॥ ५ ॥

जटा जूट मकराकृत कुंडल रत्न जडित तनु भूषण ॥
पंचममुख सुखदायक दाता देओ पति निर्दूषण ॥
छंद काशीगिरि शास्तर कथितम् ॥
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम् ॥

इति पांचोंमुखकी स्तुति सम्पूर्ण ॥ ५ ॥

विश्वरूपी बाग ।

विश्वरूप खिल रहा बाग जिसमें आदमकी गुलजारी ॥
रंग रंग के फूलहैं तरह तरहकी फुलवारी ॥
पूरव पश्चिम उत्तर दक्षिण ये चारों दीवार बनी ॥
हरेक तरफसे नदियों की हैं छूटी नहेर घनी ॥
सात सिन्ध सोइ तलाब सातो सबका मालिक वही धनी ॥
चाहे बनावे चाहे एक पलमें करदे फनाफनी ॥
विश्व बागके भीतर उसके कुदरतकी फैली क्यारी ॥

रंग रंग के फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥
नवखंडों के महल बनाये दशों दिशा के दश द्वारे ॥
त्यार किये हैं बागमें चौदा भुवन न्यारे न्यारे ॥
आसमान की छात लगाई जिसमें जड़ दिये हैं तारे ॥
गरज गरज घन करैं छिड़काव छोड़ते फौवारे ॥
चांद औ सूर्य्य चारों तरफ की करते हैं चौकीदारी ॥
रंग रंग के फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥
चमत्कार का चमन लगाया पारब्रह्मने आपी आप ॥
हर जर्रे में झलकता हरशय में वो रहा है व्याप ॥
इसी बाग के भीतर बैठे ऋषी मुनी सब करते जाप ॥
कोई गावते भजन और कोई रहे पंच अग्नी ताप ॥
साधु संत करैं शैर बागमें परमहंस या ब्रह्मचारी ॥
रंग रंग के फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥
कल्पवृक्ष औ मलयागिरि वों फले हैं उसमें अमृत फल ॥
कभी न सूखे कि जिसमें ज्ञान रूप है गंगाजल ॥
देवीसिंह कहै हरी कृपासे जिसकी हो बुद्धी निर्मल ॥
ऐसे बागमें अमर वो होय न आवे उसे अजल ॥
विश्व बागको मालिक है वोही श्रीकृष्ण गिरिवरधारी ॥
रंग रंग के फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥

भक्तियोग-बहेर जीकी।

भोजन हरिके प्यारे वो तो हैंगे कालके काल, कालको क्या समझें मालजी॥निरंकारजो भजे उसे नहिं व्यापे भव जंजाल, उसी की रचना तीनौं कालजी॥आठ याम ले नाम उसीका शेषनाग पाताल, चतुरपद पक्षी जपते व्यालजी॥भीड पड़ी जहँ जहँ संतों पर हुये आप रछपाल, बचाये ब्रजमें गोपी ग्वालजी ॥

दोहा—सदा भक्तके काज को, उठ धाये तत्काल ॥
ग्राहसे गजको छुटादिया, ऐसे नन्दके लाल ॥
जो कोइ उनको सुमरे उनका होय न बाँका बाल ॥
कालको क्या समझे वो मालजी ॥

पूंछा तेरा राम कहां जब गिर्द अग्नि दी बाल, दिखाया त्रास वो खड्ग निकालजी॥उसने कहा है मुझमें तुझमें सबमें श्रीगोपाल, करे वो सब जगकी प्रतिपालजी ॥

दोहा--खंभ फाड़ प्रकटे ऐसे और धरा रूप विकाल ॥
हरिणाकश्यपु दैत्यको मार किया पैमाल ॥
उसकी याद में जो रहते वो सदा बजावें गाल ॥
कालको क्या समझें वो मालजी ॥

श्रीकृष्णके मित्र सुदामा ज्ञानी द्विज कंगाल, पढ़ेथे दोनों एकी शालजी ॥ शरण गये वो हरिके होगये एक पलमें निहाल, मिला निर्धनको वो धनमालजी ॥ उसकी याद बिन प्राणी जैसे सूखा जलबिन ताल, नाम जप साईंका रहु लालजी ॥

दोहा--बिना भक्ति नहिं मुक्ति है, कहाँ तक कहूं अहवाल ॥
नाम लियेसे तरगये, कई पापी चंडाल ॥
लाख चोटले रोक जो रक्खे उसके नामकी ढाल ॥
कालको क्या समझें वो मालजी ॥

उसकी यादमें मीरानाची देदेदोऊ ताल, गावती फिर प्रभुके ख्यालजी॥उसकी यादमें वह ताकत है कोटि व्याध दे टाल, कभी नहिं आवे उसे वबालजी ॥ देवीसिंह कहे बनारसीको उसका हुआ विशाल, देखता दिलमें वही जमालजी ॥

दोहा--निठुरके चलना जहांके अंदर यह है बड़ा कमाल ॥

जिस दरख्त में मेवा होवे झुकै उसीकी डाल ॥
नाम प्रभूको प्यारा भक्तोंको नहीं होय जवाल ॥
कालको क्या समझे वो मालजी ॥

परमेश्वर मिलनेका मार्ग—बहेर खडी ।

नरतन पाय जतन करे ऐसे जिस्में वो करतार मिलें ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नहिं बारंबार मिलैं ॥
बने हैं पूरब कर्म कुछ ऐसे उसीकी है यह प्रभुताई ॥
जो तूने संसारमें है यह सुंदर नर देही पाई ॥
पायके ऐसी कंचन काया भजन करो हरिको भाई ॥
जन्म जन्मकी बिगडी बात सब इसी जन्म में बनजाई ॥
सुख दुख भोग पिता औ माता और सकल संसार मिल ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नहिं वारंवार मिलै ॥
मिला तुझे अनमोल रत्न ये अब उपाय तू ऐसा कर ॥
त्याग सकल कामना जगतकी हित चितसे हरि नाम सुमर ॥
वासुदेव भज नारायण तू कृष्ण कृष्ण और कहो हर हर ॥
जीते ये भवसिंधु जगतसे क्षणमें जाये पार उतर ॥
जन्म मरण नहिं होतेरा नहिं जगमें फिर अवतार मिलै ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नहिं वारंवार मिलै ॥
कर विचार मनमें अपने तू किस कारण जगमें आया॥
किस कारण संसारमें तुझको मिली है यह कंचन काया ॥
जिसने कुछ नहिं भजन किया नहिं मुखसे गुण गोविंद गाया ॥
सुंदर जन्म गँवाय वृथा वो अंतकाल फिर पछताया ॥
लख चौरासी पडे भरमता यमदूतोंकी मार मिलै ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नहिं वारंवार मिलै ॥
दुर्लभ ये जामा नरकाहै मिला बडे संयोगोंसे ॥

देवीसिंह कहता है सदा समझायके ये सब लोगों से ॥
भजन करो आनंद रहो और छुटो दुःख सुख भोगोंसे ॥
हर्ष सदा मनमें व्यापे और शुद्ध चित्त रहो सोगोंसे ॥
बनारसी कहै और जन्ममें नहिं उसका दीदार मिलै ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नहिं वारंवार मिलै ॥

ज्ञाननौका-बेहर खडी ।

भवसागर है कठिन कि इसमें और नहिं कोई खेवैया ॥
दीनदयालु जो कृपा करे तो पार लगै मेरी नैया ॥
गहरी नदिया थाह मिलै नहिं चारों तरफसे उठै बयार ॥
माया मोहका जाल पड़ा उसमें किस विधिसे उतरै पार ॥
चारों तरफ जो देखो तो कुछ नजर न आवे वारापार ॥
कितने ही गये डूब इसीमें गोते खाखा के मँझधार ॥
भवसागरके पार उतारै कोई नहीं ऐसो भैया ॥
दीनदयालु जो कृपा करें तो पार लगै मेरी नैया ॥
चलै जो आंधी भवसागरमें तब उसमें वोह उठै तरंग ॥
लोक कुटुंबके सब रोवें और कोई न देवे उसका संग ॥
काल बली जब आकर घेरै कोई न जीतै उससे जंग ॥
जो कोई हरिका भजन करै तो मौत भी उससे होजा दंग ॥
सब कोइ हैं अपने स्वारथी क्या बाबा और क्या मैया ॥
दीनदयालु जो कृपा करैं तो पार लगै मेरी नैया ॥
भयके इसमें भँवर पडे और चिंताकी चादर न्यारी ॥
काम क्रोध और लोभ मोहके मगर मच्छ करते ख्वारी ॥
सातों समुद्र जरासे हैं औ भवसागर सबसे भारी ॥
उससे पार वोही उतरै जो नाम जपै गिरिवर धारी ॥
अंतकाल में पापी रोवे करै आह दैया दैया ॥

दीनदयालु जो कृपा करैं तो पार लगै मेरी नैया ॥
सौ होवें तो हजार मांगें हजार होतो ढूंढे लाख ॥
लाख होयँ तौ करोड चाहे कहै बढै कछु उसमें साख ॥
दया धर्म्म नहिं हिरदे में तो अंत में जलके होजां राख ॥
बनारसी कहै खुन्नीलाल तू नाम सुधारस मनमें चाख ॥
रामनामका सुमिरणकर मन मुखसे कहु तू कान्हैया ॥
दीनदयालु जो कृपा करैं तो पार लगै मेरी नैया ॥

शरीरका भेद—बहेर लँगडी ।

आज तलक नहिं कहा किसीने और न कोई कह सकेगा अब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥
अगर तुम्हें मालूम होय तो कहो मायने इसके सब ॥
आईने में शकल नजर नहिं आये इसका कौन सबब ॥
और बात मैं कहूं आपसे इसके तईं सुनना साहब ॥
उलटा दरिया चलै कहां पर इसका ज्वाब दीजियेगा कब ॥
अचरज ये मैं रोज देखता हूं इन आंखों से बेढब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥
ऐसी बात बतलाये ओही जिसको दिखलाई देहैरब ॥
अव्वल माया माया में जोरू जोरूमें माकी छब ॥
आगे इसके एक बात है यही मुझे है बडा अजब ॥
आजुरदा ओ कभी न होवे जिसके ऊपर पडै गजब ॥
इमानसे देखा मैंने तो मुझे नजर आया जब तब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥
नीचे को ऊंचा समझे औ जीसे इलमका होवे कसब ॥
आदम होके याद न भूले आपेको पहिचाने तब ॥
आपेको जो पहचाने औ अपी आप है अब औ जब ॥

अल्ला अकबर आदम ईदम मशरिक मगरिब अरब खरब ॥
अंदर दिलके देख अरे नादान तुझे गरहो कुछ ढब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥
अगर्चें जो तुम सुनो तो मैं सब कहताहूं उसका करतब ॥
आदि कुँवारी बनीरहैं और कुल जहानसे करै कसब ॥
आनके अपने खसमको मारा बनी सोहागिन लाल ओ लब ॥
उसे नहीं कोइ कहै रांड सुन बनारसी ओ बडी चरब ॥
इसके मायने वही बतावे जो कोइ प्रभुका करै अदब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥

होलीनिर्गुण–बहेर छोटी।

होलीमें इज्जत रहै तो खेलो होली॥ओहोली मत खेलो जो होय ठठोली॥पांचो भूतों को मारके तू पिचकारी ॥ रंग हरीके रंगमें इन्हें तोहो हुसियारी ॥ सरबोर उसीमें करदे काया सारी ॥ हरवक्त नाच और गाव तु गुण गिरिधारी॥ तू ज्ञान गुलालसे भरले अपनी झोली॥ओ होली मत खेलो जो होय ठठोली॥ तुम काम क्रोध कुमकुमेको अपने मारो ॥ वोह लडो लडाई कालसे भी नहिं हारो॥दो प्रेम कि गाली प्रभु को उसे पुकारो॥ ओ कबीरके सँग आत्मज्ञान बिचारो॥जो ज्ञानी होतो पहिचानो ये खोली ॥ ओ होली मत खेलो जो होय ठठोली ॥ तुम ज्ञान अग्निमें लोभ औ मोह जलाओ॥लव उस मालिकसे अपनी आप लगाओ॥तुमतत्त्व तालदे मृदंगबीन बजाओ॥अनहद बाजे को सुनो तो उसकोपाओ मत कीचड में तुम गिरो जो आवे डोली ॥ ओ होलीमत खेलो जो होय ठठोली॥जलगई होलिका प्रह्लादको आँच न आई॥ऐसीहोली खेलो तो होय बड़ाई ॥ कहै देवीसिंह तुम सुनो हमारे भाई ॥

है बनारसीकी सब अद्भुत कविताई ॥ सुन मिनोचेहर की बात रँगीली भोली ॥ ओ होली मत खेलो जो होय ठठोली ॥

लावनी वाल्मीकिजीकी–बहेर जीकी।

चाहे जपो तुम मरा मरा चाहे तुम भजलो राम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर विधिसे आता कामजी ॥ त्रेतायुगमें एक पुरुष करता था बटमारी ॥ कितनेहूंको मारा उसने पाप किये भारीजी ॥ हत्या करकै उसकी सूरत होगई हत्यारी ॥ बहुत किये अपराध बोझसे पृथ्वी तक हारी ॥
तोडा–धर्मरायभी जी में डरे--यह पातक कोई कहां धरे ॥
अब यह पापी कैसे तरे ॥

दोहरा--कभी न सुमिरा रामको, ना दया करी नहिंदान कितनोही का धनहरा, मारी कितनो की जान ॥ कौन पुण्य से होगा इसका वाल्मीकि सा नाम॥उलटासीधा रामनाम हरविधिसेआता कामजी ॥ १ ॥ एक समय नारदमुनिजीने किया उधर फेरा ॥ वाल्मीकिने आकर नारदमुनिकोभीघेराजी॥ नारदमुनिने कहा वचन सुनले तू यह मेरा॥क्यों मुझकोमारेहै मैंने कियाहैक्यातेराजी॥
तोडा--जब पापी बोला ललकार--मेरा तो है एही कार ॥
कितनोहींको डाला मार ॥

दोहरा--नहीं मेरी कोई वृत्तहै करता मैं खेती ॥ कुटुंब अपना पालताहूं लूटमारसेती ॥ क्याजाने कितनों से मैंने किया यहां संग्राम ॥ उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी॥२॥ वाल्मीकि को फिरि नारदमुनिने यह समझाया॥ तैंने धन लूटासो तेरे कुटुंबनें खायाजी॥दौलतका हिस्सा तेरे सबघरने पाया॥पाप जो तैंने किया उसेनहीं किसीने बटवायाजी । दारा सुत भगिनी भाई । सबसे तू कहो यह जाई ॥ पाप यह मेरा लो बटवाई ॥

दोहरा--जो वो तेरे पापको लेवें सबबटवाई॥ तो तू मुझको मारियो अपने गृहसे आई ॥ इतना सुनके वाल्मीकि उठ धाया अपने धाम॥ उलटा सीधा राम नाम हरविधिसे आता कामजी ॥ ३ ॥ चलते चलते वाल्मीकि पहुँचा अपने डेरों ॥ भाई बंधु अरु लोग वहांके सब उसने टेरेजी ॥ सुनसुनके सब उठ ठाढेभये औ बैठे चौफेरे॥ वाल्मीकिने कहा वचन यह सुन लो सब मेराजी ॥ जो जो धन मैं हर लाया सो सो सब तुमने खाया ॥ पाप मेरा नहिं बटवाया॥

दोहरा--अब तुम मेरे पापको सब कोई बटवावो॥ मैं लाऊँ धन लूटके तुम घरबैठे खाओ ॥ जितनी दौलत हरूंगा मैं सब तुम्हींको दूंगा दाम॥ उलटा सीधा राम नाम हरविधिसे आता कामजी॥४॥ वाल्मीकि का सुना वचन सब बोले नर नारी ॥ क्या जाने हम तैंने है कितनोंकी जान मारीजी ॥ हमैं पापसे काम नहीं है तुही पाप धारी ॥ पाप कियेसे अंतसमयमें होती है ख्वारीजी ॥ वाल्मीकि होके लाचार ॥ छोड़ दिया अपना घरबार ॥ मनमें करता शोच विचारजी ॥

दोहरा--भाई बिरादर त्यागके, अबचलूं गुरूके पास॥ वो चाहै तो पापका, एकपलमें करदे नाश ॥ अब घरसे कुछ काम नहीं वसूंगा मैं इसग्राम ॥ उलटा सीधा राम नाम हरविधिसे आता-कामजी ॥५॥ नारायणने करी कृपा जब हुआ उसे वैराग॥ जितने खोटे कर्मथे उनको छिनमें दीना त्यागजी ॥ नारदमुनिके पास आया और जागे उसके भाग ॥ दिया शीश उनके चरणोंमें किया बहुत अनुरागजी ॥ कहा गुरूजी सुनो वचन ॥

दोहरा--भाई बिरादर कुटुंबके कोई नहीं बांटे पाप॥ तुम अपनी कृपा करो काटो मेरे संताप ॥ तुमहो गुरू मैं हूं चेला शिरझुका-किया परणाम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर विधिसे आताका-

मजी ॥६॥ फिर नारदमुनिने देखा अब हुआ इसे कुछ ज्ञान ॥ रामनाम रटनेसे होवैगा इसका कल्यानजी ॥ वोहीमंत्र उपदेश दिया और बताया उस्को ध्यान॥इसीनामसे पापतेरे होवेंगे पुण्य समानजी ॥ अब तेरा होगयाभला । किसीका मत काटियोगला॥ पाप तेरे सब दियेजला ॥

दोहरा—वाल्मीकिने रामनामका मनमें जापकरा ॥ रामरामके नाममें निकले मरामरा॥बडे शोचमें वह आया पग लिये गुरूके धाम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर विधिसे आता कामजी ॥७॥ वाल्मीकिने कहा गुरूजी रामनाम गया खोय ॥ मैं कहताहूं राम राम जी तो मरामरा मुखहोयजी ॥ नारदमुनिने कहा जपै हैं यही नाम सबकोय॥मरा मरा कहनेसे रामजी सबदुख डालै धोयजी ॥ वाल्मीकि निश्चयकरके । बैठ गया आसन भरकै ॥ उलटा नाम हिरदै धरकै ॥

दोहरा—नारदमुनितोचलदियेबोबैठाध्यानलगाय ॥ मरामरा रटने लगा गई भूख प्यास बिसराय॥वर्षाऋतु जाडाझेल गरमीमें सह अति घाम ॥ उलटासीधारामनामहरविधिसे आता कामजी ॥ ॥८॥ शरीरकी सुधि नहीं रही और तनुपै जमगई घास ॥ और आशसब छोड लगाई मरामराकी आशजी ॥ जब तो रामने करी कृपा आपहुँचो उसके पास ॥ वाल्मीकिके घटमे अपना किया रामने वासजी ॥ ब्रह्मज्ञान देदिया उसे । अपनी आत्माकिया उसे ॥ लगाकंठसे लिया उसे ॥

दोहरा—जबतो तालीखुलगईभयेवाल्मीकिचेतन॥कंचनसातनु बनगया पायोनिर्गुणदशरन ॥ वाल्मीकिके घटमें रामने किया आप विश्राम॥उलटा सीधा राम नाम हरविधिसे आता कामजी मरामरा कहनेसे होगये वाल्मीकि ज्ञानी ॥ राम नाम रामायण-

कीकथा कही ह्वैगई सिद्धवानी॥दशहजारवरसोंकीबातआगे सब पहचानी॥भूत भविष्यत वर्त्तमान ये तीनों राहजानी ॥ उलटा-नाम जपाभाई ॥ तिसपर यहपदवीपाई॥वाल्मीकिकीकविताई॥

दोहरा—विष्णुसहस्रनाममेंश्रीरामनामहैसार ॥ जोकोईसुमिरै रामको उनका होता उद्धार ॥ सकल कामना मिलै उसे जो जपै नाम निष्काम ॥ उलटा सीधा रामनाम हरविधिसे आता काम जी॥१०॥मरा मरा कहनेसेही ऐसे पापीतरते॥रामरामजो रटै हैं वो क्या जानैं क्या करतेजी ॥ रामनामते समुद्रमें अबतक पहाड तरते॥वोभी होजाय रामनामको जो हिरदे धरतेजी॥रामनामकी सबमाया ॥ पारकिसीने नहिंपाया॥यही नाम चहुँदिशि छाया ॥

दोहरा--जोकोइ ऐसे छंदको गावे सुने दे कान॥भुक्ति मुक्ति पावै वही औरहो उसका कल्यान॥कहैदेवीसिंह बनारसीहै रामनामसर नाम॥उलटा सीधा राम नाम हर विधिसे आता कामजी॥११॥

लावनी अहंकार नाशिनी ।

जो कहता हम करते वो दुःख भरता है॥ जो करता जगके कार वही करता है ॥ जो कहता हमने वेद पढे हैं चारी॥उसको कहते हरि इसकी मति है मारी॥कोइ कहता हमक्षत्री हैं हम ब्रह्मचारी॥ सब अहंकारमें फँसेहुये नर नारी॥जोहं बुद्धीको तजै करै नाचारी॥ उसको मिलते इक पलभरमें गिरिधारी ॥ जो निष्फल पूजाकरै वही तरताहै॥जो करता जगके कार वही करताहैं ॥१॥ जो कहता हमतौ नित्यदान करतेहैं॥उसका परमेश्वर नहीं मान करते हैं॥जो देत वस्तु मनमें गुमान करते हैं॥वो स्वर्ग छोड फिर नरक पानक-रते हैं॥जो अहंकार तजि हरिका ध्यान करतेहैं ॥ उसका स्वामी आदर अरु मान करते हैं ॥ जो करताहै सो वही वही धरताहै ॥ जो करता जगके कार वही करता है ॥ २ ॥

जो कहता हमहैं बड़े कवीश्वरज्ञानी ॥ उसको हरि कहते इसकी मिथ्यावानी ॥ कोइ कहता हमहैं बड़े वीर बलवानी ॥ उसको हम कहते यहतो है दहकानी ॥ कोइ बनके बैठे राजा और कोइ रानी ॥ इस पृथ्वीपरहैं बड़े बड़े अभिमानी ॥ इस अहंकारसे अपना दिल डरताहै ॥ जो करता जगके कार वही करता है॥३॥ जो कहता मैंने बडा जंगजीताहै ॥ वह मरताहै फिर कभी नहीं जीताहै ॥ जिस जिसने मनमें अहंकार जीताहै ॥ वह दो दिनमें दुनियासे हो बीता है ॥ अब देवीसिंह दिलफटाहुआ सीताहै ॥ जो कम किया प्रभुके अर्पण देता है ॥ कहै बनारसी हरिभक्तनहीं मरता है ॥ जो करता जगके कार वही करता है ॥ ४ ॥

वचन पलटने वालेका जो हाल होताहै वह सही लिखा.

बहेर छोटी।

जो जबांसे कहिके सखुन पलटजातेहैं॥ शिर दगाबाजकेअकसर कटजातेहैं॥ जोकहतेहैं वो करते हैं पूरेनर ॥ चाहे इसमें होजायकलमधडसेसर ॥ मैंकहूं तू झूंठाकौल किसीसे मतकर॥जो कहिके सखुनको नहींकरें वोहैं खर ॥ जो झूंठ बोलते हैं वो फिरते दरदर॥ कह सत्य वचन बलि विक्रम राजा गयेतर ॥ जो कायरहैं वीरनते हट जाते हैं ॥ शिर दगाबाजके अकसर कटि जाते हैं ॥ १ ॥ जो कलाम पै अपने रहतेहैं साकर ॥ तो लाकलाम वोह खालक मिलता आकर ॥ मत झूंठ किसीसे बोल यह नरतनु पाकर ॥ सब बुरा कहैंगे कहूं तुझे समुझाकर ॥ जो करे दगा अपने घरमें बुलवाकर ॥ लेउसका बदला साईं उसमें आकर॥ नहिं मिलै हशरतकाजब दिल फटजातेहैं॥शिर दगाबाजके अकसर कटजातेहैं॥२॥ पूरोंका सखुन नहिं लाखों में टलताहै ॥ सर सखुनके आगे शूरोंका चलता है ॥ जो सच्चाहै वह कुटुंबसे फलताहै ॥ उसका चिराग उसके आगे बलताहै ॥ जो करके दगा यारोंके तईं छल-

ताहै ॥ वो नरक कुंडली आतशमें जलताहै ॥ सच्चोंके आगे झूँठे घटजातेहैं ॥ शिर दगाबाजके अकसर कटजाते हैं ॥ ३ ॥ जो कलामको झूंठा मुखसे फरमाते ॥ वो अंतसमय दोजखमें डाले जाते ॥ कहै देवीसिंह जे साईंसे लव लाते ॥ वह भवसागर यक लहजामें तरजाते ॥ छंद बनायके तो सच्चा मिसरा गाते॥ हरनाम सुमिरके सभामें चंगबजाते ॥ कहै बनारसी हम सखुनमें डटजाते हैं ॥ शिर दगाबाजके अकसर कटजाते हैं ॥ ४ ॥

भगवान्से विनय–बहेर छोटी।

करदाया दासके कष्ट हरो गिरिधारी॥करुणानिधिकरुणाकरोमैं शरण तुम्हारी॥सब संकट मेरे दूरकरौ अब स्वामी॥ऋद्धिसिद्धिसे मुझे भरपूर करो अबस्वामी ॥ अपने अब मुझे हुजूर करौ तुम स्वामी ॥ चरणों की मुझे तुम धूरकरो अब स्वामी॥ यह काम तो मेरा जरूर करौ अब स्वामी ॥ भक्तोंमें मुझे मशहूर करौ अब स्वामी ॥ हो निर्भय पूरणब्रह्म आप अवतारी॥ करुणानिधि करुणाकरो मैं शरण तुम्हारी ॥१॥ सब संतोंको आपी तुमलेताराहै॥ ग्रहसे यह गजको तुम्हींने उबाराहै ॥ प्रह्लाद कि खातिर नरसिंह तनु धाराहै॥नखसे नाभीको चीर असुर माराहै॥मुझको वो नाम श्रीनारायण प्याराहै ॥प्रभु तेरे विन अब कोइ न हमारा है॥क्यों मेरे वास्ते करी देर वनवारी ॥ करुणानिधि करुणा करौ मैं शरण तुम्हारी ॥ २ ॥ पांचौ पंडाका साथ कियाहै तुमने॥ब्रजमें सखियनसे रंग कियाहै तुमने ॥ कालीको नाथके तंग कियाहै तुमने॥ कँसासे जाय फिर जंग कियाहैतुमने॥हरएक राक्षसको तंगकियाहै तुमने॥सब असुरोंकोचौरंगकियाहै तुमने॥ अबमेरे पांच भूतोंको मार मुरारी॥ करुणानिधि करुणाकरौ मैं शरण तुम्हारी ॥ ३ ॥ सब कसूर मेरा माफ आप अब कीजे ॥ शिर चरणोंमें अपनेमेरे

धरलीजै ॥ यह उम्र सदा दिन रात घडी छीजै ॥ कर मेहरप्रभू कछु भक्ति आपनी दीजै ॥ एक अरजी मेरी गरीबकी सुनलीजै॥ दिलभक्तिमें तुमरी सदा हमारा भीजै॥हरि हरलो तनुकी पीरहुवा दुखभारी ॥करुणानिधि करुणाकरौ मैं शरण तुम्हारी॥४॥तुमजो चाहो सो करौ आप यदुराई॥ राईसे गिरि करदेते गिरिसे राई॥है सत्य सत्य सांची तेरी प्रभुताई॥तरगये वही जिसने तुमसे लवलाई॥ कहे देवीसिंह जिन तुम्हरी महिमा गाई ॥ वह भवसागरके पार उतर गया भाई ॥ कहैं बनारसी यह राखो लाज हमारी ॥ करुणानिधि करुणा करौ मैं शरण तुम्हारी ॥ ५ ॥

ख्याल निर्गुण चौकड–बेहरशिकस्ता।

बहुत दिनोंपर बिछीहै चौसर सम्हलके खेलो ये चाल क्याहै॥ जो फेकूं पांसे तो छूटैं छक्के नलों दमनकी मजाल क्या है ॥ मैंहूँजुवारी सुघड खिलाडी हमेशह जीतूं कभी न हारूं॥सदापडे पो दुई दूरहो चौरासी यों घर घरकी नरदमारूं॥ पडैं अगरचे जो तीन काने तौ अपने दिलमें मैं यह विचारूं॥ ये तीन गुणहैं सभीके तनमेंमैं इनसे चलके अलग सिधारूं॥ हैं चार कानें वो चौथा पदहै मिला अब हमको मजाल क्या है ॥ जो फेकूं पांसे तौ छूटैं छक्के नलोदमनकी मजालक्या है ॥१॥ है इसमें पंजडी सो पांचतत्त्वहैंमें इनसे गोटी चलावचाके॥और फेकूं छकडी ले आऊं सत्ता सतको सद्गुरुके पास जाके॥है दाँव अट्ठा सो आठ सिद्धी नव ऋद्धी मैं रक्खूं मनाके॥पड़ें अगर छः चहार दश तौ दशौ द्वार देखूं दिललगाके॥ नरंग अपना मरे किसीसे मैं अब समझताहूं कालक्याहै ॥ जो फेकूं पांसे तो छूटैं छक्के नलोदमनकी मजाल क्याहै ॥ २ ॥ आये हमारे वो दशपौ ग्यारा सो ग्यारहौ रुद्र हैं वदन में और बारहराशैंसो

दोनों बारह समझशोच कुछ तू अपने तनमें ॥ बडेहैं इनमें वो दोनों तेरा मैं तेरा तेरा कहूंहूंमनमें ॥ तू चौधरीहै जहां का मालिक नजर पडे चौदहों भुवनमें ॥ कहूं भजन मैं ये पंद्रहों दिन माया मोहका वो जाल क्याहै ॥ जो फेकूं पाँसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजाल क्या है ॥३॥ है आतमा सोलहों कलाये सोपाँसेमैंसोलहों बनाये॥ वो आये सत्रह ये सतरहा अब हरीहरीके गुण गाये ॥ पढे अठारह पुराण हमने और अर्थ उसके ये दिलमें पाये ॥ उठे रंग बदरंगभी उठगये वो सारी मायाको जीतलाये ॥ बनारसीका सदा बनारस बना हुआहै वबाल क्या है ॥ जो फेकूं पाँसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजाल क्याहै ॥ ४ ॥

ख्याल जीकी लयका ।

नहीं मेरे ये शरीरहैं नहिंहैं मुझको दुख द्वन्द॥ मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी ॥ नहीं लोभ नहिं मोह नहिं बुद्धि नहिं अहंकार ॥ नहिं आचार औ नहीं विचारजी॥ नहीं रात नहिं दिन नहिं तिथि घडी लग्न नहिं वार ॥ नहीं है अपना पारावार जी ॥ नहिं उजड नहिं जंगल बस्ती नहीं कुटंब घरवार॥ नहीं दारा सुत नहीं परिवारजी ॥ दोहरा–नहीं शीश नहिं मुख नहिं जिह्वा नहिं वाणीनहिं हाथ ॥ नहीं उद्र नहिं लिंग चरण नहिं नहीं वर्ण नहिंजात नहीं वेद नहिंशास्त्रनहीं श्लोक नहींपद छंद॥ मेराहैरूपसच्चिदानंदजी॥ १ ॥ नहीं काम नहिं क्रोध नहीं कुछ ज्ञान नहीं अज्ञान ॥ नहीं कोई मंत्र तंत्र नहीं ध्यानजी ॥ नहीं नेम नहीं संयम पूजा नहिं तीरथ स्नान॥ नहिं व्रत होम यज्ञ नहिं दानजी॥ नहीं योग नहिं भोग नहीं संयोग मान अपमान ॥ नहीं वनवासी नहिं स्थानजी ॥

दोहरा–नहिं सीधा नहिं गोल नहीं दुबला औ नहिं मोटा ॥

नहिं टेढा नहिं बेडा बहुत नहीं बडा नहीं छोटा ॥ नहीं तुर्श नहीं लौन अलौना नहिं कडुवा नहिं कंद॥ मेराहै रूप सच्चिदा-नन्दजी ॥२॥ नहीं सुखी नहिं दुखी नहीं धनवान नहीं कंगाल॥ नहीं मंत्री और नहीं भूपालजी ॥ नहीं सिंधु नहिं नदी नहीं है कूप बावडी ताल ॥ नहीं है आकाश नहीं पातालजी ॥ नहीं श्वेत नहिं पीत नहीं है कपोत नीला लाल॥नहीं है वृक्ष फूल फल डालजी ॥

दोहरा—नहिं हीरा नहिं मोती माणिक नहिं रत्नकी खान॥नहीं खड्ग नहिं चक्र नहीं त्रिशूल धनुष नहिं बान॥नहीं जाग्रत नहीं स्वप्न सुषुप्ति नहीं खुला नहिं बंद॥मेराहै रूप सच्चिदानंदजी॥३॥नहीं त्रि-दंडी नहिं वनखंडी नहीं ब्रह्मचारी॥नहीं मुंडित न जटाधारीजी ॥ नहीं अग्नि नहिं पवन न पानी नहिं मीठा खारी ॥पशु नहिं पुरुष नहीं नारीजी॥नहीं शैव नहिं शाक्त नहीं वैष्णव नहीं आचारी ॥ नहीं हलका और नहीं भारीजी ॥

दोहा--नहिं मीमांसक नहीं जैनी नहीं उदासीन मतवाद॥नहीं देव गंधर्व यक्ष नहिं नहीं विघ्न विख्याद ॥ नहिं बिजली नहिं घन नहिं तारे नहिं सूरज नहिं चंद ॥ मेरा है रूप सच्चिदानंदजी॥४॥ नहीं शिष्य नहिं गुरू न माता पिता नहीं भ्राता ॥ नहिं रिस्ता और नहिं नाताजी ॥ नहिं बैठा नहिं खडा नहीं आता है नहिं जाता॥ नहीं भूखाहै नहीं खाताजी ॥ नहीं लेय नहिं धरे नहीं देता नहिं दिलवाता ॥ सखी नहीं सूम नहीं दाताजी ॥

दोहरा—नहीं कर्मकी रेख लेख नहिं नहीं पढाजाता॥ नहीं मौन-हो रहै नहीं बोले नहिं बुलवाता॥ नहिं पक्षी नहिं फंद कहै नहिं जा-ल नहीं फरफंद ॥ मेराहै रूपसच्चिदानंदजी ॥५॥ नहिं हिन्दू नहिं मुसलमान याहूदी नहीं फिरंग ॥ नहीं कोइ रूप नहीं कोइ रंग

जी ॥ नहीं बीन बाँसुरी नहीं करतार ताल मृदंग ॥ नहिं जल-तरंग नहिं उपंगजी ॥ नहिं कलँगी नहिं तुर्रा नहीं अनघडडुडा नहिं चंग ॥ नहीं कोई संग है नहीं असंगजी ॥

दोहरा–आपी आपमें आप है रहा आपमें व्याप॥ नहीं स्वर्ग नहिं नरकहै नहीं पुण्य नहिं पाप ॥ बनारसी कहै रूप हमारा अखंड परमानंद ॥ मेराहै रूपसच्चिदानंदजी ॥ ६ ॥

मथनी श्रीकृष्णके खेलकी–बहेर छोटी ।

यह नंदलाल यशुदाका दुलारोकनियां॥लैगयो सखीरी मेरी दधिकीमथनियां। सुनसखीएकदिनकान्हमेरेघरआया॥दधिगोरस दी ढलकाय औ माखन खाया॥दधिकी माथनिया हाथमें लेकर धाया ॥ मैं देखा चोरी करत पकड बिठलाया ॥ उन फाडो मेरा चीर मैं तोरी तनियां॥ लै गयो सखी री मेरी दधिकी मथनियां॥ वो कुस्तं कुस्ता मुस्ती करने लागा॥मथनी भी लेगया हाथ छुडा कर भागा॥ इतनेमें होगया भोर ससुर घर जागा ॥ पतिने मुझको अकलंक लगाकर त्यागा॥डर सास ननँदका हमसे लडे जेठनि-यां॥लैगयो सखीरी मेरी दधिकी मथनियां॥सुन सखी श्यामसे म-थनी क्योंकर पाऊं ॥ मोहिं मांगत आवे लाज बहुत सकुचाऊं॥ है नया नेह शर्मांते सन्मुख जाऊं॥दूरीसे नटवर वेष देख ललचाऊं॥ मुख धर बांसुरी बजावे तान रसभिनियां॥लै गयो सखीरी मेरी द-धिकी मथनियां॥ वोह सुंदर सांवरा मेरी नजर जब आवे ॥ पलकों से मारै सैन नैन मटकावे॥बंशीमें मोहनी डाल मुझे बिलमावे॥एक नजर दिखाकर तन मन हरलेजावे ॥ है ब्रजमें प्रकटो बड़ो वो छैल चिकनियां ॥ लै गयो सखीरी मेरी दधि की मथनियां ॥ माथेपर चंदन मोर मुकुट शिर साजे ॥ कानों में कुंडल कर मुर्ली बीराजे ॥ एक पडी वो नाक बुलाक अधिक छबि छाजे॥

साँवरी सुरतपर पीत पीतांबर राजे ॥ कटि किंकिणी बाजे पग म्याने पैजनियां ॥ लै गयो सखी री मेरी दधिकी मथनियां ॥ भोला मुख भोली बतियां लगती प्यारी ॥ मन चाहे चितसे प्रेम राह रस न्यारी ॥ ग्वालन की लगन से मगन हुये गिरिधारी ॥ कहै देवीसिंह मैं कृष्ण तेरी बलिहारी ॥ दिन रात तुम्हारा ध्यान धरै ये दुनियां ॥ लैगयो सखी री मेरी दधि की मथनियां ॥

ख्याल तवहीर बहेर तवीर।

मैं देखूं हूं सबके है सर पर वही पर अपनातो रखता वो सरही नहीं ॥ ये सितम है की उसके हैं चश्म कहां पर ऐसी किसी की नजर ही नहीं ॥ है दैरो हरम में वो जलवे कुनापर अपना तो रखता वो घरही नहीं ॥ वोः मकीं है अजब के मकांही नहीं वो मक्का है अजीबके दरही नहीं ॥ है उसका वह मसकन पाक जहां वहां वहमो गुमाका गुजरही नहीं ॥ न तो दिन है वहां न तो शबहै वहां वहां देखो तो शम्सो मकर ही नहीं ॥ हैनूर का उसके जहूर खिला पर है वो कहां ये खबरही नहीं ॥ ये सितम है के उसके हैं चश्म कहां पर ऐसी किसीकी नजर ही नहीं ॥ वो जलवा है उसका तमाम जगह कोई और तो जलवागरही नहीं ॥ कहीं मिस्लेनूर अया है वोही कहीं मफी है मुजहर ही नहीं ॥ ये जमीनो फलकका है उसके सिवा कोई मालक जेरो जबरही नहीं ॥ सरदार है कुल आलम का वही कोई उसपे तो है अपसरही नहीं ॥ जो चाहे सो करता है आपवही कुछ उसको किसी का खतरही नहीं ॥ ये सितम है के उस्केहैं चश्म कहां पर ऐसी किसीकी नजर ही नहीं॥ वोः अजीवहै नखले मुरादे चमन कहीं हस्ती में ऐसा सजरही नहीं॥ तरोताज निहाल लतीफ हैं वह कोई उस्से तो है बेहतरही नहीं॥ कहीं नखल में शाख हैं बर्ग नहीं कहीं गुलमें तो लगता समरही

नहीं ॥ उसे जाके चमन में जो ढूंढै अगर तो औ पाये नसीमो सहर ही नहीं ॥ वोः सजरहै वहार जिसे है सिदा कभी बादे खिजांसे नजरही नहीं ॥ ये सितम है कै उसके चश्म कहां पर ऐसी किसीकी नजर ही नहीं ॥ जिसे इश्क खदान जहां में हुआ कोई उससे तो है बरही नहीं ॥ वादिलही हुये कुछ अकलो कहे मगर ये भी नहीं तो वशरही नहीं ॥ कहे काशीगिर लापरवाहै वोह कुछ खाहीसे सीमों जरही नहीं ॥ वो रुतबाहै उसका केशाहा काभी कुछ आगे तो उसके वकरही नहीं ॥ जो फकीरों के फैजे सखून में हैं वोह जवाँ में किसी के असर ही नहीं ॥ ये सितमहै के उसके हैं चश्म कहांपर ऐसी किसीकी नजरही नहीं ॥

ख्याल तौहीद बंदा खुदाय बहेर नवीर ।

जिसे जिस्म का अपने गुरूर नहीं उसे मौतका खौफो खतरही नहीं॥नतो ख्वाहिश उसको विहिस्त की है कुछ दोजखकाभी तो डरही नहीं ॥ वो मकाँ है मेरा तनहाई में जहां शम्शो कमरका गुजरही नहीं ॥ नतो आबो हवा नतो आतिशवाँ कोई मेरे सिवा तो वशर ही नहीं ॥ जिसके परदा दुईका वो दूर हुआ तो फिर उसमें खुदामें कसरही नहीं ॥ जहाँ देखे वहांपे है नूरे खुदा कोई और तो आता नजर ही नहीं ॥ कोई लाख तरेसे जो मारे उसे पर उसका तो कटता वो सरही नहीं॥ नतो ख्वाहिश उसको वहिस्तकीहै कुछ दोजख का भी तो डरही नहीं॥जिसकी एक निगाहहै तमाम जगह उसके आगे तो जेरो जबर ही नहीं ॥ जिसे अक्क फैहम में है दखल बडा उसके आगे तो इल्म हुनरही नहीं ॥ जिसके कबजेमें गंज है वहदतका कोई उस्सा तो दौलतबर ही नहीं ॥ जो कुछ आया वो उसने लुटाही दिया कुछ पास में रखता वो जरही नहीं॥हरहालमें जो के खुशी है वशर ऐसा होता किसीका गुजर ही नहीं ॥ नतो

ख्वाहिश उसको बहिस्त की है कुछ दोजख काभी तो डरही नहीं ॥ २ ॥ उसके जरेसे नूर हजार बने उसके आगे तो शम्शो कमरही नहीं ॥ जिसने देखा उसे वह उसीमें मिला कोई और तो उसका है घर ही नहीं॥ मैंने दोनों जहामें जो देखा तो क्या कोई और तो मेरा जिगर ही नहीं ॥ सिवा उसके न कोई रफीक मेरा मुझे और किसीका फिकर ही नहीं ॥ जो है बन्दा उसीका न गन्दा हुआ कोई गैरका उसपे असरहीनहीं॥ न तो ख्वाहिश उस्को बहिस्त कीहै कुछ दोजख काभी तो डरही नहीं ॥ ३ ॥ मुझे ख्याल उसीका है आठों पहर मैंने याद किसीकी तो करहीनहीं ॥ जबसे देखा उसे तो मैं भूला सभी पर भूला मैं उसका तो डरही नहीं ॥ वो दिलहीमें मुझको दिखाई दिया कहीं करना पडा कुछ सफर ही नहीं ॥ दरिया है ये देवीसिंहका सखुन कहीं ऐसी तो लहरो बह रही न हीं ॥ है नाम वो तेरा काशीगिर कोई और तो ऐसा नसरही नहीं ॥ न तो ख्वाहिश उसको बहिस्तकी है कुछ दोजखकाभी तो डरही नहीं ॥ ४ ॥

फकीरके चार हुरूफ यही दुरुस्त हैं चहारदर्वेश गलत. बहेर खडी ।

फेसे फख्र और काफसे कुदरत रेसे रहम और येसे याद ॥
चार हर्फ़ हैं फकीरीके जो पढे तो हो दिल शाद ॥
फकीर होना बहुत कठिन है जिसमें फख्रकी हो नहीं बू ॥
और तो कुदरत भी न हो तो ऐसी फकीरीपर है थू ॥
रहम न हो दिलमें तो दुनियां छोड न होना फकीर तू॥
यादे इलाही जो कोई करे तू उसके कदम को छू ॥
शेर–यह चारों बात हों जिसमें वह फकीरी को करे ॥
नहिं तो क्यों जटा बढाके बोझ शिरपे धरे ॥
इस्से बेहतर है कि दुनिया में तू रह और कुछदे ॥

मैं यह कहताहूं फकीरी तो है परेसे परे ॥
ऐसी फकीरी मत करना जो चारों बात होवें बरबाद ॥
चार हर्फ हैं फकीरी के जो पढे तो हो दिल शाद ॥ १ ॥
फख्र वह कुदरत रहम और यादे इलाही भी हैं बहुत कठन ॥
वह फकीर है कि जिस की आठ पहर उस्से है लगन ॥
फिर उसको क्या ख्वाहिश है दुनियाकी और क्या करना धन ॥
फकत गुजारा यहां करनाहै इसीमें रहै मगन ॥
शैर--आगया माल तो दम्में लुटा दिया उसने ॥
किसी को देदिया कोई से लेलिया उसने ॥
न तो लेनेकी खुशी कुछभी न गम देनेका ॥
काम नेकीका जो कुछ बन पडा किया उसने ॥
इसके मायने वह समझे जिस्के दिलमें पूरा इतकाद ॥
चार हर्फ हैं फकीरी के जो पढे तो हो दिलशाद ॥ २ ॥
और काम सब सहल है पर मुशकिल है फकीरीका करना॥
वह फकीर है कि जो कोई जीतेजी समझे मरना ॥
जीतेजी जो मरै तो उस को मौत सेभी नहिं हो डरना ॥
अगर मरे तो खुदामें मिलै नहिं हो दुख भरना॥
शैर--खौफ दोजख का न कुछ और न खुशी जन्नतकी ॥
किया दोनों को तर्क वश ये उसकी मन्नत की ॥
दीनों दुनिया को छोड कर मैं उसकी जात हुआ॥
न तो हिन्दू ही रहा मैं न मैंने सुन्नत की ॥
चार हर्फ ये पढे और गुने तो वह कहलाये आजाद ॥
चारहर्फ हैं फकीरी के जो पढे तो हो दिलशाद ॥ ३ ॥
चार किताबें पढे तो क्या और सुने अगरचे चारों वेद ॥
पर नहिं उसको गुनै तो कभी न हो पूरी उम्मेद ॥

और इल्म कितने सीखे इस दिलपर आपने उठाके खेद ॥
पर मुशकिल है जहाँ में सुनो फकीरी का कुछ भेद ॥
शैर–मैंने देखा कि फकीरोंके हैं मौताज सभी ॥
फकीरी मुझको मिलै और न मिलै राज कभी ॥
खुदाने अपनी जुबाँ फख्र से मिलाई है ॥
हुक्म में उसके है वो साज और सामाज सभी ॥
बनारसी भी फकीर है और देवीसिंह मेरे उस्ताद ॥
चार हर्फ हैं फकीरी के जो पढे तो हो दिलशाद ॥ ४ ॥

लावनी तौहीद बहेर–लँगडी ।

खुदा से जो कोई मिला तो वह फिर खुदा हुआ नहिं जुदा हुआ ॥
नक्की उसको मिली और दुई का तो हर गया दुवा ॥
यकताई के आलिम में हर वक्त चूर रहता हूं मैं ॥
दुईवालों से तो लाखों कोस दूर रहताहूं मैं ॥
अन अल कह जो कहै तो उसके संग जरूर रहता हूं मैं ॥
पेशानी में तो उसकी बनके नूर रहता हूं मैं ॥
शैर--अगर वह खाकमें लोटैं तो गिल अक्सीर बनजावे ॥
करे मिसको तिला उस गिल की वह तासीर बनजावे ॥
जबाँ से जिसको कुछ कहदें तो वह फिर पीर बनजावे ॥
खुदासे गर कहें तू बन तो वह तसवीर बनजावे ॥
कभी नहिं हारे दुनिया में उन्होंने वह जीताहै जुवा ॥
नक्की उसको मिली और दुईका तो हरगया दुवा ॥ १ ॥
आब का कतरा मिलै जो दरियामेंतो वह दरियाबनजाय॥
खुदासे जो कोई मिलै तो बेशक वह मौला बनजाय ॥
नूर में जिसका मिलै नूर कुलजहां का वह जलवा बनजाय॥
दुई को करदे दूर तो आलम में यकता बनजाय ॥

शैर--मिला चाहे तो उससे मिल तू अब अपनीही हस्तीमें ॥
हमेशा मस्त झूमा कर सदा रहो अपनी मस्तीमें ॥
कभी शहेरा में घूमा कर कभी जा बैठ बस्तीमें ॥
कभी रहो बुत परस्तीमें कभी रहो हक परस्तीमें ॥
जिसने समझा एक वह तो फिर मौत को जीता नहीं मुवा॥
नक्की उस्को मिली और दुइका तो हरगया दुवा ॥ २ ॥
हमदश अव्वल खानम वाहेद यकता उसमें दुई नहीं ॥
वारे मेरे दिल के इसमें दुई तो मुतलक हुई नहीं ॥
जोके जिनस मैंने पकडी वह चीज किसीकी हुई नहीं ॥
बात खुदासे तो मेरे सिवा किसीकी हुई नहीं ॥
शर--कलामें मारफत मेरी जबाँसे हर घडी निकले ॥
कि जसे सिप्प मौलाकी कुरआँसे हरघडी निकले ॥
गिरेबाँ फाडकर हम इस जहांसे हरघडी निकले ॥
बया तोहीद तो मेरे बयांसे हरघडी निकले ॥
जिसने खेल खेला है खुदा से जुवा फिर उसने कहां छुवा॥
नक्की उसको मिली और दुईका तो हरगया दुवा ॥ ३ ॥
नेक जो है यह एक समझता एक नाम से काम मुझे ॥
मुफ्त मिला वह खच नहीं करनीपडी छः दाम मुझे ॥
उस मालिकका नाम लियेसे मिला बहुत आराम मुझे ॥
अब तो यहीं लौ लगी रहती है आठो याम मुझे ॥
शैर--दुईका उठगया परदा तो यकताई नजर आई ॥
न फिर बाबा नजर आया न वह माई नजर आई ॥
अगर रुसवा हुए हम तो न रुसवाई नजर आई ॥
जब अपने आपको देखा तो जेवाई नजर आई ॥

बनारसी नहिं थका अब उसके कांधेका उठगया जुवा ॥
नक्की उसको मिली और दुई का तो हरगया हुआ ॥४॥

लावनी तौहीद–बहेर लँगडी ।

पास न कौडी रही तो मैंने मुफ्त खुदाको मोल लिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥
पाया खजाना गयेबका मैंने कभी नहीं घटनेका है ॥
चाहे जितना मैं बाटूँ कभी नहीं बटनेका है ॥
खर्च न कौडी होय फकत यह जबाँहीसे रटने का है ॥
ऐसा सौदा तो कोई फकीरसे पटने का है ॥
शैर–न रही पासमें मेरे जो एक लंगोटी ॥
मुँडाया उसको भी शिरपर मेरे जो थी चोटी ॥
किया सवाल तो सबकी सही खरी खोटी ॥
लगी जो भूख तो खाई वह माँग कर रोटी ॥
पियास लगी तो पानी भी जैसाही मिला वयसाही पिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥ १ ॥
यह बाजार निरगुनका है मैं खरीददार मालिक का हूँ ॥
मालिक भी हूँ और मैं ताबेदार मालिकका हूँ ॥
वह मेरा है दोस्त और मैंभी तो यार मालिकका हूँ ॥
जो चाहे सो करूं मैं मुखतियार मालिकका हूँ ॥
शैर–यह हाटमें जो गया उसका वह हुआ सौदा ॥
न खर्च कुछ भी पडा मुफ्त में मिला सौदा ॥
हम हाथ उसके बिके जिसे यह किया सौदा ॥
न कोई देख सकेहै मेरा छुपा सौदा ॥
कभी नहीं घाटा होवेगा अब मेरा खुलगया हिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥२॥

रोजगार करना होवे तो ऐसा रोजगारी तू बन ॥
खर्च न जिसमें पडे तो ऐसा बेपारी तू बन ॥
लूट खजाना खुदा के घरका ऐसा बटमारी तू बन ॥
तूभी लुटादे जहांमें कुछ तो उपकारी तू बन ॥
शैर–यह हाथ जिसके लगा माल वह निहाल हुआ ॥
निहाल वह भी हुआ इसमें जो पामाल हुआ ॥
खुदाकी राहमें गरचे कोई कंगाल हुआ ॥
तो आखिरश को फिर वह कोठीवाल हुआ ॥
हिन्दू मुसलमाँसे मैं कहता क्या सुनी या होवे शिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥३॥
यह है रंज फकीरों की इस सौदेका कुछ मोल नहीं ॥
छपाले इसको हरएक के आगे यह तो खोल नहीं ॥
खामोशी का आलम है इस जापर निकले बोल नहीं ॥
कहे देवीसिंह अरे तू अमृतमें विष घोल नहीं ॥
शैर–बुरा न मान मेरी बात सुन भला होगा ॥
इसे खरीद करै वह जो दिल जला होगा ॥
यह राह सख्त है इसमें जो कोई चला होगा ॥
तो उसको पाके हरएक हूरने मला होगा ॥
बनारसी ने सबको छोड लिया वासुदेव और राम सिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥४॥

पंथ प्रेमका–बहेर लँगडी ।

दुनियामें लाखोंई पंथको हमने देखा भाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥
कोई बदनपर खाक मले और सेली कफनी डाले हैं ॥
कोई रँगावे वस्त्रको अपना वेश सँभाले हैं ॥

कोई मौन होकर बैठे नहिं किसीसे बोले चाले हैं ॥
कोई फडाये कान को पियें वो मदके प्याले हैं ॥
कोईने लम्बा तिलक दिया और पहने तुलसी माला है ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥
कोई रात दिन खडे रहैं और कोई हाथ उठाये हैं ॥
किसीको देखा तो वह बैठे और ध्यान लगाये हैं ॥
किसीने अपने बदनको दागा तनुपर छापे खाये हैं ॥
किसीनें अपने शीशपर लंबे बाल बढाये हैं ॥
किसीके तनुपर वस्त्र नहीं और कोई ओढे मृगछाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥
कोई सेवडा बना और कोई कहै कि हमतो दंडी हैं ॥
कोई तपस्या करैं और कोइ बने वनखंडी हैं ॥
किसी के मठपर ध्वजा उडै और कहीं फरकती झंडी हैं ॥
विना इश्क के हुवे जो फकीर वो पाखंडी हैं ॥
किसीने मसजिद बनवाई और कोईने रचा शिवाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥
कोई कहै हम यती हैं और कोई बना जगत् में वैरागी ॥
बिनाइश्क के किसी की लव नहिं सद्गुरुसे लागी ॥
बनारसीने इश्क में अपनी जीतेजी काया त्यागी ॥
दुई न मुतलक रही और दुबधाभी सुनके भागी ॥
रामकृष्णका सखुन यही समझो तुम सबपर बालाहै ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निरालाहै ॥

तथा।

दुनियामें कहते हैं सबी आशिक का दरजा आला है ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूक का रुतबा बाला है ॥
आशक था मजनू पर वह लैला का ताबेदार रहा ॥

गमें इश्कमें हमेशा लैलाके:बीमार रहा ॥
गया तन बदन सूख पर अपने दिलसे ताकतदार रहा ॥
दिलहीमें अपने वह करता लैलाको दीदार रहा ॥
शैर–जबां पर हर घडी उसके कलामें विर्द लैलाथा ॥
कुरांथा हाथम तिसपरभी वह लैला पै शैदाथा ॥
बताओ इश्क क्या है इसकी सूरत किसने देखी है ॥
बलाये लागहानी थी हुआ जिस दिन यह पैदा था ॥
आशक भी है मस्त वही जो वहदत में मतवाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतबा बाला है ॥
तख्त सल्तनत तर्क किया वह आशके रांझा हीर हुआ ॥
खाक बदन पर मली और शाहसे बडाफकीर हुआ ॥
काली कामर ओढ चराई गाय नहीं दिलगीर हुआ ॥
हुकुम हरिका जो माना तो वोः औलियापीर हुआ ॥
शैर–पकडकर शेरको जंगल में क्याही घातसे मारा ॥
वह ताकत हीरकी उसमेंथी जिसकी जात से मारा ॥
सुनो दुनियामें माशूकोंका चरचा तुम जरा मुझसे ॥
जिसे मारा उसीको यक जरासी बातसे मारा ॥
वोः आशिक पक्का है जिसने अपनाहीं घर घाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतबा बालाहै ॥
शीरीं के ऊपर आशक फरहाद एक मजदूर हुआ ॥
गजब इश्क है जिसे यह लगा वोः चकनाचूर हुआ ॥
शीरींके रुतबेसे कुछ फरहादका भी मखदूर हुआ ॥
बाद मर्गके वोः दोनों मिले नाम मशहूर हुआ ॥
शैर–जिसे माशूक चाहै क्यों न उस आशककि इज्जतहो ॥
बनाये या बिगाडे यह तो सब अख्तियार है उसको ॥

कहां वह शाहजादी और कहां फरहादकी इज्जत ॥
बनाई बस वह शीरीने इसे आशक हो तो समझो ॥
आशकने सर दिया तो क्या माशूकने उसे सम्हालाहै ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतवा बाला है ॥
हम जिसके आशिक हैं उसका हुकुम बजाया करते हैं ॥
जो जो कहे वोः काम उसका करलाया करते हैं ॥
लाख तरहके सदमें अपने दिल पै उठाया करते हैं ॥
सितमगार का सितम नहीं जबांपर लाया करते हैं ॥
शैर–फलक पर वोह है और हम इस जहांके बीच रहते हैं ॥
वह तो है लामकां हम हरमकांके बीच रहते हैं ॥
तबक चोंदाके ऊपरसे सदा आतीहै कानोंमें ॥
वहां उसकी जबां ह्यां हम कुरांके बीच रहते हैं ॥
देवीसिंह कहै बनारसी भी आशक भोलाभाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतबा बाला है ॥

खुदाके नूरकी तारीफ शिरसे पैर तक ।

कहरनाजो अन्दाजगजबहै अजबहुस्नदमकेदम्दम्।जालमें छल बल इशारेनहीं तेरे आफतसे कम्॥गरचे हुस्न तेरेकी सिफतकोईला-खतरहसे करेरकम् ॥ क्या ताकत है जो तसके हाथमें ठहरे लोहेक-लम् ॥ जायेताज्जुब है जलवातेरा जलबेगर बनासनम् ॥ तेरे नूरसे हुआकोहतूरमेंवह मूसाबेदम् ॥ हाथमला यकमलैं हूर हैरतखा खा के छुये कदम् ॥ जिनो बसरसबतेरी ताबेदारीकरते हरदम् ॥ सर तापा तसबीर खींची कुदरतकी तेरी बिनाकलम्॥चालमें छलबल इशारे नहीं तेरे आफतसे कम् ॥ १ ॥ सर तेराहै हरसरका सरदार तुहै शाहेआलम्॥उसके ऊपर ताजकलँगी औ छत्रझलके झमझम्॥

जुल्फमुशलशिलमें वहपेंचेहैं औरतेरे हरवालमें खम्॥गोया नागिनी माहपर आई चाटनेको शबनम् ॥यामें जुल्फको अब्र कहूं या लाम अलीफया नसर नजम्।यामें उनकोकहूंजुलमात याकेजादयेसितम् आगेलाखों तिलिस्महैं जुल्फोंमें तेरे तेरीकसम्।चालमेंछलबल इशारे नहीं तेरे आफतसे कम् ॥२॥ देख तेरे मांथेको फलकपर आफताव खाताहै शरम्॥चीनेजबीसे किरन खुरशैदकीकांपै होकेबहम॥सिफतकरूं अबरूओंकी तौ शम्शीर पर होशम्शीरे अलम् ॥ याकै कमां है बनी मुलतान्की याहैंतेगे दुदम्॥ मिजे तीर पैकां है या नजरहै या बरछीबल्लम्॥यक पलमें वह करैं कतलाम करै एकपलमें रहम्॥तेरी नजर गर फिरै तो फिर होजायँ कतल लाखों रुसतम्॥चालमेंछलबल इशारे नहीं तेरे आफतसे कम्॥ ३ ॥ चेहरागोल अनमोलके जिस्से रश्ककमर को होवेगम् ॥ चश्मवह नरगिशकमलसे खिलेहैं गोयाबागे इरम्॥ देखके बेनीकी तेजीको हरयकका हो नाकमेंदम्॥ गजब फडक है तेरे नथुनोंकी कहैं किसतौरसेहम्॥रुखसारोंपरछुटापसीना जैसे दो दरियाये अगम्॥बात बातमें दिल्लगी शीरींसखु औ जबां नरम्॥हरयक आनमें जान निकाले अदाअजायबहुस्नेयम्॥चालमें छलबलइशारे नहीं तेरे आफतसे कम् ॥४॥ और जो कहूंतारीफ तेरे दंदाँकी एदिलजाने दिलम्॥या वह गौहर हैं वेश कीमत याने हीरोंकी किसम्॥देख लवोंपर पानकि लाली लालोंका रुतवाहोकम्॥खालेजकन पर आनतर उदग सुरैयाहुआखतम चाहैजनखदाँ देखके तेरी चाहमें डूबाकुल आलम्॥कदवह कयामतकी जिस्से सर्वसिहीको होमातम्॥गलासुराहीदार औ सीनासाफ आईनासा उत्तम् ॥ चालमें छलबल इशारे नहीं तेरे आफतसे कम् ॥५॥ दस्तवह नाजुक गोलकलाई हिनाहथेली में रहीरम् ॥ देख वह सुर्खी खूनेदिल कितनोंकाहो दममें दम्॥नाखुंवो गोया हि

लाल औ मखमली मुलायम बना शिकम्॥नाफवह सागर कमर॥ चीतेसी बह जानूं नूरके थम्॥देखझलक कदमोंकी तेरे पैरोंमें आन करपडापदम् ॥ बनारसीकहै मैं आशिक तेरे नाम काहूँ हम्दम्॥ नारंगीसीएडी तलुवे मलैं तेरेबाबा आदम् ॥ चाल में छलबल इशारे नहीं तेरे आफतसे कम् ॥ ६ ॥

ख्याल इश्क मार्फत–बेहर लँगडी।

कूंचेजानाकी दिलपरगरजरा किसीके हवालगी ॥ रहानीमजा- न उसकोताबेउम्रतकदवालगी॥अदाहुवा जीजानसेजिसकोप्यारी तेरीअदालगी॥ गदाहुआ वह इश्ककी जिसकेदिलपरगदालगी॥ सदा अनल हककहूँ जबांसे मुझे वहप्यारीसदा लगी॥खुदीमिटगई खुदाकी यादेदिलपर अब खुदालगी ॥ चोंटइश्ककीजिसकेदिलपर जरालगी या सिवा लगी॥रहानीमजां न उसको ताबे उम्रतक द- वालगी॥१॥ तिला कर दिया मिसकोखाकपातेरी उसे यकतिला लगी॥ दिलादेअपनादीद तबीयततुझसे ऐदिलालगी ॥ सिलाय क्योंकरजखमजिगरके जिसको इश्ककी शिलालगी ॥ मिलाखा- कमें खाकसारी जिसको कामिलालगी॥ इश्कके बीमारोंको और कोई दवा न तेरे सिवा लगी॥रहानीमजां न उसको ताबे उम्रतक दवा लगी॥२॥बलाकरै दिन रात इश्ककी जिसकेपीछे बला लगी॥ भलाहो क्यों कर वह जिसको तेग इश्ककी भला लगी ॥ मला करूं तलुवे तेरे मुझको वह चाह वर मला लगी ॥ चला लामकांचालक- दमोंमें मेरे चंचला लगी ॥ तूहै शमामै परवाना मुझको तो तेरी वह लबा लगी॥रहा नीमजां न उसको ताबे उम्रतक दवालगी॥३॥ अथाहहै दरियायेइश्कका कहो इसकी किसको थालगी ॥ नथाजो इसमें वह डूबाहरगिजइसकी नथालगी॥ कथाछंद देवीसिंहनेउन्हें इश्ककीप्यारीकथालगी ॥ जथावालेहैं जो शायर उन्हें बात यह

यथालगी ॥ बनारसीको सिवाइश्कके और बात नहिं ख्वालगी ॥ रहानीमजां न उसको ताबे उम्रतकदवालगी ॥ ४ ॥

परमेश्वरके भजनमें रोनेकी तारीफ बहेर लँगड़ी ।

रहेउम्रभरदरियामें निकले तो खुश्कगौहर निकले॥सदआफरीं है जो मेरीचश्मसे मोती तर निकले॥मिजैकी नोकोंपर जिस दम वह अश्कहमारे तुलनिकले॥आकीं ये हुवा के जैसे खारके ऊपर गुल निकले॥चश्महमारे उन्हें देखनेको जोयहखुलखुलनिकले ॥ अश्क जो गुलरूबने तो दीदेभी बुलबुल निकले॥ गरनिकलेइल्मासतो क्या वहभी सूखे कंकर निकले ॥ सदआफरींहैजोमेरीचश्मसे मोतीतर निकले ॥१॥ कहो मैं क्या क्या तशभीदूं जो बनबनके आँशूनिकले ॥ मैंवहदतके गोया कतरे बहिश्तसे चूं निकले॥मैंने कहा ए अश्कमेरी चश्मोंसे जिसतरह तू निकले॥क्या ताकतहै जो ऐसीलडीबनके लूलू निकले ॥ कहीजवाहर निकले वहभीस्वामिलपत्थर निकले॥सदआफरींहै जोमेरीचश्मसेमोतीतरनिकले॥२॥ रोया फिराके यार में मैं तो क्या क्या अश्क बनबन निकले ॥ यकीं यह हुआ कि दरिया इसीसे गंगोजमन निकले ॥ और भी कुछकहताहूँ सुनो इसजबांसे जोकि सखुन निकले॥अब्र पुतलिया बनीतो चश्मभी दोसावन निकले ॥ अश्कमेरे पुरआब हैं गौहर खाली खुश्क जिगर निकले॥सद आफरीं है जो मेरीचश्मसे मोतीतर निकले ॥ ३ ॥ फ़ुरकतेजाना में जो कभी हमरोते जारजार निकले॥तार न टूटाहारसे तोफा गुँथेहारनिकले॥ क्याताकतइस दरियाके गरवारसे कोईपार निकले॥बनारसीकहै जोनिकले मगर तोहमींयार निकले॥औरजोनिकले रत्नवहभी अश्कोंसे मेरे बतह निकले॥सद आफरीं है जो मेरी चश्मसे मोतीतर निकले ॥४॥

खुदाके नूरकी आँखोंकी तारीफ़ बहेर लँगड़ी।

तेगलगे तलवारलगे और तीर लगे तो चैनपडे॥ नैनके मारे तडपते हैं कितने बेचैनपडे॥एकझलक मूसाको नजर गरपडी तो वह लग गई नजर॥गिराकोहपर नडस्सको तनोबदनकीरहीखबर॥ जिसेइशारे रोजकरे वह क्योंकर उसका होवे गुजर॥जियेकिसतरह औरफिरमरे भलावहकहो किसपर॥दिलका हाल दिलहीजाने जो जखमजिगरपर ऐनपडें॥नैनकेमारेतडपते हैं कितने बेचैनपडे॥१॥ तोपलगेबन्दूकलगे तो इसकी भी हो दवा कहीं॥अगर दुगाडे नैनके लगें तो फिर वह बचे नहीं॥बरछीसे बचगये कटारीकी चोटें कितनों ने सहा॥ नोकपलककी जराभी चुभी तो वह रोदियेव हा॥नींदकहा आती हैं जगतेहैं हम तो दिनरैनपडे॥ नैनके मारे तडपते हैं कितने बे चैन पडे॥ २॥ बांकमें है क्या बांकपना-और खंजरमें वह आब कहां॥चश्मके आगे दिखाई दे है किसीका रुआब कहां॥अगर नशेकी कहो तो देखी ऐसी भला शराब कहां मस्तानोंसेभी गरपूछो तो आये जवाब कहां॥ लाखोंदल कटजाँय मेरे कातिलकी जिधरको सैनपडे॥ नैनकेमारे तडपतेहैं कितने बेचैनपडे॥३॥वह हैं चश्मखूंरेज अब इनसे खूनकादावा कौनकरे डारपेंचढकके बोला मन्शूरके अबहम नहीं मरे॥ उसे मिलेदीदारजो अशक मस्ताने हैं सरसे परसे परे॥ बनारसी कहे हम हैं सरमदके पीरसुनहरे भरे॥ शबोरोज हर वक्तजबांसे कहते हैं यही बैनपडे॥ नैनकेमारेतडपते हैं कितने बेचैनपडे॥ ४॥

जीवन्मुक्तका ख्याल।

मनको भारके बनायामुर्दा जबयहतन आबादकिया॥पहनके कफनी फकीरोंने तो कफनआबादकिया॥वस्तीको समझे उजाड सहरा औ बनआबादकिया॥ मालखजाना तर्ककर फ़क्रकाधन

आबादकिया ॥ लोमें शोलेनूरके अपनाजलाके मन आबादकिया॥ आहसे अपनी मेहर चरखेकोहन आबादकिया॥जिसेकहैंवीरानासबमैंने वह वतन आबाद किया॥पहनके कफनी फकीरोंने तो कफन आबादकिया ॥१॥ गुलखाखागुलबदनपे मैंने वहगुलशनआबादकिया॥जिसगुलशनसेगुलोंकाहुस्न चमन आबादकिया कहके जबांसे वहकुमबइजनीअपना सखुनआबादकिया ॥ जिलाया मुर्दा हुक्मसे उसका कफन आबादकिया ॥ जीतेजी जो मरा उसीने तो मुर्दन आबाद किया ॥ पहनके कफनी फकीरोंने तो कफन आबाद किया ॥ २ ॥ गमखाखा इस दिलपर हमने रंजो मेहल आबाद किया ॥ दीवानोंको पढके दीवानापन आबाद किया॥तख्त सल्तनतछोड खाकपर वहआसन आबाद किया॥ जिस आसनसे इन्द्रका इंद्रासन आबाद किया॥तर्क किया दुनियाका रास्ता और चलन आबाद किया ॥ पहनके कफनी कफीरोंने तो कफन आबाद किया॥ ३ ॥ अश्कसे अपनेदुर्वेशोंने दुरे रतन आबाद किया ॥ इश्कमें पैदाकिया गम गममें जशन आबाद किया ॥ जिसजा आशक बैठरहे उसजा मसकन् आबाद किया ॥ कहै देवीसिंह नाम अपना रोशन आबाद किया ॥ बनारसीने करके इश्क आशकीका फन आबाद किया ॥ पहनके कफनीफकीरोंने तो कफन आबाद किया ॥४॥

आशकके आहकी तारीफ–बहेर लँगडी ।

मेरी आहका तीर तोड गरदूको गयालामकांतलक॥बेअदबी अबबहुतसीहुई कहूं मैं कहांतलक।हुआइश्कका जोरजब इस दिलमें तो मैंने आहकरी॥सातों फलकको चीर करलामकानकी राहकरी॥ वहांजो देखानूर खुदाका उसने पापनिगाहकरी ॥ और जहांमें नहीं फिर किसीकी मैंनेचाहकरी॥ आशकसादिक नाममेरायहरोशनहै कुलजहांतलक॥वे अदवीअबबहुतसी हुई कहूँमें कहांतलक ॥१॥

अजब मजा पायाहै हमने अपनी आह सोजांके बीच ॥ हुस्नखुदाई दिखाईदेहै मेरी जांकेबीच॥नहीं वहजलवा मुलकमें देखा और नहूर गिलमाकेबीच॥नहींमेहरमेंनहीं वहझलकमाहेताबांकेबीच ॥ मेरी आहरोशनहै सातोंजमीं और कुलआसमांतलक॥बेअदबी अबबहूतसीहुई कहूंमैं कहांतलक॥२॥इसी आहसे इश्कयहपैदाहुआ और आशक नामहुआ ॥ इसी आहसे जहांमें सारेमैं बदनामहुआ॥इसी आहसेहुआ सखुनमस्तानामस्त कलामहुआ॥इसी आहसे वह पैदाम वहदत का जामहुआ॥मेरी आह है लिखीदेखलो जाके कलमें कुरांतलक॥बे अदबी अबबहुतसीहुई कहूंमैं कहांतलक ॥३॥ इसी आहसे कुफ्र तोड के काफरको मारा हमने॥इसीआहसे किया दुश्मन पारापारा हमने॥इसीआहसे पायावह दिलमें दिलपर प्यारा-हमने॥इसीआहसे कर दिया फनारंज साराहमने॥बनारसी कहै जहां बहहकहै मेरी आहहै वहांतलक॥बेअदबी अबबहुतसी हुई कहूं मैं कहांतलक ॥ ४ ॥

जो आशकको छेडे उसका ये हालहो ।

हमआशकहैं हमेंनछेडो छेडके पछतावोगे तुम ॥ आहसे गरदूं गिरपडैगा तोदबजावोगेतुम॥गरहमको छेडोगे तो निकलैगी इस दिलसे आतिशेआह॥आगलगैगीवह जिससे कुलजहानहोवेगातबाह॥कहांभागके बचोगे तुम फिर कहीं नहीं पावोगे राह ॥ हक्कुलाये बातहै इसकाहै अल्लाही गवाह॥जिसने आशकको छेडा वह नहींबचा हरगिज वल्लाह ॥ कसमखुदाकी बातयह कुलजहान में है आगाह ॥

शैर–तुम्हें वाजिब नहीं है आशकोंको जोर दिखलाना ॥
जो होवे नातवांउसको नजोर और शोर दिखलाना ॥
अगरतुमजोरदिखलावो तो फिरमतकोर दिखलाना ॥
जो भागे इश्कके मैंदांसे उसको गोर दिखलाना ॥

आशके दिलको कभीसतानेसे न चैनपावोगेतुम । आहसेगर दूंगिरपडेगा तो दबजावोगे तुम॥ १॥शबोरोज हम आप मरेरहते हैं हिज्रगमके मारे । हमेंसतानातुम्हेंनहींवाजिब है मेरेप्यारे । अभी आहगर करूंगा तो बरसेंगे फलक से अंगारे॥कोई बचेगानहींमरजायँगेकुल बिनमारे।मेरी आहसेडरें अवलियापीर पयगम्बरभी सारे॥ इसीवास्ते नहीं भरताहूं मैं आहोंके नारे ।

शैर–अभी गर उफ़करदूं कुलजहांपलमें उलट जावे ।
जमींऊपरहो और वे आसमांपलमें उलटजावे ॥
ये मोसमसबउलट जावे समांपलमें उलट जावे ।
हरेकदरिया उलट जावे तबांपलमें उलट जावे ॥

हमतो आपीजले हैं हमको औरभी जलवावोगेतुम । आहसेगर दूंगिरपडेगा तोदबजावोगेतुम॥२॥ छेडाशम्सतबरेजको वह मुलतान अबतलक जलती है।वहांसे आतशदेखलो अबतकनहीं निकलती है । और छेडासरमदको दिल्ली इधरसे इधर उछलती है। आशिके सादिकके आगे रुसतमकी नहीं चलतीहै ॥ मेरी आहसे समाहै रोशन आतश अबतक बलती है । काफरको येजलादेती है औ मुझको फलतीहै ॥

शैर–निकालूं दिलसेमैंगरयारबअपनी आहसों जाको ॥
जलाडालूं हजारोंको सतकजंगल बियाबाँको ॥
करूं मैं खाकसा इस आहसे बस्ती औ वीरांको ॥
कयामत आहसे करदूंदिखाऊंमैं वह तूफांको ॥

छेडछाडगर करोगेआशकसे तोघबरावोगे तुम ॥ आहसे गरदूं गिरपडेगा तो दबजावोगेतुम॥३जिसने आशककोछेडा फिर इसकाघर बरबादहुआ॥गयाहस्रको नहीं वह दुनियामेंआबादहुआ ॥

दोजख उसको मिली और वहबहिश्तसे बेदादहुआ॥नाम उसीका जहांमें काफर और जल्लाद हुआ ॥ ये हैं सखुन आशकोंकाइस-पर जिसजिसको एतकाद हुआ ॥ दोनोंजहांमें उसीकाभलाहुआ दिल शादहुआ ॥

शेर–सदाये आशकों की है भला होवे भला होवे ॥
अदापरःउसकीये दिलदेखिये किसदिन अदाहोवे ॥
उसीकानाम रोशनहो जो उल्फतमें जला होवे ॥
कहै येछन्द देवीसिंह मेरा दिलवर खुदाहोवे ॥

बनारसी यह कहै अगर नापाक इश्कगावोगे तुम ॥ आहसे गरदूंगिरपडेगा तो दबजाओगे तुम ॥ ४ ॥

खुदासे बन्देका सवाल जवाब–बहेर लँगडी।

खुदातूहैं बरहक तौ मैंभी हकजबांसे कहताहूं॥ आब जो तूहै तो मैंभी लहर बहरमें रहताहूं॥ अगरतूहै आतश तो मैंभी उसीका अंगाराहूंगा ॥ तिलजो तूहै तो मैं जेवर तेराप्याराहूँगा॥ गरतूहै सीमाब तो मैं भीसनम् पारापाराहूँगा ॥ आहनतू है तो मैंभीबना-तेराआराहूँगा ॥ जो तूहै दरिया तो मैंह्वां मौजरवां हो बहताहूं ॥ आबजो तूहै तो मैंभी लहरबहरमें रहताहूं ॥१॥ तुहीतो है दममें दमतो मैंभी आदम कहलाताहूं॥ हुस्नजो तू है तो जलवातेरा दिखलाता ॥ गरचे तू खामोशरहै तो मैं नहिं जबाँ हिलाताहूँ ॥ तुहीहै मेरा तो मैंप्यारे अबतेरा कहाताहूं॥ तुही नहींगमखायतो फिर मैं जहांमें किसकीसहताहूँ ॥ आब जो तूहै तो मैंभी लहर बहर में रहताहूँ ॥ २ ॥ तेरानहींकोई दीनतो मेरीजातका कौन ठिकानाहै ॥ तुझे न जाना तो फिर मुझको किसने पहिंचाना है॥ तूहै फख्र तो मेराभी दिलफकीर तेरादिवाना है ॥ तूहै लामकां तो मेरे मकांको किसनेजानाहै ॥ तूहै साँवलियाशाह तो प्यारेमैं

नरसीमेहताहूँ॥ आब जो तूहै तो मैंभी लहर बहरमें रहताहूँ॥३॥ तूहै शम्स तो मैंभी शम्स तबरेज जहांमें आयाहूँ॥ मुझमें तूहै और मैं तेरेबीच समायाहूँ ॥ गरतूहैनापैद तो मैंभी नहीं किसीकाजायाहूँ॥ बनारसी कहै जो तू कुदरत तो मैंभी मायाहूँ ॥ तूने पकडा हाथमेरा मैं बाजू तेरा गहताहूँ ॥ आबजोतूहै तो मैं भी लहर बहरमें रहताहूँ ॥ ४ ॥

खुदासे बन्देका सवाल जवाब ।

खुदातूगरहै इश्कतोमैं आशकहूँ हरनूरानीका॥शान जो तूहै तो मैं पुतला हूँ तुझलासानीका॥अगरतूराजेनिहां है तो मैं पोशीदाइसतनूमेंहूँ ॥ तूहैगुलिस्तां तोमैंभी गुंचाउस गुलशनूमेंहूँ ॥ तू चाहतो मैंभी डूबा प्यारे चाहै जकनूमेंहूँ॥भलातू जो हैतो मैंभी हरदम उसी लगनूमेंहूँ ॥ तेरीनहीं तस्बीर मुझे खींचे यह न रुतबामानीका ॥ शानजो तूहै तो मैंपुतला हूँ तुझलासानीका॥१॥ तूहै पाक तो मेरा भी दिलसाफ मिस्ले आईनाहै ॥ जानजोतूहै तो मेरा तेरेहाथमें जीनाहै ॥ अगर तू दानिशवरहै तो दिलमेरा दानाबीनाहै ॥ बुलंदहै तू तो मेरातेरेबामपरजीना है ॥ तूहै मौजदरिया तो मैंभी हूँ वह बुलबुला पानीका॥ शानजो तूहै तोमैं पुतला हूं तुझलासानीका ॥ २ ॥ तूहैखुदा तो मैंभी तेरेसे जुदा नहीं जीजानसेहूँ ॥ यकीनतूहै तो मैं साबित अपने ईमानसे हूँ ॥ तूहै दोस्त मेरा तो मैं तेरायार भी हरएकआनसे हूं॥ तूहै तसव्वर तोमैंभी पूरा अपने ध्यान सेहूँ॥ तूहै लिवासे नंगशौकहै मुझेतने उरयानीका॥ शानजोतूहै तो मैं पुतलाहूँ तुझ लासानीका ॥३॥ तूहै एकतोमुझसा दुसरा और जहां में कौनसाहै॥कल्मातू है तो मेरेसिवा कुराँमें कौनसाहै॥देवीसिंहकहैबगैरतेरेमेरी जांमें कौनसाहै ॥ नातबानीमें और ताकते तमाँमें कौनसाहै॥यही सखुनहै विर्दआशके बनारसी हक्कानीका ॥ शान जो तूहै तोमैं पुतलाहूँ तुझ लासानीका ॥४॥

तारीफ समनके पान खानेकी—बहेर लँगडी।

क्याही झलक दंदामें हुई प्यारे तेरे मुसुक्यानेसे ॥ बर्कतडपने लगीअखतररहे मूँहदिखलानेसे॥अजब तिलस्महुआ जालिम तेरे उस पान चबानेसे ॥ मरजांगौहर जमुर्रद निकल पडे इखानेसे ॥ शफक्कादमफकडुवा बहुत फूलीथी वह सुरखी पानेसे॥अनारके भी दाने मौताज होगये दानेसे ॥ देखतेरे दंदाकी झलक उठगये लो लाल जमानेसे ॥ बर्कतडपनेलगी अखतररहे मूँहदिखलानेसे॥१॥ भूलजाय जौहरी परखना रतन औ फिरें दिवानेसे ॥ दन्दांतेरे देख पायें गर किसी बहानेसे ॥ कितने ही गये डूब वहसागरमें भी गोता खानेसे ॥ परनहीं वाकिफहुये वहभी ऐसे दुर्दाने से ॥ सूख-गया वहलहू तेरे दांतोंकी सिफत सुनानेसे ॥ बर्कतडपनेलगी अ-खतररहे मूँहदिखलानेसे॥२॥शरमिन्दा होगयेजवाहर दाँतोंकेचमरे कानेसे ॥ खूनउगलनेलगे हीरे क्याहो पछतानेसे ॥ देखें मुरस्से साज तो रहजाँय अपनाकाम बनानेसे ॥ यह वह जडतहै जडी वस खुदाके हाथलगानेसे ॥ आज मुझे मिलगयामजा इसहँसीमें तुम्हेंहँसानेसे ॥ बर्कतडपने लगी अखतररहे मूँहदिखलानेसे ॥३॥ टुकडेहोंयाकूत तेरे दाँतोंकेरूबरूआनेसे ॥ करै चमेलीबात यह अपने और बेगानेसे ॥ पानने भी पाईलाली उसमाहलकांके खा-नेसे ॥ इसीवास्तेवोवहकस्तीमें आये वीरानेसे ॥ यहदन्दांनिक-लेहैं बेबहाखुदाके सुनो खजाने से ॥ बर्कतडपनेलगीअखतर रहे मूँह दिखलानेसे ॥ ४ ॥ बनारसीने कहा हाल यह अपने मन मस्तानेसे ॥ इनदन्दांमें देखले खुदा मेरे दिखलानेसे ॥ थकजा-यगा ओनादाँ तूंलामकानके जानेसे ॥ यहीं देखले नूरदन्दांमें यारके आनेसे ॥ ऐसी सिफ्तदांतोंकी किसीसेबने नहीं मरजा-नसे ॥ बर्कतडपनेलगी अखतररहे मूँह दिखलानेसे ॥ ५ ॥

पानके लालीकी तारीफ़-बहेर लँगडी।

पानकी लालीसे वह झलकदन्दांमें तेरेलालोंकीबनी ॥ लाले बदक्शांदेखकर जिसे खायँहीराकीकनी ॥ आज जो तू हँसके बोला तो दहनमें वह दन्दांचमके॥जिगर छिदगया हरएक गौहरका सुनोमारे गमके ॥ सुनतेही यह सिफत सूखकर होशउड़गये शबनमके ॥ क्या ताकत है मुकाबिल दन्दांके अखतर दमके हरएक जवाहरके ऊपर प्यारे तेरे दन्दां हैं गनी ॥ लाले बदक्शां देखकरजिसेखायँ हीरेकीकनी॥१॥अगर चमेलीको देखूं तो उसका सुर्ख लिबास कहां ॥ मरजाटुकडे हुआ उसको जीनेकी आश कहां ॥ झूंठनहीं बोलूंगा सनम् मुझको कोईका पास कहां॥ सच कहताहूँ मुकाबिल दन्दांके इलमास कहां ॥ क्या ताकत है गर इनके रूबरू चमक सके कोई और मनी ॥ लालेबदक्शां देखकर जिसेखायँहीरेकीकनी ॥२॥इन्हें देखकर बर्कतडपतीहै वह आसमांके ऊपर॥सदके करदूं शफकको भी इनदन्दांके ऊपर॥ किसीसे निस्बतकभी न दूं नहीं लाऊं इस जबांके ऊपर ॥ दन्दां तेरे झलकते हैं वह लामकांके ऊपर ॥ सायत तू पीसेजो दांत तो दममें करदे फनाफनी॥लालेबदक्शांदेखकर जिसेखायँहीरेकीकनी ॥३॥ गर जो कोई याकूत कहे तो जबांको उसकी कटवाऊं॥अनारकेभी कहेंदाने तो काटके मैं खाऊं ॥ और जो कहै गौहरकी लडी तो उसकोभी मैं छिदवाऊं॥किसीसे निस्बत न दूं नहिं सुनूं नखातिरमें लाऊं॥ बनारसी गरकहे तो क्या दिलमें उसके अब यहीठनी॥ लालेबदक्शां देखकर जिसे खायँ हीरेकी कनी ॥ ४ ॥

ख्यालतौहीर अर्थात् वेदांत मतलब उलटा।

बहेर लँगड़ी।

बुराकिया तो भलाहुआ चोरी करनेसे शाह बने॥गदासे होगये

बादशाह बंदेसे अल्लाह बने॥ जातसेहोबेजात जो कोई तो उसका वह दीनबने ॥ सकल शबाहत बिगाडे तब चेहरा रंगीनबने ॥ इमानसे छोडे इमानको पूराजभी यकीन बने ॥ लौमेंशोले नूरके जले तो वो लवलीनबने ॥ जबाँकटी तब बोलनलागे फूटेनयन निगाहबने ॥गदासे होगये बादशाह बन्देसे अल्लाहबने॥ १॥करके गौर देखा हमने तो आजाबसे बडासबाबबने॥लाजवाबगरसनम से होतो खूब जवाबबने ॥ मय वहदत कहतेहैं उसे जो अश्कसेमेरे शराबबने ॥ लज्जते शीरींमिले जब जलके जिगर कवाबबने ॥ बुतखानेसे बहिश्त और मयखानेसे दरगाह बने ॥ गदासे होगये बादशाह बन्देसे अल्लाहबने॥ २॥शिरकोकाटकेअपनेदस्तपररक्खै तो सरदारबने ॥ मालमुल्क सबतर्क कर बैठे तो जरदारबने॥तायरदिलको कभी नउडनेदेतो वह परदारबने ॥ जिंदा उसकोसमझतेहैं हम जो मुर्दार बने॥चलनसे जब बदचलनहुये तो ला मकानकी राहबने॥गदासेहोगये बादशाह बंदेसे अल्लाहबने॥ ३॥जिसे कहैं सब हराम हमने देखा वही हलाल बने॥घोलकेजिसनेलगा लिस्याहीवह फिरलालबने॥जोकिहुये पैमाल जहांमें वह साहबेकमालबने॥बनारसीके सखुन परं क्या ताकत कोइ ख्यालबने॥जमींसे होगये आसमान और अखतरसे हममाह बने॥गदासेहोगये बादशाह बन्देसे अल्लाह बने ॥ ४ ॥

रंजमें राहइश्क पूरा-बहेर लँगडी ।

मैं आशकहूँ रंजो अलम्का गरये मेरे पास न हो॥ मुझमरीजको तो फिर यकदम जीनेकी आश न हो ॥ बेचैनीसे उल्फतहै बेकलीसे याराना अपना ॥ हिजरहै अपना दोस्त औ वतनहै वीराना अपना ॥ आहकी नकदी पासमेंहै खाना है मयखाना अपना ॥ जीना यहीहै किसीके ऊपर जीजाना अपना ॥

शैर–फुरकते यार वह क्या मजे दिखातीहै ॥
बेकराहि मेरे दिल्को बहुत भाती है ॥
वस्ल होता है तो वो बात चली जाती है ॥
इन्तजारीसे तबीयत् नहीं घबराती है ॥

रंग जर्द नहींहो अपना औ चेहरा मेरा उदासनहो॥ मुझमरी-जको तौ फिर यकदम् जीनेकी आश न हो ॥ १ ॥ जो आशक सादिकहैं उनकी जीस्त जान का खोनाहै॥ यही खुशीहै जो उस दिलबरकी यादमें रोनाहै॥खाकके सोनेसे बत्तर पन्ना औ चाँदी सोना है ॥ वजूसे बेहतर हमें अश्कोंसे मुँहका धोना है ॥

शैर--टपक के आँशू जो रुखसार पर ढलकते हैं ॥
तौ मेरी आँखमें जौहर हरएक चमकते हैं ॥
ये मस्त दोनों हैं और दो जहाँ को तकते हैं ॥
दीवानेदीद के हैं अब ये कब झपकते हैं ॥

जोर जुल्म और जफामें अपना दुरुस्त होश हवास नहो॥मुझ-मरीजको तो फिरयकदम् जीनेकीआशनहो ॥ २ ॥ प्यास हमारी बुझती है इसखूने जिगरके पीनेसे ॥ वाकिफहुवा हूं मैं अपनीचाहके जरा करीनेसे ॥ कामनहीं काशीसे मुझे नहीं मक्के और मदीनेसे और न आरजू हमें मरनेकी न मतलब जीनेसे ॥

शैर--आतिशे इश्कसे जलके जिगर तरहोता है ॥
जेरसायेसे सनमके ये जबर होताहै ॥
औबेखबरीसे दिलहर्गिज न खबरहोताहै ॥
नफाहै इश्कमें येही जो जररहोता है ॥

गर्चे कत्ल नहिं होवें हमतो काम इश्कका रासन हो ॥ मुझम-रीजको तो फिर एकदम्जीनेकी आशनहो ॥३॥ दर्दहमारादिल्ब-

रह हरवक्त इसीसे यारीहै॥बेददौंसेभी अपनी कुछ नहीं गिले गुजा-रीहै ॥ सूलीपर मन्शूरने वो अनलहक सदा पुकारी है ॥ जानगई तो बलासे नाम तो उसका जारी है ॥

शैर—इश्कबाजीमें अगर जानकी बाजीहोजाय ॥
तो तबीयत यह मेरी खूबसी राजीहोजाय ॥
चाहै हमपर हो जफा या दगाबाजी होजाय ॥
रजामें राजी हैं उसके जो वह राजी होजाय ॥

बनारसी कहे अगर्चे मेरा मुरसद देवीदास न हो ॥ मुझ मरी-जको तो फिर यकदम् जीनेकी आश न हो ॥ ४ ॥

जो रंजउठावेगा खुदाको पावेगा—बहेर लँगडी।

कहा ये मुझसे रंजने गर्चे आशक मेरे पास न हो॥तो दुनियामें आशकी आशककी फिर रास न हो ॥ इश्कहै मेरा मकाँ औ मैं रहताहूं उसीके खानेमें। वह नहीं आशककि जिसके दर्द न होवेशा-नेमें॥तीरमेंक्याहै लुत्फमजा मिलजाय जो रहो निशानेमें॥बस्तीमें नहीं गुजर आशकहैं मस्तबीरानेमें॥सूखगया मजनू औ वह ताकत बनीरही मस्ताने में।अबतक जिसकानाम रोशनहै सुनो जमानेमें॥

शैर—हैकहाँ तकलीफ व तलुवोंमें जो चुभतेहैं खार ॥
हँस पडा मन्शूर तो शरमा गई उस जापे दार ॥
रंज ये कहताहै आशक वह करै जो जां निसार ॥
हर कदमपर तीरहों पर दिलमेंहो वह जिक्रेयार ॥

चोट न आशक सहै और अपना खूंपीनेकी प्यास नहो ॥ तो दुनियामें आशकी आशककी फिर रास नहो ॥१॥ दमभरका है रंज औ फिर राहत है कयामत तक बाबा॥उठाले शिरपर अलम तो देखे लुत्फ इसमें क्या क्या॥रंज यही कहताहै जो आशकपक्का होतो इधरको आ ॥ जुलमसे मुतलक नडर और खौफ न अपने

दिलमें खा॥सरको काटकर सरमदने जिसवक्त हथेलीपर रक्खा॥ उसीवक्तसे नाममुतलक न बादशाहका रक्खा ॥

शैर—करदिया तख्ततबाह देहलीकी अब उडती है धूल ॥
क्याखतासरमदकीथी थीशाहकीमुतलकयहभूल ॥
देखिये अब इस गुलिस्तांमें वह कब आयेंगे फूल ॥
गर करे यह अर्ज आशक तो खुदा को हो कबूल ॥

रंजने य फर्माया आशकको मेरा कुछ पास न हो॥तो दुनिया में आशकी आशककी फिर रास नहो॥२॥आरेसे चिरजाँय नहीं घबराँय जो आशकहैं पक्के॥सीना सामने करैं दिलवर जो चोटमारे तक्के॥कभीननिकलेमकाँसे वह गर लाख वजेके दे धक्के ॥ दरेयारको छोडनहीं जाँय वह कावे आ मक्के॥जैसे जुवारी जोरू हारके होजाते हैं भवचक्के॥तौभी अपनी जबाँसे कहाकरैं वह पौ छक्के॥

शैर—इश्कमें बाजीहै सरकी काम दौलतका नहीं ॥
इस्से बेहतर खेल हमने और कोइ देखा नहीं ॥
जिसने अपना शिर न बेचा कुछ मजा चक्खा नहीं ॥
आशकोंने जीतेही जी तन वदन रक्खा नहीं ॥

लाखवजेके सदमोंमें गर दुरुस्त होश हवास न हो॥तो दुनियामें आशकी आशककी फिर रास न हो ॥३॥ खाक में गर मिलजाय गोरसे गुल होकरके निकलते हैं ॥ अजब है आशकमर्गके बादभी फूले फलते हैं॥ रोशनहों कुल आलम् में जो खडे इश्कमें बलते हैं ॥ उन्हें देखकर जो पत्थर हों तो वह भी पिघलतेहैं॥देवीसिंहके सखुनपर शायर हरेक हाथको मलते हैं ॥ चारोंतरफसे वाह वाह करैं औ बहुत उछलतेहैं ॥

शैर—ये कलामें मारफत हैं रंजसे राहत मिले ॥

जोकि डूबा चाहमें फिर उसे चाहत मिले ॥
गम्म अगर खायें तो उसको रोज फिर न्यामत मिले ॥
दीद उसदिल्बरकाजीते जी ओताक्यामतमिले ॥
रंजये बोला बनारसीसे गरतू मेरादासनहो ॥ तौ दुनियामें आशकी आशककी फिर रासनहो ॥ ४ ॥

बागे बहेश्तमें खुदाके आनेकी तारीफ–बहेर लँगडी।

बागबागहुआबागआपजबआयेबागेइरम्केबीच ॥ फूलफूलके गिरपडे हरयकफूल हरकदमके बीच ॥ जुल्फ मुसल्सिल देखपेंचमें आया सम्बुल चमनके बीच ॥ नयनने तेरे शर्मदी नरगिसकाले हिरनके बीच ॥ फूलरही है फुलवारी वो प्यारे तेरी फवनके बीच॥ कद्पर सदके करूं मैं सर्वसिही गुलशन्के बीच ॥

शैर–करूं लबपर तसद्दुक लाल गुह्लालेके दोटुकडे ॥
औदंदां मोतिआंदेखे तो उसकी आब सब उतरे ॥
अगर्चें मुस्कराके और करे कुछ बात तू हँसके ॥
तो होवे बेकली हरएक कलीफूट खिले गुंचे ॥

कौनवोहै खुशबू जो बसी है नहीं तेरे दम कदमके बीच ॥ फूलफूलके गिरपडे हरएकफूल हरकदमके बीच ॥ १ ॥ रुखसारोंको देख गले गुल गुलाब तेरीं लगनके बीच॥ सदा सुनेतो धुनेशिरतूती आगिलगे अगनके बीच ॥ भरा हुआ है चाहहुस्नका आपकी चाहे जकनकेबीच॥ डूबगये हम न दहसतकरी जरा इस मनके बीच॥

शैर–फिदा दिलहै गुले राना तेरे ऊपर हरेक गुलका ॥
दिखावादेबहारी और पिआदे जाम उस मुलका ॥
मचें वो कहकहे और चहचहे गुलहो तजमुलका ॥
खुलें परवाल कुमरी के कहा ले मान बुलबुलका ॥

शाखशाखहो हरी शजरकी लगे कलम हरकलमके बीच ॥ फूलफूलके गिरपडे हर एक फूल हर कदमके बीच ॥ २॥ नजर पडीजिसवक्त गुलिस्तां की तेरे पैरहनके बीच॥ चाक गरेबां किया गश खाके गिरे गुलधरन के बीच॥ वहहै नजाकत आपमेंये है कहां जुहीयासमनके बीच ॥ बनबनके सब फूल फूले हैं तेरे यौवनके बीच॥

शैर--हुआ मुर्गाने चमनकादिमागतरबूसे ॥ महक आने लगी उल्फतकी वो तुझगुलरूसे॥ सिफतमैं किसतरह तेरी करूं कौनमुँहसे ॥ खारकीबात न तूनेकरी कभी मुँहसे ॥ लगीचाटने तलवे तेरे आई तरीशबनमकेबीच ॥ फूलफूलके गिरपडे हरएक फूलहरकदमके बीच ॥ ३ ॥ मुरझायादिल हराहुआ हुई गुलजारी गुलबदनके बीच ॥ खिजांका मुतलकनाम नहीं रहा गुलोंके वतनके बीच ॥ झुकझुकके सब करैं डालियाँ सिजदा तेरे चरणके बीच ॥ कहै देवीसिंह ख्याल तौहीदमारफत सखुनके बीच ॥

शैर--खिंचानक्शा मेरे दिलपर है वहतेरी सफाईका॥ बसीतस्वीर आंखों में और है जलवा इलाहीका ॥ किसीको ताजबख्शा और किसीको तख्त शाहीका॥ गदाई हमको दी जिसम दियादावाखुदाईका ॥ बनारसीकहै गजबझलक है तेरे कदमके पदमके बीच ॥ फूलफूलके गिरपड़े हरएक फूल हर कदमके बीच ॥ ४ ॥

दवा इश्कके बीमारीकी किसीने नलिखी सोहमनेलिखी.

नुस्खा इश्कका लिखताहूं गर किसीको ये आजारभी हो ॥ जहर हलाहल पीये तो जीये औ ताकत दारभीहो॥ जख्म जिगर पर करीहों और भीतर उसके गारभीहो ॥ गुले धतूरा लगेतो गुलशन बाग बहारभी हो॥ लगै इश्कके तीर और ऊपरसे पडती तलवारभी हो ॥ झुकादे सरको सो उस्से मौततलक लाचारभी हो॥

शैर--यारको मिलनेका तुस्से जो कुछ इनकारभीहो ॥

तु आंखें बंद जो करले तो ओदीदारभी हो ॥
बातही बातमें उस्से कभी तकरारभी हो ॥
जवाब उसका न तूदे तो फिर वो यारभी हो ॥
मैं तो यही लिखताहूं इश्कका भला कोई बीमारभी हो ॥

जहर हलाहल पीवे तो जीये औ ताकतदारभी हो॥ बेचैनी हो दिलपै बँधी आँसुओंका हर दंतारभी हो॥दवाहे उसकीके कुछ इस दिलकोसबरोकरारभीहो॥शोरोंफिगाँहोजबाँपर हरदमआहेआतिशवारभी हो॥जिगर जलाये तो दिलहो रोशन उस्से प्यारभी हो॥

शैर–मिसले मनसूर जो उलफतमें तुझे दारभी हो ॥
तु हो बेखौफ तो फिरदार वो नादारभी हो ॥
किसीके इश्कमें दिल तेरा बेकरारभी हो ॥
मिले वो तुझको जोजाँ उसपैसे निसारभी हो ॥
तड़फे मुर्ग बिसमिलकी तरहसे और जीना दुसवारभीहो॥
जहर हलाहल पिये तो जीये औ ताकतदारभी हो ॥
तेरे मारनेके खातर वो जुलफजो उसकी मारभी हो ॥
बलायें उसकी तू सरपर ले तो दिल हुशियारभी हो ॥
रशके चमनकी लगनमें तूंगर सूखके मिसले खारभीहो॥
गुलोंके ऊपर जो गुलखायें तो गुले गुलजारभी हो ॥

शैर–सनमकी चाहमें ऐदिल तु असके बारभी हो ॥
जो गोता मारके डूबे तो उसके पारभी हो ॥

अश्क गौहरका गले में किसीके हारभी हो ॥ ओ माला मालहो जो उसका खरीदारभी हो ॥ दर्दसरी हो इश्कको औ उलफतका चढ़ा बुखारभी हो ॥ जहर हलाहल पिये तो जिये औ ताकतदारभी हो ॥ मिसलेकैस सहरामें जो तूं दिवाना आसके जारभी हो ॥ खयाले लैलासे तेरा वहीं वस्ल दिलदारभीहो॥

इश्कके सौदेमें जो किसीका छूटगया घरवारभीहो ॥ लुटादे सब-कुछ मालो असबाब तो फिर जरदारभी हो ॥

शैर--कत्लकरनेको जो वोह इश्क सितमगार भी हो ॥
जान देनेको तु अपनी वहीं तैयारभी हो ॥
दामें काकुलमें तेरा दिल जो गिरफ्तारभी हो ॥
बलाशे उसकी नतुडर जो मारामारभी हो ॥
देवीसिंह कहै बनारसी गर इश्कमें कोइ मुरदारभी हो ॥
जहर हलाहल पीये तो जीये औ ताकतदारभी हो ॥

ख्याल सूमोंका-कंजूसका बुराहाल-बहेर लँगडी।

इस दुनियामें आये खुदाके हुये न प्यारे चले गये॥ किसीको कुछ नहिं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥ शिकममें जबतककैद रहे तो कहा खुदाकी करेंगे याद ॥ बाहर आये तो रोने लगे करी माँसे फरियाद॥ दूध पिया माका औ छाती मली किया यौवन बरबाद ॥ लगे मांगने खिलौने खेल कूदमें हो रहे शाद ॥

शैर--लगी हवा जो जमानेकी तो सब भूलगये ॥
पिया जो दूध मुफ्तका तो उसमें फूलगये ॥
कभी सोये जो पालनेमें पाँपसारके वह ॥
तो नींद ऐसी वह आईके उसमें झूल गये ॥
कभी हिंडोले पर जागे बाबाने उतारे चले गये ॥

किसीको कुछ नहिं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥ दौलत-वरके घरमें पैदा हुये तो गहने सोनेके ॥ बहुत दिनोंतक उन्होंने बदनमें पहने सोनेके ॥ चांदीके नाहिं पहनूंगा अबलागे वह कहने सोनेके ॥ हमेशा जेवर लगे वो रहिने सोनेके ॥

शैर--रहे जब तक सबनादाँ तो सबने प्यार किया ॥

किसीको बोसा दिया और किसीको यार किया ॥
लगे पढनेको इल्म मोलवी पंडितके यहां ॥
तो कुछ दिनोंमें दिलको खूब होशियार किया ॥

इधर उधर आँखोंको लडा मारे नज्जारे चलेगये॥किसीको कुछ नहिं दिया तो हाथपसारे चले गये॥ जिस दिन पैदाहुये ओ तो उसदिनका हाल सब भूलगये॥ खुदासे वादा किया उसका खयाल सब भूलगये॥ किसीसे जो कुछ लिया तो ओ उसकाभि माल सब भूलगये॥ ये नहीं समझे कभी आवेगा काल सब भूलगये॥

शैर--नशाचढ़ा जो जवानीका तो बदहोश हुये॥ किसीने कुछभी जो मांगा तो ओ खामोश हुये॥कोई कहने लगा अपनी जो वो तकलीफकाहाल ॥ खयाल कुछ नकिया और न उधर गोश हुये॥ लालाजी लेने आये देने के मारे चले गये॥ किसी को कुछ नहिं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥ खोया लडकपन खेलकूदमें गई जवानी राँडके साथ॥ हमेशा सोहबत तो उनकी रही ओ भडवे भांडके साथ॥ दांत टूटगये तो फिर रोटीलगे ओ खाने खांडके साथ॥ बैलजोबुड्ढाहुआतो कहांमिलेफिर साँडके साथ॥

शैर--जमा जोरी जो उन्होंने तो वो आजार हुआ॥ उसीमें मालो मताभी बहुत सा ख्वार हुआ॥कभी खैरात न की ओ न दिया भूखोंको॥ तो उनके घरमें वह हुकमाओंका दरबार हुआ॥ कोई लाँगर होके मरगये कोई बने करारे चले गये॥ किसीको कुछ नहीं दिया तो हाथ पसारे चलेगये॥ लाखोंमें कोइ हुआ सखी और बहुत जहाँ में देखे सूम॥ कहै देवीसिंह तो आखिर सूमों का फूटा मकसूम॥ बनारसी कहै मैंने देखा खूब मुझे येहै मालूम॥ मेरी नसीहत अगर माने तो हो मुलकों में धूम॥

शैर--ये सखुन मैंने कहाकुछ भी ज्ञान में आया॥ जरा तो

मुखसे कहो हांकेध्यानमें आया ॥ केसिर्फ सुनेहीं आयेथे न कुछभी समझे ॥ तुम्हें हमारी कसम कुछभी कानमें आया ॥ सुमोसे देनेको कहा तो ओ दइमारे चले गये ॥ किसीको कुछ नहिं दिया तो हाथपसारे चले गये ॥

खुदाकी राहमें जो चाहे चलताहै उसका हाल ।

बहेर लँगड़ी ।

कूंचैजानामें गरकोई घरके जराकदम निकला ॥ फिर वो न निकला उसी कूंचेमें उसका दमनिकला ॥ ये है रास्ता सख्त गर कोई इससे नागहां आनपडा॥जानबूझके फिर वो देता है इसीमें जान पड़ा॥कहीं तपिशमें तपे कहीं कांटोंका नजर मैदानपडा ॥ कदम कदम पर अब हमको लुत्फ इश्कका जानपडा ॥

शैर--हमें गुलशनसे भी बेहतर हैं इश्कके कांटे॥येफर्श खारके तोफाहैं मुझे मखमलसे॥कहूं मैं किस्से सुनै कौन इश्कके किस्से॥ जो देखै हाल हमारा तो कैसभी रोदे॥ रहा वहांका वहीं देखने जो अपनाहमदम निकला ॥ फिर वो न निकला उसी कूंचेमें उसका दम निकला ॥१॥ मजाचाहका जिसने देखाहोगा वहडूबाहोगा॥ बहरे इश्कमें जोतैराहोगावहडूबाहोगा॥अश्क चश्मसे जिसकेबहता होगा वह डूबाहोगा ॥ चाहे जकनपरजोशैदाहोगा वहडूबाहोगा॥

शैर--बहरेउल्फतका किसीको भी किनारा न मिला ॥ या खुदा नाखुदाकाहांपरइशारा न मिला॥किश्ती हरगिज न मिली कुछभी सहारानमिला॥थाहसुतलकनमिलीदमभीगुजारानमिला॥लगान थलबेडा उसजापरसे न कोई आदम निकला॥फिर वह न निकल उसीकूंचेमें उसका दमनिकला ॥ २ ॥ इश्कको जो देखा तो खडा है मेरे शिरपर दारलिये॥हुस्नको देखा तो वह धमकाता है तलवार

लिये ॥ जुल्फयही कहती हैं कि मैंने कितनेई आशक मार लिये॥ चश्मइशारेकरे हैं जादूकेहथियारलिये ॥ कौनइसकत्लके मैदांसे निकल जावेगा ॥ किसतरहकाकुलेपेंचांसेनिकल जावेगा ॥ कोई न इश्कके तूफांसे निकल जावेगा ॥ न निकल जावेगा गरजांसे निकल जावेगा ॥ तानकेअबरूतू जिसपर वहलेके तेगे दूदम् निकला ॥ फिर वह न निकला उसीकूँचेमें उसकादम्निकला ॥३॥ कत्लहुआ वह जिसने इस मैदांमें आकेकदममारा ॥ गिरा जमींपर न उसनेआह करी औनदम्मारा॥उनके हुस्नके आलम्ने एकआलम्का आलम्मारा॥कहैदेवीसिंहगयामैंभीइस्में उसदम्मारा॥इश्कनेदारपर मन्सूरकोचढायाहै॥हुस्नने यारके कोहतूरकोजलाया है ॥ नूरने जिसकेहरयकनूरको बनायाहै ॥ शहूरउसमें बेशहूरको बताया है ॥ बनारसीकर तर्क जहांको सीधा राहे अदम् निकला॥ फिर वह न निकला उसीकूंचेमें उसका दम्निकला ॥ ४ ॥

सनम्के जुल्फसे लगाके और सब तारीफ।

बहेर लँगडी।

जुल्फसिआसे मारसिआहैं चश्मसेलाली मुलमें है ॥ नकशा कदका कयामतधूम यह आलम कुलमें है ॥ सरसे हर सरदारबने पेशानी जलबै खुरशीद ॥ चीनेदबीको वहहै तहरीर न जिसकी दीदोशुनीद ॥ अबरूसे झुकी कमां औ पैदाहुआफलकपर माहेईद॥ खंजरेबुर्रांने पाई बाढकिया लाखों कोशहीद ॥

शैर—हैकुरांमें वह जो बिस्मिल्ला अबरूसे बनी ॥
औ अलीकीतेगभी वल्लाहअबरूसे बनी ॥
और सिफत क्या क्या करूं मैं कुछ कहाजातानहीं ॥
जो चलाझुकके तो उसकी राह अबरूसे हनी ॥

तुझगुलका चर्चा गुलेराना यही तो हरबुलबुल में है॥नकशा कद्का कयामतधूम यह यह आलम् कुलमें है॥१॥मिजैसे पैकांबने औनश्तर चुभे रगेजांपर आकर ॥ खारभी उस दम् खटकनेलगे मेरेवाँपर आकर ॥ निगासे वह तलवार चली सो लगी नीमजांपर आकर॥ आहभी मुतलक न ठहरी मेरी इस जबांपर आकर ॥

शैर–हैं शरारत वह तेरी चितवनमें ऐरश्केकमर ॥
होरहा जीसे जहांके बीचमें जादूसे हर ॥
लडगई जिसशख्सकी वह आँखतेरी आँखसे ॥
फिर उसे तेरेसिवा कुछभी नहीं आतानजर ॥

वही जिक्र मयखानेमें और यही सदाकुलकुलमेंहै॥नक्शाकद्का कयामत धूम यह आलम्कुलमें है ॥ २ ॥ बीनीसेबना अलिफ तेरे रुगसे वह पैदा नूरहुआ ॥ जिसकी झलकसे गिरामूसा औखाक कोहतूरहुआ॥लबसे लाले यमन बनेयाकूतभी वहीं जरूरहुआ ॥ औदंदांसे बने गौहर तो क्याही जहूरहुआ ॥

शैर–है झलक हीरोंमें ऐप्यारे तेरे दन्दानसे ॥
बर्कभी चमकी वही दांतों में तेरीशानसे ॥
औ जबाँसे वर्गगुल पैदाहुआ रंगीन वोह ॥
हरसखुनशीरींतेरा निकलेहै क्याही आनसे ॥

बादेसबा कहतीहै यही औ वही जिक्रहरगुलमें है नक्शा०॥३॥ चाहे जकनसे आशकसादकके दिलमें वह चाह हुई ॥ लगाझांकने कुए जिस जिसकी उधर निगाहहुई ॥ गलेसे मीनाबना सुराही भी उसकी हमराहहुई॥कहै देवीसिंह सिफत किस्से तेरी अल्लाह हुई ॥

शैर–थकगयेलाखोंहिं शायर करके सब तेराबयाँ ॥
पर न पाया राज तेरा तूतौ है राजेनेहाँ ॥
किसकी ताकतहै जोहो आगाह तेरे हुस्नसे ॥
यक झलकमें गिरपडा मुसाभी होकर नातवाँ ॥

बनारसीने यही लिखा कावे काशी गोकुलमें है ॥
नकशा कद्का कयामत धूम ये आलम् कुलमें है ॥ ४ ॥

तथा ।

आशकमैंहूं उसगुलका जिस गुलपर फिदाहैं सारेगुल ॥ बाहरमें भी न जिसकेनाम खिजाँकाहै बिलकुल ॥ सदारहै सर सब्ज वह- उस की महकसे मस्ताना पनहो ॥ दीद उसगुलकी करे तो दिलमें दीवानापनहो ॥ अदासे उस समशादकी आशकमें तो आशका- नापनहो ॥ क्योंनहीं गुंचे खिले जब उसमें मुसक्यानापनहो ॥

शैर--बनाये क्योंन उस गुलशनमें कुमरी आशियाँ अपना ॥
गुलेगुलजार गुलरू और जहाँहो बागबाँ अपना ॥
नहींसैयादकाडर कुछ न मुतलकखौफेजाँ अपना ॥
मकां है लामकां अपना नियां है बेनिशां अपना ॥

गुंचेभी यही चटक चटकके करें चसनमें शोरोगुल ॥ बहारमेंभी न जिसके नाम खिजाँकाहै बिलकुल ॥ १ ॥ पेंचसेजुल्फेसियःफामके दामें इश्कपेंचां बनजाय ॥ मुश्के खुतनभी महेक जुल्फोंसे वह परेशां बनजाय ॥ बालसे आये वबाल संबुल परजो जुल्फ पेचां बनजाय ॥ नाफे आहूका मुँहकाला हो घासरैहाँ बनजाय ॥

शैर--पड़े झूमर वों उस्के रुखपर जुल्फोंका जो मुँह खोले ॥ तो अशरतका हिंडोला देखकर खाये वह झकझोले ॥ औरकाकुल सूंघले काला न अपने मुँहसे कुछबोले ॥ यकींये हैं कि पीने के लिये अपने जहर घोले ॥ जुल्फ अंबरीहै या सोसने गुलहै तेरीकाली काकुल ॥ बहारमें भी न जिसके नाम खिजाँ काहै बिलकुल ॥ २ ॥ चश्मसे नरगिस शरमिन्दाहो सरको झुकाये खडारहे ॥ आंख उस गुलसे कभी मुतलक न मिलाये खडारहे ॥ कदसे सर्व सनोबरगुल- शनमें गडजाये खडारहे ॥ दहनसेगुंचा तंगहोकर शर्माये खडारहे ॥

शैर--सफाई देखकर उसकी समन मैलाहो गुलशनमें॥ बोःनाजुकपन न जूहीमें जो कुछ है यारके तनमें॥ हिनादेखे हथेलीको तोखूं उगलाकरे मनमें ॥ सदा उसकी सुनैतूती तौ फिर भागे कोईबनमें॥शाखशाखपै यही चहचहा करताहैशैदाबुलबुल॥बहारमें भी न जिसकेनामखिजाँका है बिलकुल ॥३॥ रस्कैचमनगुल बदनको गुलदेखे तो गरेबाँचाककरे॥हरएक गुलिस्तांका वोः यकदम् भरमें दम् नाककरे॥गर्चे कोई मुर्गाने चमन जो उससे मुहब्बत पाककरे ॥ बहेरे इश्कका खुदा उस आशकको पैराककरे ॥ शैर--सबा आईजो गुलशन्में तो उसकी क्या बन्आई है॥ नहीं वाकिफथी जिसबूसे वो सब उसमें समाईहै॥न मुतलक खारगुलशन्में न कुछगुलकी बुराई है॥ नहींगिलमें लगावोगुल वहांजलवै खुदाई है ॥बनारसीको उस गुलरूने पिलादिया वो जामें मुल ॥ बहारमेंभी न जिसके नाम खिजाँका है बिलकुल ॥ ४ ॥

लावनी ।

जुल्फको तेरी मारकहै तो मार मारसे कटवाऊं॥समबुले पेंचा कहै तो पेंचमें मैं उसकोलाऊं॥कदसे सर्बकी निस्बत देतो खोदके उसको गाडूंमैं ॥ अगर सनोबरकहै तो चमनसे अभी उजाडूं मैं॥ जालसे निस्बतदे जो फिलकी लातसेउसे लताडूं मैं॥ पंजये मिरजांकहे तो दस्तसे अभी उखाडूंमैं ॥ काकुलको गरदाम कहै तो जालमें उसको उलझाऊं ॥ संबुले पेचा कहै तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥ १ ॥ चश्मतेरे नरगिस जो कहे तो आंखको उसकी फोडूं मैं ॥ दंदा गौहर कहै तो दांत सब उसके तोडूं मैं ॥ दहनको गुंचा कहै तो उसके मुँहको पकड मरोडूं मैं॥जानके निस्बत येदेतो जान न उसकी छोडूं म ॥ अगर तेरीकाकुल उलझे तो क्योंकर उसको सुलझाऊं॥संबुले पेंचा कहे तो पेंचमें मैंउसको लाऊं॥२॥ जकनको तेरे चाह कहै तो कुवेमें उसे डुबाऊं मैं ॥ पेशानीको कहै

खुरशेदतो उसे घुमाऊं मैं ॥ गलेको मीना कहे तो गर्दन उसकी अभी कटाऊं मैं॥ बीनीको गर अलिफ कोई लिखै तो उसे भुलाऊं मैं ॥ गेसूको कहै घटा तो उसका घटाके रुतबा मैं आऊं ॥ संबुले पेंचाकहे तो पेंचमें मैं उसको लाऊं॥३॥ जबाँको तेरी कहै बर्गगुल उसकी जबां निकालूं मैं॥ हिलाल अबरू कहे उसके टुकडे करडालूं मैं ॥ सीने को कहे आईना तो उसे न देखूं भालूमैं ॥ कमरको तेरी अगर मूंकहे तो उसे छिपालूं मैं॥ बनारसी कहे तेरेबाल की कहींभी निस्बत सुनपाऊं॥ संबुले पेंचाकहै तो पेंचमें मैं उसको लाऊं॥४॥

लावनी।

मेरी नजरके बीचमें तेरे दो रुखसारे फिरते हैं॥ जिधरको देखूं उधर तेरे रुखसारे फिरते हैं ॥ तेरे इश्कमें फलकके ऊपर लाख सितारे फिरते हैं ॥ शम्सो कमरभी इश्कमें मारे मारे फिरते हैं ॥ तेरे इश्कमें जिसके सरपरभी वोः आरे फिरते हैं ॥ सरपर उसके हुमा गोया पर पसारे फिरते हैं ॥

शैर--इश्कमें दरों बहर जो तुम्हारे फिरते हैं ॥ कभी तो उनकेभी दिन औ सितारे फिरते हैं॥ आंखमें जिसकी वोः तेरे नजारे फिरतेहैं॥ रहम होताहै उन्हें हम पुकारे फिरते हैं ॥ इधरउधर और जिधर तिधर सब तेरेही प्यारे फिरते हैं ॥ जिधरको देखूं उधर-तेरेरुखसारे फिरते हैं॥ फँसे इश्ककी कीचडमें जो पैर उघारे फिरते हैं॥ कदममें उनकी वोः तो अकसीर के गारे फिरते हैं॥ जो केतने उरियां होकर उस सनमके द्वारे फिरते हैं ॥ उनके जामें पे कुरबां लिबास सारे फिरते हैं ॥

शैर--जहांमें जो कोई तेरे सहारे फिरते हैं ॥ वोःहै आलममेंपर इस्से किनारे फिरते हैं॥ मौतका खौफ नहीं सर उतारे फिरतेहैं ॥ दुईसे दूर वोः एकी बिचारे फिरते हैं॥ कभी फिरे काबेमेंकभी जा ठाकुर द्वारे फिरते हैं ॥ जिधर को देखूं उधर तेरे रुखसारे फिरते

हैं ॥ कोइ तसौवरमें तेरे वोः बलख बुखारे फिरते हैं॥कोइ चाह-में आपकी तख्त हजारे फिरते हैं ॥ कोई तो जा जमनापर कोइ गंग किनारे फिरते हैं॥मिले तु उनको गरज जो मनको मारे फिरतेहैं॥

शैर--तर्कदुनीयाको किये जो विचारे फिरते हैं ॥ मैं जो देखा ओही तेरेदुलारे फिरतेहैं ॥ मिले जो तुस्से जहांसे वोः न्यारे फिरते हैं॥ यादमें तेरी वोः प्यारे हमारे फिरते हैं॥कोई करते खैरात फिरें कोइ बने पिंडारे फिरते हैं ॥ जिधरको देखूंउधर तेरे रुखसारे फिर-ते हैं॥तेरे इश्कमें खाकसार हो हम भी बारे फिरते हैं ॥ सदाअनल हक जबाँसे हमललकारे फिरतेहैं॥देवीसिंहभी लिवासतनपरखाक का धारे फिरते हैं॥जबांको अपनी नामसे तेरे सुधारे फिरते हैं॥

शैर--जो तुझको भूले वोः दुनियामें हारे फिरते हैं ॥ कामके कुछही नहीं वोः नकारे फिरते हैं॥तेरी कुदरतसे तो हम बे सहारे फिरते हैं ॥ हम अपने दिलहीमें तुझको निहारे फिरते हैं॥ बना-रसीकी आंखमें हरदम तेरे इशारे फिरते हैं॥जिधरको देखूं उधर तेरे रुखसारे फिरते हैं ॥

लावनी।

लाखों वजहके रंजो अलम गम सनम वो दिखलाये तो क्या॥ नाला इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ इश्कमें लैलाके मजनूंने कभी जबांसे आह न की ॥ जिस्मको काटा खुशीसे तिरछी जरा निगाह न की ॥ चाह में सीरींके कोहकलने और बातकी चाह न की ॥ सरसे तेगा लगाया किसीसे कुछ सल्लाह न की॥ जो ऐ दिल आशके जांबाज हैं वोः इश्क करते हैं॥वोः जां देते हैं उल्फतमें नहीं मरनेसे डरते हैं ॥ बिसाले यार होता है मसीरे बाद मरनेके॥ इसीसे आशके सादि कभी जीते जीहि मरते हैं ॥ दर्द इश्कसे मिस्ले जरस फुरकतमें चिल्लाये सो क्या ॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये

तो क्या ॥ और जलेखांनेभी इश्कमें बहुत उठाये रंजो मेहन ॥ कुयें झांकती चाह यूसुफमें फिरी हेरा बन बन ॥ और इश्कमें शाह बलखमें छोडा तख्त शाही वो वतन ॥ फकीर होकर फिरा सहरामें खुदासे लगी लगन ॥

शैर-खुदा उल्फतमें मिलताहै जो अय दिल इश्क कामिलहो ॥ मिले क्योंकर नवोः दिलबर ये दिल जिस जिसपै माइलहो ॥ तवन्ना है विसाले यारमें जो जान खोते हैं ॥ तो क्यों उस्से न फिर वादीज फना जन्नतमें वासिलहो ॥ दिलारामवो मिले ये दिल तकलीफ अगर पाये तो क्या ॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ और सुनो यक बात मुझे वोःभी इसदम है याद पड़ी ॥ इसी इश्कमें उठाइ रांझेने तकलीफ बड़ी ॥ हुई किसीसे तहना आजतक ये मंजिल है बहुत कडी ॥ इसी इश्कमें मियां मंशूरके फांसी गले पडी ॥

शैर-हजारों जानसे मारे गये इस इश्क उलफतमें ॥ रहा कोई मिजाजीमें भला कोई हकीकतमें॥ किसीने जिस्मकी अपने उतारी खाल सरतापा॥ किसीने शौकसे अपना कटाया सर मुहब्बतमें॥ यादमें उस दिलरुबाकी आफत सरपर गर आये तो क्या॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या॥ फँसा रहा वोः हस्र तलक जो दामें इश्कमें हुआ असीर ॥ कभी न छूटा कि जिसका इश्क हुआ फिर दामनगीर ॥ बनारसी कहें अपनी कसम मैं इसी इश्कमें हुआ फकीर ॥ खाकसारहो फिरा सहरामें हमेशा बेतौकीर॥

शैर-रँगे कपडे जो उल्फतमें तो रंगीनी नजर आई॥ जो खाखिसतर मली तनपर तो सब कुछ आबरू पाई ॥ पहनके इश्ककी कफनी किया आबाद सहराको॥ फिरा चारों तरफ वहसतमें बन-

कर मैं तो सौदाई ॥ उसके इश्कमें सरपर गर आराभी चल जायेतो क्या ॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या ॥

ब्रह्मज्ञान इश्क मार्फत परमेश्वरके दर्शनमें—बेहरखड़ी.

सूरत उस माहरूकी हरदम आंखमें अपने वस्तीहै ॥ लाख इबादतसे ज्यादा दुनियामें हुस्न परस्ती है ॥ क्याहोताहै वजू किये और क्या मसजिदमें जानेसे॥क्याहोताहै नमाज पढके सरको वहां झुकानेसे॥किया न जिसने इश्क जहांमें उठा न हाथ जमानेसे॥ जीते जी वो नहीं मिला तो मिलेगा क्या मरजानेसे॥अजब मजा पाया है मैंने आंखमें आंख लडानेसे॥जिसमें देखा उसीको देखा लगाहै तीर निशानेसे ॥ इसी सबबसे दिलमें मेरे आठ पहर यह मस्तीहै॥लाख इबादतसे ज्यादा दुनियामें हुस्न परस्ती है ॥ गया अगर कावे को तो क्या वहां खुदा मिल जावेगा॥हैरां होकर फिर उलटा अपने घरको फिर आवेगा॥कोई अगर धन लुटा के अपना बुतखाना बनवावेगा॥पासकि दौलत खोकर फिर क्यावहांपे पत्थर पावेगा॥जबतक उस माहरूसे अपनी आंखको नहीं लडावेगा ॥ इस दुनियामें आकर फिर क्या देखेगा दिखलावेगा॥यही सुनाहै जहांमें मैंने जहांतलक यह हस्तीहै॥लाख इबादतसे बढकर दुनियामें हुस्न परस्तीहै ॥ रँगे अगर कपडे और मन नहिं रँगातो फिर वो रंग है क्या॥छोडके वो मारूह बुतोंका संग कियातो संग है क्या॥तनसे नंगो रहा जो दिलमें नंगनहीं तो नंग है क्या॥नशाचढा नहीं इश्ककापीलीभांग तो फिर वो भंग है क्या॥दिलमें आईचली गई तो ऐसी भला तरङ्ग है क्या॥तनधोया और मन नहिं धोया उन्हें भला गंग है क्या ॥ चश्म मेरी रोरोके यही कहती जिस वक्त बरस्तीहै ॥ लाख इबादतसे बढकर दुनियामें हुस्न परस्ती है ॥३॥ कुरानकी आयतें पढ़ो और इश्कका दिलमें जिक्रनहो॥

फिर तुमको क्या खुदा मिले चाहे अपना शिर धुना करो ॥ पेटके खातिर पण्डितके घर जाकर वेद पुराण पढ़ो ॥ दो अक्षर नहिं पढ़े प्रेमके मौतसे फिर किसतरह बचो ॥ आग बालके तपो अगर चाहे उलटे होकर लटको ॥ बिना इश्कदीदार न उसका मिलेमुफ्त काहेको जलो ॥ बनारसीके इसी सखुन पर आशक सारी बस्ती है ॥ लाख इबादतसे बढकर दुनियामें हुस्न परस्तीहै ॥ देखलिया आँखोंने नागहां एक दमभर जोबन तेरा ॥ मेरा क्या रहा हुआ खुदबखुद ये तन मन तेरा ॥ जिस्मको मैं समझाथा अपना बनाये अब मसकन् तेरा॥आह क्या करूं लूट गया हुआ ये अब सब धन तेरा ॥ देखतेही वो झलक बना मैं आशके जाने मन तेरा ॥ लगा ये कहने रास्ता सख्तहै बहुत कठिन तेरा ॥

शैर–तने उरियां है तू और कुछ न पैरहन तेरा ॥ लिबास किसपै करै तू कहां है तन तेरा ॥ जहाँ न माहो मेहर हैं वहांवतन तेरा ॥ तेरा तो जन्म नहीं और नहीं मरन तेरा ॥ चला न अपना जोर जो देखा तुझे तो हुआ वदन तेरा ॥ मेरा क्या रहा हुआ खुद बखुद ये अब तन मन तेरा ॥ जुल्फ तेरी नागिन है या है ये जङ्गल मुश्कके खुतन तेरा ॥ पेच है तेरा या है कुछ इसीमें नाजुक पन तेरा॥या हैं ये अबरे नैसां या सम्बुलीवो है गुलशन तेरा॥ जाल है तेरा फँसा है इसीमें आशके तन तेरा ॥

शैर–तंग गुंचेको करै क्यों न वो दहन तेरा॥वर्क तडपे जो वो देखे कहीं मंजन तेरा॥ नूर चश्मोंका जो देखे कहीं खंजन तेरा ॥ क्यों न अंजन करै आंखोंमें निरंजन तेरा॥आशके बुलबुल कहते हैं गुलजार है तेरा चमन तेरा ॥ मेरा क्यारहा हुआ खुदबखुद ये अब तन मन तेरा॥चले जिस घडी मैदामें ऐ कातिल तीरोफिगन तेरा ॥ बचे न कोई जो निकले जबांसे हुकुम बिजन तेरा ॥ राह

चाँदसे लडे तो क्या सरकटा है वो दुश्मन तेरा ॥ मेहर मुनौब रोजो सबफलकपै है रौशन तेरा ॥

शैर--कत्ल दुश्मनको करे चक्रसुदर्शन तेरा ॥ मौतभी कुछन करै जिसपै हो अमन तेरा ॥ पताल पाहैं तेरे और है सर गगन तेरा ॥ तूतो निर्गुण है और गुन हैं ये सब सखुन तेरा॥मशारिकसे मगरारिब तक देखा वस्ती वीरोवन तेरा ॥ मेरा क्या रहा हुआ खुद बखुद ये अब तन मन तेरा ॥ कहीं पै मक्का बना तेरा और कहीं पै बृन्दावन तेरा ॥ कहीं पै काशी कहीं दरिया है गङ्गो जमन तेरा ॥ देवीसिंह कहै दुनियामें हैं अजब वो चालो चलन तेरा ॥ किसीको मुतलक नहीं मालूम जो कुछ है फन तेरा ॥

शैर--जहांमें है ये जहां तकसे अजुंमन तेरा॥ जो देखे इसकोतो बिल्कुल ये है दर्पण तेरा ॥ मेरी आंखों में बना क्याही है रौजन तेरा ॥ ये वो दुर्बीन है करती है जो दरशन तेरा ॥ बनारसी कहै किसीका कुछ नहीं सब है नन्दनंदन तेरा॥मेरा क्या रहा हुआ खुद वखुद ये अब तन मन तेरा ॥

ब्रह्मज्ञान इश्कमार्फत ।

सर है उसीका धड है उसीका सब है उसीकामेरा क्या ॥ तूकहे मेरा बताये मुझे भला है तेरा क्या ॥ जुल्फ उसीकी नूर उसीका उसीकी है यह पेशानी ॥ चीने जबीं हैं उसीकी शान उसीकी लासानी॥अबरू हैं खमदार तेगपर जैसे बाढचो बुर्रानी॥मिजाती रहैं चश्मखूनी में डोरे तूफानी ॥

शैर--अलिफ् अल्लाह की बीनी और रुखसारे येहैं उसके ॥ तु अपने क्यों बताये देख रुखसारे ये हैं उसके॥वही देखे वोदिखलाये ओ नज्यारे ये हैं उसके ॥ तु अपना यार समझाहै जिन्हें प्यारेयेहैं उसके॥गैर की चीजें बताये अपनी तू अब बना लुटेरा क्या ॥ तू

कहे मेरा बता ये मुझे भला है तेरा क्या॥लबेलाल याकूतहैं उसके और दंदां गौहर उसके ॥ जबाँ वर्गगुल में देखो हैं क्या क्या जौहर उसके॥बात बातमें फूल बरसते लिखेहैं वह दफ्तर उसके॥ उसी की सूरत सब हैं जो बशर हैं वोहैं बशर उसके॥

शैर-अगर तुम चाहसे देखो तो है चाहे जकनउसकी॥मिलें सब उसकी चीजें उसकोजिसकोहो लगन उसकी॥बनी गर्दलसुराहीसी और है उसमें फबन उसकी॥अदा अन्दाज कदउसकाऔरहैबाँकी धरन उसकी॥उसकी चीज अपनी कर देखे आंख में हुआ अँधेरा क्या॥तू कहे मेरा बताये मुझे भला है तेरा क्या॥कांधाउसकाबाजू उसके हाथ सब उसके हाथमें हैं ॥ पंजे ये मरजां आँगुलियाँ ये अब उसके हाथमेंहैं ॥ बनाये नाखूं हिलाल उसने वोःढब उसके हाथमें हैं ॥ मतकहो अपने अरे ये जब तब उसके हाथमें हैं ॥

शैर-वोसीना साफ है उसका तुझे कुछ है खबर उसकी॥शिकम उसका मुलायम है और है नाफे भवँर उसकी॥कहांदेखी किसीने ऐसी तो वोहहै कमल उसकी ॥ नजर आये जिसे वो दिलको भी करदे नजर उसकी॥ये तन उसका बना अरे नादान तेरा यांडेरा क्या ॥ तू कहे मेरा बता अब मुझे भलाहै तेरा क्या ॥तू कहेता है जानू मेरे उसीके हैं ये दोनोंथम् ॥ इसी सबबसे जमीं आसमां सब उसपर रहा है थम्॥ उसीकी बनी पिंडलियां और पाझूठनहीं मैं करूं रकम् ॥ उसीके तलुवे और एडी को चूमें बाबा आदम् ॥

शैर-जिसे कुछइश्क होउसकावो समझेमायनेइसके॥लिखातो है कुरां में यों कहां हैं हाथो पा उसके ॥ सखुन यह मेरा रिंदाना समझमें आये है किसके॥नूर उसकाही मैं देखूं हूं चेहरे पर तोजिस

तिसके ॥ बनारसी कहै मत कहो अपना तुझे बहेमने घेरा क्या ॥ तू कहे मेरा बताये मुझे भलाहै तेरा क्या ॥

सिफत खुदाके अबरुवोंकी ।

हुआ तअज्जुबरुख पर मैंने किया तेरे अब्रूका दीद ॥ महे चार दहपे पैदा हुआ कहांसे माहे ईद ॥ भूल गये हाफिज बिसमिल्लाह देख तेरे अबरुवोंकीशान ॥ होश न उनको रहा किसतरहसे वो पढ-सकें कुरान ॥ जुलफिकारभी म्यान फेककरगैरतसे बन गई कमान ॥ झुकी इसलिये के जिसमें नजरपडे कुदरते सुभान ॥ खुदाने वोः अबरुवोंमें आयत लिखी जो था मतलब तौहीद ॥ महे चादर-हपे पैदाहुआ कहांसे माहे ईद ॥१॥ कभीतो वो तलवार बने और कहीं पे वो जमधरबनजा ॥ खाँडा बिछुआ कहीं वो तेगे अजलसर परबनजां ॥ रोजेहस्र को हिसाब करनेके खातिर दफ्तर बनजां ॥ मौतभी इनसे डरे जिसवक्त के ये खंजरबनजां ॥ तडपके बोले येही सखुन जो हुये तेरे अबरूके शहीद ॥ महेचारदहपे पैदा हुआ कहाँ से माहे ईद ॥२॥ कांपउठे आसमां अगर्चे जरा तेरा अब्रु हिल-जाय ॥ करे कयामत उधरको जिधर तेरा कातिल दिलजाय ॥ तानके तू जिसवक्त इने क्या जाने किधर जालिम पिलजाय ॥ लाखों बिस्मिल तडपते फिरे जो ये गौशा मिलजाय ॥ कशीदकरकेदिलमें अपने येही लगा कहने खुरशीद ॥ महेचार दहपे पैदाहुआ कहांसे माहे ईद ॥ ३ ॥ क्यों जायें काबेको भला उस यारके अबरू छोडके हम ॥ अब काबेसे यहां बैठे हैं भवें सीकोडके हम ॥ यारके रुखपर दोकाबेदिल उसीसे अपना जोडकेहम ॥ करेंगेसिजदा इने मुँहउस काबेसे मोडकेहम ॥ पढेये जिसने दोहरुफ वो हुयेतेरे अब रूके मुरीद ॥ महेचारदहपे पैदा० ॥४॥ खुदाने दो खत अबींके

ये अपने हाथसे लिखे अजीब॥ ऊपर उनको बनाया नीचे इसके लिखा नसीब॥पढै अगर सरनामां ये तो मौला उसका बने हबीब॥ कहे देवीसिंह फिर उसका बाल न बांका करे रकीब॥ बनारसीकहे इसके मायने कहो करो कुछ गुफ्ते शुनीद॥ महेचार दहपे पैदा हुआ कहाँसे माहे ईद॥ ९॥

जुल्फ और आँखोंकी तारीफ।

लगा जंग दिलमें होने जिसवक्त आंखसे आंख लडी॥ मारा जुल्फसे तो वो क्या क्या आशक पर मारपडी॥ इधर तो यह बरछी भाला ले तीर तुपक तैयार हुई॥ उधर जुलुफके सामने पडे तो मारामार हुई॥बहीं खूनकी नदियां वो जिसवक्त चश्म खूँखार हुई॥ जुल्फ भी उस्के साथ खम ठोक कातिलेवारहुई॥

शैर--चमश्ने करके इशारा कमाँ चढाईहै॥ जुल्फने बल वो दिखाया के घटा छाई है॥ देखली हमने के इसवक्त कजा आई है॥ आँख मैंने जो लडाई तो ये लडाई है॥ चश्मने घायल किया जुल्फ को देखा तो है बला बडी॥ मार जुल्फसे तो वो क्या क्या आशकपर मार पडी॥चश्मने ले तलवार किया यकवार तो कुछ बोला न गया॥ जुल्फके आगे तो मुँह मुझसे मुतलक खोला न गया॥ चश्मने खंजरसे ऐसा काटाके फेर डोला न गया॥ जुल्फ देखकर जहेर पीनेको तो घोला न गया॥

शैर--चश्मने झुकके जो मारा तो न वहांही रहा॥जुल्फके गिर्द जो घूमा तो परेशांही रहा॥निशांने चश्मसे मेरा न कुछ नशांही रहा॥जुल्फने ऐसा मरोडा कि नातवांही रहा॥चश्मके जो आया मैं रूबरू वही सांग सीनेमें गडी॥मार जुल्फसे तो वो क्या क्या आशकपर मार पडी॥ चश्मने वो दिखलाके बाँकपन मारा और

फिर लालहुई ॥ जुल्फ यारकी तो वो मेरे जीका जञ्जाल हुई ॥ चश्म तो गोली भर औ रञ्जक जमाके गोया दुनाल हुई ॥ जीना मुझको पडा मुश्किल के जुल्फ वोवाल हुई ॥

शैर--चश्मने दूरसे देखा तो लगाई वो नजर॥जुल्फने पेंच ओ माराके रही कुछ न खबर॥चश्मनें मुझपै किया क्या ही वो जादू वो शहर ॥ जुल्फने ऐसा डसा दिलपै है कालेकी लहर ॥ लडी आंख जिसवक्त यारसे क्या जाने थी कौन घडी॥मार जुल्फसे तो वो क्या क्या आशकपर मार पडी॥खूब हुआ जो इन्होंनें मारा दुनियामें तो नाम हुआ ॥ बिना इश्कके जहांमें कहा कोई सरनाम हुआ॥देवीसिंह कहे बनारसी तू आशके सादिक आम हुआ ॥ मरा कहां तू अमर दुनियांमें तेरा कलाम हुआ ॥

शैर--जुल्फ बखुल्हैल और चश्म हैं यह नूरे खुदा ॥ मुआ जो इस्से वो हरगिज न हुआ उस्से जुदा ॥ किया मेरा तो ये दोनों ने दो जहाँमें भला ॥ बलासे मरगया छुटी तो ये दुनियाकी बला ॥ डरे नहीं मुतलक खिलखत सुनती है ये मेरे गिर्दखडा ॥ मारजुल्फसे तो वोह क्या क्या आशकपर मार पडा ॥

परमेश्वरसे मिलनेकी मस्ती-बहेर लँगडी ।

मिला हमें गुलजार वो गुलरू अब गुलखाना नहिं चहिये॥मैं वहदत में मस्त मैं हूं मैखाना नहिं चहिये॥ दिलको रौशन किया तो फिर तन बदन जलाना नहिं चहिये ॥ आहकि आतश बले वहां आग लगाना नहिं चहिये ॥ बहेरइश्कमें बहे उसे दरियामें बहाना नहिं चहिये ॥ डूबा चाहमें उसे फिर कुयें झकाना नहिं चहिये इश्कका सौदा हुआ हमें होना दीवाना नहिं चहिये ॥ मैं वहदतमें मस्त मैं हूं मैखाना नहिं चहिये ॥

जो घायल हैं इश्कके उनपर तेग चलाना नहिं चहिये ॥ सरसे परे हैं जो आशक उन्हें सताना नहिं चहिये॥ जिस जा तबियत लडी वहांसे दिलको हटाना नहिं चहिये॥ बढाके उल्फत यारसे प्यार घटाना नहिं चहिये ॥ चढी इश्ककी लहर हमें अब जहर पिलाना नहिं चहिये ॥

मैं वहदतमें मस्त मैं हूं मै खाना नहिं चहिये ॥

अपनी जानमें जानको पाया और जमाना नहिं चहिये॥अलग हुये हम हमें अपना और बेगाना नहिं चहिये ॥ दिलमें दैरो हरम बनाया अब बुतखाना नहिं चहिये॥लामकानको छोड जन्नतमें जाना नहिं चहिये॥पीवो मुहब्बत की मै मैंने और पैमाना नहिं चहिये॥

मैं वहदतमें मस्त मैं हूं मै खाना नहिं चहिये ॥

हरेक मकां हैगे आशकोंके एक ठिकाना नहिं चहिये ॥ अजादहैं जो उन्हैं जो फिरजादमें अपना नहिं चहिये॥इश्कका वाना पहिन कलँगी तुर्रेका बना नहिं चहिये ॥ पाकइश्कको करो नापाकका गाना नहिं चहिये ॥ देवीसिंह कहे सखुन पर कमती सखुन बनाना नहिं चहिये ॥

मैं वहदतमें मस्त मै हूं मै खाना नहिं चहिये ॥

तथा ।

फिदा हुआ दिल मेरा जिसदिनसे तुझको दिलवर देखा॥ कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥ तेरे हुस्नके सानी हमने और नहीं सुन्दर देखा ॥ आफताबसे तुझे महताबसेभी वेहतर देखा॥ तेरी चमक औ दमकके आगे और न जलवेगर देखा॥मैंने प्यारे तुझे अपनी नजरोंमें भर देखा ॥ जैसा देखा तुझको वैसा नहीं परी पैकर देखा ॥

कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥

बयां क्या करूं यार तेरे दंदांका वो जौहर देखा ॥ लाल न

देखा नहीं ऐसा कोई गौहर देखा ॥ गजब हैं तेरे नैन न ऐसी तेग नहीं जलधर देखा ॥ खांडा बिछुआ नहीं हमने ऐसा खंजर देखा॥ हुआ बहुत हैरान शहेर सहेरा तुझको दरदार देखा ॥

कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥

आशक होकर तुझपर अपने इश्कको हमने कर देखा ॥ जो कुछ है सो तुही तुझको अपना अपसर देखा ॥ जैसी खुशबू तुझमें वैसा नहीं मुश्क केसर देखा॥ दिमाग अपना तेरी खुशबूसे मवत्तर देखा ॥ तेरे इश्कमें प्यारे मैंने गली गली घर घर देखा ॥

कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥

देवीसिंह यों कहेके जिसने तुझे एक पलभरदेखा॥मस्तरहा वो इश्कका जोर शोर खुशतर देखा ॥ बनारसीने तेरे इश्कमें खाकका वो विस्तर देखा ॥ शाल दुशाले छोड मृगछाला बाघम्बर देखा॥ कई दफे देखा था तुझे अब मैंने तुझको फिर देखा ॥ कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥

सनमके पानखानेकी तारीफ–बहेर लँगडी ।

पान कि लालीसे जो मेरे वह दिलवरके लब लालहुये॥लाले बदकशांसेभी बेहतर पैदा अब लाल हुये ॥ काकुलसे काले हुये पैदा जुलफसे अफई मार हुये ॥ पेशानीसेनूर टपका तो फरिश्ते चार हुये ॥ अबरूहसे खम् खाखाके खंजर बिछुवे खम्दारहुये ॥ और मिजगांसे तीरे पैकांसे नशतर पुरकार हुये ॥

शैर--चश्मसे पैदाहुआ नगगिरा हरेकगुलजारमें॥औरवो बीनासे अलिफ खींचा गया हरकारमें ॥ है वह जलवाकुदरतीदोनों तेरे रुखसारमें॥ जिस्से रोशन चांद औ सूरज हैं इस संसारमें॥ पानकी रंगत पाकर दंदां गौहरसे जब लाल हुये ॥

लाले बदकशांसे भी बेहतर० ॥

जबाँसे पैदा कुराँ हुआ और अक्लसे इल्म हजार हुये ॥ चाहे जकन् से चाहके दिलमें खुद बखुद गार हुये ॥ गलेसे बनी सुराही गुल सब तेरे गलेके हारहुये॥हुस्नसे तेरे परी पैकर बनकर तैयारहुये॥

शैर--तेरे सीनेकी सफाई से सफाई होगई ॥ ताकते बाजूसे अब ताकत सवाई होगई ॥ हाथसे तेरे सखावत की सखाई होगई ॥ पंज ए मरजाँसे लग लाले हिनाई होगई ॥ देखके रंगी नाखूनोंको शरमिन्दा तब लाल हुये ॥

लाले बदकशाँ से भी बेहतर० ॥

शिकम् से नर्मी बनी कमरसे पोशीदा सब हाल हुये॥औरजानूसे तेरे दो नूरके थम्भ कमाल हुये॥ कदमसे सिजदा बना औ पा छूनेको सात पतालहुये॥चालसे तेरी बनगये फील नवो बेचालहुये॥

शैर--कदसे तेरे अब तलक सर्वे चमन आबादहै ॥ और अदा तेरी से आशक का सदा दिलशाद है॥ नाजसे तेरे बनी अन्दाजकी बुन्याद है ॥ हर सरापेसे सरापा तेराही ईजाद है ॥ जो पत्थरतलवोंसे तेरे लग गये वह तो सब लाल हुये ॥

लाले बदकशां से भी बेहतर० ॥

ठोकरसे तुझ जानाकी लाखों मुर्दे उठ खड़े हुये॥आपके पाये नक्श हैं मेरे दिल पर पड़े हुये ॥ तेरी चञ्चलाहटसे सदमें बर्कके दिलपर बडे हुये॥कदमबोसीमें तेरी हम दिलोजानसे लडे हुये ॥

शैर--शैर हक्कानीका कहना कुछ नहीं आसान है॥ यह सखुन समझे वही जो आशके मस्तान है ॥ देवीसिंहकी शायरी पर जी वो जां कुर्बान है॥जिस्के हर नुकते के ऊपर हर शख्सका ध्यान है ॥ बनारसी के खूने अश्क सब टपक के यार बेलालहुये ॥

लाले बदकशांसे भी बेहतर० ॥

आपेको भूल जाय परमेश्वरको यादरक्खै ।

बहेर लँगड़ी ।

भूल गये हम अपनेको भूले तेरी तसवीर नहीं ॥ तीर इश्कका लगा वोः तीरके कोई तीर नहीं ॥ तेरे इश्कमें हुआ गदा मुझसा तो कोई फकीर नहीं ॥ वोः रुतबा है गदाके सानी शाह वजीर नहीं ॥ क्या कुसूर है मेरा जो मैं तेरा दामनगीर नहीं ॥ ऐसी प्यारे करी हमने तेरी तकसीर नहीं ॥ सरको झुकाया मैंने क्यों मारी तूने समशीर नहीं ॥

तीर इश्कका लगा वोः तीर० ॥

तेरे हुस्नके रुतबे को कुछ पाती लैला हीर नहीं ॥ ग़जब हैं तेरे बोल ऐसी तो शक्कर शीर नहीं॥है तो प्याला जहर इश्कका ये कुछ मीठी खीर नहीं ॥ पिये जो इसको रहै फिर उसका दिल दिलगीर नहीं॥पडे इश्कके जख्म मेरे दिलसे जाती यह पीरनहीं॥

तीर इश्कका लगा वोः तीर० ॥

जो आशक होगया तेरा वो कभी हुआ गमगीर नहीं ॥ इश्क न जिसने किया वो कभी पहुँचा तेरे तीर नहीं ॥ तेरे दरकीमिले खाक मुझको चहिये अकसीर नहीं ॥ अब तो प्यारे तेरे बिन दिलको होता धीर नहीं ॥ हाथ मलै जर्राह करसकैं कुछ तेरी तदबीर नहीं ॥

तीर इश्कका लगा वोः तीर० ॥

सौदाई होगया जहांमें कहीं रही तौकीर नहीं ॥ कहे देवीसिंह तेरे आगे तो मैं फकीर नहीं ॥ कहीं पर वोढे शाल दुशालें कहीं बदन पर चीर नहीं॥बनारसी यों कहे तुझको पायें वे पीर नहीं॥ तुही एक है अमीर प्यारे तुझसा कोई मीर नहीं ॥

तीर इश्कका लगा वोः तीर० ॥

खुदाकी जुल्फ और रुख दोनोंकी तारीफ ।

बहेर लँगड़ी ।

काकुल पुर खम आरिज रौशन दोनोंको क्या यारलिखूं॥मार जुल्फको औ रूखको हरदम शोले मार लिखूं ॥ निस्बत है ये बेजा गरचे मूजी पुरे शरार लिखूं ॥ दाम हुमाकाम जुल्फका रुखको हुमा इजहार लिखूं ॥ अच्छी नहीं है येभी तशभी क्या तायर परदार लिखूं ॥ सम्बुले तर मैं जुल्फको बरगे समन रुखसार लिखूं ॥ ये सबजे हैं जमींके इनको हो के क्यों लाचार लिखूं ॥ मार जुल्फको० ॥

काकुलको मैं कालीघटा औ रुखके बर्क आसार लिखूं ॥ घटाके तिस्बत न इनसे हूं न बर्क बेकार लिखूं ॥ उसको तो जुलेमात लिखूं और हैवां उसे हरबार लिखूं ॥ वो तो पुरखम नहीं औरवां नये जिनहार लिखूं ॥ काकुलको मैं लैल लिखूं आरिज़के तईं निहार लिखूं ॥

मार जुल्फको०

गरदिशमें लैलो निहार हैं कहां तलक दिलदार लिखूं ॥ उसको रैहां औ उसको सुनिये लाले जार लिखूं ॥ तसभी सब उस्से हैरां पुरदाग हैंवो क्या खार लिखूं ॥ रुखको कुरआं बिरहमन काकुल को जुन्नार लिखूं ॥ इसमें झगडा हिंदू मुसलमां हैगा क्या इसरार लिखूं ॥

मार जुल्फको० ॥

रुखको हरदम शमये रौशन काकुलको धुंआंधार लिखूं ॥ येभी गलत् है और तशभी इसकी यकबार लिखूं ॥ उसको मौजे बहर लिखूं उसे आईना वेदार लिखूं ॥ मौज न यकजा आईना हेरांये क्या शार लिखूं ॥

ज़ुल्फ सुवैदा बनारसी रुख नूरे हक गुलजार लिखूं ॥ मार ज़ुल्फको० ॥

सनमके ज़ुल्फकी तारीफ–बहेर लँगडी।

नाजो अदासे चली नाजनीं दो ज़ुल्फें लटका लटका ॥ लटका आलम दिखाया जब उसने लटका लटका॥देख तमाशा उनज़ुल्फोंकाफँसा दाममें कुल आलम्॥पेंचमें उसके पडाहै यारो ये बिलकुल आलम् ॥ ऐसा बाँधा खैंच ज़ुल्फमें मचारहा है गुल आलम् ॥ उसके फन्दसे कहो अब क्योंकर जाये खुल आलम्॥ नशेमें है शरशार पीके गेसुये जहरका मुल आलम्॥ हुआ दिवाना देखकर उसकी वो काकुल आलम् ॥ फेरमें ज़ुलफोंके फिरताहै कुल जहान भटकाभटका॥लटकाआलम् दिखाया जबउसने०॥ गदा अम्बिआ शाह औलिया और जो ज़ुल्फ देखे गर दूं ॥ महकसे उसकी होवें सब मस्त और आये दिलमें जुनूं ॥ ज़ुल्फ मो अम्बरी देखके आलम् आशक होगया गूनागूं ॥ लाम कहूं मैं ये इनको लामकानका अलिफ लिखूं ॥ जिसदम् उसने वालमरोडे लाखों अफई का हुआखूं ॥ सबके जहरको निचोडा क्या ताकत करे कोई चूं ॥ कालेने सरको पटका जिस दम उसने लटको झटका ॥ लटका आलम् दिखाया जब उसने० ॥

हिला हिलाके ज़ुल्फ दुता कितनोके तईं हलाल किया ॥ मार मारके मार सदहाको हाल बेहाल किया॥ मशरकसे मगारिबतक उसने अजब ज़ुल्फका जालकिया॥उसके बीचमें डालकरकितनों को पैमाल किया॥ जिस दम उसने ज़ुल्फ बनाके टेढा बाँका बाल किया ॥ कालभी उसको देखकर डरा औ अपना काल किया ॥ फटकारा जब ज़ुल्फको उसने कोई सामने नहिं फटका ॥ लटका आलम् दिखाया जब उसने० ॥

दोनों रुखसारोंके ऊपर लट लटकी घूँघरवाली ॥ गोया माहके गिर्द घिर आई घटा काली काली॥छिटकाके जब जुल्फ सनमने इधर उधर रुखपर डाली॥बयां क्या करूं बनाई अजब वो कुदरत की जाली॥ देवीसिंहके छन्द रँगीले और सदा भोली भाली ॥ सुनेसे जिसके हुई हरएक शायरको खुशियाली॥मतलब है तौहीद जुल्फमें और मारफतका खटका ॥ लटका आलम दिखाया जब उसने० ॥ १६ ॥

दरख्त जवाहिरातका मतलब तौहीद ।

बहेर खड़ी ।

तुख्म लाल याकूत कि टहनी वर्ग जमुर्रद मोती गुल ॥ फल लटके मणियोंके जिसमें जो देखे लेले बिलकुल॥शबनम है इल्मास कि उसके वर्ग वर्ग पर पडीहुई॥हरेक शाख कुन्दन और नीलमसे हैं उसकी जडीहुई ॥ जिसके हाथमें उस दरख्तकी एकभी यारब छडी हुई ॥ सात बादशाहतसेभी वो कीमत उसकी बडी हुई ॥ उस दरख्तके मेवेसे हरदम टपके तौहीद कि मुल ॥

फल लटके मणियोंके जिसमें० ॥

बनी मुरस्सेकी जमीन और फौबारे बिल्लूरके हैं॥उसदरख्तके ऊपर बैठे हरेक जानवर नूरके हैं॥ फुनगी है पारसकी उसमें रख-वाले सब हूरके हैं ॥ वो दरख्त नजदीक है उसके खरीदार सब दूरके हैं ॥ सौदा उनसे बने वहां पर करे न जो कोई शोरोगुल ॥

फल लटके मणियोंके जिसमें० ॥

उस दरख्तको हमने तो आबे हयातसे सींचा है ॥ बडी मशक्कत करी है अपनी करामातसे सींचा है ॥ किसीसे कुछ नहिं काम लिया अपनिही जातसे सींचा है ॥ क्या कोइ जानेगा इसकोके

कौन घातसे सींचा है ॥ हुआ वो जब तैयार तो शैदा बना मेरा ये दिल बुलबुल ॥

फल लटके मणियोंके जिसमें० ॥

उस दरख्तकी सायामें हम टांग पसारे सोते हैं ॥ अगरचेजायें कहीं तो फिर हम उसी तुख्मको बोते हैं ॥ जहां पर अपना दिल चाहे वैसेही शजर सब होते हैं ॥ बनारसी ये कहेके उसपर कुरान पढते तोते हैं ॥ उस दरख्तकी हवा लगे तो जिगरकी आंखें जायें खुल ॥

फल लटके मणियोंके जिसमें० ॥

हाल फकीरीका सच्चा बहेर डेवढी–राग सोरठा ।

फकीरी खुदाको प्यारी है ॥ अमीरी कौन बिचारी है॥बदनपर खाक है सो अकसीर ॥ फकीरोंकी है यही जागीर ॥ हाथ बांधे खडे रहैं अमीर ॥ पादशाहो या होय वजीर॥सदा ये सच्च हमारी है ॥ गदाकी खुदासे यारी है ॥

फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥

है इनका नाम सुनो दुरवेश॥कोई नहिं पाये इनसे पेश॥खुदासे मिले ये रहैं हमेश ॥ कोई नहिं जाने इनका भेस॥कभी गिरिया ओ जारी है ॥ कभी चश्मोंमें खुमारी है ॥

फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥

है इनका रुतबा बहुत बलन्द॥खुदाके तईं ये हुआ पसन्द ॥ पादशासे भी ये बने दुचन्द॥इन्हें मत बुरा कहो हरचन्द॥इनकी दिलपर असवारी है ॥ ऐसी नहिं कहीं तयारी है ॥

फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥

चीथडे शालसे हैं आला ॥ चश्म हरतालसे हैं आला॥चनेभी

दालसे हैं आला ॥ चलन हरचालसे है आला॥ जख्म जो जिगर पर कारी है ॥ वही दिलपर गुलजारी है ॥

फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥

पांवमें पडा जो है छाला॥वोः भी मोतियोंसे है आला॥हाथ-में फूटासा प्याला ॥ जामें जमशैदसे भी बाला॥ अगर कोई हफ्त हजारी है ॥ बोहभी इनकाही भिखारी है ॥

मकाँ लामकाँ फकीरोंका ॥ निशाँ वे निशा फकीरोंका ॥ फ-क्रहै निहाँ फकीरोंका ॥ खुदा है इमा फकीरोंका ॥ ताकते सब्र बोः भारी है ॥ मौत तक जिनसे हारी है ॥

फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥

बढ गये बाल तो क्या परवा॥उतर गई खाल तो क्या परवा॥ आगया माल तो क्या परवा॥हुये कङ्गाल तो क्या परवा॥खुदा तू जनाबे वारीहै ॥ काशीगिरिको यादगारीहै ॥

फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥

तीनों अवस्थाका हाल अव्वल दोयम सोयम।

बहेर लँगड़ी ।

बहशतने लाखों बातें बेहूदा बकवाई मुझको ॥ माशूकों में वही अब नजर पडा साँई मुझको ॥ अव्वल तो में उस गममें जार जार रोया यकबार ॥ अश्ककी लडियां देख कर शरमाया गौहरका हार ॥ बेताबीने किया मुझे बेचैन करी मैं बहुत पुकार ॥ याहकताला देखिये किस दिन यह टूटेगा तार॥ आंखें भरभरके कहतीं यें दांई और बाँई मुझको ॥ माशूकोंमें वही० ॥ दोयम मुझको हुआ इश्क दिलमें सोचा मैं आशक हूँ ॥ अजब है मेरा वही माशूक बनाजो गूंनागूं॥ हरयकसे पूछा मैंने जो इश्क

में थे आशका बेचूं॥ कोई न बाकीरहा अब क्या लैला और क्या मजनूँ ॥ जो आशक थे पाक उन्होंने बातें सुनवाई मुझको ॥ माशूकोमें वही० ॥

सेयुम हमने अपने दिलको समझाया करके हुशियार ॥ तू क्यों गाफिल हुआ चल देख तेरा वह कहां है यार॥दिलने मुझसे कहा मुझे क्या देर है तू हो जल्द तयार॥ मेरा तेरा सङ्ग है चलो देखिये वोः गुलजार॥ देख पडी उसजापर यार अपनेकी परछाई मुझको ॥ माशूकों में वही० ॥

आखिरको गफलतका परदा खुला मिला अपना महबूब ॥ कहे देवीसिंह मेरा वोः खूबां है खूबोंमें खूब॥बनारसी ये कहे इश्क के दरियामें गये लाखों डूब ॥ मैंने उसमें तैरकर पाया वह अपना असलूब ॥ होकरके लाचार छोड गई गफलतकी झाईं मुझको ॥ माशूकोमें वही० ॥

शतरंज इश्ककी–बहेर खडी ।

बाजी खेली इश्ककी हमने जरा किया शशपञ्ज नहीं ॥ खेल ले हर कोई जिसको यह वोः बाजी शतरञ्ज नहीं ॥ अक्कका तो कुछ जोर नहीं जो घोडोंसे चलकर जीते ॥ फीलकी क्या ताकत है जो इस बाजीको बलकर जीते ॥ यह तो इश्कका दल है इसको क्या पैदल दलकर जीते ॥ रुखका रुख फिर जाय न वह इस बाजीको छलकर जीते ॥ मेरे सिवा कोई और जहांमें उठासके यह रञ्ज नहीं ॥ खेल ले हर कोई० ॥

वजीरका क्या बकर इश्कमें पादशाह तक हुये गदा ॥ जो के चाल चूका वह मारा गया मेरी है यही सदा ॥ हमने अपने सरकी बाजी लगाके इसमें दाँव बदा॥ जान बेचकर जो खेला वह जीता

उसको मिला खुदा ॥ वो क्या करेगा मात के जिसके काबूमें है पञ्ज नहीं ॥ खेलले हर कोई० ॥

अरदबमें नहिं आया बादशाहकी अपने ली चोट बचा॥ उसीने तोडा किला जहांमें कोई न उस्से कोट बचा ॥ तिरछे होकर चलोगे तो क्यों करके सकोगे गोटबचा ॥ उसका माल लुट गया रखी थी जिसने जरकी पोटबचा ॥ मुझे किश्त नहिं लगीक मैंनें जमा किया कोई गञ्ज नहीं ॥ खेल ले हर कोई० ॥

ये शतरञ्ज इश्ककी इसको खेले वही सयाना है ॥ बडे बडे होगये जिन्ह नहिं भेद किसीने जाना है ॥ येहै इश्कका ख्याल सदा आशकोंके मनमें माना है॥ बनारसी जीतेजी अब तो निर्गुण बीच समाना है ॥ रामकृष्णके शीरीं सखुनको पाये शीर बिरञ्ज नहीं॥ खेल ले हर कोई जिसको यह वोः बाजी शतरंज नहीं ॥

सिफत खुदाके चेहेरेकी जिस्में कुल कुरान ।

बहेर खडी ।

कुरानकी आयतें हम उसके रुख नायाबसे लिखते हैं॥ लाजवाब उसको हम अपने इस जवाबसे लिखते हैं ॥ अलिफको हम नहीं लिखेंगे बौनी उस गुलरूकी लिखते हैं॥ बिसमिल्लाको छोड सिफत उसके अबरूकी लिखते हैं॥लामसे कुछ नहिं काम झलक उसके गेसूकी लिखते हैं ॥ ऐनको करके अलग आंख हम उस महरूकी लिखते हैं॥तेको तर्ककर चीने जबीं दिलकी किताबसे लिखते हैं ॥ लाजवाब उसको० ॥

नुकतोंको कर अलग हम उसके रुखें खालको लिखते हैं॥कोई हरेक इस्मेसे बेहतर उसके हरएक बालको लिखते हैं ॥ कोई लिखेसे जीम् हे खे कोई दाल जालको लिखते हैं॥हम इनको गये भूल सिर्फ उसके जमालको लिखते हैं ॥ अरबी फारसी हिन्दी तुरकी सब सिताबसे लिखते हैं ॥ लाजवाब उसको० ॥

कुल कलाममुल्लाः हम उसके सारे खतको लिखते हैं॥और मायने कुरानके उसकी उलफतको लिखते हैं॥जेर जबरसे जबरदस्त उसकी ताकतको लिखते हैं॥पेशसे बेहतर पेशानी उसकी किसमतको लिखते हैं ॥ रुखे रौशन आला हम उसका महताबसे लिखते हैं ॥ लाजवाब उसको० ॥

कलमेंसे बंढकर अपने दिलवरकी बातको लिखते हैं॥मुसलमान हिन्दुओंसे आला उसकी जातको लिखते हैं॥वो हैंगे नादार जो उसकी तायदातको लिखते हैं॥देवीसिंह दिलपर उसकी हर करामातको लिखते हैं॥ बनारसी तो हिसाब उसका बेहिसाबसे लिखते हैं ॥ लाजवाबं उसको० ॥

जीव ब्रह्मकी एकतायी–बहेर खड़ी ।

हमदमहम्मे हम् हम् दम्में दम्में जलवा आलमका॥आलम्में हैं सनम् सनम्में आलम् है उस जालम्का॥दिलमें दिलबर दिलबरमें दिल दिलमें उसकी यादरहे॥यादमें अशरत अशरत में मैं मैं मैं नशा इजाद रहे॥नशेमें मस्ती मस्तीमें वहदत वहदतमें दिल शाद रहे ॥ शादमें शोर औ शोरमें शोहरत शोहरतमें आबादरहे॥ आबादीमेंआदम्आदम्मेंदम्दम्मेंदम्दमका॥आलम्मेंहै सनम्०॥

आशकमें है इश्क इश्कमें नूर नूरमें हकताला ॥ हकतालामें रहम् रहम्में करम् करम्में उजियाला ॥ उजिआलेमें ताब ताबमें माह माहमें है हाला ॥ हालेमें अखतर अखतरमें चमक चमकमें छबि आला॥आलामें वोः खूब खूबमें रूप रूपमें रंग चमका ॥ आलममें है सनम्० ॥

शोकमें उसके जौक जौकमें रूह रूहमें रूहानी ॥ रूहानीमें उन्स उन्समें प्यार प्यारमें जिन्दगानी॥जिन्दगानीमें जान जानमें जाना जानामें जानी॥जानीमें वोः हुस्न हुस्नमें जेब जेबमें लासानी॥

लासानीमेंसिफतसिफतमें लामकानघरहाकमूका॥ आलममेंहैस०

चाहमें मन औ मनमें चरचा चरचेमें उसकी कुदरत ॥ कुदरत में है बाग बागमें चमन चमनमें गुलखिलकत् ॥ खिलकतमें खुशबू खुशबूमें खिला खिलेमें है रंगत ॥ रंगत में रस रसमें अमृत अमृतमें पाई लज्जत ॥ लज्जतमें तौहीद देवीसिंह कहे ख्याल सुनहमदमूका ॥ आलममें है सनम् ० ॥

ख्याल–खुदा हममें और हम खुदामें–बहेर लँगडी।

दिलमें दिलबर दिलवरमें दिल सनममें हम और हममें सनम् ॥ दमहमदममें मेरा इस दममें है मेरा हमदम ॥ जान मेरी जानामें है वोः जाना मेरी जानमें है ॥ प्राण हैं उसमें मेरे वोः प्यारा मेरे प्राणमें है ॥ तनो वदन सब उसमें हैं वोः इस तनके दरम्यानमें है ॥ हरेक आन है यारमें यार मेरा हर आनमें है ॥ मैं उसमें हूं रमा वोः मेरे रूमरूम में रहा है रम ॥ दम हम दममें० ॥

गुल गुलशन सब उसमें हैं बोःगुलहर गुलगुलशनमें है॥फबन है ऐसी फबी उसमेंके बोः हरफबनूमें है ॥ गुन्चैदहन सब उसीमें हैं वोः हरएक गुन्चेदहनमें है ॥ चमन हुस्नका है उसमें औ वोः हुस्नके चमनमें है ॥ मेरे मनमें बसा है वोः उसके मनमें बस रहे हैं हम ॥ दम हम दममें० ॥

कुल जहान रौशन उसमें वोः रौशन आलम कुलमेंहै ॥ भरी मुहब्बतकी मुल उसमें और वोः उस मुलमें है ॥ काकुल लटकी दिलमें मेरे ये दिल उसकी काकुलमें है॥ आशके बुलबुल हैं उस गुलमें वोः गुल बुलबुलमें है ॥ कुल आलममें नूर उसीका उस्के नूरमें कुल आलम् ॥ दम हम दममे० ॥

नूरमें उस्की पेशानी नूर उसकी पेशानीमें है॥ जिगर में जानी मेरा ये जिगर मेरा जानीमें है ॥ जिन्दगानी उसमें मेरी वोः मेरी

जिन्दगानीमें है॥नूरानी हैं सब उसमें वो: हर नूरानी में है॥बनारसी कहे इस्में फर्क नहिं मुझको अपनेसरकी कसम॥दमहमदममे०॥

खुदाकी तस्वीर अपने दिल आईने में खींचना ।

बेहर खड़ी ।

करे अगर मन मुसौवरी तो यारकी अब तस्वीर को खैंच ॥ सानी उसकी तू बनजा दिलदारकी अब तस्वीर को खैंच ॥ जैसे आबसे हबाब बनजाय पानीकी तस्वीरको खैंच॥ फिर पानी पानी करले उस जानीकी तस्वीरको खैंच ॥ नूर वही बनता है जोले नूरानीकी तस्वीरको खैंच ॥ हक भी लेता है आशके हक्कानीकी तसवीरको खैंच ॥ बागबागहो दिल तेरा गुलजारकी अब तसवीरको खैंच ॥ सानी उसकी तू बन जा० ॥

शमयसे हुई शमय रौशन जब उस लौकी तसवीरको खैंच ॥ भी रौशन खुदासेहो अब उस लौकी तसवीरको खैंच॥ फिर पावेगा ओ नादां कब उस लौकी तसवीरको खैंच ॥ इस जामेंसे खिंचेगी जब तब उस लौकी तसवीरको खैंच ॥ शोलय नारहुआ रौशन उस नारकी अब तस्वीरको खैंच ॥ सानी उसकी तू बनजा० ॥

बनी मूर्तें गिलकी गुलहुई उस गिलकी तसवीरको खैंच॥ टूटींतो मिट्टी होगई गिलके दिलकी तसवीरको खैंच॥ पत्थर शिल होजाय जो लेवे उस शिलकी तसवीरको खैंच ॥ कत्ल होके मिलजाउस्में उस कातिलकी तसबीरकोखैंच ॥ देखले तू इस पारसे अय उस पारकी अब तसवीरको खैंच ॥ सानी उसकी तू बनजा० ॥

कर दिलको आइना औ इसमें ले उसकी तसवीरको खैंच॥ बताओ इसके सिवाय किसमें उसकी तसवीरको खैंच॥ जिस्मसे मत रख काम तू जिसमेंले उसकी तसवीरको खैंच ॥ बनारसी अब तू

जिस तिसमें ले उसकी तसवीरको खैंच॥फारगे गमहोजा ऐदिल गफ्फारकी अब तसवीरको खैंच ॥ सानी उसकी तू बनजा० ॥

नसीहत बंदेको समझानेकी–बहेर छोटी।

तू जिस्म जिगर औ जान नहीं जानाना॥फिर क्यों नहिं कहता खुदा जो है तू दाना॥किसने तुझको बांधाहै बना जो बंदा ॥ और कौन पेंचका पडा है तुझपर फंदा ॥ तू अपने आपको देख न हो मतमंदा ॥ है कौनसी वोः बदबू जो हुआ तू गंदा॥गर तूने अपने तईं जिस्म नहिं जाना ॥ फिर क्यों नहिं कहता खुदा०॥

ये हाथ पाँव औ सर भी नहीं कुछ तूहै ॥ सीना औ बाजूपर भी नहीं कुछ तूहै ॥ जनखा औरत औ नर भी नहीं कुछ तूहै ॥ जिन् देव परी पैकरभी नहीं कुछ तू है ॥ तू अपने बीचमें आपी आप समाना ॥ फिर क्यों नहिं कहता खुदा० ॥

रोना औ तडपना आह नहीं कुछ तू है॥मुहँ जबाँ चश्मवल्लाह नहीं कुछ तूहै॥काबा किबला दर्गाह नहीं कुछ तूहै ॥ औ हरामकी भी राह नहीं कुछ तू है॥मसजिदभी नहीं तूँ बना नहै बुतखाना फिर क्यों नहिं कहता खुदा० ॥

तकदीर और पेशानी भी तू नहीं है ॥ आतिश औ हवा गिल पानी भी तू नहीं है ॥ अरवाह औ गिलमानीभी तू नहीं है ॥ इस जिस्मकी जरा निशांनी भी तू नहीं है॥ये बनारसीका समझ सखुन मसताना ॥ फिर क्यों नहीं कहता खुदा० ॥

ख्याल होलीका इश्क मार्फत–बहेर छोटी।

आतेही इश्कने यहां मचादी होली ॥ वोः आतिश और तन फूस जलादी होली ॥ चस्मोंसे बरसने लगा खुने रङ्ग पानी॥और इश्कभी करनेलगा वोः ऐंचातानी ॥ मैं हँसूतो गालीदे मुझे दिल

जानी ॥ औ लोग बजावें ताली सुनो कहानी ॥ नहिं देखीथी सो मुझे दिखादी होली॥वोः आतिश औ तन फूस जलादी होली॥

गमके गुलालने ऐसी धूल उडाई ॥ अब सिवा खुदाके कुछ नहिं देय दिखाई ॥ तन बदनमें जीतेहीजी आग लगाई ॥ जो होनी थी सो होली मेरे भाई ॥ शाबाश इश्कने खूब लगादी होली ॥ वोः आतिश औतन फूस० ॥

जिसवक्त वोः आया दिलमें इश्क रँगीला ॥ था चेहरेका रँग लाला सो पड गया पीला॥औ जामा जोथा खिचा वोः होगया ढीला॥तिसपर भी दोस्तोंने कर दिया येः गीला ॥ हजरते इश्कने मुझे खिलादी होली॥ वोः आतिश औ तन फूस० ॥

दिल तड़प तडपके अपना नाच दिखाये॥वोः इश्क न अपने कुछ खातिरमें लाये॥ दिल आह आह कर शोर औ धूम मचाये ॥ पर इश्क न इसकी मुतलक सुने सुनाये ॥ लो सुनो दोस्तो तुम्हें सुनादी होली ॥ वोः आतिश औ तन फूस० ॥

थकगये इश्कको कबीर गाते गाते॥ जिसको देखा वोः आये ढोल बजाते ॥ कोइ सर पर डाले खाक कोई चिह्लाते॥ कहैं बनारसी हम इश्कमें हैं मदमाते॥जो हक कुल्ह थी मैंने गादी होली ॥ वोःआतश औ तनफूस जलादी होली ॥

मतलब तौहीद ॥ खुदाका सरापा–खरी रंगत ।

जितने दिन हैं इस दुनियामें किसीका नहिं मजहबहै वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो॥बुतखाना बनवाया किसीने मसजिदको भी चुनवाया॥ अपने अपने दीनका देहेरा सबने सबको दिखलाया॥उस मालिकको भूलगये जिससे येनरजा मापाया॥इसमें उसको नहिं देखा है सिजकी ये कंचन काया॥मैं अपने तनमें देखों हर घडी किमिरा रब है वो ॥सबमें हैऔरअलग

है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ हिन्दूतो बुतखाने में पत्थरसे-टकराते सरको ॥ मुसलमान मस्जिदमें गिरके सिजदा करते हैंदरको ॥ और सुनो अंगरेज बडा कहते अपने गिरजा घरको॥ इसी तरहसे हरेक भूले पर नहिं पाया उस हरको ॥ मुझे इसीमें मिला और जा मिले किसीको कब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ कोई ढूँढता पोथी में और कोई देखता किताब में ॥ लाख तरहसे देखो पर वो आता है कब हिसाबमें ॥ उसे जो देखा चाहे तो वो है इसे जाम नयाब में ॥ इसीके भीतर देखे तो फिर पहुँचे आलीजनाबमें ॥ बहुत सख्त है मंजिल ये और राह बडी बेढब है वो ॥ सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ बेसमझी इस कदर जहां में है कि खुदाको समझें गैर ॥ सरेने बांधीमुश्कें और तौहीदसे रखते बिल्कुल बैर ॥ करैं फकीरों से झगड़ा किसतरहसे उनका होगा खैर ॥ अपना आपा नहीं देखें हैं जिसमें चौदा तबककी सैर ॥ जैसा देखो वैसा दीखे दिल आईना हलब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ सुनो सरापा उसका तो वह जुल्फ में उसके खमवी है॥नागिन्भी है साँप भी है अमृत भी है और शम् भी है॥माथे परहै मेहर तसद्दुक चश्ममें जामें जमभीहै ॥ अबरू में जुल्फिकारहै शमशीर और तेगे दुदम् वी है॥रहेम करे तो रहीम है और कहेर करे तो गजब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ मिजे में उसके तीर भरे हैं और कारी नस्तर भी है ॥ चितवन में है चोट दूरकी जादू भी और सहर भी है ॥ बीनी में अल्लाह अलिफ है इलम भी है और हुन्नर भी है ॥ तडफ न बिजुली में ऐसी नथुनों की फडक इस कदर भी है ॥ दहनमें गुंचालाल लबे शीरीं भी और वेलब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ दंदां-

में मोती हैं बेबहा और हीरोंकी कनी भी हैं ॥ कहूं में अपनी जबांसे क्या क्या जो जो उसमें मनी भी हैं ॥ उन्हीं में हैं खानये खुदा और कहीं कहीं पर अनीभीहैं ॥ अगर्चे पीसें दांत तो वो इस दुनियांऊपर गनी भी हैं ॥ नाम मेरे दिलवरके लाखों इसीसे तो वेलकब है वो॥ सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो॥ जबांसे उसकी जो निकले वो सच्च है ऐसी जबांहै वो॥ जकन में उसकी चाहसे डूबा यूसुफ ऐसा कुआं है वो॥सीनेमें आईनासाफ बाजुओंमें ताकत तमा हैवो॥पंजे में पंजये अलीहै और पंजे मरजां है वो ॥ नाखूनों में हिलालहै और सिकममें नर्मी सब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ नाफमें है वो भमरके चक्करमें आये आशकका दिल ॥ कमरमें तो है राजे निहाँ वो राज हुआ किसको हासिल ॥ जानूमें बिल्लूरकी शांखे नूर पिंडलियों में कामिल ॥ कदम कदम पर नाजो करशमां आशकोंको करता बिस्मिल ॥ जिसमें भी है बे जिस्म भी है क्या लिखूं कि कैसी छब है वो॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो॥ हुये हजारों बली जहांमें लिखीं किताबें वहतौहीद॥कह कहके थक गये सभी पर खतम हुई नहिं गुफ्तेशुनीद॥ कटा के सर को लिखीं मसनवी जानिबेचकर पाया दीद ॥ बनारसी रोरोके हुआ खुशतब हासिल हुई उसको ईद ॥ कहना सुनना कुछ नहिं बनता मुझको तो यक सबब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥

ख्याल: मार्फत तौहीद-अपनेको पहिचानना ।

बहेर शिकस्ता ।

हुआ जो आपसे अपने वाकिफ तो मैं अनल हक यों कहपुकारा ॥ तुम्हें जो मालूमहो कहो तुम किसी का इसमें है क्या इ-

जारा॥अजब तमाशा ये देखा मैंने कि पारा पारा हुआ जो पारा॥ मिलाया उसको तो एक होकर मिला वो आपी से अपना प्यारा॥ इसी तरहसे जुदा मैं उससे हुआ मिला उसका फिर सहारा॥ तो वस्ल होकर हुआ मैं एकता दुई से मैंने लिया किनारा॥

शैर–लड़गई आंख वो मारा जो नजारा उस्से॥ दमबदम साफ अब होता है इशारा उस्से॥ छिपाके आंखमें मैंने चुरालिया उसको॥ हुआ रोशन मेरी पुतलीका यतारा उस्से॥समझ तुम्हें गर हो तो समझलो ये मन खुदा है सखुन हमारा॥तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसीका इसमें है क्या इजारा॥ ये जिस्ममेंदमदमा है दमका के एक दम है यहां गुजारा॥ हुआ जो कोई वहांसे वाकिफ न उसको हरगिज किसीने मारा॥ यहां तो मरगये मुफ्तमें कितने हुये सिकंद वो शाह दारा॥रहा वो कायम मरा न हरगिज कि जिसने छोडा बलख बुखारा॥

शैर–किसीने उसके लिये तखत हजारा छोडा॥किसीनेमालो महेल मुल्क ये साराछोडा॥ मैं तुमसे पूंछताहूं तुमने यहां क्या छोडा॥ ये सुनके मरगये इश्कोंका तरारा छोडा॥कई मर्तबा कहके अनल हक ये सरको मैंने दिया खोदारा॥तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसीका इसमें है क्या इजारा॥जो समझ आई कुछअपनेताईं तो मैंने फिर ऐसाही विचारा॥ ये जिस्म मैंतो नहीं हौं मुतलक ओ नूरहूँ जिसका कुल पसारा॥ किया ये दिलके तईं आइना और नकशा उसका यहां उतारा॥ लगा वो कहनेकी मैं खुदाहूँ कहो फिर इसमें क्या मेरा चारा॥

शैर--जामें वहेदत जो दिया उसने दुबारा मुझको॥ दिखाया आलमें मस्ती का शरारा मुझको॥ सराब वस्लकी पीतेही मैं

बेहोश हुआ ॥ सरेहकी बात नहीं शेख गवारा मुझको॥मैं गमसे दूर और जहां में एकता और लामकां में रहूँ विचारा॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसीका इसमें है क्या इजारा॥ ये पेट भर-भरके तुमने अपना बनायाहै दुनियांमें पेटारा ॥ अगचें भूखेरहो तो पाओ अजीबलज्जतका वो छोहारा॥न उसमें गुठली न जिसमें छिलका न वो मुलायम न वो करारा ॥ भरा सरासर है उसमें अमृत वो खाये जो है खुदाका प्यारा ॥

शैर–शिकमको तुमने जहांमें न जो मारा होगा॥किसतरहसे वो खुदा यार तुम्हारा होगा ॥ हाले तौहीद न समझे तौ खिसारा होगा ॥ मौतके बादभी मरमरके तू हारा होगा ॥ बनारसीकहता मैं वही हूँ ये जिस्म मैंने उसीपे वारा ॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसीका इसमें है क्या इजारा ॥

ख्याल खुदासे जुदा न होनेका–बहेर शिकस्ता।

जुदा न तुझसे हुआ मैं हरगिज न मुझसे तेरी जुदाईहोगी ॥ किया जो तूने खुदीसे बाहर तौ मेरे ह्यां अब खुदाई होगी॥ ओ फौज मोजे बहेर जो उलफतकी लहेर इस दिलपर आई होगी॥तो चश्मके चश्मेसे वो दरिया बहाकेदुनिया बहाई होगी॥जो अश्क गोहरकी माला मैंने गलेमें अपने पिनहाई होगी ॥ सदफकीतो आगे मेरेही आंखोंके वो कैसी बुराई होगी ॥

शैर--दीदये तरसे मेरे ऐसी तराई होगी॥ चर्ख पर बारिषेमौसम-की चढाई होगी ॥ जिक्र रोनेंका जो आये तो मैं तूफां करदूँ ॥ न रोऊँ इतना तो फिर मेरी हँसाई होगी ॥ न अब तकब्बुररहादुई का दुईभी देती दोहाई होगी ॥ किया जो तूने खुदीसे बाहिर तो मेरे ह्यां अब खुदाई होगी ॥ जो दस्तमें मेरे उस सनमकी ओ

पहुँची आकर कलाई होगी ॥ तो हाथ मलते औ होंगे दुश्मन-कहां फिर उनको कलाई होगी ॥ औ हाथ डाले गलेमें मेरे अदा जो उसने दिखाई होगी ॥ तो बाजू टूटेंगे वो रकीबोंके और न उनकी दवाई होगी ॥

शैर—आंख तुझसे जो किसीनेभी लडाई होगी ॥ तो फतेयाब ह्यां उसकी लडाई होगी ॥ देख तो उसको जरा खोल चश्में दिलको ॥ आँख फिर तुझसे किसीने न मिलाई होगी ॥ नदीनो मजहब का अब घमंड है तो क्यों न मेरी सफाई होगी॥ किया जो तूने खुदीसे बाहर तो मेरे ह्याँ अब खुदाई होगी ॥ अगचें उस-शमये नूर सेह्याँ किसीने भी लौ लगाई होगी ॥ तो नाम रौशन उसीका होगा औबात उसकी बनाई होगी ॥ औ कूचचे जाना-कि किसीने करी अगचें गदाई होगी ॥ तो पादशाहतसे भी सल्तनत जहाँ में उसकी सवाई होगी ॥

शैर—पास जबतकसे खुदाके न रसाई होगी॥ रूबरू मौतके फिर उसकी हँसाई होगी ॥ अब कमाँ हाथ कज़ाके हैं निशाने-से बचो ॥ गोशये यार में छिपनेसे रिहाई होगी ॥ कहाँ यहाँ जिस्मका गुरूरहै ये मैंने शोहरत मचाई होगी ॥ किया जो तूने खुदीसे बाहर तो मेरे ह्याँ अब खुदाई होगी ॥ है राह उल्फत की सख्त मुश्किल भला किसीने जो पाई होगी ॥ तो मंजिले जाना पर पहुँचके उतारी उसने थकाई होगी ॥ ऐ देवीसिंह अबये रूह जिसकी खुदामें जाकर समाई होगी ॥ तो आना जाना न होगा वाँसे वोः बात उसकी बनाई होगी ॥

शैर—बे वजेह लावनी जिसने कहीं गाई होगी॥ अपनी फिर आपही खाक उसने उडाई होगी ॥ हाले तौहीदसे वाकिफ जो हुआ एक हुआ ॥ बात उसको न दुई की कभी भाई होगी॥ बनारसीने

सदा अनलहक खुदा या तुझको सुनाई होगी ॥ किया जो तूने खुदीसे बाहर तो मेरे ह्यां अब खुदाई होगी ॥

बागे बहिस्त और बागे दुनियाँदोनोंकीसिफत ।

बहेर शिकस्ता ।

ओ बागे जिन्नत ये बागे दुनिया है दोनों बागों का एक माली॥ अजब करश्मे के तुख्म बोये कि सब गुलों में है बू निराली॥वहां वो हूरें यहां पे परियां वहां मलक यां बशर जलाली ॥ वहां वोः रिजवां यहां ये गुलचीं खुशी वहाँ है यहां बहाली ॥ वहां है तूबां यहां सनोबर झुकाई जिसने गुलोंकी डाली ॥ वहां अजायब हैं मुर्ग नगमां सरा यहां बुलबुलें हैं आली ॥ किसीकी रंगत सफेद हैगी किसीकी जर्द और किसीकि काली ॥ अजब करश्मे के तुख्मबोये कि सब गुलों में है बू निराली ॥ वहां जो तसनीम सुल सबील है बनाई उम्मांकी ह्यांपनाली॥वहां मोहैया है जामें कौसर यहां है लालेकी भी पयाली ॥ वहां जो गुंचाशिगुल्फा ताजाभरी शिगुल्फों से ह्यां लवाली ॥ जो सरसब्ज हैं शजर सब हरे यहां नख्ल हैं न खाली ॥ कोई शिगुल्फा तरी किसीपर कुबूद कोई किसीपै लाली ॥ अजब करश्मे के तुख्म बोये कि सब गुलोंमें है बू निराली ॥ वहां जो मेवे अजायब हैंगे तो फल यहां हैं लगे जमाली ॥ जो खास बातें वहां तो आम हैं सखुन-यहां कुछ नहीं है जाली ॥ वहां जो सकलें हैंसबकी नादिर तो सूरतें हैं ह्यां भोली भाली ॥ वहांके गुलसे खिजल जो लाला तो साँवलीसे यहां कलाली ॥ खिजां न उसके बाहर-को है न उसके गुलको हैं पायमाली ॥ अजब करश्मेंके-तुख्म बोये कि सब गुलोंमें है बू निराली ॥ है ऐसे पानी-से बाग सींचे हरे हुये गुलशने जवाली ॥ ये कहते हैं देवीसिंह कुलसे वही है दोनों जहां का वाली ॥ जो अपनी दिखलाये

शाने गुलको तो वोउठे बुलबुले नेहाली ॥ हरेक अदा है अजायब उसकी हरेक तरा है नई निकाली ॥ बनारसीका सखुन ये सच्चा औ मार्फतकीहै बोलाचाली ॥ अजब करश्मेके तुरूम बोये सब गुलोमें है बू निराली ॥ सरकार

ख्याल तौहीद–बहेर शिकस्ता ।

सबाभी चलने में थर थराये न दिलको ताकत नताब दमको॥ भला वहां किसतरह से जाये और आन पाये मेरे सनमको ॥ जहां फरिश्ता भी दम न मारै वहां कोई क्या धरे कदमको॥ गुजर न माहो मेहरका मुतलक न बार है साहबे हसमको॥बुलंदी पस्ती दिखाई उसने बनाया हस्तीको और अदमको ॥ सबों से रुतबा है उसका अजफल कहूं मैं क्या फजल औ करमको ॥ हजार बुल-बुल करे इरादा गुलोंसे फेर अपने चश्मे नमको॥भला वहां किस तरहसे जाये और कौन पाये मेरे सनमको ॥ वोही हुआ मौजूदे परिस्ता तेरी उसीसे गुले इरमको॥नजुल्फ हूरो परी कि पहुंचे हैं उसके काकुलके पेंच खमको॥कहीं पै खाक और बादे आतिश कहीं पै जारी किया है जमको ॥ उसीसे अर्बा अनासर हैंगे बहम भूल हरगमो अलमको॥हरेक फरदे वसर खुदा हैं गवाह कहताहूं खा कसमको॥भला वहाँ किसतरहसे जाये और कौन पाये मेरे सनमको ॥ इसी तमन्ना में हाथ मलते हैं जिनके कोई पहुँचादे हमको॥बराये अल्लाह उसीके दरतक करेंगे क्या हमदरो दिरमको॥ बंरहमन और शेख उसीकी उलफत में भूले बुतखानये हरमको॥ ओरब्बेहै बेचूं और चरावस न दरूल कुछ वां है बेशकमको ॥ हो सुस्त जबरीलका भी शहपर हजार उडे वो जता हममको ॥ भला वहां किस तरहसे जाये औ कौन पाये मेरे सनमको॥सरावे वहदत में मस्त हैंगे जो उसके समझें न जामे जमको॥जहां कि कैफियत

उनको हासिलउसीके देखेसे भूले गमको ॥ समझते अमृतसेभी हैं बढके जो सादिक आशिक हैं उसके समको॥रहीम है वो करीम है वो बनारसी रोकले कलमको॥मकान है लामकां उसीका तु याद रख दिलमें इस रकमको॥भला वहां किसतरहसे जाये औ कौन पाये मेरे सनमको ॥

तकलीफमें घबराना नहीं चाहिये यह सच्चे आशकका काम है-बहेर लँगडी।

जरा आह न करी इश्कमें सब आफत भाई मुझको ॥ कहीं चाहमें गिरा कहीं नजर पडी खाई मुझको॥किसीने अपना संग दिया नहिं हमतो आप हैं अकेले॥जहां न कोई मिला उस जापे किये हमने मेले॥लाख वजहके सदमें ओ गम सब अपने दिलपर झेले॥सरको काटके हथेलीपर रखके सरपर खेले ॥ बिन मुर्शिद के नहीं हैं हम और नहीं किसीके हैं चेले॥जिसे इश्कका मजा लेना हो वो हमसे लेले॥इश्क बहुत मुश्किल है फिर आता ये नंगे पाईं मुझको ॥ कहीं चाह में गिरा० ॥

और सुनो अहवाल इश्कमें कहीं पहेन बैठे जंजीर ॥ ऐसा फँसाया यादमें उस्की ये दिल किया असीर॥देखके मेरा हाल शर्ममें आई शीरीं लैला हीर॥मजनूं रांझा हुआ फरहाद बहुत सुनके गमगीर॥और भि जो आशिक थे उनको लगा मेरे वो गमकातीर॥ लगे मचाने शोर ए आशक हैं कोई अजब फकीर॥जो आशिक थे पाक उन्होंने बाते बतलाईं मुझको ॥ कहीं चाह में गिरा०॥

एक वक्त हुआ ऐसा इश्कमें यारो हम बीमार हुये॥बेताबीसे बात करनेकोभी दुशवार हुये ॥ गया तन बदन सूख जिगरपर लाख वजेहके गार हुये॥मरहम लगाया तो उससे और जख्म पुरकार हुये॥बहुत दवाई करी मेरी वोःतबीब सब लाचार हुये ॥

मेरी सूरत देख कर जिन्दे भी मुर्दार हुये ॥ मैं तौ विस्मिल रहा लगी नहीं लाखों वो दवाई मुझको ॥ कहीं चाहमें गिरा० ॥

यहां तलक होगया हाल तिसपर नहिं मैंने आहकरी ॥ अपने दिलको किया मजबूत औ यह सल्लाह करी ॥ उसदिलवरका दिदार करनेकी इस दिलसे चाह करी ॥ और रास्ते छोडकर पाकइश्ककी राह करी॥देवीसिंहने उसके सिवानहिं किसकी कुछ भी ख्वाह करी ॥ खुशी हुआ वोः तो उसने रहम की भला निगाह करी ॥ बनारसी ये कहे इश्कने करदिया गोसाँई मुझको ॥ कहीं चाहमें गिरा कहीं नजर पडी खाई मुझको ॥

पानके खानेकी सिफत-बहेर लँगडी।

पानके खातेही उस सनम्के दहन् में क्या क्या रंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां और जमुर्रद संग हुये॥एकरंगमें चाररंगजबहुये तो क्या क्या रंग खिला ॥ जिसने देखा उसीने कहा इन्हें क्या रंग मिला ॥ वोहै जिला दांतोंमें किये तो जिलाकोभी देती है जिला ॥ चमक दमकसे तो जिसकी हरदम ये तडपै है दिला ॥

शैर-किसी जा पर तो उजलीसी है वोः कुछ इनमें तैयारी ॥ किसी जापर तो सुर्खीने करी है क्या गुलेनारी ॥ किसी जापर तो सब्जीने वोहै सब्जेकी जांमारी ॥ कहीं रंगत गुलाबीहै गोया चारोंकी वां यारी ॥ देखके चारों रंग जवाहर लड लडके चौरंग हुये॥हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥ पहले पिया पानोंका लहू और पीछे किया आशकों काखूं ॥ गजब लिखे कोई क्या ताकत इनका मजमूं ॥ चश्मको सब कहते हैं खूनी मैं इनको खूँखार लिखूं ॥ ये क्या घाट हैं खून करने में यही हैं अफलातूं ॥

शैर–अगर देखा जो तुम चाहो तो कोइ तोफा गिलौरीलो ॥ हो जिस्म नूर मौलाका कहो उस्से कि तुम खावो ॥ जो ओ खाये तो फिर उसके दहन को तुम जरा देखो ॥ करो टुकडे जिगर अपना व आशक हो तो आशकहो॥ देख के इन दंदां का जौहर आशके जौहरी दंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥ अजब तरहका तिलिस्म देखो उसके उस दन्दान में है ॥ येतो सफाई कहां हीरे मोती की खान में है ॥ लाले बदकशां में क्या कीमत जो कुछ इनकी शानमें है ॥ कहां बिके ये बताओ बात ये किसके ध्यानमें है ॥

शैर–इन्हें परखे वही जौहरी हो जिसकी पाक बीनाई ॥नजर नापाक करने से तोहो फिर उसकी रुसवाई ॥ खुदाके घरसे तो इज्जत उन्होंने इस कदर पाई ॥ इन्हीं से देख लो बिल्कुल है इस चेहेरे कि जेबाई ॥ किया सितम्पर सितम् ये मुसक्या करके जिस दम नंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥ येदंदा हैं उसके जिसके माहो मेहर अखतर हैं बने ॥ आमाल अपने हुये बाला तो मेरे दिलवर हैं बने ॥ अब मुझको क्या कमी रही ये पास मेरे गौहर हैं बने ॥ लाल भी अपने पास इलमास के भी जेवर हैं बने ॥

शैर–ये वो नग हैं हकीकत इनके आगे क्या नगीने की ॥येवो मीना हैं जिस्से जेब हो दुनिया में मीने की ॥ खुदाने इनको तो रंगत वो दी है इसकरीने की ॥ मिले लज्जत इन्हींसे तो भला खाने औ पीनेकी॥बनारसी को खुदाने बख्से कभी न जरसे तंगहुये॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥

खुदाकी तारीफ जिसतरह कुरानमें लिखी है ।

बहेर छोटी ।

कायम है खुदा एकजा वोः न आये जाये ॥ पर कुदरत उस्की

हरजा झलक दिखाये ॥ नहिं चले फिरे नहिं खाय न पीवे पानी॥ नहिं घटे बढे ज्यों का त्यों रब्बानी ॥ मैंने देखा आंखोंसे वह मेरा जानी ॥ ओ वहां है और मैं उसकी यहां निशानी ॥ जो बगैर देखे कहे वो बात किहानी॥देखे तो नूरमें मिले नूर नूरानी॥ नहिं हिले न डोले बोले नहिं मतलाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये ॥ शोलये नूर कुछ उसके नहीं वदन है ॥ दिलजांसे मेरी उसकी लगी लगन है ॥ मैंने भी यही समझा कि न मेरे तन है॥ कुछ सहेल नहीं ये समझभी बहुत कठनहै ॥ नहिं मिलता उसका किसीको भी दर्शन है ॥ओ आपी आप अपना देखे जोबन है ॥ एकता है दुईकी बात न सुने सुनाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये ॥ वोः आपी हाकिम आपी वही गवाह है॥ आपी है बंदा आपी वोह अल्लाह है ॥ आपी है बना वो मेहर और आपी माह है॥ है सबमें सबसे अलग ये उसकी राहहै ॥ बेगम है उसको किसीकी भी नहिं चाह है॥बेचश्म है देखे सबको अजब निगाह है॥लामकाँहै वोह नहिं हटे किसीके हटाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये॥मशरकसे मगरिबतक सबमें शामिल है॥पर अलगहै मेरा खुदा बडा कामिल है ॥ नहिं अकल हैं पर वोः अकलसेभी आकिल है ॥ नहिं अदल है वोः पर अदलकाभी आदिलहै ॥ नहिं आबो हवा आतश और नहीं वो गिल है॥ कहे देवीसिंह बस उसीमें मेरा दिल है ॥ और बनारसी कुछ गाये नहीं बजाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये ॥

माशूक और आशिके पैरहनकी तारीफ–बहेर लँ० ।

तुझको तो ऐ गुलशनमें फर्श इतरसे तर चहिये ॥ मुझको प्यारे खाकका उस जापर बिसतर चहिये ॥ गिर्द तेरे चेहरेके हरदम उस महका हाला चहिये॥तेरे दरकी खाक मेरे मुँहपर आला

चहिये ॥ तेरे गलेमें गजमुक्ता और लालोंकी माला चहिये॥मेरे गलेमें वो लपटा चौतरफा काला चहिये ॥ तुझे तख्तसलतनतका चहिये मुझको मृगछाला चहिये ॥ तेरे कदममें पदम पावोंमें मेरे छाला चहिये ॥ तुझे सोनेको पलङ्ग हमें पडनेको तेरा दर चहिये ॥ मुझको प्यारे खाकका० ॥

तेरे दस्तमें छड़ी फूलकी चढनेको घोड़ा चहिये ॥ मेरे हाथमें अजदहेका उस दम कोड़ा चहिये ॥ तुझको तो ऐजान हमेशा करना नकतोडा चहिये ॥ मुझको जालिम कभी नहीं तुझसे मुँह मोडा चहिये ॥ तेरे वास्ते शाल दुशालेका तोफाजोडा चहिये ॥ मेरे वास्ते फटासा कम्बलभी थोडा चहिये ॥ तुझे चाहिये रङ्ग-महल हमें तेराही कूंचा घर चहिये ॥ मुझको प्यारे० ॥

तेरे तो खासेम खूब तोफा मेवा हरदम चहिये ॥ मेरी गिजा है मुझे खानेको हरदम गम चहिये । तुझको तो ऐ नाच रंग यक आलमका आलम चहिये॥मेरे दिलको हमेशा तुही एक जालिम चहिये ॥ तेरेवास्ते परी हूर महेताब और शबनम चहिये ॥ मेरी सदाहै मुझे अब तुही फक्त हर दम चहिये ॥ अब तो आरजू यही तेरे कदमोंमें मेरा सर चहिये ॥ मुझको प्यारे० ॥

तू तो है सरदार तुझे करनेको सरदारी चहिये ॥ हमें हमेशाँ तेरी करना ताबेदारी चहिये ॥ तुझको तो अपने जोबनकी करना तैयारी चहिये॥ हमको अपने वदनकी जरा न हुशियारी चहिये॥तुझको डंके निशान और हाथीपर अम्बारी चहिये॥मुझको करना तेरी सब फरमा बरदारी चहिये ॥ जलेबमें हरदम तेरे सब फौजोंका लश्कर चहिये॥ मुझको प्यारे० ॥

तेरे बदनपर यार सुनहरी मीनेका गहना चहिये ॥ अपने तन-पर हमें सेली कफनी पहेना चहिये॥ तू चाहे झटकार मुझे दावन

तेरा गहना चहिये॥जहां रहे तू तेरी खिदमतमें मुझे रहना चहिये ॥ देवीसिंह यों कहे तेरे सब जोर जुल्म सहना चहिये॥बहेर इश्कमें गर्कहो बिना आब बहेना चहिये॥बनारसी ये कहें मेरे अब दिलको तुही दिलवर चहिये॥मुझको प्यारे खाकका उस जापर बिस्तर०॥ रंज औ राहत दोनोंको एक समझना चाहिये॥बहेर लँ०।

ऐ गुल तेरी उलफतमें गुलजार भिहै और खार भिहै ॥ बडा लुत्फ है इश्कमें मार भिहै और प्यारभिहै ॥ कभी इशारा अबरूका है और कभी तलवार भिहै ॥ कभी वस्लका हमसे एकरार भिहै इनकार भिहै ॥ कभी गालियाँ झिड़की हैं और कभी शीरीं गुफतार भिहै॥कभी खिजां है कभी गुलशन है बाग बहार भिहै॥ बोला ये मंसूर दारपर दार भिहै दीदारभिहै॥बड़ा लुत्फ० है ॥

कभी तोक गर्दनमें पड़ा और कभीफूलोंका हार भिहै॥कभी वरहना बदन है कभी तनपै शृंगार भिहै॥कभी सैर सहराकी है और कभी कूचा बाजार भिहै॥कभी है राहत कभीरञ्जीदा दिल बीमार भिहै ॥ कहा लैलासे मजनूने अब सुलः भिहै तकरार भिहै ॥ बड़ा लुत्फ है० ॥

कभी हँसी दिल्लगी कभी रोना अशकोंका तार भिहै ॥ कभी नजर का छिपाना कभी निगाहे चार भिहै॥कभी गलेसे लगे कभी वो करता दारो मदार भिहै ॥ कभी जिलाये कभी यक आदसेडाले मार भिहै ॥ कभी करे ऐयारी वो औ कभी वोः बनता यार भिहै ॥ बड़ा लुत्फ है० ॥

कभी जख्म पुर होंय जिगरके कभी बदनपर गार भिहै॥कभी करे खुश कभी वोः करता दिल बेजारभिहै॥देवीसिंह ये कहै मेरा वोः शोख सितमगर गार भिहै॥जो चाहै सो करे अब वही दिलकी

मुखतार भि ॥बनारसी कहे नेकी बदी दोनोंका उसे अखत्यार भिहै॥ बड़ा लुत्फ है० ॥

होली जिस्मकी मतलब तौहीद–बहेर लँगड़ी ।

बनी मेरे इस जिस्म की होली लगी इश्ककी आग भला॥लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ भर भरके चश्मोंमें अश्क करदूं आंखे रंगीन भला॥सुर्ख गुलाबी और केसरिया रंगत तीन भला॥रोरोके जामें को मवत्तर करूं बजाऊं बीन भला ॥ लौमें शोले नूरके रहूं सदा लवलीन भला ॥

शैर–बनाया उसने मुझे वोः फकीर होलीमें ॥ के आये बेनवाँ लेले अबीर होलीमें॥उन्हींमें मिलगये मुझको कबीर होलीमें ॥ सुनाये मैंने उन्हें वो कबीर होलीमें॥लडूं भिडूं गालियाँ खाऊं नहिं रक्खूं दिलमें लाग भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ प्यार कि पिचकारीसे उसने किया मुझे रंगलाल भला ॥ खुशी हुई वोः तो उडगया गमका सभी गुलाल भला॥ अनहद बाजे बजें मगजमें कई बजहकी ताल भला॥राग वोः दीपक सुने जो हो साहबे कमाल भला ॥

शैर–लिया है अबके भला मैंने योग होली में॥मैं अपने योगसे करता हूं भोग होलीमें॥लगाये इश्कका ऐसा होरोग होलीमें॥जिगर भी जल गया करके वियोग होलीमें॥नींद कहां आती है मुझे मैं रहों रातो दिन जाग भला॥लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला॥मैं अपने दिलमें देखूं है इसीमें उसका नूर भला ॥ उसीसे खेलूं मैं होली उडादूं तनकी धूर भला॥हाथ पांव लकरियाँ हैं इनको मुझको नहीं गुरूर भला॥ये मैं नहीं हूं और हूं इनमें पर इनसे दूर भला ॥

शैर–ये मैंने पीरसे सीखा है खेल होलीमें ॥ अब अपने यारसे रखताहूं मेल होलीमें ॥ मलूं मैं यादका इतरो फुलेल होलीमें॥ कि जिसकी बूसे मिटे कुल झमेल होलीमें॥ गिरे नहीं मेरे सरसे इज्जत हुरमत की पाग भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ ऐसी होली ओ खेलो हो जिस्को कुछ फहमीद भला ॥ कहै देवीसिंह ये है होलीभी और तौहीद भला ॥ इसीमें देखूं नाचरंग है इसीमें उसका दीद भला ॥ इसी जिस्म में करूं मैं खुदासे गुफ्त शुनीद भला ॥

शैर--उडादे दिलसे खुदी की तु खाक होलीमें ॥ तो होवे दम्मे तेरा जिस्म पाक होलीमें॥ ये अबकी मानले मेरी तू साक होली-में ॥ तर्क दुनियाँको तू करतो हो धाक होलीमें ॥ बनारसी तेरी-होली में है इश्क ज्ञान वैराग भला ॥ लगा गलेसे सनम् को तनमें खेलूं फाग भला ॥

परमेश्वरके यादमें रोनेकी तारीफ–बहेर छोटी ।

अश्कों से मेरी गौहर लड़ी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियों-की बड़ी लगीहै॥कभी मीजयकी नोकों पर यों अश्त खुलते हैं॥ इलमास के टुकड़े कांटों पर तुलते हैं॥ जिसवक्त ये आंसू सीने-पर ढुलते हैं ॥ तो दाग जिगरके साफ मेरे धुलते हैं ॥ इस धारसे दुरदानेकी छडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियों की बड़ी लगी है॥ कभी खूने अश्क अश्कोंसे मिल बहेता है ॥ तो लालका दिल भी गौहर में रहता है ॥ बेबहा है इनका मोल न कोइ कहता है ॥ जो आशके जौहरी है वोः इन्हें चाहता है ॥ इस कदर मेरे चश्मोंसे झडी लगी है॥ये दुकान अब मोतियों की बड़ी लगीहै ॥ फुरकते यारमें दिलको बेकरारीहै॥सब इसीसे रातो दित गिरिया जारीहै॥

आश्कोंसे मेरे गौहर ने जोकी यारीहै॥ बस इसीसे उसने पाई आबदारी है॥ दोनों आंखों से मेरे दुलड़ी लगीहै॥ ये दुकान अब मोतियोंकी बड़ी लगी है॥ वो देवीसिंह ने तुख्म मुहब्बतबोया॥ तो रोजे हस्रको बडी चैनसे सोया॥ और बनारसी उसयादे खुदामें रोया॥ आश्कोंसे गौहर बे बिधे का हार पिरोया॥ आंखोंसे मेरे बारिश हर घड़ी लगीहै॥ ये दुकान अब मोतियोंकी बड़ीलगी है॥

ख्याल इश्कके दर्दका–बहेर छोटी।

आशक के दर्दको आशाक हो सोइजाने॥ हीरेकि खानको कोई जौहरी पहचाने॥ जिसके पाँवो में कभी न जाय बेंवाई॥ वो क्या जाने दुनिया में पीर पराई॥ ये मसल है मैंने सुनी सो तुम्हें सुनाई॥ आशक मरीजकी कहां है लिखी दवाई॥ मजनूंकी तबीबोंने जो फस्त कराई॥ लैलाके निकला खून तो ओ घबराई॥ आशकका दुखड़ा जानै आशक स्याने॥ हीरे कि खानको कोई जौहरी पहचाने॥ फरहादने अपने सरपर तेगामारा॥ ये सदमां शीरींको नहिं हुआ गवारा॥ वो मुवा वोभी मरगई हाल सुन सारा॥ वो उसकी प्यारी हुई वो उसका प्यारा॥ रांझेने इश्कमें छोड़ा तख्त हजारा॥ तो हीरने उसपर तन मन धन सब वारा॥ हो खाकसार सहेरा की खाक जो छाने॥ हीरेकि खानको कोई जौहरी पहचाने॥ जिस आशकने है अपना जिगर जलाया॥ तो इश्कने उसका रौशन नाम कराया॥ आशकने रंजमें तो राहतको पाया॥ यह गैरसे सदमा कभी न जाय उठाया॥ जिसके दिलमें है खुदाका इश्क समाया॥ वो खुशी हुआ गर किसीने उसे सताया॥ ये इश्क कोई पूरा दुनियामें ठाने॥ हीरेकि खानको कोई जौहरी पहचाने॥ जिसके दिलमें है दर्द वहीहै दाना॥ ये दर्दका तो दुनियां में नहीं ठिकाना॥ बेरहम जेहैं आशकको कहैं दीवाना॥ इस जहांमें उन-

का बेहतर है मरजाना॥ जिसके दिलमें दिलवरका इश्क समाना॥ वोः खुदाको देखे देखे नहीं जमाना॥ देवीसिंहकी बातें सब रुस्तं जी माने॥ हीरेकि खानको कोई जौहरी पहचाने॥

ख्याल खुदाके फजलका—बहेर खड़ी।

मेहेर जो उसकी होवे तो वह मार मोरसे डरे नहीं॥ चींटी पर हाथी चढ़बैठे तो ओ चींटी मरे नहीं॥ वह चाहे तो शराब को आबे हयातका जमाकरे॥ खुशी जो उसकी होवे तो वोः कुफुरको भी इस्लाम करे॥ नवाजियोंसे खफा रहे रिन्दोंके साथ कलाम करें॥ बुतखाने मस्जिदको तोडकर मैखाना सर्नाम करे॥ ऐसे ऐसे काम तो उसके सिवा और कोइकरे नहीं॥ चींटी पर हाथी चढ़ बैठे तो वोः चींटी मरे नहीं॥ डाले कोई बारूदमें आतिश औ वो दारू जले नहीं॥ हजार मनकी चक्की हो पर एक मूंगको दले नहीं॥ पानीपर तैरे वो बतासा लाख वर्ष तक गले नहीं॥ उसके कुदरतके आगे कुछ जोर किसीका चले नहीं॥ सब उसके नजदीक है और कोई बात तो उस्से परे नहीं॥ चींटी पर हाथी चढ़ बैठे तो वोः चींटी मरे नहीं॥ बांधे कच्चे सूतसे जिसको वोः कैदी क्यों कर छूटे॥ मदद जो उस्का होतो आहन की संगल दममें टूटे॥ बड़े बड़े रुस्तम को कायर मारके सरतापा लूटे॥ पत्थर पर राई दे मारे तो पहाड़ दम में फूटे॥ सब कुछ वोः करता है पर अपने जिम्में कुछ धरे नहीं॥ चींटी पर हाथी चढ़ बैठे तो वोः चींटी मरे नहीं॥ गलियों के पत्थरको वोः चाहे हीरे मोती लाल करे॥ बना दे वो कोयलोंकी मोहर एक दममें मालामाल करे॥ देवीसिंह कहे बनारसीके ख्याल पै कोई खयाल करे॥ क्या ताकत है कालकी जो फिर उसका बांका बाल करे॥ ऐसा सखुन सुननेसे दिल हरचन्द किसीका भरे नहीं॥ चींटी पर हाथी चढ़ बैठे तो वोः चींटी मरे नहीं॥

तथा ।

खुदा फजल जो करे तो बंदा किसी से मुतलक डरे नहीं॥ मौत भी उसका कुछ न करसके कभी वोः हरगिज मरे नहीं॥ अदना को आला करदे वोः अपनी जबाँ हिलानेसे॥ लिखा हुआ तकदीरका भी मिटजाये उसके मिटाने से ॥ बुतखाना काबा है बना अब उसी के देख बनाने से ॥ उसके काम हैं अलाहिदा इस दुनियाँ और जमानेसे ॥ कुल उसका अख्तियार जहां में और कोई कुछ करे नहीं ॥ मौतभि उसका कुछ न करसके कभी वोः हरगिज मरे नहीं॥ राई को पर्व्वत करदे औ पर्वत से राई करदे ॥ दुई हो जिस्के दिल में वोः चाहै तो कताई करदे ॥ दोस्त को वोः दुश्मन करदे औ दुश्मनको भाई करदे॥ बेवकूफको अकल दे और स्याने को सौदाई करदे॥ मेरा दमतो सिवा खुदाके किसी का भी दम भरे नहीं॥ मौत भी उसका कुछ न करसके कभी वोः हरगिज मरे नहीं॥ क्या जाने क्या लिखा है इस तकदीर में और क्या लिखेगा वोः॥ रोजे अज्लका किसे हाल मालूम इसे तुम बतला दो॥ जो तुम इससे नहीं हो वाकिफ तो इस पर कायम न रहो ॥ जो चाहै सो करे वही हर वक्त उसीकी याद करो ॥ वोः सबके नजदीक भीहै और कोई तो उस्से परे नहीं॥ मौत भी उसका कुछ न करसके वोः हरगिज मरेनहीं॥ खाक को वोः अकसीरकरे और आबको वो गौहर करदे॥ पत्थरको पारस करदे और लोहेपर जौहर करदे॥ देवी सिंह येकहै वोः बँधुये को सबका अप्सर करदे॥ बनारसी बेपढ़ा है उसकी जबां पै कुल दफ्तर करदे॥ अकल और तकदीर कभी बिन खुदा काम कोई सरे नहीं ॥ मौत भी उसका कुछ न करसके कभी वोः हरगिज मरे नहीं ॥

ख्याल खुदाके ढूँढनेका–बहेर छोटी ।

हम तेरे इश्कमें यार बहुत दिन भटके॥ अब मिला सनम तु

हमैं खुले पट घटके ॥ कईबार गया सर तेरे इश्कमें कटके॥फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके॥किये रंज अलम मंजूर जरा नहिं ठटके ॥ दिलकी दहसत सब निकल गई छट छटके॥ कईलाख वजेहके दिये हैं तूने झटके॥अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके ॥ जिसवक्त तेरी वह ज़ुल्फ़ नागनी लटके॥ कोइ इधरसे होजाय उधर उधरसे चटके ॥ गर देखे कालानाग तो सरको पटके ॥ चढ़ जाय जहर ज़ुल्फोंका वो घरको सटके ॥ हम आशिक हैं मजबूत कहां जाँय हटके ॥ अब मिला सनम तू हमैं खुले पट घटके ॥ लैलासे लगाया दिल मजनूंने डटके ॥ तन वदन दिया सब काट उसीसे अटके ॥ शूली पै चढा मंसूर उसी पर मटके ॥ नहिं जरा नोक सूलीकी जिगरमें खटके॥ देखा जो तुझे दिलगया जहांसे फटके॥ अब मिला सनम तू हमैं खुले पट घटके ॥ जब खुले किवांड़े यार कपटके पटके ॥ दिलमें पाये दीदार वो वंशीवटके॥ शिर मोर-मुकुट कटि कसे जरीके पटके॥ कहे देवीसिंह हैं अजब खेल नट-खटके॥कहै बनारसीहम आशिकनागरनटके॥अब मिला सन मतू हमे खुले पट घटके ॥

ख्याल खुदाकी यादका-बेहर छोटी।

हर जगै पै देखा कहीं नहीं तू देखा॥जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ गये विहिश्तमें हम देहां न तुझको पाया ॥ बुतखानेमें भी नहीं नजर तू आया॥काबा किबला मक्का मस्जिद ढुँढवाया॥ काशी मथुरामें बहुत दिनों भरमाया॥जाजाकर गंगासागरसिंधु नहाया ॥ मैं तेरे इश्कमें चारों तरफ़ उठधाया ॥ नहिं मैंने प्यारे और कहीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा॥जंगल वस्ती सब उजाड हमने छाना॥नहिं देखा तुझको देखा रे सभी ज-माना॥कोइ मतवाला कहता है कोइ मस्ताना ॥ जो जो कुछ जिसने कहा वो हमने माना॥कूबकू फिरा दर दरका हुआ दिवाना॥

नहिं पाया प्यारे तेरा कहीं ठेकाना॥ अब याद करी तो दिलमें यहीं तु देखा॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा॥सर पटकपटक कर पहाडपर देमारा॥ और आह आह कर करके बहुत पुकारा॥ देखा देवल देहरा और ठाकुरद्वारा॥ सरतापा सबको देखदेखकर हारा॥ घर बार तजा आलमसे लिया कनारा॥जैसी कुछ गुजरी वैसे किया गुजारा॥ये बातें हमको याद रहीं तू देखा॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा॥सब देखा हमने गुलशन और गुल्लाला॥ बन फकीर बन बन फिरा पहन वनमाला॥देखा पत्ता पत्ता औ डाली डाला॥ है सब में तू औ सबसे रहै निराला॥यह बनारसीका कलाम रसका ढाला॥ है अरज मेरी यह सुनो नंदकेलाला॥ तुझ दिलपर पर आशिक हूं मही तू देखा॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा॥

इश्ककी दावत–बहेर डेवढी राग सारंग।

इश्क हजरतने की हम पै मेहर्बानी॥करों मैं क्या क्या मेहमानी नजर देनेको दिल में अपना लाया॥इसके बहुत पसंद आया॥ इश्कने मेरा जब लख्ते जिगर खाया॥तो मैंने और भी बतलाया॥ खून आशिकका ये है ताजापानी॥पीजिये इश्क मेरे जानी॥अश्क गोहरका जब गले हार डाला॥इश्कने कहा ये है आला॥चश्ममें भर भर कर वो मैं गुल्लाला॥इश्कके तईं दिया प्याला॥बनपड़ी मुझसे जो कुछ कि कदरदानी॥इश्ककी सभी बात मानी॥जिगर पर मेरे जो थे उल्फत के गार॥दिखाया इश्कको वोः गुलजार॥ और सीने पर गुल खाये कई हजार॥दिखाई इश्कके तईं बहार॥ माल जर सारा देकरके यही ठानी॥ किया तन अपना उरयानी॥ और एक तोफा जो था सबमें भारी॥जान होती सबको प्यारी॥ इश्कके ऊपेर वोः भी मैंने वारी॥नजी देनेसे हुआ आरी॥ कहूँ मैं

इसके आगे अब क्या बानी॥इश्कके हाथ है जिंदगानी॥कि मैं हूं आशिक है इश्क मेरा सरदार॥हम हैं उसके फरमाबरदार॥बजुज आशकी के कुछ और न मेरा कार॥इश्कके सिवा न कोई यार॥ कहै देवीसिंह है बनारसी ज्ञानी॥हरेक छंद जिसका हक्कानी ॥

इश्कके आनेकी खातिर और दावत ।

बहेर मेरी जानकी ।

आवो आवोजी मेरे महाराज इश्क आवोजी मेरीजान॥आज तुम यहीं करो आराम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम॥देखा तो लिबासे नंग बदन नाजुक है मेरी जान॥तेरा जामा है तने उरियां॥यही तोर मेरा है हमेशा रहूं लबे विरियां॥ गरदीदये तरहैं आप तो मैं रोता हूं मेरीजान रहैं हरवक्त चश्म गिरियां ॥ आप देखें हूरोंको मेरी आंखोंमें बसें परियां ॥

तोडा–मेरा तेरा दो नहीं एकही दिलहै॥जख्मीहै जिगर तेरा तो मेरा घायल है ॥ मेरी जान दुईका मेरा न तेरा कलाम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥ तू जखम जिगर खाखाके खून पीताहै॥मेरी जान तो मैं गम खाके जिऊं जानी॥ प्यास अगर्चे लगे तो फिर रोरोके पिऊं पानी॥तू बियाबान सहे-राकी सैर करता है मेरी जान ॥ तुझे भाती है बीरानी ॥ मुझमें तुझमें कुछभी फर्क नहीं है मेरे दिलजानी ॥

तोडा–तू राजेनेहा है तो मैं छिपाहूं तनमें॥तू मेरे दिलमें बसा मैं तेरे मनमें॥मेरी जान न भूलूं तुझे मैं आठो जाम॥आज तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥

मालूम हुआ गर्दिश तुझको भाती है मेरी जान॥तो मैं खुशहूं हैरानीमें॥तूने गुलखाये तो दाग मुझे दिये निशानीमें ॥ तू मज-

नूकी सूरत है आशके लैला मेरी जान ॥ लिखा तेरी पेशानीमें॥ मैंभी बहुत लागीरहूं इश्क लग गया जवानीमें ॥

तोडा–तूगदा हुआ दुनियाकी खाक उड़ाई॥मैंनेभी खाकसारीमें धूममचाई॥मेरी जान हुये हम तुम दोनों बदनाम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥

बे खौफहै तुझको नहीं किसीका डरहै मेरीजान॥तो मुझकोभी है नहीं खटका॥मेरा तेरा दोनोंका दिल उसीसे है अटका॥मंसूर है तू तो मैंभी शम्स तबरेजहूं मेरी जान ॥ आसकीकाहै यही लटका॥ खाल उतारी दार चढे ये प्थरका है झटका ॥

तोडा–कहे बनारसी नहिं मरे किसीके मारे ॥ के लाखदफा गर्दन पर फिर गये आरे॥मेरी जान जिस्मसे मुझे तुझे नहिं काम॥ आज तुम्हें देखाहै बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥

तकलीफमें बहुत आरामहै आशिकके वास्ते ।

मार्फत मेरी जानकी ।

आफत है इश्क आफत है इश्क आफत है मेरी जान॥पर है इस आफतमें आराम॥आशिक हो सोइ जाने फासिक क्या जाने यह काम॥अव्वल है इसमें जानो मालका खोना मेरी जान ॥ कि दोयम जिगर जलाना है॥ सेयुं अपने सरपै कोहगम अलम उठाना है॥जोजो इसमें तकलीफ हैं मुझसे सुनलो मेरी जान ॥ मुझे यह सभी सुनाना है ॥ कोई कहै बहशी और कोई कहता दीवाना है॥जंजीर तौक यह सब इसका जेवर हैं मेरी जान॥आशिकोंका यही बानाहै॥और कहांतक कहूं इसमें जीतेई मरजानाहै॥

तोडा–जो इसे करे मंजूर तो फिर क्या डर है ॥ आशकको मरनेका कहां खौफ खतर है॥मेरी जानवो तो चाहता हैंजहां में

नाम॥ आशिक हो सोइ जाने फासिक क्या जाने यह काम॥ जिस जिसके पीछे पडा इश्क यह आकर मेरी जान॥ उसे मिट्टीमें मिलाया है॥किसीको सूली दिया किसीका शिर कटवायाहै॥ और किसीकी इसने तनसे खाल उतारी मेरी जान॥ फिर उसमें भुस भरवाया है॥ उसी खाल को उसने फिर कोड़ोंसे उड़वाया है॥लिया तख्त ताज सब लूट बादशाहोंका मेरी जान॥फिर उन को गदा बनाया है॥वियाबान सहेरामें,उन्हें कांटोंपे घुमायाहै॥

तोडा–जिसको ये रंज सहना हो वो इसमें आये॥ आये तो नहीं इस आफतसे घबराये॥ मेरी जान तो फिर हो दुनिया ये सरनाम॥आशिक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम॥ जालिम है इश्कके और जुल्म लाखों हैं मेरी जान॥ सरपे आरे भी चलते हैं॥ बहरे इश्क में जो डूबे वो नहीं उछलते हैं॥ हिंदू या मुसल्मां शेख बरहमन सारे मेरी जान॥ अपने हाथों को मलते हैं॥ इसकी राहमें जो आये वो नहीं निकलते हैं॥ यह वो आतिश है जिससे आग पैदा हो मेरी जान॥ जिगरमें शोले बलते हैं॥ जैसे आपसे जले सती आशिक भी जलते हैं॥

तोडा–जो जले तो उनकी हुई रोशनी आला॥ मशरिकसे तामगरिब उनका उजियाला मेरी जान॥पिये वो मैं वहेदत का जाम॥ आशिक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम॥कहे चुके अब हम अपना भी हाल कहते हैं मेरी जान॥ इश्क में गया मेरा सब दीन॥ मुफत में उस माशूकने जबरन्से ये लिया दिल छीन॥ नहिं इधरके हम नहिं उधरके कहो किधरके मेरी जान॥ रहे जंगलके तिनके बीन॥ दोनों जहांमें इश्कने मुझको कर दिया तेरह तीन॥ सोलहो कला जब उसने मुझे दिखाईं मेरी जान॥हुआ फिर उसीमें मैं लवलीन॥रंजको हम राहत समझे ये दिलसे हुआ यकीन॥

तोडा–कहे बनारसी राहत है रंज राहत है॥ मुझको तो हमेशा इसी की कुछ चाहतहै ॥ मेरी जान इश्क में मिला मुझे गुलफाम ॥ आशिकहो सोइ जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥

इश्कमें सब्रकरनातकलीफमेंघबरानानहीं। मार्फतबहेर। मेरीजानकी।

अय दिल तू अब लग गया तो क्यों घबराता मेरी जान ॥ सब्रकर मिलेगा तेरा यार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुल्जार ॥ फिर दिलने मुझसे कहा कि मैं हूं आशिक मेरी जान ॥ जरा नहिं होय सब्र हमसे ॥ बेताव हुआ सीमाबसे ज्यादा जालिमके गमसे ॥ कोई लगादे मेरेपर तो उड़ूं इसखातर मेरी जान॥ मिलूं मैं अपने हमदमसे ॥ बेचैन हुआ इसकदर मेरा दम घबराया दमसे ॥

तोडा–जल्दीसे मुझे कोई वहां तलक पहुँचादे ॥ यक नजर रहेमकी जरा मुझे दिखलादे॥मेरी जान मुझे दीदार सिर्फ दरकार॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुल्जार ॥ फिर मैंने दिलसे कहा अरे बेसब्रे मेरी जान ॥ सब्र है बड़ी चीज प्यारे॥उसीको दिलवीर मिले जो कि अपने दिलको मारे ॥ जो आशिक हैं वोह जरा आह नहिं करते मेरी जान ॥ चलें चाहे गर्दन पर आरे इश्क किया मंसूर मारे सूलीपर नज्जारे ॥

तोडा–फिर ओही शम्स तबरेज हुआ मस्ताना ॥ है जिसके इश्कको कुल आलमने जाना ॥ मेरी जान किया अपने दिलको हुशियार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुल्जार ॥ फिर दिलसे मुझसे कहा बहुतबेकल हूं मेरी जान ॥ याद उस दिलबरकी आये ॥ रहे रहेके रोता हूं रातो दिन यह दिल घबराये ॥ किस

तरह ताम्बुल कहूं सब्र नहिं आता मेरी जान॥बात नहिं किसी कि अब भाये ॥ इश्क आग लगी तनमें गमसे जिगर जलाजाये॥

तोडा–दिल खाकसार कर दिया खाक में मिलके॥ अब जरा चैन नहिं पड़ती बिन कातिलके ॥ मेरी जान मिलेगा कब हमको दिलदार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुलजार ॥ फिर मैंने दिलसे कहा बात यक सुन तू मेरी जान ॥ सब्र है आशिकका खाना ॥ जो चाहे सो होवे इश्क में गमपर गम खाना॥कइ लाख वजेह से बहुत तरह समझाया मेरी जान ॥ कहा सब आश्कोंका माना ॥ सुनके इश्कका हाल मेरा कहेना दिलने माना ॥

तोडा–फिर इसे सब्र होगया मिला वोः हमदम॥ये कहे देवीसिंह दूर हुआ दिलका गम॥ मेरी जान कहे छंद बनारसी ललकार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुल्जार ॥

खुदाके नूरको अपने दिलमें देखना ॥ मतलबतौहीद-बहेर मेरी जानकी ।

वोः झलक तेरी है फलक मलक नहिं पाये मेरी जान ॥ मेहर तकसे शरमाया जी॥ नहीं देखाई देताहै नजरों में समायाजी॥क्या गजब है तेरी शान जान कुरबान मेरी जान ॥ ठान कर दिल पर अपने जी॥सभी काम दिये छोड़ लगे अब तुझको जपने जी ॥ भरपूर नूर जहूर हूर से बेहतर मेरी जान ॥ मुझे वो आये सपने जी ॥ तुझे ख्वाब में देख गये हम वनको तपने जी ॥

तोडा–कुछ दिनों तलक तप किया किये बहुतेरा ॥ पर वहां ठेकाना हमें लगा नहिं तेरा ॥ मेरी जान मुल्क दर मुल्क फिर आयाजी ॥ नहीं दिखाई देताहै नजरों में समायाजी ॥ है अजब चाहकी आह दाह नहिं बुझती मेरी जान॥ राह जो इश्ककी आते

जी ॥ लाखों वजह के रंजो अलम गम सितम उठातेजी ॥ हैरां वीरा मैंदा में बहुत फिरते हैं मेरी जान ॥ पास गैरोंके जातेजी ॥ उन्हें नहीं तू मिले कोई घर बैठे पातेजी ॥

तोडा--हर दम दम दम रहे रहे के घबराता है ॥ वल्ला तेरा गम मुझे रोज खाता है ॥ मेरी जान इश्कने खूब सतायाजी ॥ नहीं देखाई देता है नजरों में समायाजी ॥ हम दम तेरा गम आलम रहा करता है मेरी जान ॥ हुआ दिल पारे पारेजी ॥ तेरे इश्क में मरा मुझे अब कोइ न मारेजी ॥ दुशवार यार दीदार तेरा हरबार मेरी जान ॥ मिले नहिं सदा नजारेजी ॥ आह बड़ा अफसोस के तेरे ज़ुल्म इशारेजी ॥

तोडा--क्या कुसूर मेरा है तु मुझे बतलादे॥यक नजर रहमकी ज़रा हमें दिखलादे॥मेरी जान मेरा अब दम घबरायाजी ॥ जहर नहीं देखाई देता है नजरोंमें समायाजी ॥ है कहेर इश्ककी लहेर नहिं उतरे मेरी जान ॥ ठहरते इसमें पूरेजी ॥ वोः आशिक नहिं मिलें तुझे जो रहें अधूरेजी ॥ एक आन में तेरी आन आन मिलती है मेरी जान ॥ तुझे जाने मनसूरेजी ॥ कहे देवीसिंहमस्त मेरा दिल तुझको घूरेजी ॥

तोडा--कहे बनारसी मैं बहुत हुआ हैरान ॥ पर और न देखा कहीं तेरा मक़ान ॥ मेरी जान तुझे इस दिलमें पायाजी ॥ नहीं देखाई देता है नजरोंमें समायाजी ॥

इश्कके आनेकी दावत ॥ बहेर डेवढी--राग सारंग ॥

इश्क आवोजी मैं सरपर बिठलाऊं॥कहोसो खातिरको लाऊं॥ जो निमकीं चाहो तो पियो हमारा खूं॥चरपरा कहो तो दिल सेकूं॥ अगर मैंमांगोतो अभी अश्कभरदूं॥जो तुम लैला होतो मैं मजनूं॥ काटदूं बोटी दिलअपना परखाऊं ॥ कहोसो खातिरको लाऊं ॥

मगर शीरीं कुछ चाहे तबियत अब ॥ तो मेरे मिलादो लबसे लब ॥ आज आये हो फिर आओगे तुम कब ॥ येजी चाहता है लुटादूं सब ॥ भला मैं ढूंढूं तो कहा तुम्हे पाऊं ॥ कहो सो खातिर को लाऊं ॥ बना दूं कपडे सब उतार तनकी खाल ॥ तुम इनको पहेर रहो रंगलाल ॥ तुम्हें ख्वाहिस होकर कुछ दुनियांका माल॥ तो दंदा बनादूं गौहर लाल ॥ मुझेगर बेचौ तो अभी मैं विक-जाऊं ॥ कहोसो खातिरको लाऊं ॥ जो जेवर पहरोतो मेरी उस्त-खांकां ॥ मकां हाजिर है लामकां का ॥ शौक गर तुमको कुछ होवे गुलिस्तांका मेरा तन बना बोस्तांका ॥ मैं इसके ऊपर अब लाखोंगुल खाऊं ॥ कहो सो खातिर को लाऊं ॥ सुनो गर गाना तो ऐसी हिचकियांलूं ॥मैं इसमें सभी राग कहदूं॥जानतक मांगो तो कभीकहूं नहि चूं ॥ तसहुकतनो बदनसे हूं ॥ मैं तुम पर वारी हर तौरसे हो जाऊं॥ कहो सो खातिरको लाऊं॥ कहा ये मैंने तो इश्कभीयों बोला॥तु आशिक है बाला भोला॥ भेद सब उसने अपना मुझसे खोला ॥ तो दोका एक हुआ चोला ॥कहे काशी-गिरि अब आगेक्या गाऊं ॥ कहो सो खातिर को लाऊं ॥

जहरको आबे हयात समझना इश्कमें मतलबतौहीदं-बहेर छोटी।

इस कदर इश्कमें हुई मुझे तलमलियां ॥ खागया समझके कंद जहर की डलियां॥ कौसर के धोखे पिया जहर का प्याला ॥ मसनदको समझ खारों पर बिस्तर डाला ॥ काकुल पै हाथ पहुँचा तो निकला काला॥मन मारके मैंने भरा आह का नाला॥ दिल धडका तो दरियामें तपीं मछलियाँ ॥ खायगा समझके कंद जहर की डलियां ॥ इस्लाम समझके दीनों महजब को छोडा ॥ और ईमां समझके कुफरसे नाता जोड़ा ॥ समझा था जिसको

बहुत वो निकला थोड़ा ॥ इसलिये ये मुँहको कुल जहान से मोड़ा ॥ मालूम हुआ जो इश्कमें थीं छलबलियां ॥ खागया समझके कंद जहरकी डलियां ॥ अब खुदा समझकर नजर बुतों पर डाली॥और अजाँ समझके दिलने आह निकाली ॥ समझेथे जिसको भरा वो निकला खाली ॥ जाहर करनेको हुआ तो बात छिपाली ॥ हैं मेरे इश्ककी अर्श तलक झल झलियां ॥ खागया-समझके कंद जहर की डलियां ॥ दोसमझके पाया एक एक खो बैठे ॥ लौलगा सनमकी यादमें जो जो बैठे ॥ हम दुई से इस दुनियामें हाथ धोबैठे ॥ अब तनहाई में आपी आप हो बैठे ॥ कहे बनारसी उलफतकी बातें भलियां ॥ खागया समझके कंद जहरकी डलियां ॥

सब कामछोडकैपाकंइश्ककोकरोतोजल्दखुदामिले।

बहेर लँगड़ी।

नेम धर्म्म औ कर्म्म दीन ईमानको दूर करो बाबा॥आशिकके सादिक बनो दिल इकमें चूर करोबाबा॥तसबी को तोड़ो मालाको छोडो हाथ प्यारेका गहो ॥ गले सनमके लगो कुछ हाले दिल दिलवरसे कहो॥टीका टन मन क्या करना मत पढ नमाज,रोजे न रहो ॥ गमके भोजन करो जो गुजरे बो इस दिल पै सहो ॥ तीरथ बरत सभी छोडो दरियामें इश्कके बीच बहो ॥ इसीमें गंगा और यमुना काशी मक्का तुरत लहो ॥ मिला चाहो उस यारसे तोतुम इश्क जरूर करो बाबा॥आशिके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करोबाबा॥आचारका डालो अचार इसबातकाजरा विचारकरो॥ पाक मुहब्बत करो और जहांमें कोई यार करो॥ दिलसे दिल औ मिला जिगरसे जिगर खूब सा प्यार करो॥लड़ानजरसे नजरउस दिलवरका दीदार करो ॥ पिवो मुहब्बत की शराब दिलकाकबाब

तय्यार करो॥बनो वैष्णो जो तुम यह मेरा कहा अखत्यार करो॥ घोटके भंग छानो औ नशेका खूब सुरूर करो बाबा॥ आशिके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा॥वेद पुरान कुरान किबातोंसे है इश्ककी बात बडी॥ ब्राह्मण सैयदकी जातोंसे है इश्ककी जात बड़ी॥ और जहांके फनहैं जितने सबसे इश्ककी घात बडी॥ आफते जाह इश्ककी राहमें है आफात बडी॥ जितने घाट हैं जहां में सबसे इश्कको है बिसरात बडी॥ बारिशे मौसर से तौ है रोनेकी बरसात बडी॥ लडो इश्कके मैदामें यह मन मन सूर करो बाबा॥आशिके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा॥ कथाको क्या कथते हो छोड दिवानों को दीवाना हो॥ गाने बजानेका है वोः मजा जो कोइ गाये रोरो॥ हमने इश्कमें धरा कदम सर दिया जान अपनी दीखो॥ लुत्फ उठाया इश्कका रंजको राहत समझा जो॥ बनारसी ये कहे इश्क करते हैं इस जहां में जो जो॥ मिलें वो हकसे रहें लामकां में उसके साथमें सो सो॥इश्क किया चाहो तो यारसे नहीं गुरूर करो बाबा॥ आशके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा॥

दवा इश्ककी जिससे मुर्दा जीता है–बहेर लँगडी।

मिलाके लबसे लब उसने कितनोंहीं की लाश जिलाई है॥ लबे यार को लिखो मुर्दोंकी यही दवाई है॥ मैं हूं मरीजे इश्क मुझे ईसा किसतरह आराम करे॥ जुबां यारकी जुबांसे मिले तो ओः कुछ काम करे॥गुंचे दहन गर बोसा मेरा ले तो काम तमाम करे॥ मुझ मरीज को जिलाये जहां में अपना नाम करे॥

शैर--बजुज इसके कहां जीने कि अब उम्मेद है मुझको॥ लबे शीरींमें बिल्कुल लज्जते तौहीद है मुझको॥ येही मेरी दवा और

इतनीही फहमीद है मुझको॥ मिला दे लबसे लब मेरे वोही फिर ईद है मुझको ॥ ये इलाज मेरा है और कुछ इसी में शफाई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दों की यही दवाई है ॥ न कुछ कीमियेमें कीमत और न ये बात अकसीर में है ॥ नहीं हिकमतमें नहीं कुछ हुक्माकी तदबीरमें है॥ अगर जिलाये मुझको तो ये ताकत कहां फकीरमें है॥जीस्त हमारी उस लबे यारकी ओः तासीरमें है॥

शैर–मिले उसके दहनसे जब दहन मेरा तो जी जाऊं॥ तमाशा इश्कका तुमने न देखा हो तो दिखलाऊं॥दहाने यारकी लज्जत अगर्चे कुछ भी मैं पाऊं॥तो उट्ठ लाश मेरी कब्रसे जिंदा मैं कहलाऊं ॥ यही आशकोंकी है दवा उस इश्कने मुझे बताई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दों की यही दवाई है ॥ मिलाके मुँहसे मुँह मेरे और हँसके वोः कुछ बात करे॥ मुझ मरीजको जिलाये मौतको भी फिर मात करे॥क्या ताकत है कजा कि जो फिर मेरे ऊपर घात करे ॥ अगर सामने आये बेजा अपनी ओकात करे॥

शैर--वोः उसके होठमें अमृत है पी मुर्दा भि जी जाये ॥ जो कुश्ता इश्कका होवे तो उसमें जान फिर आये ॥ सदाये कुम्बेजनी जब वोः अपने मुँहसे फरमाये॥तो उसके हुक्मसे उट्ठूं वही जांबख्श कहलाये ॥ वही खुदाहै मेरा औ कुछ उसीके यहां खुदाई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दोंकी यही दवाई है ॥ जिसके इश्क में मरा हूं मैं वोः चाहे तो फिर जिला सके ॥ खुशी जो उसकी होवे तो जामें वस्ल भी पिलासके॥क्या ताकत यह लाश मेरी कोई बगैरउसके हिलासके॥उसी में कुदरतयेहै कि दिलसे दिलको मिलासके॥

शैर--बुलाओ उस मसीहाको मेरी अब जान जाती है॥ जिलाये जल्द मुझको वोः नहीं तो शान जाती है ॥ मैं आशिक हूं उसीका इश्ककी अबआन जाती है॥मिलादेलब नहीं तो जान और पहेचान

जाती है॥बनारसीने दवा आशिकोंकी यह अजब बनाई है॥लबे यारको लिखो मुर्दोंकी यही दवाई है ॥

ख्याल मय वहेदतका जो वलियोंने पीहै ।

बहेर छोटी ।

बिन पिये जहां के बीच जिऊं मैं कैसेः॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ मैं वहेदत का मुश्ताकहूं यक मुद्दतसे ॥ वाकिफ हूं मैं कुछ मस्तानों की आदतसे॥जिसवक्त नशा शरसार हुआ शिद्दतसे ॥ बेहोश हुआ इस दुनियाकी बिद्दतसे॥ हरवक्त जबांसे कहा करूं मैं ऐसे ॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे॥शोलये नूर दिलमें मेरे भबके है॥ इशरत कीमैं हरदम उसमें टपके है ॥ लौलगी है और दिल उस लौमें लपके है ॥ इस नशेसे अब कब आंख मेरी झपके है ॥ आती है यही आवाज हर जगह नैसे ॥ भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे॥मालूम हुआ मैंमौत कि येः दारू है॥हर गुलोंकी रूहहै खिंची ये वोः गुलरू है॥रिन्दानों की महफिलमें यही महरू है॥और इस्से बेहतर नहीं कोई खुशबूहै ॥ तू पिला दे मुझको यार बन पड़े जैसे॥भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे॥यक रोज सामने मेरेमुहतसिबआये॥बोले मैं पीना कौन तुझे सिखलाये ॥ औ देख कराबे मैके वोःघबराये ॥ बोला मैं येः क्या खुदांने नहीं बनाये ॥ फिर कहने लगे मुहतसिब भी मुझसे ऐसे॥भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे॥बीनो रबाब मिरदंग कि तैयारी हो ॥ मीने में मीने की मीनाकारी हो॥गुल पास में बैठे हों और गुलजारी हो ॥ कहे बनारसी उस वक्त वोः मै जारी हो ॥ हर वक्त राग फिरबजा करे इस लैसे॥भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे

ख्याल शराब अंतहूरा जो हम पीतेहैं–बहेर छोटी ।

मैं वोह है इसे क्या पियेंगे ऐसे वैसे॥वोः पियेंगे जो मैं होके

मिले हैं मैसे॥मिलगया जब उसके रंगमें रंग गुलाबी ॥ आगया नशा वहदत का मुझे शिताबी॥है जिगर यह मेरा जला औ भुना कबाबी॥हुई दिलको सेरी गई वोः सब बेताबी ॥ क्या जाने शेख मस्तीके हैं प्याले कैसे॥वोः पियेंगे जो मैं होकै मिले हैं मैसे॥यह सफेद भी और सुर्ख जाफरानी है ॥ हो रुखपे आब पीनेसे येः वोः पानी है ॥ मजहब इसका रिन्दाना लासानी है॥टपके है नूर चेहरे पै वोः पेशानी है॥जोबेताले हैं वाकिफ नहीं इस लैसे॥वोपियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे॥यह फकीर इसकी लौ सबसे दूनीहै । मै खाने में जगती जिसकी धूनीहै॥लड़ने में शूरमां है और येः खूनी है॥है बगैर इसके जो बस्ती सूनीहै ॥ यही सदा कन्हैयाने भी बजाई नैसे ॥ वोः पियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे ॥ दारुये शफा है इसी से हम पीते हैं॥ पीते हैं बहुत पर ऐसी कम पीते हैं॥ रम रहे हैं उसमें हम वोः रमपीते हैं॥और देवीसिंह भी दमपर दम पीते हैं॥गाये बनारसी इसीकि ध्वनिमें लैसे ॥ वोः पियेंगेजो मैहोके मिले हैं मैसे ॥

ख्याल शराबके पीनेमें जो लुत्फ़ है वोः मुझे मिला ।

बहेर छोटी ।

वोः मजामिला मुझको इस मै नोशीमें॥छुट गई ये दुनिया आपसे बेहोशीमें॥मैंने कुछ इरादा किया न मै पीनेका॥वोः काम जो देखा मीने में मीनेका॥था नकशा उसमें खिंचा सदा जीने का॥ औ रंगभि उसमें भराथा रंगीनेका॥पीतेही जबां आई खुद खामोशीमें॥छुटगई ये दुनिया आपसे बेहोशीमें ॥ लेतेही जाम अंजाम वोः उसका पाया॥गफलतने होशियारीका मजा दिखाया ॥ जिसवक्त नशा वो मेरी आंखमें आया॥बन्देसे खुदाने मुझको खुदा बनाया॥आगया जमाना मुझे फरामोशीमें ॥ छुटगई ये दुनिया

आपसे बेहोशीमें ॥ मौसम तो गुलाबीसे न कोई आला है ॥ दिल इसी इश्कमें मेरा मतवाला है ॥ चश्मोंने रंग अब लालीपर डाला है ॥ जामे जमसे बढकर मै का प्याला है ॥ ये सखुन जुबांसे कहा गर्मजोशीमें ॥ छुट गई ये दुनिया आपसे बेहोशीमें ॥ आबे हैवांमें कहां भला यः आब है॥दो जहांमें आला सबसे बनी शराबहै॥वेद औ पुरान कुरानका यही जवाबहै॥आजाब न इसको कहो ये बड़ा सवाबहै ॥ पी बनारसीने सनमकी आगोशीमें ॥ छुटगई ये दुनिया आपसे बेहोशीमें ॥

ख्याल खुदाके दीदारकी शराब मैं पीताहूं—बहेरछोटी ।

साकिया पिला सागरे दीद उस मुलका॥ वहैदतहो जिस्में भरी वस्ल तुझ गुलका ॥ अब मये मुहब्बत आकर मुझे पिलादे॥और जाम तु अपनी दीदका मुझे दिलादे॥ दिलसे दिल अपने जिगरसे जिगर मिलादे ॥ दीदार कि दारूसे तू मुझे जिलादे ॥ गुलहो गुलशन्में मचे शोर कुल कुलका ॥ वहेदतहो जिस्में भरी वस्ल तुझ गुलका ॥ शौके शराबका भरके पैमानाला॥इश्ककी सुराही हाथमें जानानाला॥मय पिला मुझे उस नूर कामें खानाला॥गुलशन्में गुलाबी रंग तुशाहानाला ॥ मालूम हालहो नशे में आलम कुलका ॥ वहेदत हो जिस्में भरी वस्ल तुझ गुलका ॥ मैं तुझे पिलाऊँ तू मैं मुझे पिलाये॥जब लुत्फ इश्कका खूब दूबदूआये ॥ मैं कहूं और देतूभी यही फर्माये ॥ वोःबात हो जिसकी बात न कोई पाये ॥ कुदरतका कराबा मेरे जाममें ढुलका ॥ वहदतहो जिस्में भरी वस्ल तुझ गुलका॥शीशे दिलमें भरदे तू मेरे अंगूरी॥ इस लिये कि होवे दिलकी दूर कदूरी॥वोः जलवा अपना दिखादे मुझको नूरी॥कहे बनारसी दिलकी मुरादको पूरी॥मैं पीके चहकता रहे येःदिल बुलबुलका॥वहेदतहो जिस्मेंभरीवस्लतुझगुलका॥

ख्याल जो मेरे आँखेंसे शराब टपकती है मस्तीमें वोः मैं पीताहूँ—बेहर छोटी ।

चश्मोंमें भराहै रंग गुलाबी गुलका॥ अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका॥ ये आंख मेरी बहेदतका पैमानाहै॥अब इसी को हमने समझा मैखाना है॥चश्मोंसे ज्यादा कोई न मस्ताना है ॥ देखो तो इसमें क्या रंग शाहाना है॥ है भरा नशा आंखोंमें आलम कुलका ॥ अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका॥जब चुयेंगे आंसू मेरी चश्म गिरियांसे ॥ मैं समझके पीवेंगे इन्हेंजी जांसे ॥ मैं खोरीका नहिं लेंगे नामजबांसे ॥ रोरोके पियेंगे अश्क लबे बिरियांसे॥हूचकियोंसे मेरे होगा शोर कुलकुलका॥अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका॥ बादाम भिये हैं नरगिसके प्याले हैं ॥ देखा हमने ये पूरे मतवाले हैं॥ये नैन हमारे गुलशनगुल्लाले हैं ॥ मैके इनमें भररहे नदी नालेहैं ॥ जबचाहे खुमके खुमदम्मेद ढुलका ॥ अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ उसपरीक आलम आंखोंमें छायाहै॥इसबादेकशीसे अबदिल घबरायाहै ॥ मैसे ज्यादा अश्कोंमें मजा पायाहै॥ मजमून ये देवीसिंहने नया गाया है॥ है यही सखुन आशिक सादिक बुलबुलका॥अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥

ख्याल शराबका मुझको अपने हाथसे खुदा पिलाताहै—बहेर लँगड़ी ।

मेरा जाम हरवक्त हरघड़ी दम्पर दम साकी भरदे ॥ मैंखाने में जो कुछ अब रहा है वोः बाकी भरदे ॥ इसीका मैं प्यासा हूं मेरे सागरमें कुलसागर भरदे॥और जहांमें जहां कुछ मिले वो तूला-कर भरदे ॥ मैं तो नहीं करनेका नहीं दिल खोलके तू दिलवर भरदे ॥ प्यारे अपने मेरे प्यालेमें परी पैकर भरदे ॥

शैर—करूं मैं इसके तईं जिस घडी खाली भरदे ॥ प्यारसे अपने मेरी आके तू प्याली भरदे ॥ जहांतक होवे तेरे पास कलाली भरदे ॥ सफेद जर्द गुलाबीमें भी लाली भरदे ॥ रहूँ सुर्खरू तेरे रूबरू अपनी मुश्ताकी भरदे ॥ मैं खानेमें जो कुछ अब रहा है वोः बाकी भरदे ॥ अब तो दौर आया है मेरा तू जाये बिल्लूरी भरदे ॥ भरदे केतकी की मैं और इसी में अँगूरी भरदे ॥ शीशे दिलहै साफ मेरा तू इसी में मय नूरी भरदे ॥ कराबा सुराही भी मेरी पूरी भरदे ॥

शैर—मरीजे इश्कहूँ प्यारे मुझे दारू भरदे ॥ जिऊं मैं जिसके पिये से मुझे वह तू भरदे ॥ खिंचेहों जिस्में हरएक गुलबोः तू गुलरूभरदे ॥ रूहहो जिस्में तेरी मुझको वोः महरू भरदे ॥ करूं धूम कुल आलम में वोः शोरय आफाकी भरदे ॥ मयखानेमें जो कुछ अब रहा है वह बाकी भरदे ॥ रँगू मैं अपना दिल मयसे तू इसीकी रंगीनी भरदे ॥ तल्खभी भरदे तुर्श और तोफा शीरीनी भरदे ॥ लगाके दस्तरखान तु उसमें गिजा वोः नमकीनी भरदे ॥ शौकहो दिल में मेरे तू इसी कि शौकीनी भरदे ॥

शैर—मैं तुस्से कुछ नहीं मांगूं शराब तू भरदे ॥ मिलाके उस्में वोः थोडा गुलाब तू भरदे ॥ आब जिस आब में होवे वोः आब तू भरदे ॥ झलकहो दिल में मेरे आफताब तू भरदे ॥ बनी रहै लाली दुनियामें अपनी असफाकी भरदे ॥ मयखानेमें जो कुछ अब रहाहै वो बाकी भरदे ॥ पास न आये गैर मेरी महफिल तू रिंदानी भरदे ॥ मस्त रहूँ मैं सोहबते यारबमस्तानी भरदे ॥ बनारसी की जुबां में बातें हक्तू हक्कानी भरदे ॥ चश्ममें उसकी नूर तू अपना नूरानी भरदे ॥

शैर—मये वहेदत जो तेरे पास है मुझको भरदे ॥ जो मांगूं

एक मैं प्याला तो मुझे दो भरदे ॥ फिर तीसरा जो मैं मांगूं तो खुशीहो भरदे ॥ न देन तुझे गैरको प्यारे ये मुझे तो भरदे ॥ जो कुछ मेरा निकले वोः आज तू सबकी बेबाकी भरदे॥ मयखाने-में जो कुछ अब रहा है वोः बाकी भरदे ॥

मय अंतहूरा जो जन्नतमें लोग पीतेहैं वो मुझे खुदा यहां पिलाताहै—बहेर लँगडी ।

जन्नतमें जो सुना तो ह्वां पर भी वोःसदाये है कुलकुल॥पिऊं न क्यों मुल जो मुझको खुदा पिलाये वो बिल्कुल ॥ मस्ताना मैं बनूं और मौला बने मेरा आकर साकी ॥ तो शीशेमें मैं एक कतरा भी नहीं छोडूं बाकी ॥ बेहोशी आलम हो और इधरकी होवे मुश्ताकी ॥ कुलजहानमें मेरा फिर मचे वोः शोरे आफाकी ॥

शेर—खुमार उम्रभरउतरेनहींआंखोंसेमेरे--नशेमें चूर रहूं ॥ सुरूर इस कदर होवे कि आसमांपे चढे -खुदीसे दूररहूं ॥ जामें वहेदत जो तू भरकर वो मुझे आपसे दे--तेरे हुजूर रहूँ ॥ मय-कदेमें कभी जाऊं तो बैठूंपास तेरे--न तुझसे दूर रहूँ ॥ जबाँ मेरी हरवक्त दहनसे यही करे हैं शोरोगुल ॥ पिऊं न क्यों मुल जो मुझको खुदा पिलाये वोः बिल्कुल ॥ अजब खुदाकी कुदरत वह तलखी है बनी शीरींनीसे ॥ जुबांपे लज्जत ये देती है मिलकर निमकीनीसे ॥ और सुनो यक सखुन ये मैंने कहा है नुक्तेची-नींसे ॥ हैरां हैं सब रंग मय बहेदतकी रंगीनीसे ॥

शेर--मरीजे इश्क जो होवे तो उसकी जान हैये-है येदारुयेशफा॥ करे जो हकका तसव्वर तो पुराध्यानहै ये-देवेलौ उससे लगा ॥ दीनो दुनियाको बनाये बडा ईमान है ये-सुनो तो मुझसे जरा ॥ न गब्र है और न हिन्दू न मुसलमान है ये-ये तो है जाते खुदा॥करे

सुर्ख रूह खुदाके आगे खिचेहैं जिसमें हरेक गुल ॥ पिऊं न क्यों मुल जो मुझको खुदा पिलाये वोः बिल्कुल॥बहिश्तका चश्मा है और कौसर का पानी शराब है॥ला जवाब है कहां आवे हैवांमें ये आबहै॥खराब है वोः शख्स जो कोई इसको कहता खराब है॥ आफताबहै रोशनी इसकी आलीजनाबहै ॥

शैर–शीशये दिलमें इसे भरके तू आँखोंसे मिला–देख इस-रंग को तू॥बनाये जिसने जहांमें भला है रंग क्या क्या–वोहीहै तेरा गुरू ॥ कहे वो तुस्से कि मय पीतो उस्से मुँह न चुरा–उसीसे करले वजू ॥ पीतेही इसको नजर आये वोः उसका जलवा–मिले गुलजार की बू ॥ जाफरान केतकी मुश्क अंबर सब इसमें रहाहै घुल॥पिऊं न क्यों मुलजो मुझको खुदा पिलाये वोः बिल्कुल॥हाथ से अपने गुलन्दाम तू मुझे गुलाबी भर भरदे ॥ किसी को होवे-नहीं मालूम बात रहे दर परदे॥ ये है बात पोशीदा इसके तईं तू जाहिर मत करदे॥कहे देवीसिंह हम आशिक रिंद तेरे हैं आवरदे॥

शैर––जाम वो देके बुराई का कुछ अंजाम न हो–पिला तो ऐसी पिला ॥ नाम वो देके जहां में कहीं बदनाम न हो-न करे कोई गिला ॥ दाम वो देके मेरा हाथ ये बेदाम न हो–मैं दूँ मस्तों को खिला॥काम वो देके जहांमें कोई बदकाम न हो–मोहतसि-बसे न मिला ॥ बनारसीको राजे नेहां सब इसी सबबसे रहा है खुल ॥ पिऊं न क्यों मुल जो मुझको खुदा पिलाते वह बिल्कुल॥

ख्याल तौहीद मयका आफताब मुझे पिलाता है–बहेर खड़ी ।

जिधरको देखूं उधर रोशनी आफताबकी तमाम है ॥ पिऊंन मय में क्योंकर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ चश्म नहींहैं हमें

खुदाने आप गुलाबी जाम दिये ॥ मये दीदके प्याले भर भरमुझे बरसरे आम दिये ॥ चली वह बादे सबा इस्कदर हाथ हमारे थाम दिये ॥ तौभी परी पैकरने मेरे मुँह लगा वो आठों याम दिये ॥ कहे जो इसको हराम उसका खाना पीना हराम है ॥ पिऊँ न मय मैं क्यों कर जिन्दा रहू मेरा यह कलाम है ॥ एक तरफ आतिश भडके और एक तरफ बारिश आब है ॥ मेरे दिलके मयखानेमें दोनों तरहका हिसाब है ॥ जिगरमें शोला उठे और चश्मोंसे टपके शराबहे ॥ जुबाँ यही कहती है मेरी लज्जत इसकी लाज-वाबहै॥ कुल जहानमें सुनाहो तुमने मस्ताना मेरा नाम है॥ पिऊँ न मय मैं क्यों कर जिंदा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ दिलमें गौर कर देखा तो फिर दौर हमारा आयाहै॥ आज हमेंसाकीने दुबारा सागर आप पिलायाहै ॥ देख मेरी बदमस्तीको मोहतसिबने यह फर्मायाहै॥ यह जोशे वहशत कहाँसे तेरी नजरोंबीच समाया है॥ कहा ये मैंने आँख हमारी मय वहेदतका गुदाम है ॥ पिऊं न मय मैं क्यों कर जिन्दा रहूं मेरा यह कलामहै ॥ सुना सखुन मोहत-सिबने यह तब उसके दिलमें होश हुआ॥ यातो मने करताथा मुझे या आपी वोः मयनोश हुआ ॥ चढा नशा जब इश्कका उसको जहांसे वोः बेहोश हुआ ॥ कहा पिऊंगा मैं हरदम इतना कहकर खामोश हुआ॥ बनारसी कहे हमें तो इस दारूका पीना मुदाम है ॥ पिऊं न मय मैं क्योंकर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥

अपने जिस्मका मयखाना मयेतौहीद वह मुझे पिलाताहै—बहेरखडी ।

आतिश इश्ककीभडकरहीहै इस दिलके मयखानेमें॥ मये मुह-ब्बतपिला दे साकी उल्फतके पैमानेमें ॥ यकताईका आलम हो और वहेदतका हो रंगभरा ॥ तुझ गुलकी हो खुशबू जिस्में वोः

शराब तू पिलाजरा॥गमकी होवे मिजा साथमें वह खासा हो पास धरा॥और मार्फत काहो मीना करामातका कामकरा॥आफताबकी होवे रोशनी मेरे दिल दीवानेमें॥मये मोहब्बतपिलादे साकी उल्फतके पैमानेमें॥मस्तीका हो सुरूर हरदम बादे सबाभी चलतीहो॥और गुलाबी मौसम हो हर गुलसे महेक निकलतीहो॥ बजे बीन औरबाब वोः काफूरी शमांभी बलतीहो॥जिस महफिलको देखके हर मोहतसिबकी छाती जलतीहो॥भड़क उठे शोलये नूर पहेलूमें मेरे शानेमें॥मये मुहब्बत पिलादे साकी उल्फतके पैमानेमें॥पास हमारे दिलवर हो फिर और सदायें कुलकुलहो॥जोशे दिलमें हो कहकहाभी हो शोरोगुलहो॥शीशा सागर सुराहीहो और गुलिस्तान गुंचे गुलहो॥हाथमें हो दिलवरका हाथ हर बातमें वोः जिकरे मुलहो॥कबाबकी लज्जत हुई हासिल अपना जिगरजलानेमें॥मये मोहब्बत मिलादे साकी उल्फतके पैमानेमें॥दीदार तेरा दारू शफाहै जिसे मिला वोः मस्त हुआ॥ बदमश्तों में बैठ बैठ कर बनारसी अलमस्तहुआ॥चांद सा चेहरा देखतेही तेरा वोः सूरज अस्तहुआ॥दस्तगीर वोः हुआ के जिसका तेरे दस्तमें दस्त हुआ॥कहा ख्याल तौहीद मजा है इश्क मार्फत गानेमें॥मये मोहब्बत पिलादे साकी उल्फतके पैमानेमें॥

मुझेकुलजहानमेंअपनेसिवा औरनहींदिखाईदेताहै ।

बहेर लँगड़ी ।

कहो किसे मैं देखूं देखा आलम में कुल हमीं तो हैं॥कहीं पे गुल हैं कहीं पर आसिके बुलबुल हमीं तो हैं॥ कहीं अनलहक बने कहीं मंसूर कहीं परदार हैं हम॥ कही पे सरमद कहीं सरलेनेको तलवारहैं हम॥कहीं शम्सतबरेज कहीं खुर्शेद उसीके यार हैं हम॥ कहीं एक हैं पर देखो विना शुमार हैं हम॥

शैर–कहीं लैला बने हम और कहीं मजनूं की सूरत हैं॥कहीं फरहाद बन बैठे कहीं शीरींकी मूरतहैं॥कहीं मस्जिद कहीं मंदिर कहीं काबा कहीं किबलाहैं॥कहीं हम हैं नजूमी और कहीं ज्योतिष मुहूरत हैं ॥ कहींबने खामोश किसी जापर शोरो गुल हमींतो हैं॥ कहीं पे गुल हैं कहीं पर आशिके बुलबुल हमीं तो हैं॥किसीजगह पर शरय कहीं बेशरय में बोले हमीं तो हैं ॥ कहीं पे स्याने कहीं पर बाले भोले हमीं तो हैं ॥ कहीं पे आतिश आब कहीं पर पडे फफोले हमीं तो हैं॥कहीं पे रत्ती कहीं पर माशे तोले हमीं तो हैं॥

शैर–कहीं मह हैं अख्तर कहीं पर अब्र नैसां है॥कहीं हिन्दू हो बुत पूजें कहींपर हम मुसल्मां हैं॥गरज जितनेही दीन हैं कुल जहां में अपनेही समझो ॥ मकां हैं लामकां हैं हम तो जाहरभी औ पिनहाँ हैं॥कहीं बने मयखोर किसी जापर साकी मुल हमीं तो हैं॥ कहीं पे गुल कहीं पर आसिके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पे बन्दे बने,कहीं पर खुदा खुदाका नूर हैं हम॥कहीं पे मूसा कहीं पर जलवा और कहीं कोहतूर हैं हम॥कहीं पे किसीके पास रहैं और कहीं किसीसे दूर हैं हम ॥ कहीं मलायक कहीं परिस्तान और हूर हैं हम ॥

शैर–कहीं तन पर रमाये खाक हम बन बन में फिरते हैं॥कहीं सुमरण हैं हम और हम कहीं सुमरण में फिरते हैं॥तुम अपने दिलमें मुझको गोर कर देखो तो मैं क्या हूं॥हमीं दम है हमीं हम दम हमी हर मनमें फिरते हैं॥कहीं बने बेशानी कहीं उस रुख पर काकुल हमीं तो हैं॥कहीं पे गुल हैं कहीं पर आशिके बुलबुल हमीं तो हैं॥कहीं बादशाह बने कहीं मर आकर हुए फकीर हैं हम॥मुरीदभी हैं किसी जा और कहीं पीर हैं हम॥कहीं निशानाबने कहीं पर कमां कमां के तीर हैं हम॥कहीं शमा हैं कहीं पर परवाना गुलगीर हैं हम ॥

शैर—जिधर देखो उधर हमको हमीं हरजा पे रहते हैं ॥कहीं दरिया हैं हम और हम कहीं दरिया में बहते हैं ॥ तबक चौदाके ऊपर यक मकां है लामकां अपना॥वहां कायम हैं और हम यह सखुन इस जापे कहतेहैं ॥ बनारसी कहे मुझे अगर देखो तुम बिल्कुल हमीं तो हैं॥कहीं पे गुलहैं कहीं पर आशके बुलबुल हमीं तो हैं ॥

जो सच्चा आशिक है उसका मकां लामकां है बेहरछोटी।

लामकां आशकोंका नहीं कहीं मकां है ॥ जहाँ खुदाहै मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ मालूम है मुझको जोके चीज निहां है ॥ वाकिफ हूं और कहता हूँ वोः यार कहां है ॥ हूँ जईफ पर दिल मेरा बड़ा जवां है ॥ नाताकत हूँ पर मुझमें बडी तवां है ॥ जहां फना है मेरे लेखे वोही जहां है ॥ जहाँ खुदा मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ जहां खामोशी है वहीं पे शोरो फिगां है ॥ जहां सर्द है नारा वहीं आतिश सोजाँ है ॥ जहां हिज्र है उल्फतकाभी वहीं सामा है ॥ जहां लहर बहर है वहीं बड़ा तूफां है ॥ क्या कहूँ में कहती मेरी यही जुबां है ॥ जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ हूँ लिबास पहने पर यह तने उरियां है ॥ बस्तीको समझता हूँ में ये वीरांहै॥जहां मुसल्मीनहैं वहीं पे हिन्दुस्तां है॥मस्जिदमें मेरे उस बुतकाबना निशां है॥ आशिक की आह है यही तो एक अजां है ॥ जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ जिन्दा है वही जो जानसे भी हेजां है ॥ करताहै सैर वोः इश्कमें जो हेरां है ॥ नादानकोभी कहता हूँ में वोः इंसाँ है ॥ येः अक्ल है मेरी और यह फहम कहाँ है॥कहे बनारसी हर मिसरा मेरा कुरां है ॥ जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥

अपना जो जिस्म है वही अव्वल देहली शहर चलता फिरता है—बेहर लँगडी।

शहर है देहली एक जगह मैंने चलती फिरती देहली॥ये है वोः

देहली कि जिस्से रोशन है बिल्कुल देहली॥ चश्म गोश बीनीमुः दन्दाँ जबां ये इसकी बस्ती है॥ शिकम वो सीना दस्तपादुरुस्त मनमें मस्ती है॥ यादे इलाही में जिस जिसकी यारो चश्म बरसती है॥ आँख उसीका हमेशाँ करती हक्कपरस्तीहै॥ आदमके दमसे रोशन गुलजार ये बागे हस्तीहै॥ वेश है कीमत इसीकी और जिन्स सब सस्ती है॥

शैर-ये वोः देहली है इसकी सैर कुछ पुकाराही करतेहैं॥ औ दुनियादार जितने हैं वोः उनका दमही भरते हैं॥ फकीरी वोः है इसमें जो कदम दमभर भी धरते हैं॥ मिले मौलासे अपने फखमें पूरे उतरते हैं॥ इसी वास्ते मैने भी सूरत फुकाराओंकी यह ली॥ ये हैं वोः देहलीके जिस्से रौशन है बिल्कुल देहली॥ आदमका है जिस्म इसे तू समझ ये दिल्लीका दिल है॥ करे इबादत नहीं तो येभी पत्थर औ सिल है॥ अकलसे इसको देख तो येतन आब हवा आतिश गिल है॥ इसी में मौला है बैठा अलग और इस्से शामिल है॥ बिना इबादतके तो जिस्म ये बना छछूंदरका बिल है॥ बडी है बदबू और इसमें लाख वजहकी किलकिल है॥

शैर--है जिसके पास में कुछ धन वो तो गफलतमें सोताहै॥ जो मुफलिस है वो तो खानेही और पीनेको रोताहै॥ कोई कहता ये बेटा है ये नाती है ये पोता है॥ कोई कहता मेरे आगे तो कुछ नहिंहै न होता है॥ कर सद्गुरुका भजन जो तूने ये काया कंचनगेह ली॥ ये है वो देहलीके जिस्से रोशन है बिल्कुल देहली॥ ऐसी देहली कहां मिलेगी फिर तुझको हरबार भला॥ अब जो मिली है तो तू करदे इसको गुलजार भला॥ तुख्मवोःइसमें बोके जिसमें पैदा नहीं हो खार भला॥ यादे इलाही तू कर और इसकी देख बहारभला॥ छोड़ कुटुंब परिवार तु होजा फकीर और मनमार भला॥ भला ये नाहो तो दिलमें रहम तो कर वो यार भला॥

शैर—वे दो बाते हैं नेकी की जो करना है तो तू करले॥ नहीं चल छोड दिल्लीको निकल अपना अलग घर ले ॥ जो मरना है तुझे तो मौतके पहलेही तू मर ले ॥ न कर दिलमें गुरूरे जिस्म तो इस्का तु दुख हर ले॥ उसके नामकी अपने तनपर पहर ले अब कफनी सेहली ॥ येहै वों देहली कि जिस्से रोशनहै बिल्कुल देहली ॥ खुदाने इस देहली का बनायाहै वोः शाहनशाह तुझे॥ बख्शा तुझको है ये तन तख्त बताई राह तुझे ॥ तू इसको पहेचान अगर्चे हो कुछ खूब निगाह तुझे ॥ इसीमें उसका है जलवा देख जो हो कुछ चाह तुझे ॥ नहीं तो ये लुट जायगी करदेगी खूब तबाह तुझे ॥ बिना इबादत करे क्या जाने क्या अल्लाह तुझे ॥

शैर—बिना उसके तसव्वर फिर तू चौरासी में जायेगा ॥ कहां जायेगा क्या जाने वोः तुझको क्या बनायेगा ॥ काल जिस वक्त आकरके तुझे धक्का लगायेगा ॥ जडी बूँटी दवा हुक्मां न तेरे काम आयेगा ॥ बनारसी कहे हर हर भज इसलिये ये है उसकी देहली ॥ यह वोः देहलीके जिस्से रोशन है बिल्कुल देहली ॥

सिफत खुदाके फक्त चेहरेकी—बहेर शिकस्ता ।

वोः नूरे रोशन कमरसे बेहतर तबकतबक पर खिला उजाला॥ क्या ताबो ताकत गर उस्को देखे वोः मेरा दिलवर है सप्पेबाला॥ वो जुल्फ उसका अगर्चे देखे तो पेंच खाये चमनसे सम्बुल ॥ हरेक बलमें उसके छल बल वोःदामें उल्फत है उसकी काकुल ॥ वोगेसू उसके तो मुश्के ची हैं गोया गुलिस्तां में सोसने गुल ॥ या हैं वोः अबरे सिया फलक पर या हैं आयते कुराने बिल्कुल ॥ फँसा है उसमें यह तायरे दिल अजीब फंदा है मुझपे डाला ॥ क्या ताबो ताकत गर उस्को देखे वोः मेरा दिलवरहै सप्पे बाला॥ है नौ जवानी में वोः पेशानी और उस्का माथा मेहर से रोशन ॥ वोःचीने उसकी किरन हैं खुरकी चमकदमकमें कमर से रोशन ॥ और वोःसफाई

हुस्न खुदाई हरेक जिन और बशरसे रोशन ॥ और वोः पसीना गोया नगीना हरेक आबे गौहर से रोशन ॥ सुनी है उसकी सिफत ये जिसने झुकाके माथा जमीं पे डाला॥क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलवर है सप्पेबाला ॥ वोः अबरू दोनों झुके हैं उसके गोया कमां यकता है खिंचीसी ॥ औ तीरे मिजगां चढे हैं जिसपर नजर ये किसपर हैं अब कहेर की ॥ अगर खफा होकर उस सनम ने जरा भि अपनी वोः भौं सिकोडी॥ तो गिर पडे लाखों सर जमीं पर लगी न यक पल भी उसमें देरी॥ या हैं वोः तेगे दुदम चमकते या खंजरे बुरां है निकाला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलवर है सप्पेबाला ॥ वोः चश्म आहू अगर्चे देखे तो आँख हरगिज न हो मुकाबिल ॥ औ सर झुकाकर खडा हो नर्गिस उसी कि आँखों पे होके माइल॥ वोः खूनी नैना और टेढी चितवन पडे जिधर को तो क्या हो हाँसिल ॥ कोई हो मुर्दा कोई तडपता कोई सिसिक्ता औ कोई बिस्मिल ॥ औ मस्त दोनों पिये हुये मय भरे नशेमें लिये हैं प्याला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलवर है सप्पेबाला ॥ वोः बीनी उसकी अलिफ की सूरत जो उसको देखे कहे वोः अल्ला॥फडक वोः नथुनो की इस कदर है कि दिल तडपता है मेरा वल्ला ॥लभाये शीरींमें है वोःलज्जत के ओठ चाटें हरेक शैदा ॥ वोः बाते उसकी हैं भोली भाली न ऐसी बोली कहीं हो पैदा ॥ सुने अगरचे जो गोश करके औ उसके बांतोंकी फेर माला॥क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलवर है सप्पेबाला॥ कभी अगर्चे वोः हँसके बोले तो चमकें उस गुलके ऐसे दंदां॥ जिगरगौहरकाछिदे जो देखे औ दांत पीसें लाले बद-क्शां॥ये सिफत सुनते ही खून सूखाविका बेकदर जहां में मर्जा॥ औ बर्क ऐसी गिरी तडपकर कि होश उसका हुआ परेशां॥बयां

क्या करूं दहन का उस्के हुआ तंग दिल न बोला चाला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वो मेरा दिलवर है सप्पेबाला ॥ ये फकत चेहरेकी यक सिफतहै जो अक्क अपनी में कुछथा आया ॥ बयां वोः मैंने किया जुबाँसे पर भेद उसका जरा न पाया॥कोई किताबें बनाके थक गये किसीने सीखा किसी ने गाया॥हजारों मुल्ला करोडों स्याने कोई इमतहां न उसकी लाया ॥ फजल उसीका हुवा तो देखा बनारसीने वोः बागी ताला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलवर है सप्पेबाला ॥

ख्याल उलटा मतलब सीधा मुश्किल बहेर–लँगडी ।

बुतासे मैंने कुरान सीखा काबे में पोथियों की बात॥दीनसे जब मैं हुआ बेदीन बना फिर खुदाकी जात॥जब मुस्से आपडी लड़ाई भाग गये तो जीता जंग ॥ जख्म जिगरके हुये आरामलगे जब तीरों तुफंग ॥ बेहोशी हुई दूर लगा मय पीने मयखोरोंके संग ॥ अजब इश्कका रास्ता उलटा और सीधा है ढंग ॥ जोरू खसम मरगये तो शादी हुई खुशीसे चढी बरात ॥ दीनसे जब मैं बना बेदीन हुआ फिर खुदाकी जात॥ गदा हुआ तो भीख न मांगी लुटाया सबी खजानेको ॥ बादशाह जो बना मुहताज रहा हरदानेको ॥ जहांको जिसने तर्क किया तो पाया असल ठेकाने को ॥जीते जी जो मरा वह जीता सबी जमाने को॥मिली ऐश अशरत मुझको जबसे अपनी खोई औकात॥ दीनसे जब मैं हुआ बेदीन बना फिर खुदाकी जात॥ मस्जिद में नाकूस बजाऊं मंदिर में देता हूं अजां ॥ बुतखानेमें करूं सिजदा तोहो दंडवत वहां ॥ जिसकी कुछ सूरतही नहीं देखा तो वही है नूरे जहां॥इसके मायने कहूं किस्से यह तो है राजे नेहां॥हुआ मुझे आराम उठाली सरपर जबसे कुल आफात॥दीनसे जब मैं हुआ बेदीन बना फिर खुदाकी जात ॥ सरको अपने बचके उस आफते इश्क को मोल

लिया॥सौदाई में बना तो वोः सौदा अनमोल लिया॥देवीसिंह कहे बनारसीने भेद इश्कका खोल लिया॥यक राईसे कोह दर कोहको बिल्कुल तोल लिया॥हुये जमानेसे जो जिन्नतोंकी बाजी शतरंज की मात॥दीनसे जब मैं हुआ बेदीन बना फिर खुदाकीजात॥

खुदाकी नजरमें सब कुछ है वोः जो चाहे सो करे।

बहेर लँगड़ी।

एकनजरमें शम्सहै उसके और कमर यक नजरमें है॥एक नजरमें है आतिश आबेतर यक नजरमें है॥ एकनजरमें अमृत उसके और जहर यक नजरमें है॥एकनजरमें कहर और लहर बहर यकनजरमें है॥ एक नजरम सितम है उसके और मेहर यक नजरमें है॥एक नजरमें है मोहनी और सेहर यकनजरमें है ॥एकनजरमें पीरो पयम्बर जिनो बशर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें है आतिश आबेतर यकनजरमें है॥एकनजरमें बेखतरी और खौफ खतर यकनजरमें है एकनजरमेंनफाहै और जरर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें काबाहै और बुतोंका घर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें इशारा तेगोतबर यक नजरमें है॥एकनजरमें खफगीभी है नेक नजर यकनजरमें है॥एक नजरमें है आतिश आबेतर यकनजरमें है॥एकनजरमें जेरहै उसके और जबर यकनजरमें है॥एकनजरमें नातवाँ जोरावर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें गफलत है वो और खबर यकनजरमें है॥एकनजरमें मुफलिसी जहां का जर यकनजरमेंहै॥ एकनजरमें जिंदगानीभी मौतका डर यक नजरमें है॥ एक नजरमें है आतिशआबेतर यकनजरमें है॥एकनजरमें भुलादे वोःदिखलादे दर यकनजरमेंहै॥ एकनजरमें जीस्त है और महेश यकनजरमें है॥एकनजरमें देवीसिंह उसका दफतर यकनजरमें है॥ एकनजरमें कुलजहां दिलदिलवर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें बनारसीभी मिनो चेअर यकनजरमें है ॥ एकनजरमें आतिश आबेतर एकनजरमें है ॥

इश्क जो है सो दुःखका घर है परन्तु इस दुःखमें सुख बडा है-बहेर लँगडी ।

इश्क है खान ये रंज पर इस खान ये रंज में राहत है ॥ लुत्फ उसीको हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥ इश्कमें जी जाना मैंने समझा है यही जी जाना है ॥ जाना जानाके दरपर जान बेचकर जाना है ॥ उल्फत में रुसवा होना बस यही आबरू पाना है ॥ नादांको दिल दिया जिसे जिसने वोः आशक दाना है ॥

शैर-फँसे जो इश्कके फंदे में वो दुनियासे कुल छूटे ॥ मजे लूटे उन्होंने जिनके सब घर दर गये लूटे॥हमें वो खार देते हैं जो गुलशन में हैं गुलबूँटे ॥ खटकते हैं मेरे दिलपर वो काँटे लगके जो टूटे॥इश्कके बीमारोंकी रोशन आलम बीच शबाहत है॥लुत्फ उसीको हो हांसिल जिसे इश्ककी चाहत है॥जिगर जलाना आशकके हकमें ये बडी तरावट है ॥ आतशे गमसे अब अपनी आठो पहर लगावट है ॥ तनकी उरियानीको हम समझे ये खूब सजावट है ॥ इश्कमें बिगडे जो आशक उन्हींकी बनी बनावट है ॥

शैर-हुआ जो इश्कमें मुफलिस वही जरदार होता है॥कटाये सर जो उल्फतमें वही सरदार होता है॥जो दिलको छीनले दिलवर वही दिलदार होता है॥और आँखें बंदकर देखे उसे दीदार होताहै॥ जोरावर है वही इश्कमें जो के हुआ नकाहत है॥ लुत्फ उसीको हो हाँसिल जिसे इश्ककी चाहत है॥कैद जहांसे छूटे वही जो दामे मुहब्बतमें फँस जाय॥निकले दोजखसे वोः जो इश्ककी आतिशमें धँस जाय ॥ किसीके वशमें कभी न हो गर वो दिलवर दिलमें बस जाय ॥ कर उसी से रसाई कभी न जिस गुलका रस जाय ॥

शैर-मुहब्बतमें जो दिल दागे वही बेदाग होता है॥नफा होताहै उसको जोके जर उल्फतमें खोताहै॥वो हँसताहै सदा जो उस सन-

मके गम्मे रोताहै। मिलाये तनको मिट्टीमें वो अपने मनको धोताहै॥ मजा इश्कका यही कभी राहत है कभी कराहत है॥लुत्फ उसीको हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥ गम खाना आशकके हकमें ये न्यामतसे बेहतर है ॥ हर यक मकां हैं उसीके जिसका कहीं न घर दर है ॥ उसे खौफ नहिं किसीका है जिसको उस दिलवरका डर हैं ॥ अपने आपको जो पहेचाने वही अल्ला अकबर है ॥

शैर–पढे नहीं इल्मका दफतर अलिफ बे ते न हम सीखे॥न तख्ती हाथसे पकडी न कुछ छूना कलम सीखे॥फकत इस इश्कके मकतवमें हम नामे सनम सीखे॥सिवा उल्फतके और हम कुछ नहीं अपनी कसम सीखे ॥ देवीसिंह कहे बनारसी तेरी जबांमें बडी फसाहत है॥लुत्फ उसी को हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है॥

इश्कमें रंज न हो तो कोई इसको न करै–बहेर लँगडी।

गर्चे इश्कमें रंज न होवै तो कोइ इसका नाम न ले॥आशक वो है रंजके सिवा कहीं आराम न ले॥लाखों सदमें सहे जिगर पर जबांसे निकले आह नहीं ॥ चाहनेवालेको रंजके सिवा किसीकी चाह नहीं॥गममें खुशी होवे सोई आशक किसी कि रक्खे ख्वाह नहीं ॥ सिवा इश्कके दूसरी तरफको करे निगाह नहीं ॥ जो कि लुत्फहै रंजमें ऐसा मजा कोई वल्लाह नहीं ॥ वोः क्या जाने जो इसकी लज्जतसे आगाह नहीं॥जफाको समझे वफा अलमको छोड और कोईकाम न ले॥आशक वो है रंजके सिवा कहीं आराम न ले॥ जिसने इश्कको चाहा उसने गमखाना अख्त्यार किया॥शिरपर आरे चले तिसपरभी नहीं इन्कार किया॥आशक उसीको कहिये जिसने दिलोजान निसार किया॥दागे इश्कसे जिगर सीना अपना गुलजार किया ॥ दममें दमको दम करके अपने दमको दमदार किया ॥ जिगर जलाया तो उससे रोशन दिल दिलदार किया ॥ चाहे मरे चाहे जिये इश्कसे अलग कहीं विश्राम न ले॥ आशिक

वो है रंजके सिवा कहीं आराम न ले ॥ दर्जा इश्कका हुआ रंजसे गर इसमें कुछ रंज न हो॥फिर कोई इसको करै क्यों यह जवाब तुम हमको दो ॥ आशिक था मनसूर दार पर चढ़ा जान अपनी दी खो ॥ लुत्फ उठाया इश्कका रंजको राहत समझा जो ॥ आह इश्कने किये हैं क्या क्या सितम कहूं मैं क्या इसको ॥ गमके दरियामें जिसने लाखों आशिक दिये डुबो॥मुझसेभी कहताहै यही तू चैन सुबः और शाम न ले॥आशिक वोः है रंजके सिवा कहींआराम न ले॥मजा इश्कका रंगसे है गर इसमें रंज नहीं होता॥फिर कोइ आशिक अश्क अपनेसे मुँह क्यों कर धोता॥क्यों मरता शीरींपर कोहकन और मजनूं क्यों कर रोता॥अपने सरको हाथसे वो सर मदभी क्योंकर खोता ॥ बनारसी गर मजा न पाता तुख्म मोहब्बत क्यों बोता॥बहरे इश्कमें लहर देखो तो फिर मारा गोता ॥ सलाम करता हूं रंजको चाहे वो मेरा सलाम न ले॥आशक वोः है रंजके सिवा कहीं आराम न ले ॥

मैं यह कहता हूँ कि तुम आपेको पहचानो तो तुम्ही सब कुछ हो—बहेर लँगडी।

मैंने ये पूछाके बताओ मियांजी आप कहांके हो ॥ किस बस्तीके और किस गाँवके कौन मकांके हो॥नाम आपका क्या है कौनसे दीन और किस इमांकेहो॥जरा तो बोलो आप दीवाने किस दीवांकेहो॥हिन्दूहो या मुसलमीन देहली या तुरकस्तांके हो॥ पण्डित हो या मोलवी या तुम हाफिज कुरांके हो॥चीनकेहो या महाचीनके या ईरां तूरांकेहो ॥ किस बस्तीके और किस गाँवके कौन मकाँके हो॥इस दुनियामें आये कहांसे जमींके या आसमांके हो ॥ चश्मके घायल या मायल तुम ज़ुलफे पेंचांकेहो ॥ किसपर दिल है फिदा तुम आशक हूरके या गिलमांके हो॥सच्च तो कह दो के जख्मी तुम तीरे मिजगांके हो॥आपने कुछ नहिं किया बयां तुम

जुबांके या बे जुबांके हो॥ किसबस्तीके और किस गांवके कौन मकांके हो॥ फिक्रआपको क्याहै बयां कुछ करो या तुम बे बयांके हो॥ किस गुलसनके हो गुल या खार कोई बीरांके हो॥ सरसे पैर तक देखा तो तुम अजब सरो सामांके हो॥ शक्कभी आदम की हो फरजंद कोई इन्साँके हो ॥ ये मैं पूछता हूं तुमसे कुछ वाकिफ राजेनिहांके हो॥ किस बस्तीके और किस गाँवके कौन मकांके हो॥ खुदा है तुममें तिसपर भी तुम वाकिफ नहीं दोजहांके हो॥ मिलो जो उस्से तो फिर तुम मालिक कौनो मकांके हो॥ ऐसी करनी मत करना जो यहांके हो ना वहांके हो॥ देवीसिंहका कहामानो तो नामो निशांके हो॥ जवाब इसका दो जो लडनेवाले उस मैदाँके हो ॥ किस बस्तीके और किस गाँवके कौन मकांके हो ॥

जिसके दिलपर हर वक्त खुदाकी याद रहती है उसका रास्ता दुनियासे अलग है--बहेर छोटी ।

जिसके दिल पर दिलवरका नाम बस्ता है॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है॥ सर्दीमें आशक पीते हैं सरदाई ॥ गर्मीमें शंखिया खाय रहे गर्माई ॥ बारिशमें सूखे धूपमें हो हरियाई ॥ ऐसे मस्तोंसे सभी बात बनिआई ॥ वो दागको समझे दिलपर गुलदस्ता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है ॥ वो दिनको सोवे सारी रात भर जागें॥ शूरोंसे लडें गिद्दीको देखकर भागें ॥ नहिं मिले तो मांगे भीख मिले तो त्यागें॥ ऐसे शाहोंसे हरेक बादशाह मांगें॥ अनमोल है सौदा वो भी उन्हें सस्ता है॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ताहै॥ मंदिरको तोडकर मस्जिदको चुनवावें॥ मस्जिदको तोडके मयखाना बनवावें॥ खेतीको सुखा ऊसरमें अन्न उपजावें॥ आशिकसादिक जो चाहे कर दिखलावें ॥ ऐसे मस्तोंको कोई नहीं हँसता है॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ताहै॥ जब पेट भरे तब खानेको मँगवाते॥ और भूख लगे तो कुछ भोजन नहिं खाते ॥ मूरखसे सीखें पण्डि-

तका समझाते॥कहे बनारसी हम नई नई बातेंगाते॥इस कदरसे जो कोइ अपना दिल करताहै॥उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है॥

जो खुदाका आशिकहो और उसपर खुदाभी आशिक हो तो बंदा खुदा एक है–बहेर छोटी।

आशिक पर आशिक जब वो सनम होता है॥ दोनोंका रुतबा एक रकम होता है॥वोः नूर है तो आशिक भी जलवेगरहै॥वोः दीद है तो दिल अपना उसकी नजर है॥ लामकां है वोः तो मेरा कहीं न घर है॥ वोः दिल है तो ये दिल उसका दिलबर है॥जिस वक्त कयामतमें वोः बहम होता है॥ दोनोंका रुतबा एकरकम होताहै॥ वोः गुलशन है तो आशिक उसका गुलहै॥वोः हरजाहै तो आशिकभी बिलकुल है॥ वोः सुरूर तो आशिक वहदतकी मुल है॥वोः धूमहै तो आशिक भी शोरो गुलहै॥जिस वक्त यह दम उसका हम दम होता है॥ दोनोंका रुतबा एक रकम होता है॥ वोः जहां है तो आशिक भी जहां तहां है॥ वोः कलमा है तो आशिकभी कुरआं है॥ जहां जिक्र है आशिकका भी वहीं बयां है॥ वोः निहां है तो आशिक हरजा पिनहां है॥ आशिकका दम जब उसमें दम होता है॥ दोनों का रुतबा एक रकम होता है॥ वोः बेख्वाहिश तो आशिक बेपरवा है॥ वोः मिला है तो कुछ आशिक नहीं जुदा है॥ वोः दुई नहीं तो आशिक भी यकता है॥ ये देवीसिंहका सखुन बड़ा सच्चा है॥ कहे बनारसी जब उसका करम होता है॥ दोनोंका रुतबा एक रकम होता है॥

कलियुगकी स्तुति जो जैसा करै वह वैसा पावे।

बहेर छोटी।

इस कलियुगमें कल देगा कल पावेगा॥ कलपावेगा वोः क्योंकर कल पावेगा॥ नरदेही पाकर ध्यान सांई का धरना॥ दो

दिनका जीना देख अंत है मरना॥तज बुरे काम भवसागर पार उतरना ॥ दुःख देगा तुझको भी होगा दुःख भरना॥ नेकोंको मजा नेकीका नेकी करना॥मत करे बदीकी बात खुदीसे डरना॥करनीका फल संसार सकल पावेगा॥कलपावेगा वोः क्यों कर कल पावेगा॥

जो कुआँ किसीके खातर खोदे भाई॥ हो उसके लिये तैय्यार फलकसे खाई॥ गुल न कर पराया चिराग अरे सौदाई॥रहीउसकी रोशनी जिसने इधर लौ लाई॥कर साधु संतकी टहेल तो मिले भलाई॥ की जिसने खिदमत उसने अजमत पाई॥जो सेवा करेगा मेवा तु कल पावेगा ॥ कलपावेगा वोः क्योंकर कल पावेगा ॥

क्यों गफलतमें रहे भूल उसे पहिचानों॥मत बुरा किसीका करना दिलमें ठानों ॥ मैं कहूं बात नसिहतकी भौंहें क्यों तानों ॥ अब करो भलाई आगे खाक मत छानों॥यह कलियुग नहीं इस्को कर युग कर जानों॥यहां मिले हाथका हाथ सतकर मानों॥जो आज करैगा वैसा कल पावेगा॥कलपावेगा वोः क्योंकर कल पावेगा ॥

जो करै किसीकी मुश्किलको आसान॥उनकी मुश्किल आसान करै भगवान॥नुकशान पराया करके करैं गुमान॥उनका नहीं रहेता जगमें नाम निशान॥जो मिला चाहो साहबसे छोड अभिमान ॥ पांचों इंद्री वश करके लगावो ध्यान॥उस मारगकी जब तू अटकल पावेगा ॥ कलपावेगा वोः क्योंकर कल पावेगा ॥

तप कलियुगका है बड़ा यह राज कमाया॥किया ऐसा अदल जुलमी नहीं रहिने पाया॥वोः तुर्त मिटा है जिसने जिसे सताया॥ मनशा फलती है जबसे कलियुग आया॥है श्रीकृष्ण की देवीसिंह पर साया॥यह कलियुग नहीं करजुगका ख्याल है गाया॥इन् नुकतोंको क्या बे अक्कल पावेगा॥कलपावेगावोः क्योंकर कलपावेगा॥

हरघडी परमेश्वरको भजना इसीमें भला है—बहेर छोटी॥

दम पर दम हर भज नहीं भरोसा दमका॥एक दममें निकल

जायेगा दम आदमका॥है जबतकसे दममें दम भज हर हर तू ॥ दम आवे ना आवे इस्की आश मत कर तू॥ एक नाम प्रभूका जप हिरदेमें धर तू ॥ नर इसी नामसे तरजा भवसागर तू॥ बल करता थोडे जीनेके खातर तू ॥ वोः है साहब जल्लाद जरा तो डर तू ॥ वहां अदल बडा है हिसाब हो दम दमका ॥ एक दममें निकल जायेगा दम आदमका ॥ जीनेका फल यह राम नाम जपना है॥जब घेरे काल तो कहां जाय छिपना है॥इस नरको एक दिन आतिशमें तपना है॥दम जाय निकल तन मिट्टीमें खपना है॥ एक दमका बसेरा दुनिया रैन सपनाहै॥टुक देखो आँखें खोल कौन अपना है ॥ सब झूठा माया मोह कुटुंब हम दमका ॥ एक दममें निकल जायेगा दम आदमका ॥ जो आया जगमें अमर नहीं रहनेका ॥ नरबदा घागरा अटक नहीं बहेनेका ॥ कर लाख जतन तू मायाके गहेनेका॥दर मिले वही जो है तेरे लहेनेका॥हरवक्त कभी नहीं जमका दंड सहेनेका॥करनेकी कोई बुरा नहीं कहेनेका॥इस जगमें नाता हैगा बोलते दमका ॥ एक दममें निकल जायेगा दम आदमका ॥ एक दममें दम आदमका निकल जावेगा॥फिर पीछे हाथ मलमलके पछतावेगा॥जब श्रीकृष्णकी शरणागत आवेगा॥ तो जीवनमुक्ती इस जगमें पावेगा ॥ कहे देवीसिंह जो हरके गुण गावेगा॥ वोः प्राणी जगबंधनसे छूट जावेगा॥कुछ कयाम जगमें नहीं सुनो इस दमका॥एक दममें निकल जावेगा दम आदमका॥

इस जगतमें सबसे बुरा माँगना है समझके मांगेतो भला-बहेर छोटी ॥

इस जगमें जबलग अपनी मार बसाये ॥ मत कोई किसीके द्वार माँगने जाये॥इस जगमें मांगना बडी पापकी पोटे॥माँगन गये बलिके द्वार राम भये छोटे॥सुना और मांगना दुबले होगये

मोटे ॥ माँगनकी बराबर और कर्म नहीं खोटे॥इस नरको माँगना जो चाहे कहलाये ॥ मत कोई किसीके द्वार माँगने जाये ॥ मरना बेहतर यह बात भूल नहिं कीजे॥ सब जाय बडप्पन बोझ बकर सुन लीजे ॥ जप योग तपस्या पुनि उस दम सब छीजे ॥ जब नरने मुखसे कहा हमैं कुछ दीजे ॥ है पूरा मौतका वक्त आँख शरमाये॥मत कोई किसीके द्वार माँगने जाये ॥ जब गर्जवंदसे अपनी शर्म गवाँई ॥ काला मुँह करके गया माँगने भाई॥ जो होते उसके उसने राह बताई॥ उसकी तो होती इस जगमें रुसवाई॥फिटमारा होके चला मनमें पछताये॥मत कोई किसीके द्वार मांगने जाये॥जब वक्त पडे तो जाँय माँगने सूरे॥ हो जाँय निवाणें बडे दिलके मगरूरे॥जो हैंगे आशना धनी बातके पूरे ॥ अपनेसे ज्यादा समझैं उसकी जरूरे ॥ परस्वारथको कोई विरला शीश कटाये ॥ मत कोई किसीके द्वार माँगने जाये ॥ दुनियामें देना मर्दोंका साखा है॥देकर प्राणीने अंत प्रेम चाखा है ॥ है बुरा माँगना बेदोंने भाषा है ॥ मैं मांगूँ हरसे मेरी यह अभिलाषा है ॥ तू मांग देखपर विना भाग नहीं पाये ॥ मत कोई किसीके द्वार माँगने जाये ॥ मेरी अर्ज सुनों तुम श्रीकृष्णशुभरास॥मत भेजो माँगने मुझे किसीके पास ॥ अपने घरसे मेरी पूरी कर देत आस ॥ यह कहे देवीसिंह मैं हूँ तेरा दास॥सालगकी मीठी बानी सभा मन भाये॥मत कोई किसीके द्वार माँगने जाये॥

ख्याल शुद्धवेदांत त्यागका त्याग देह अभिमान छोड-बहेर खड़ी ।

देहभाव गया छूट आत्मारामको जबसे पहिचाना॥निराकारमें निराकारहो मिले छुटे आना जाना॥अहंग आत्मा स्वरूप हैं कुछ नहीं देहसे काम मेरा ॥ शरीर तो है जड वस्तू चैतन्य आत्मा नाम

मेरा॥रवी शशी अग्नी आकाशसे है दरे निरंतर धाम मेरा॥अनंत अव्यै अविनाशी अद्वैत शिवराम मेरा ॥ काया कर्मको त्यागके मैंने सत्य आत्माको माना॥निराकारमें निराकार हो मिले छुटा आना जाना॥जीव ब्रह्म एकी स्वरूप है परंतु है अज्ञानका भेद ॥ अज्ञानी तो जीव और ज्ञानी बनता ब्रह्म अभेद ॥ त्रैगुणसे जो रहित हैं उनकी कौन बिधी और कौन निषेध॥जो चाहे सो करे वोः है वेदांतके कथिता ग्रथिता वेद॥चाहे वोः बोलें चाहे हँसे और चाहे लगें गाने गाना॥निराकारमें निराकारहो मिले छुटे आना जाना॥सत् अपना शरीर मिथ्या इस विधिकर है जिसको ज्ञान॥ वोः प्राणी है आपी ईश्वर ब्रह्ममें उसमें भेद न जान॥काम क्रोध मद लोभ मोह अहंकार कपट तज मान गुमान ॥ मिले ब्रह्ममें ब्रह्मरूप होय करके सब छोडा अभिमान॥ज्यौं पानीसे उठे बुलबुला फिर जलमाहीं समाना॥निराकारमें निराकर हो मिले छुटा आना जाना॥जल तरंग है एक नाम है दो इनको एके जानो॥ इसीतरहसे अपने जीवको पारब्रह्म कर पहिचानो ॥ जीवब्रह्ममें भेद नहीं है वेदबाक सुनलेव कानों॥द्वैतभाव देव छोंड रहो अद्वैत कहा मेरा मानों ॥ काशीगिर ज्योतिस्वरूपने तत्त्वज्ञान यह बखाना॥निराकारमें निराकार हो मिले छुटा आना जाना ॥

प्राणायाममहायोगसिद्धांतदर्शन निराकारका ।

बहेर खड़ी ।

योगी वही जो सकलमें बैठे देखे दशवें द्वारको वोः॥कारज करे जगत्के सब और लखे अलख करतारको वोः॥ नाचे गावे गाल बजावे ध्यान आतमामें धरके॥सबमें रहे और सबसे न्यारा पूरण होय योग करके॥निर्भय होके विचरे निशि दिन कबहूं नहीं चले डरके॥अपने आपमें आपको देखै धन भाग हैं वा नरके॥ जब वह काया त्यागे तब फिर पहुँचे परले पारको वोः ॥ कारज करे जगत्के

सब और लखे अलख करतारको वोः ॥ प्रसन्न चित्त और बुद्धी निर्मल कर्म अकर्म न कुछ जाने॥द्वैतभावसे अलग रहे अद्वैत ज्ञानको बखाने॥समदर्शी और शुद्ध समाधी अपने को आपै माने॥ जीव ब्रह्ममें एकभावकर अपने मनमें पहिचाने॥ भूमी भार उतारन कारण धरे आप अवतारको वोः॥कारजकरे जगतके सब और लखे अलख करतार को वोः॥ त्रैगुणको जीते और चौथे पदपर अपनी करे मती॥संपूर्ण सृष्टिको भोग जो करे वही है बालयती॥ चर अचरमें अपने आपको देखे उसकी होय गती॥आपी पिता और आपी पुत्रहै आप स्त्री आप पती॥और करे वोः प्रलय और चाहे रचे सकल संसार को वोः॥कारज करे जगतके सब और लखे अलख करतारको वोः ॥ पुण्यपापसे अलग रहे दुःख सुखका नहीं विचार करे॥ ब्रह्मज्ञानकी चर्चा अपने मुखसे बारंबार करे ॥ आतमदर्शी होय तो अपने सब कुलका उद्धार करे॥देवीसिंह यह कहे वोः जो चाहे सो आप करतार करे॥चाहे करे वोः नर पैदा और चाहे बनाये नारको वोः॥कारज करे जगतके सब और लखे अलख करतारको वोः ॥

ख्याल अमरनाथजीका—बहेर लँगड़ी।

अमरनाथने अमर कथा सब कही सुने थी पार्वती॥उत्राखंडमें लगा आसन बैठे कैलासपती॥अविनाशी कैलासी काशी उत्राखंडमें बसाई॥बैठ गुफामें गवरको अमरकथा जब सुनाई ॥ अमृत बाणी सुनी उमाके नेत्रमें निद्रा भर आई ॥ वही कथा तब एक तोतेके बच्चेने सुन पाई॥दिया हुँकारा शिवजीको शिव कहें अर्थ सब समझाई॥सुवा सुने था और ओ सोती थी गौरा माई॥पारब्रह्मका खेल उस घडी उस तोते की बढी रती॥उत्राखंडमें लगा आसन०॥हुई कथा संपूरण शिवने पार्वतीको बुलाया॥उठीं गौरजा कहा शिव मैंने कुछ नहिं सुन पाया॥फिर शिवजीने कहा हुकारा मुझको किसने सुनाया॥और तीसरा यहां पर कौन विधी

करके आया॥चढा क्रोध शिव शंकर को करसे त्रिशूलको उठाया॥ उसी घडी फिर वोः तोतेका बच्चा उडकर धाया॥ दौडे शिव उसके पीछे वोः निकलगया कर सुमत मती॥उत्राखंडमें लगा आसन०॥ तीनलोकमें उडा वोः तोता कहीं मिला नहीं ठिकाना॥ उडते उडते बहुतसा अपने मनमें घबराना॥ पतिव्रताथी खडीकरे स्नान उसी को पहिचाना॥ दौडके तोता चाय फिर उसके मुखमें समाना॥ वहां किसीका जोर चले नहीं क्योंकरहो उसका पाना॥फिर शिवजीने दिया वरदान कहाँ ये है स्याना॥वही हुये शुकदेव व्यासके पुत्र बडेथे यती सती॥ उत्राखंडमें लगा आसन०॥ अमरकथाका बडा महात्म्य है जो कोई सुनने जावें॥श्रवण कियेसे होय वोः अमर नहीं मरने पावें॥ चार वेद षट् शास्त्र अठारह पुराण सब इस्में आवें॥ अमर कथाको आप शुकदेव सदा मुखसे गावें॥ वोः पण्डित हैं बडे कि जो कोइ अमर कथाको सुनावें॥ एक एक अक्षर सदा कथाको मेरे मन भावें॥ जिस दिन शिवने कही कथा या कौनबार तिथि कौन हती॥ उत्राखंडमें लगा आसन० ॥ काश्मीर है स्वर्गपुरी काश्यपकी अव्वलहै कौशी॥ अमरद्वीपमें विराजे अमरनाथ शिव अविनाशी॥साल भरेमें लगता मेला श्रावणकी पूरणमासी॥ करते दर्शन ऋषि और मुनि साधू और संन्यासी॥ वही पुरुष जाने पाते हैं जिनकी करनी है खासी॥ कहे देवीसिंह नहीं फिर वोः नर भुगतें चौरासी॥ बनारसीने किये हैं दर्शन अब इस तनकी हुई गती॥ उत्राखंड में लगा आसन बैठे कैलासपती॥

शरीरमें काशी आदि लेके सब तीर्थ हैं बेहर बराबरकी–राग सोरठ ।

ये कंचन काया काशी॥ यामें बोलत शिव अविनाशी॥ जहां ज्ञान गंगकी धारा॥ जाको अंत न वारा पारा॥ यामें गोविंदगुरू हमारा॥ धर मनमें ध्यान विचारा॥

तोडा–नाम नाँव तैरें गंगामें केवट कृष्णमुरार ॥ दंडडांड खेवें नौकापर होजाय बेडा पार ॥ मन तो है सुन मरणकरणिका मनमें करो विचार ॥ इस तनुमें हैं तारकेश्वर तारो होय उद्धार ॥

दोहा–जस जल साँईं घाटपर, शिवका जगे मशान ॥ आनँदकी अग्नी बले, हैं ज्योतिरूप भगवान॥सुन मंत्र मुक्त होय खासी॥ यामें बोलत शिव अविनासी ॥ है पूजाप्रयाग अक्षय वट॥कर पुण्य पाप जावें कट॥ तू सुमती संकटा को रट॥कटे जन्म मरणके संकट॥

तोडा–इस तनमें है भाव सोई भैरवका थाना ॥ दया सोई है दुर्गा मैंने मनमें पहिचाना ॥ अगम निगम है अन्नपूरणा सब जगने जाना ॥ धर्म सोई धर्मेश्वर उनका सदा भजन गाना ॥

दोहा--शील सोई है शीतला कर हित चितसे पूजा॥विश्वरूपहै विश्वेश्वर और कोई नहिं दूजा ॥ है कृपा सोई कैलासी यामें बोलत शिव अविनासी॥ तुम वृद्धिविनायक जावो ॥ तन मनसे ध्यान लगावो ॥ सुमति सामग्री लावो ॥ चित चंदन चरच चढावो ॥

तोडा--इसमुखमें हैं वेद सोई है ब्रह्माकी बानी॥पांच इन्द्री पांच कोशमें बसी अवादानी॥पच्चीस तत्त्वका पँच कोशीमें फिरते नर ज्ञानी ॥ दशों द्वारकी सैर करे हैं पूरे सैलानी ॥

दोहा--हाथ पाँव त्रैकोनहै त्रयगुणहै त्रयशूल॥सुमिरणकीशक्ती बडी जिन सृष्टि रची मखमूल ॥ संतोष सोई संन्यासी॥ यामेंबोल शिव अविनासी॥इस तनमें बोध गया है॥ कोई ज्ञानी पुरुष गया है ॥ जिसे ब्रह्मका ज्ञान भया है ॥ वोः निशि दिन नित्य नया है॥

तोडा--तेतिस कोटि देईदेवते तनकाशीमें रहैं॥ संत बडे गुणवंत अंत जो मन काशीका लहैं॥सुनो इधर धर ध्यान छंद ये देवीसिंह जी कहैं ॥ राम नामका सुमरण करकर चरण प्रभुके गहैं ॥

दोहा--कहां लो मैं वर्णन करूं तनमें है त्रय लोक ॥ बनारसी बैठा इसमें पढे गीताके श्लोक ॥ लगी हरीके भजनकी गासी ॥ यामें बोलत शिव अविनाशी ॥

सखियाँ श्रीकृष्णसे अपनी मनकी कामना करती हैं-बहेर छोटी।

मन झोंके खारहा झुमकोंकी झोकोंमें॥दिल विंधा कृष्ण तेरी बालीकी नोकोंमें॥तुम पारब्रह्म हो निराकार अविनाशी॥फिर देह धार क्यों हुये श्याम व्रजवासी॥ओ प्रेम प्रीतिकी डाल गलेमें फाँसी सब मोहित की व्रजवनिता करलई दासी॥तुम तो कहते हम बाल यती संन्यासी॥फिर हमरे संग क्यों बने हो भोग विलासी ॥ नहिं लगता मन गीताके श्लोकोंमें ॥ दिल बिंधा कृष्ण तेरी बालीकी नोकोंमें ॥ तुम परमेश्वर हो हमसे भोग करोहो ॥ तुम कालके काल औ मृत्यु से नहीं डरोहो ॥ जिस वक्त वह मुरली अधरन बीच धरोहो ॥ सब व्रजवनिता का पलमें प्राण हरोहो॥ तुम प्रेम प्रीति रस नीतिसे हमें वरोहो ॥ अपनी गौंको तुम हमरे पाँय परोहो ॥ हम तुम्हें छोड कर जाँय न परलोकों में॥ दिल विंधा कृष्ण तेरी बाली की नोकोंमें ॥ वह विश्वकर्मा ने कंचन मन्द्र बनाये ॥ तुम आप नचे औ हमकों नाच नचाये ॥ शिव बनके गोपिका रहेस देखने आये ॥ तुमने उनको लिया चीन्ह तो बहुत लजाये॥तुम अंतर्यामी सब घट घटमें छाये ॥ तुमरी मायाका पार न कोई पाये॥तुम विन अपना मन पडे बडे शोकोंमें॥दिल बिंधा कृष्ण तेरी बालीके नोंकोंमें ॥ हम सब व्रजबनिता गौलोकते आईं ॥ सब हैं वेदोंकी श्रुती वेदने गाईं ॥ तुम आदि अंतसे कृष्ण हमारे साईं ॥ हैं धन्य हमारे भाग्य जो कंठ लगाईं ॥ कहे देवीसिंह और काशी गिरि गोसांईं ॥ हम बारबार श्रीकृष्ण तेरे बलिजाईं ॥ कोई ऐसा हुवा अवतार न त्रैलोकोंमें ॥ दिल बिंधा कृष्ण तेरी बालीकी नोकोंमें ॥

ख्याल निर्गुण-बहेर छोटी।

जो धुनियाँ होय तो अपनी धुन तू धुनबे॥ कोई लाख कहे मत

और किसीकी सुनबे॥मा कहे कि बेटा मैंने तुझको जाया॥ तू कहु उस्में मैंआपमें आप समाया॥और बाप कहे मैंने तुझको सिखलाया दे जवाब यह सब जगत्है मेरा बनाया॥जो मैं कहताहूँ इसी बातको गुनबे ॥ कोई लाख कहे मत और किसीकी सुनबे॥गर बहिन कहेके तू है मेरा भाई॥दे जवाब तू है कौन कहांसे आई॥सब झूठा कुटुंब परिवार और लोग लुगाई॥कोई नहीं हैअपना सब उसकी प्रभुताई जो मेरा कहा तू मान तो हो निर्गुणबे॥ कोई लाख कहे मत और किसीकी सुनबे॥ ले राम नाम की रुई उसे कर साफ ॥ भरतनमें अपने यही है तेरा गिलाफ॥सीं सत्त्वके तागेसे मत समझ खिलाफ॥ फिर लाख गुनः तू करे सब होवें माफ॥तू बाद बिनौलेको इस दिल-से चुनबे॥कोई लाख कहे मत और किसीकी सुनबे॥धुनकी धुनकी में तेजकी तांत चढ़ाना॥धुन अपनी धुनहरवक्त कृष्ण गुणगाना॥ यह देवीसिंह और बनारसीका बाना॥ जहाँ कलँमी तुर्रेका नहिं लगे ठिकाना ॥ वही वासुदेव वही निर्गुण वहो सिरगुनबे ॥ कोई लाख कहे मत और किसीकी सुनबे ॥

कुरानके मायनेहैं वह खुदा जानता है या हम जानते हैं बेहर छोटी-मायने बहुत मुश्किल ।

पैदा ये जमाना किया तो कह दिया कुनबे॥ गर फना करूं तो कह दूगा फैकुनबे॥मैं आप बना और आपबनानेवाला॥आपीहूँबंदा आपीमें हक्कताला॥ है मेरे नूरसे शम्समेंभी उजियाला॥ और माहो मुनव्वरको रोशन करडाला॥ मैं झूंठ नहीं कहता हूँ इसे तू सुनबे॥ गरफनाकरूं तो कहदूंगाफैकु नबे॥मेरी कुदरतसेजमींआसमांरोशन मेरी कुदरतसे मकांलामकां रोशन ॥ मेरी कुदरतसे गुलो गुलिस्तां रोशन॥मेरी कुदरतसे जहां दो जहां रोशन॥जो मैं कहता हूँ समझ ये मेरी धुनबे ॥ गरफना करूं तो कहदूंगा फैकुनबे ॥ मैं अपनी इबादत आप किया करता हूँ॥ना पैदहूँ मैं और कभी नहीं मरताहूँ॥

बेगमहूं मैं और किसीसे नहीं डरताहूं ॥ मैं अपनाही दम आप भरा करताहूं ॥ हैं सब गुण मुझमें महीं तो हूं निर्गुणबे ॥ गरफना करूं तो कहदूंगा फेकुनबे ॥ हूं इमाँ वोस्त कुछ दुईन मेरे दिलमें॥ मैं पहाड़ में भी और हूँ राई तिलमें ॥ मैं ही आबो हवा आतिश औ महीं हूँ गिलमें ॥ ये देवीसिंह कहे बनारसी महफिलमें ॥ मेराही बनाया कुरां वेदकी धुनबे ॥ गरफना करूं तो कहदूंगा फैकुनबे ॥

बहुत मुश्किल मायने शम्सतबरेज होता तो समझता

बहेर लँगड़ी।

कुनसे पैदा किया और कुनहीं कहके फना करदूं तो क्या ॥ ना पैद हूँ मैं औ चाहे जहां मैं पैदा हूँ तो क्या ॥ तुम तो कहते खुदा नहीं पैदा होता ना पैदहै वोः ॥ मुझको देखो तो मेरे बीचमें तो मुस्तैदहै वोः ॥ चाहे पैदा हो या न होवे खुदा नहीं कुछ कैद है वोः ॥ अपने बंदे की तो पूरी करता उम्मेद है वोः ॥

शैर--उसे अख्तियार है चाहे सुबह को शाम कर देवे॥वोः काफिरको मुसल्मां कुफ्रको इसलाम कर देवे ॥ किया कुनसे जहां पैदा औ कुनहींसे फना करदेवे ॥तुम्हारा क्या इजारा वोः जो चाहे काम करदेवे ॥ तुम तो मायने और कहो मैं और मायने लिखूं तो क्या॥ ना पैद हूँ औ चाहे जहां में पैदा हूँ तो क्या॥ जितनी किताब दुनियामें तौहीद बयां सब मेरा है ॥ मैं हूँ लामकां अगर पूछो तो मकां सब मेरा है ॥ नहीं मेरा कुछ नामो निशां और नामो निशां सब मेरा है ॥ तुम नहीं वाकिफहुवे येः जहाँ दो जहां मेरा है ॥

शैर--जबांसे मैं कहूँ तू बनतो वह दम में बिगड जाये॥अब इसके मायने पूछूं तो मुझको कौन बतलाये ॥ कुरांके मग्जकी लज्जत तो मेरी इस जबां परहै॥और हड्डी फेंक दी मैंने उसे कुत्ता हो सो खाये ॥ तुम तो कुरांसे वाकिफ नहीं मैं तुमसे सुनूं ना सुनूं तो क्या॥ना पैद हूँ मैं औ चाहे जहां मैं पैदा हूँ तो क्या ॥ मुर्शदने जो बात बताई

वही पढ़ूं और कुरां नहीं ॥ कुल कुरानके मायने इसीमें तो खुल जाँय वहीं॥ जितने मायने कुरानके मैं जानूं और कहीं सुने नहीं ॥ जिसको ख्वाहिश अगर कुछ हो तो फिर कहदूँ मैं यहीं ॥

शैर--अगर मेरी खुशी हो तो मैं उसको साफ बतलाऊं॥जो बंदा हो खुदाका तो खुदा मैं उसका कहलाऊं ॥ न बंदे में खुदामें फर्क है मुस्से यः तुम सुनलो ॥ शरयको फाड़के फेंको तो फिर मैं तुमसे मिल जाऊं ॥ कभी न खटके जिगर पै कांटा लाख-दार पर चढ़ूं तो क्या ॥ ना पैद हूँ मैं औ चाहे जहां मैं पैदा हूँ-तो क्या॥जैसे पोस्तका खेत कि उसमें कहीं कोई गुह्यालय फाम॥ इसी तरहसे आदमी बहुत हैं पर कोई सरनाम ॥ कुरानको पढते हैं बहुत पर खुदासे कुछ नहिं रखते काम॥घरमें जोरू जो व्याह लादे वो उसीके बने गुलाम ॥

शैर—सुवह होते ही उनको फिक्र रोजीका हुआ भारी ॥ हुई जब शाम तो समझे कि जोरू है मेरी प्यारी॥ उसीके साथ सो-ये और करी उस्से बहुत यारी ॥तो आखिरको कजाने एक दित उनकी वोः जां मारी ॥ बनारसी कहे उनसे काममें रक्खू यानां रक्खूं तो क्या ॥ ना पैद हूँ मैं० ॥

इश्क पाक बुतोंका मार्फत बहेर डेवढी ।

भेद कोई बुतों का क्या पावे॥ पाक मुहब्बत करो तो जलवये खुदा नजर आवे ॥अगर ये चाहे करें दिल संग ॥ तु कर दिलको मोम तो येः भिर होजांय तेरे संग॥ये लेके तेग करें चौरंग॥ तु दे सरको झुका तो फिर देखे उलफतका रंग ॥ये गरहैं शमा तो तू हो पतंग ॥ लगादे लौमें लौ अपनी मतरख इस दिलको तंग ॥

दोहा—अव्वल तो येः जला जलाकर करें तुझे ताजीर॥ फिर पीछे हो रोशन तेरा नाम बने अकसीर॥तु मत इस दिलमें घब-रावे॥ पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नजर आवे ॥

ये दिलबर हैं मेरे दिलके ॥ खुदामिला पीछे हमकोपहिले इनसे मिलके॥ हाल सुन इस दिल बिस्मिल के॥ कत्ल हुये तौभी शिकवे नहीं किये उस कातिलके॥ ये गुलहैं अजब आबो गिलके॥ अव्वल थे गुंचेसे गुंचे गुल हुये खिल खिलके ॥

दोहा—बागे इश्क में ऐ दिले बुलबुल गुलों की देख बहार॥ खार अगर्चे चुभे तो उन कांटों पर आसान मार॥ वही फिर गुलशनहोजावे॥ पाक मुहब्बतकरो तो जलवे खुदा नजर आवै॥ वोः हैजुल्फोंमें जहर इनके॥ इसे जहर मत समझ यही है लहर बहर इनके॥ लगेहैं वोः वोः इतर इनके ॥ हर यक तरावटसे बेहतर हैं गेसूतर इनके॥ पेंचमें पडे अगर इनके॥ हरएक फंदसे वाकिफहोवे वही मगरइनके॥

दोहा—जिसका दिल दिल्दार की ज़ुल्फों में बिखरे॥ देखेनिखरे बाल निरखके तो ये दिल निखरे ॥ वही उलझावे सुलझावे ॥ पाक मुहब्बत करो तो जलबये खुदा नजर आवे॥ हैं इनकेअजब कटीले नैन॥ करें चोट पर चोट बने हैं गजब चोटीले नैन॥ बुतोंके छैल छबीले नैन॥ काले गोरे लाल रंगमें रंगे रँगीले नैन ॥ बहुत रस भरे रसीले नैन॥ सबके ऊपर उनकी नोक है वोःहैं नुकीलेनैन॥

दोहा—जो कोइ इनको पाक निगाहसे देखे आशक आन ॥ उसे दिखाई इन्हीं बुतोंमें देवे उसकी शान॥ रूप वो अपना दिखलावे॥ पाकमुहब्बत करो तो जलवे खुदा नजर आवे ॥ जिसने इन बुतोंको जाना है ॥ उसी को जाना मिला हुआ जिसका वहां जाना है ॥ इनका लामकां ठिकाना है ॥ वहांसे उतरा नूर वह इनके बीच समाना है ॥ सखुन मेरा आशिकाना है ॥ जिसने सुना एत् काद से वोः आशिक मस्ताना है ॥

दोहा—समझ आशक की रमूजें और कर दिलको हुशियार॥ देवीसिंह यः कहे हुआ ताहीद छद तय्यार॥ मार्फत बनारसीगावे॥ पाक मुहब्बतकरे तो जलवे खुदा नजर आवे ॥

ख्याल जिस्मकी मस्जिदका मयतौहीद पीते हैं ।
बहेर लँगडी ।

आज दुगाना पढूंगा मैं मस्जिदमें मस्तो चलो वहां ॥ शीशा सागर सुराही मीना और मय धरो वहां॥मयसे करके वजू मुसल्ले-कोभी मयसे तर करदो॥खुदा है राजी दूर अब कुल दुनियाका डर करदो ॥ शेखो मुहतसिब मिले वहां तो पकड उन्हें बाहर करदो॥ छीनलो मस्जिद तुम उनसे अपना वहां पै घर करदो ॥

शैर--जो तुमसे बोले वोःकुछ बात तोतुम उनसे कहो ॥खुदाका घरहै यहां हमभी रहें तुम भी रहो ॥ मस्त हो करके फिरो छोंडदो इस दिल पै सहो॥पियो मय साथ हमारे न रंज जीपै सहो॥चलो जरा मसजिद के भीतर यही लिखा है पढो वहां ॥ शीशा सागर सुराही मीना और मय धरो वहां ॥ करके शुक्र अलहम दुलिल्ला झुकाके सर और गठाके जाम ॥ लगालो मुँहसे खुदाकी वहां इबा-दत करो मुदाम ॥ लाइलाह इललिल्लः अल्लाः हू अकबरका लेके नाम ॥ यही है कलमा कुरांमें लिखा खुदाका यही कलाम ॥

शैर–पढो न इसकेसिवा तुम करोन गुफ्ते शुनीद॥गलेसेउसको लगालो खुशीसे देखो ईद ॥ खुदाने तुमको यःमस्जिद जो दी है जिस्म·वहीद ॥ इसीमें उस्से मिलो है उसीमें उसका दीद॥पहिले दिलको साफ करो फिर पीछे उस्से मिलो वहां ॥ शीशा सागर सुराही मीना और मय धरो वहां॥ बडे बडे बलियोंने मय पीकर दिलको सेरीहै करी॥अबकी दौरहै हमारा और बारी मरी है करी॥ ऐदिल तुझसे कहूं तु पी झटपट अब क्यों देरी है करी ॥ खुदाने मस्जिद ये तनको तौफा अब तेरी है करी ॥

शैर–बनाये उसकेसिवा कौन यह मीनारोंको॥औरबख्शे उसके सिवा कौन गुनःगारोंको ॥ बुरा कहते हैं जो ऐसे भला मय खारों-

को॥खुदा दोजखमें तो भेजे उन्हीं हजारोंको॥अय मस्तो तुम डरो नहीं मस्जिदमें चलो मय पिवो वहां॥शीशा सागर सुराही मीना औ मय धरो वहां॥हाथ उठाकर करो शुक्र जो तन मस्जिदमें आये हो॥साथ में अपने नूर तुम हकतालाका लाये हो॥मय भी उसी की बनाई और तुम उसहीके तो बनाये हो॥ पिवो ना पिवो बुरा मत कहो जो भले बनाये हो ॥

शैर–बदी करना ही बड़ा ऐब है इनसानोंको॥आदमी पीते हैं मिलती नहीं हैवानोंको॥बात यह मेरी सुनो खोलके जो कानोंको॥ बुरा कहो न जबाँमें भला दिवानोंको॥बनारसी कहै खाली हाथमत-जामस्जिदमैंगिरोवहाँ॥शीशासागरसुराहीमीनाऔरमयधरावहाँ॥

होली मस्तीमें, शराब अंतहूरा की, शेखजी औ हम खेलैं तौहीद–बहेर लँगडी।

आज शेखजी खेलो होली मस्जिदमें लेचलो शराब॥ जिगर-को अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब॥कोई शीशामें सुर्ख गुलाबी किसीमें केसरका रंगहो॥खुशीसे खेलो तुम होली कभी न इस दिलसे तंग हो॥जो उस्की मस्तीमें खेले होली खुदा भी फिर उस्के संग हो ॥ ऐसा दंगा मचे मुहतसिबकी भी अक्ल दंग हो ॥

शैर–लगादो आग जहांके सभी मयखाने में॥औ लावो भरके सुराही पियो पैमानेमें॥तुम उसकी मस्ती में खेलो हमारे संग होली॥ धूम ऐसी मचे देखें सबी जमाने में ॥ कोई आपको देवे गालियां उसको भी मत कहो खराब॥जिगर को अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब॥और शौक गाने को हो तुमको तो मैं ले आऊं बीनो रबाब॥डफ ढोलक भी बजे और शराबमें हो मिला गुलाब॥उसकी खुशबू दिमागमें पहुंचे तो वोः हो चश्मोंमें आब॥जिसकी लाली देखकर प्याली गिरपडे शहाब ॥

शैर–ये रंग वोः है कि चढजायतो उतरे न जरा॥ये यह प्याल

वोः है कि खाली न हो कुदरतका भरा॥ये वोः मस्जिद है जिस्मकी के इसमें है वोः खुदा ॥ देखा जिस जिसने उसे इस्में वोः हरगिज न मरा॥इसीमें खेलो उस्से होली शेखजी मैं कहता हूं सिताब ॥ जिगरको अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब॥साकी तुमको भरके जामदे रंगो उसीसे अपना दिल॥ वही खुदा है तुम उस्से लपट झपट खेलो हिलमिल॥ऐसे प्याले पिओ कि जिस्से बेहोशी होजा कामिल॥तौ फिर मैं भी शेखजी आपके होजाऊं शामिल॥

शैर-यह दुनिया कुछ नहीं झूंठा अजब तमाशा है॥कोई रत्ती कोई तोले औ कोई माशा है॥जिस तरह होलीमें उठते हैं यारो यह स्वांग॥ उसी तरहसे उठेगा ये सबका लाशा है॥ जो कुछ खाना पीना हो सो खालो और लुटा दो सब अस्वाब॥जिगरको अपने जलाओ भूनके उसका करो कबाब ॥ ऐसी होली किसीने खेली नहीं जो खेलें हम औ तुम॥मय वहेदतके किसीको कहां गयरसे-रहैं ये खुम ॥ उसकी खुमारी में किसीसे कुछ न कहो तुम हो जाव गुम॥अगर कहो तो फक्त इस जबांसे अपनी कहदो कुम ॥

शैर-चलें वोःगोरसे मुर्दे निकलके जो हैं मरे ॥ तो खेलें फिर से वोः होली रहैं हरे वोःभरे॥सदा यह कुमकी है ऐसीके ऐसी और नहीं ॥ कि जिस्से मुर्दा भी जीता है फिर कभी न मरे ॥ देवीसिंह कहे बनारसी है शेख जी ये दुनिया सब ख्वाब॥ जिगर को अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब ॥

इश्क जिस जिसने किया सबके नाम पाक मुहब्बत-बहेर लँगडी ।

इश्क बहुत मुश्किल है तुम इसका करना मत समझो आसान॥ पूंछो उस्से कि जिसने खपाई है उल्फत में जान॥अव्वल मजनूसे पूंछो वो इश्कका क्या करता है बयान॥दोयम लैलासे पूंछो लगाके उसकी बात पे ध्यान॥सेयम सीरींसे पूंछो और सुनो तुम अपने

खोलके कान ॥ और चहारुम कोहकनकी कहती है यही जवाब॥ जान गई तो बलासे पर दुनियामें बना रहा नामो निशान॥पूंछो उस्से कि जिसने खपाई है उल्फत में जान ॥ और पूंछो मंसूरसे जिसका दारकेऊपर बना विमान॥सर्मदका सर कटादेहलीमेंलगा झूठा तूफान ॥ और शम्सतबरेज ने मुर्दा जिलाके डाली उसमें जान ॥ तिसपर अपनी उतारी खाल किया नहिं कुछ अरमान॥ आशिक तोहै वही जान देके भी करे नहीं मान गुमान॥पूंछो उस्से कि जिसने खपाई है उल्फत में जान ॥ रांझेने भी छोड सल्तनत इश्कका ओ पकडा मैदान ॥ और हीरने इश्क रांझे में इश्कको डाला छान ॥ हाफिज भी गर सुने कानसे दिवान हाफिजकावोः दिवान॥ तौ सब भूले उसीपर लायें वह अपना ईमान॥ मैं तो यही कहताहूँ इश्क नहिं जिसे वह है मिस्ले हैवान ॥ पूंछो उस्से कि जिसने खपाई है उल्फतमें जान ॥ मैं भी एक आशिक हूँ इश्कमें रातो दिन रहता गलतान ॥ लाख इबादतसे बढकर एक इश्कको लिया है मान ॥ देवीसिंह ये कहे इश्क तुम करो वोहहै मौलाकी शान ॥ जिसने इसको किया फिर मिला उसे वह हक्कसुभान ॥ बनारसीका इश्क है कलमा पढै तो हो जावे मस्तान ॥ पूंछो उस्से कि जिसने खपाई है उल्फत में जान ॥

मसनबीदर सिफत काश्मीर जन्नते बेनजीर।

धरामैं प्रथम शारदा जीका ध्यान। हुआ उस्से मनमें मेरेब्रह्म ज्ञान॥
उपासकहूँ मैं तो सदा शक्तिका। मिला उस्से रुतबामुझेभक्तिका॥
बिना भक्तिके मुक्ति होती नहीं। सिवा ब्रह्मके और ज्योती नहीं॥
निराकार में देखो आकार है। चराचर उसीका यह विस्तारहै॥
बनाये उसीने यह शम्शो कमर। जिधरदेखाउस्कोवहहैजल्वेगर॥
हुई चश्ममें जिसके रोशन निगाह। उसीको मिलेहै फिर उसघरकीराह
दयाअपनीजिसपरकरेंकृष्णराम। बसे उस्के दिलमें वही आठोंजाम

रहे उस्को दुनियाँ न दींकी खबर। रहे नूर यह उसके पेशोनजर ॥
जमाने के फिक्रोंसे बेफिक्र हो ।जबांपर न उस्से कोई जिक्र हो॥
अजलसे सुना जोहै बन्दा नमाज।अबूदतकरहेगावोहीकारसाज॥
उसीके करमसे हुआ मैं फकीर ।गदाईमें पहुँचे न मुझकोअमीर॥
कि हैं लोग जर्रे में हूं आफताब । उसीनेयहदीमुझकोहैं आबोताब
कि जल्वा है फैला मेरा चारसू । जो बुलबुलहैं शैदामेरेलालरू॥
उसीने किया मुझको है बेनजीर। दिखायाहै एक आनमें काश्मीर॥
नहीं मैंने देखी थी ऐसी जमीं । फलकचर्खमें देख नकशोनगीं ॥
हैं जर्रे यहां के तोसबआफताब। चकोरों पे मायेलसदा माहताब॥
वहां जातेही दिल्को ताकत हुई । जो ताकत हुई तो इबादत हुई ॥
किया बैठकर खुद वहां मैंने जाप ।तो आपेमें देखा वोःअपनाहीआप
हुई दिल्की जाती रही एकबार । नजरमुझकोआयावहपरवरदिगार
जिधरको नजर की उधर है खुदा। खुदातो न मुतलक है मुझसेजुदा
वही राम है और वही है रहीम । वही कृष्ण है और वहीहै करीम॥
वही हम्में तुम्मे है बैठा निहां। पलकपरवोही और वोही है यहां॥
वही अर्क गरदनसे हैगा करीब।वोही सबका आशिक वोहीहै हबीब
पर एकबात इस्मेंहै मुशकिलबडी।दुईकी है चादर नजरपर पडी॥
हटे बिन न उसके कोई सूझता ।नअपने परायेको है बूझता ॥
जो उस्को हटावे तो होवे फकीर।नहीं तो दुनियामें जीना हकीर ॥
भलागर फकीरी न हो तो यह हो।किदिलसेकरेउसकीकुछयादतो॥
भलाहो इसीमें यह वह बातहै। नहोजिस्मेंयहवहबदओकातहै॥
फकीरीका है दूर हरचंदराज । नहीं कुछ जो होमेहरबाँये नियाज
फकीरी भी करना न आसानहै। जोवहचाहेखालिककीबसशानहै
यहांतक किया मैंने इस्को तमाम।सुनो इसके आगे मेराअबकलाम

तारीफ काश्मीरके आबो हवाकी ।

पिलामुझकोवहदतकीसाकीशराब।किजिस्सेयहदिलहो मेराआफताब
रहूं सुर्खरू सबके आगे मुदाम।लबालब तू भरदे मेरा आके जाम

वह पीतेहीहो दिलमें जोशे जनू। के आये नजर रंग बस गूं न गू ॥
गमे दीनो दुनिया फ़रामोश हो । जो देखे मुझे मस्त मदहोश हो॥
हो जब फूलसेदिल मेरालाला गूं। तोयह शेर अपना रकम मैं करूं॥
बनाया खुदाने अजब काशमीर । बहिश ते वरीं है जिसका नजीर॥
न देखा सुना और न होगा कहीं। कहीं मुल्क ऐसा नहीं है नहीं ॥
जहां सर्द है गरमियें आफताब ।खिलज माहरूयों से है माहताब॥
हसीनों की हर सिम्त जलवे गरी। हर एक जर्रे जूं जोहरे मुशतरी ॥
इबादत की जाहै फकीरीका घर । गरीबोंका दाता तवंगरका सर ॥
लडकपनमें कुछ रोग होता नहीं। जवानी में भी सोग होता नहीं॥
बुढापे में भी कुछ नखौफो खतर।वह उत्तरकी धरती न मरनेका डर
हकीमोंकी हाजत किसीको कहां। मसीहा को पूंछे न कोई वहां ॥
वह मोतीसे पानीमें तासीरे शीर।उसी आबपर है बसा काशमीर॥
है पानी वहांका वह आबेहयात ।पिये नींमजां तो करे उठके बात॥
वहां जाय कैसाही बीमार हो। वह पानी पिये दूर आजार हो ॥
जबाँ साफ होजाय गर हो जईफ ।हो तैयार कैसाही मो हो नहीफ॥
करे खिद्रभी वांके सब्जी की सैर ।न दिल माने हर रोज जाये बगैर
गिजा वां जो खाये सोतहलील हो।होताकतवह पैदा खिजलफीलहो
फिर आजार उसकेन नजदीकआय।पियेआबऔरवांकेमेवेजोखाय
बदन आईना सा भी चमकेतमाम।करे गुस्ल हम्माम में जो मुदाम
नहीं धोके खाये जो जरदापुलाब ।कभी जिस्ममें उसके आये नताब
किसीको जो उस्से वोः परहेज हो।तो मेवे में खुशका वह आमेज हो
उसीको शबो रोज खाया करे । सदा बहेर तफरीह जाया करे॥
हकीमों का कोई नवाँ यार है । कोई नामको भी न बीमार है॥
न वैद्यों की गोलीका कुछ कामहै।सदा वाँ मरीजों को आराम है
तपेदिक्कसे दिक्क कोई होता नहीं ।कोई दर्द सरसे भी रोता नहीं॥
न खाँसी न खुर्रा न सरसाम हो।जोबीमार जाये तो आराम हो॥

वनफ़शे के गुल वर्ग गाओ जुबाँ। सदा गाएँ खाये मैं देखा वहाँ॥
हर एक शख्स पीता है उस शीरको।कहो किस्तरह कोई बीमार हो॥
वहां वेदमुश्क इस कदर है सगा । मरीजों को वांकी हवा है दवा॥
करैं बुलबुलें गुलपे बस चहचहे । कहीं कुमरियोंके मचे कहकहे॥
गमो रंजसे सर्व आजाद सब ।जो देखातो मुर्गेचमनशादसब॥
खिजाँका किसीगुलको हरगिज न खार। रहेहरचमनमेंहमेशा बहार
वहांका जोहै हाल जाहिर किया।यह किस्सायहांमैंने आखिरकिया

दास्तानसिफतमें हुस्न काशमीर की ।

पिला साकियाभरके वहजामेंनूर।की कुदरतका आयेनजरबसजहूर
अयाँ जलवा हो हर तरफ नूरका । समाभूले मूसाभी बस तूरका ॥
गया जबसे मैंजानिबेकाशमीर।लगा दिलपे मेरेएक उलफतका तीर
जहांके नखूबाँमें ऐसी फबन ।हैं जो माहरूयों के वाँका चलन॥
वह मैलेसे कपडों में उजलासा तन।गोया अब्रमें माहचरखेकोहन॥
फटे पैरहन हैं मैं क्या दूँ मिसाल।छुपा जिसतरह होवे गुदड़ीमें लाल
न जेवर बदन में न कपडे दुरुस्त । मगर हुस्न खूबीसे बालाँकोचुस्त
न चोटी न कंघी न मिस्सीनपान।बनावटनहींकुछमगरआलीशान
वहांगर बनावट का होता चलन।तो फिर हुस्नअपनी दिखाताफबन
बिगाडे से भी कुछ बिगडता नहीं। बनावट वह रखतेहैंवांमहजवीं
न चादर दोपट्टे न महरमसे काम । फकत एक चोले में चोलातमाम
वदन नाजनी उसपे कुरताहै एक।यह खूबीहै उन्मेंकेसबहैंवहनेक॥
जो बैठे कोई तो बिठायें उसे । कभी आपसे ना उठायें उसे ॥
न फूलोंके गहने न सरमें भी तेल।नपावोंमेंमेहदी न अतरो फुलेल
है उसपर हरएककी धहबांकीअदा।किउनकी अदापर अदा है अदा
बुरासा लिवासओर भलासा वदन।भलोंको लगे सब भलापैरहन
बिगडनेमें भी उनका दूनाबनाव।भली बात हरएकअच्छासुभाव॥
बुरा कोई होवे भलोंके जो साथ।भलेउम्रभर उस्का छोडें न हाथ
जिसे हुस्नकी कुछ परखहोअगर।वहकपडोंपैमुतलकनडालेनजर॥

हरएक पैरहनमें वोः रशके कमर । कि जो अब्रमें माहहोजलवेगर॥
न जेवर को देखो न पौशाकको। जो देखे तो उससूरते पाकको ॥
के यूसुफ भी जिसका खरीदारहो। बस ज्यों हुस्नका गर्म बाजारहो॥
वहचेहरेपेसुर्खीभी जोंआफताब।वहयामेंहरनिकलाउलटकरनकाब
अगरसरखुलारुखपेबिखरेहैंबाल। तो है काकुलेहुस्न परसाफबाल॥
फसाया है वां शोलये लूरको । रखा दाममें शमअये तूरको ॥
जहां में न ऐसा कोई है दयार । कि है हुस्नकी खुदबखुद वां बहार॥
है चीने जवीं मेहर की या किरन। हुई दूनी कश्केकी उस्पर फवन॥
जबींमाहे ताबां तोकश्का हैचांद। कियाहुस्नयूसुफकोभीजिसनेमाँद
जिसे देख बेताबपुरदर्द हो। सदा चश्म तररंगे रुखजर्दहो ॥
किसीकाहैं माथा सफाईकेसाथ। महो मेहर देखेसे मलते हैं हाथ ॥
वरेहमन कोई और मुसलमांकोई। नमाजी कोई बुतका खांहाकोई ॥
वोः चेहरे पे दोनों के हैं खूबियां। नुमायां अदाओंसे महबूबियां॥
झुके हैं वो अबरू अजब आनसे। खिचे जैसे तेगे हों बस म्यानसे ॥
तअज्जुबहुआ जो किया मैंने दीद। मेहे चारदहपर के है माहे ईद ॥
जबीं और अबरूसे खुशहो कमाल। केबाहम हुयेहैंगे वदरोहिलाल
नई है ये निसबत नई मसनबी। वह समझे इसे जो हो शायरकवी
मिजें हैं नुकीलीवहनसतरसेतेज।वहआँखें कटीलीहैं खंजरसे तेज॥
जो खूनी हैं आँखें मिजे तीर हैं। जो वह सूर हैंगी तो वह वीरहैं ॥
कनाखियोंसे जिसको इशारा करें। सदा जीतेजी उसकोमाराकरें ॥
सिया पुतलियोंमें वह जादू भरा। नजीता बचे जिसको देखेंजरा॥
सफेदीमें डोरे गुलाबी अयां। कहें मस्त जिनकोशराबीअयां॥
वह रुखसार देखेजोशम्शो कमर। तो हैरतजदा बस फिरे अर्शपर॥
वह बीनी के खुदबी रहें ताकमें। और आजाय घबराकेदमनाकमें
दुहन साफ गुंचेसे भी वसके तंग।वहलबजिस्सेलालेयमनभीहैदंग
जबां बर्ग गुलसेभी हैं नर्म तर। वह दन्दां कि वे आबजिस्सेगोहर

चमक उनसे इल्मासकी है बनी । न क्यों हीर हीरेकी खाये कनी ॥
वह बातें हैं उनकी कि क्या बातहै। है ये जाज याकी करामात है ॥
सखुन उनका शीरीं जो शीरींसुने। सदा फीकी होके वह सरकोधुने॥
कबी जकनसे जो चमक माह में । कुंयें झाँके यूसुफ सदा चाह में॥
वहमीनासी गरदनजोआयेनजर।सुराही वोः मीनानहो जलवेगर॥
वह हैदस्तनाजुकसखावतकेसाथ। केहरगिजकिसीकेभीआयेनहाथ
किसीकी जो पहुँचीपे पहुँचीनजर । तोजूं माही तडपाकरे उम्रभर॥
कलाई जो देखे कल आये नहीं ।दिलउसका उनहाथोंसेजायेनहीं
हरएकशाखमरजाँसेअंगुश्त लाल।हैनाखूंभीसबरसकेवदरोंहिलाल
शिकमनर्ममखमलसेभीवह सिवा। हैमहताबभीजिसपेदिलसेफिदा
कभी भूलके सीनये साफ को । जो आईना देखे तो हैरानहो ॥
चमकतीहैं तारासीभीउसमें नाफ।वहबहरेनजाकतकागिरदावसाफ
कमरसेभी शरमाये चीता सदा ।जवांसेसिफत भी न होवे अदा ॥
वह रानेंभी बिल्लोरके हैं सितूं । जो देखे वह हैरानहो और जुनूं॥
अगरमाहीकी शक्लमें पिंडलियां । वह याशम्मे फानूस में हैं अयां॥
सिफतपायनाजुककीमैं क्याकरूं । झुका सर कलम हाथसे बसधरूं
थी एडीमें सुर्खी अजब आनसे ।कि लाली हो कुरबान जी जानसे
सरापा है उनका अजब नूरका ।कि कुरबान दिल जिसपेहैहूरका॥
अब आगे जबां मेरी खामोश है । बयां क्यां करूं कुछ नहीं होशहै॥

दास्तान महाराजा रंजीतसिंह सच्चे बादशाहकी बहादुरीमें ।

पिलासाकिया बाद ये होशमन्द । कि बामें फलक परमैंफेकूंकमंद॥
जरा जल्दी भरके तू देजामे वीर । फतहकरलेरंजीतसिंहकाशमीर॥
तजलज़ुल हो रुस्तमदिलोंकोयहां। लिखूं कारनामा कुजा दास्तां॥
कि रंजीतसिंहथा जी शाहे जहां । जमाने में मशहूरथा बेगुमां ॥
कोई उसके सानी न पैदा हुआ । जो पैदा हुआ उसका शैदाहुआ॥

हुआ माहको उसके दरसेकमाल।सदामाहरूयांथीजरेंह मिसाल ॥
फलकभी रहे सरपे साया किये।मलक चूमने पांव आया किये॥
कहूंक्या मैंअबउसकीजुर्रतकाहाल।कियाउसनेरुस्तमकोभीपीरजाल
सखावतवहहातिमसेभीकमनथा । गदाओंकोबसशाहकरतासद॥
न समझा जरा वह किसी वीरको।सुना लेलिया दम्में कश्मीरको॥
बहादुर वह ऐसाही जुर्रतका रंग।कि जीता न उस्से कभी कोईजंग
वह पंजाबका शाह आलीजनाब।सुनोउसकाथाशाहबाला खिताब
सभी उसको कहतेथे सच्चाहै शाह।जहां परवरो शाह गेती पनाह ॥
फकतअपनेदमसेकियाउसनेराज । बहुत शाह देतेथे उसकोखिराज
किया फतह बस मुल्कलाहोरका ।लिया छीन गढ उसने फुल्लौरका
मचीउस्सेसुल्तानसेफिरवहजंग । हुई खाने जंगी पठानोंके संग॥
हजारों को मारा भगाया उन्हें । हर एक मोरचे से हटाया उन्हें ॥
कियाफतहफिरमुल्कमुल्तानका । लिया लूट गढउसने सुल्तानका
लिया छीन इल्मास वह कोह नूर । कि जिसकाबडाहिन्दमें है जुहूर
हुआ जबके गालिब वह लाहौर पर।चढाई फिर उसने की पेशौरपर
लिये साथमें अपने पैदल सवार । वहहाथीके हलकेशुतरकीकतार
थे वह तोपखाने भी बस आलीशां। जिसे देख हैरतमें सारे पठां॥
वहकुछफौजपहुँचीअटककेजोपास ।वहां उडगये सबकेहोशो हवास
वह दरिया कहर औरपानीका शोर।बहेइसकदर वां चले कुछनजोर
जो रंजीतसिंह उसके पहुँचा करीब ।कहा दिलमें मेरा है मौलाहबीब
किया याद हमको किनारे ठहर।दियाडालफिरउसमेंबससीमोजर॥
औरअपनाभीघोडादियाउस्मेंडालनुमायांकियाथाजीअपनाकमाल
वह दरिया जोबहताथाबस थमरहा।बडीदेरतकफिर न पानी बहा॥
उतरने लगे फिर तो पैदलसवार । खुदाके करमसेहुयेसब वहपार॥
जो निकला वहरंजीतसिंहकातुरंग।तो दरियामें उड़नेलगेसबसुरंग॥
जो पीछेरहे वह बहेऔर मरे । बचे वह अटकसे जो पहुँचेपरे ॥

जहां शाहकाबुलकीथीधूमधाम।पडाथावहींउसकालशकरतमाम॥
इधरसे यह बांकर्णे फर अहलेशां।वहीं जाके पहुँचा जहांथे पठां॥
सवारोंका पैदलका नाथा शुमार।बँधीथीकईकोश तक एक कतार॥
जमीं थी न खाली धरेजोके तिल।सवार और पियादे गये ऐसे मिल
हवाको न मिलतीथी जानेकी राह।हुआ गर्द उडनेसे गरदूं सियाह॥
वहलशकरजोदोनोंकेमुकाबिलहुये।सोमतलबदिलोंकेबसहासिलहुये
मैं दोनों के दलका करूं क्या बयां।इधरसिक्ख थे औरउधर थे पठां
उधर नो जवां तेज असवार थे।इधर सिक्ख घोडोंपे तैयार थे ॥
उधर तोपखानों के थे मोरचे। तो यहघुढ़चढीतोपें लैकरचढ़े ॥
थीं आगे जो तोपें तो पीछे सवार।थीफिरपैदलोंकीबँधीएककतार॥
पठानों का था उसतरफ मोरचा।इधर लशकरे जंगी इसका खड़ा॥
बिगुल जबहुआ दोनों सू जंगका।तोफिरजंगीबाजाभी बजनेलगा॥
लगा मारने यह इधरसे गिराब।कहाफिरसवारोंसेपहुँचेशिताब ॥
कहा पैदलोंसे के आगे बढ़ो । किले पर तो पेशौरके जा चढ़ो॥
गिरे जबके गोलोंसे लाखों जवान।तो करतेगेंनंगीदियाफेंकम्यान॥
हुई वाँ जदालो कतल इस कदर।किलाशोंसे मैदाँ गया साफ भर॥
गिरे धड़पे धड़ और सरपर भी सर।जमीं खूनसे होगई तरबतर॥
सुनो खूनके ऐसे दरिया बहे। हबाब आसासर उसमें बहतेरहे ॥
फिर आखिरको रंजीतसिंहके सवार।घुसे इस्तरह जैसे सावनमेंतार
लिया छीन दम्में वह पेशौरको।दिखायाफिरउसनेतोइसतौरको॥
केजिस्सेडरेसबमुगलओपठान।गये भाग काबुलको सारेजवान॥
बहुत शाह काबुलने तारीफ की।कहा सबसे रंजीतसिंहहै बली ॥
न उस्से कभी कोई जीतैगा जंग।केपीरो पयम्बरहैं सबउसके संग॥
वह दुश्मन जो तारीफ करने लगा।तो रंजीतसिंहनेभी दिलमेंकहा॥
सखावतसे हैगा बहुत यह बईद।शुजाअतसेभीबात यह है शदीद॥
कि लैलूं तमामी मैं मुल्को जमीं।कहेंगे भला क्यामुझे नुकते चीं॥
तसव्वर यही करके एक बार फिर।गयाथाजोवोःशाहफौजोंमेंघिर॥

दियाउसकोकाबुलवहखानेकोछोड।वहाँसेदियाफौजकोअपनीमोड
वहाँ कुछ रिसालोंको तानातकर।कियाखुशउन्हेंऔरदियामालोजर
रअय्यत फिर आरामसे सब बसी। कमरफिर:वह रंजीतसिंहनेकसी
कहा फौजसे अब चलो काशमीर । हुयेसबवहहाजिरजोथेखुर्दोपीर
लिया फौजने घेर सारा पहाड़ । दिये मोरचे उनके दम्में उखाड़॥
तो रंजीतसिंहने सवारों के संग ।वहकीहरतरफउनपहाड़ोंपेजंग॥
कि हैरां हुये साकिने काश्मीर । परेशांथे दिलमें सगीरो कबीर ॥
थेपंडितजोएकफिरवआकरमिले।गुलस्तानरनमें अजबगुलखिले॥
बताया इन्होंने हरएकरास्ता । जोलश्करथा जंगी, वहआरास्ता॥
पहाड़ों की थीं घाटियाँजाबजा। दिखाईवहसिक्खोंको सुबहोमसा
वहाँदख्लसिक्खोंनेजबकरलिया।तोपंडितकोबसमालऔरजरदिया
पहाड़ों को वां लोगकहते हैं पीर।उसीके है अंदर बसाकाशमीर ॥
बहुत सख्त वांका जो था रास्ता। वह उनपंडितोंने दिया सब बता
तोरंजीतसिंह शाहआलीमुकाम । वह पहुँचा वा इज्जतोएहतशाम॥
जो अफसर बड़े एकथे कृपाराम ।दियाहुक्मउनकोकियांबांधोलाम
कहा यहभी वा शोकतेइज्जोजाह । करो अपनी तैयार सारीसिपाह
जोसरदार हैं फौजके साथ लो ।करो जल्दतुमफतहकशमीरको ॥
तुमआओगेजबफतहकरकाश्मीर। तो जानूंगा तुमहो बड़े शूरवीर
यह सुन बात वाँसेचलाकृपाराम। कियाझुकेरंजीतसिंहकोसलाम
कहा फौजने जब बहम वाह गुरू । लगे करने आपसमेंयहगुफ्तगू
जो पंडित हैं उनकोभीहैंमराहलो ।पहाड़ों के ऊपरचढोऔर चलो
पहाडों पे दुश्मनकालश्करजोथा।वहउसरास्ते को चले सब बचा
चढे जब वह उस कोह पर फेरसे । बचे दुश्मनों के तो सब घेरसे॥
लियाउनकोसिक्खोंनेफिरदम्मेंघेर। भगायाउन्हेंऔरलगीकुछनदेर
हर एक सिम्तहंगामये जंगथा ।लहूसे तो तर साफ हर संगथा॥
चढे सिक्ख जब पीर पंजाल पर। वहाँ बर्फ सेथी जमीं तर बतर

वह सरदीके जिस्से उठे नाकदम् । हवा वो चलै जिस्से होसर्ददम्॥
वहां से तो जोंतों वह आगे चले । कदम उनके पडने लगेलटपटे
थकां इस कदर उनकासाराबदन । गये अपनाबसभूलचालोचलन
तो इतनेमेंआई नजर एकसराय।वहांपरमिलीउनकोरहनेकोजाय॥
लगे सेकने हाथ और अपने पाँउँ ।बसे फौजसे दम्मेवांकितनेगाँउ
किया वाँपे एक रात सबने गुजर । फजर होतेही सबने बांधी कमर
किसीजा उतरना था चढना कहीं। जो कुछआगेदेखाथादेखा नहीं
हुआ सब पहाड़ो का तह रास्ता । तो मैदांमें लश्करवहजाकेपड़ा
खबर इसकी सुनके वहांका अमीर।यहबोलाबचेकिसतरहकाशमीर
दिया हुक्म लशकर को तैयार हो।कहा फौजसे सारी यह तुम सुनो
अगर कोई भागेगा मैदानसे । तो मारूंगा उस्कोमैं जी जानसे॥
यह सुन फौज वाँसे जो आगे चली ।कहा सबने अब जोकरे सोअली
जो जीते तो दौलत लुटायेंगे हम । मरे गर तो जन्नतमें जायेंगे हम॥
गरजअपनेदिलमेंयहलीसबनेठान।किआखिरतोएकरोजजायेगीजान
उधरफिरयहसिक्खोंनेदिलमेंकहा । गुरू जो करे सोकरे कोइ क्या॥
जो देखातो आये नजर वह निशान।केहैं उन्में जंगी सरासर जवान
हैं घोडोंके ऊपर हजारों सवार ।कि टापोंसे जिनके है गरदोगुबार
जमींछयरही आठ हुआ आसमाँ । पहाड़ोंपे अंधेर था एक अयां
खबर दी किसीने कृपाराम को । वह सुनतेही बोलाके आनेतोदो
करो अपनी तैयार तोपें शितार। यहाँपर जो आयें तो मारो गिराव
कहा पैदलोंसे परादो मिला । सवारोंका आगे जो था सिलसिला
हर एक तौरसे दुश्मनोंको लोघेर। नहो फतह होनेमें जिनहार देर
फिरइतनेमेंतुरकोंकीभीआईफौज।औरअपनीभीसिक्खोंनेदिखलाईफौज
लगे मारू बाजे वह बजने वहाँ । हुआ खूनका रंग सब आसमाँ
हुआफिरदोतरफाजोगोलोंकाशोर।तोयोंघोडे कूदें के जा,नाचे मोर
योंहीं पहुँची नौबत जो तलवारपर।सबोंको रखा तेगकी धार पर

वह पैदलसे पैदललडे इस कदर ।सवारों से असवार दो दो पहर॥
लहूका सुनों बहर बहने लगा । हरएक अपनाखूंपीकेरहनेलगा ॥
फिर इतनेमें आयेवहांसिक्खऔर। पठानोंनेदिलमेंकियाअपनेगौर
नजीतेंगेइनसे लडाईमें हम । लगे सबके पीछेको हटने कदम ॥
लिया साफमैदानसिक्खोंनेजीत।मरेभीबहुतं तिसपे गाते,ये गीत॥
कईदिनलडाईलडावह अमीर।फिरआखिरकोकुलछुटगयाकाशमीर
गयाफिरतो वाँसेवहकाबुलचला ।इसीमें कुछ होताथाउसका भला
जोपंडितथे वाँके हुये सब मगन । वह पूरी हुई दिलमें जो थीलगन॥
सुनी जब यहरंजीतसिंहनेखबर। लुटाया वह लाहौरमें मालोजर॥
लगीफिरसलामीकीचलनेवहतोप। लगीपडने डंकेपेअशरतकीचोप
कहांतक कहूँउसकीखूबीकाहाल ।वहरंजीतसिंहजोथासाहबकमाल
अदब उसका करतेथे अहलेफरंग।मुकाबिलमेकोईनकरताथाजंग ॥
हैअबतक उसीका जो टुकडाबचा।सुनोवह हैरनवीरसिंहको मिला॥
किसीकीनताकत जोलडकेवहले। वहांके बहुत सख्त हैं रास्ते ॥
जोदेखा सुना वह कियाहै बयां।सखावतका उसकी सुनो दास्ताँ ॥
वह जैसा ही लडनेमें था शूरबीर।सखावतमें वैसाही वहथा अमीर॥
सखावतमेंहातमसे वह कम नथा। शुजाअतमेंरुस्तमसेवहकमनथा
किया उम्रभर कुछ न उसनेगुरूर।अजबसाहबे अक्ल था जीशहूर॥
किसीनेजोउस्से कियाकुछसवाल।दियाजरउंसेऔर कियामालोमाल
फकीरोंको देताथा लेता कदम । खुदाने बनायाअजबउसकादम॥
किसीकेभी दिलकोदुखानानहीं।खुदाके सिवाकुछभी जानानहीं॥
खुदाके दिलानेसे देताथा वह । उसीकासदा नाम लेताथा वह॥
हमेशाथायहउसकेदिलमेंखयाल।मेरा कुछनहीं वहउसीकाहैमाल॥
वह हिन्दूमुसलमांको एकीनजर । हमेशा रहा देखता उम्रभर ॥
वहलाखोंकोकितनोंकोजागीरदी। वह जम्बूकीभीऔरकशमीरकी॥
सिपाही को सरदार उसने किया ।है पैदलको असवार उसने किया

हैं नंगोंको उसने दुशाले दिये ।गदाओंको मस्जिदसिवालेदिये ॥
है अमृतसर उसके गुरूका मकाँ। जो देखा तोजन्नतकाहैवह निशाँ॥
लगाया जर उसमेंहै बस बेशुमार।बना हैवह अबतकजवाहरनिगार
तिलाकाबना उसमें सब काम है।वह सातों बिलायतमें सरनामहै॥
वह दरबार तालाबमें है बना । अजब आबहै आबमें है बना ॥
जिया जबतलकतौकियाखूबनाम।जबआईअजलतो कहा रामराम
यहकहकरमराथाकेदशशालतक।नऔलादकोमेरीकुछहोगीजक ॥
हुआउसकाकहनाजोवहकहगया।यहनामउसकादुनियांमेंतौरहगया
कियादशवरस उसकेबेटोंने राज।हवाऐसी आईके बिगडा समाज॥
हुई इसकदर उसकेघरमें वह फूट।लियामालउसकाखजानेवहलूट॥
अबहैएक फरजन्द उसकादलीप।के जैसेहै।स्वातीकीप्यासीवहसीप
सोलंडनमें मलकाके वह पास है । भरी दिलमें उसके अभीआसहै॥
पिदरकी तरह वहभीहैनेक नाम ।गरीबोंका करताहै हरएक काम ॥
सखावतशुजाअतवहहैआशकार।पिदरकावहअपने है एकयादगार
है दरियादिलीउसकेखासोमेंआम।सखावतके दरियाबहायेतमाम॥
सुना दादरश अदल गुस्तरहै वह । जमानेमें बसबन्दापरवर है वह॥
हरएक शख्सका है बड़ा कदरदां।सखुनसंनदाजाऔआकिलअयां
खुदाई में है जो बडा कारसाज । बनायाहै वह मेहर जर्रे नमाज ॥
अब आगेमैं उसका करूंक्या बयां।खुदाका न मालूम राजे निहां ॥
करैगा वह क्या और करताहैक्या।उठायेगा क्या औरधरताहैक्या
खुदाकी हैं बातें खुदाईके साथ ।वहहरगिजकिसीकेनहींआयेहाथ
गदा को वह दममें करे बादशाह। करे बादशाह को गदादम्में आह
वह जर्रेको चाहे करे आफताब । करे मेहरको जर्रह वाआफताब॥
हमेशहसे उसकी यही राहहै । बनाया जो एक मेहर एकमाहहै
हुई खत्म यांसे है सब दास्ताँ ।शिगुफ्ताहैयहकाशीगिरिकाबयाँ
मेरे दिलके अन्दर बसा काशमीर।वहाँ हैं अमीरोंसे बेहतर फकीर ॥

हुआ है यही अबतो लेलो नेहार। रखे उसको आबाद परवरदिगार
है यह मसनवी याँसे पूरी हुई। करो याहरबकी जो जायेदुई॥
सब अहबाब मेरे रहें शाद काम। मिलेआरजू ये दिली सुबहशाम॥
पढ़े जो इसे वह रहे बस निहाल।और हो खैरकेसाथउसकाअमाल

ख्याल सबसे अव्वल फारसीका जिस्में दीवान शम्स तबरेज मौलाने रूमने जो शराब पी है उस्का हाल लिखताहूँ बहेर लँगड़ी।

मनमें नोशम आँमय वहेदत बिवीं साकिया शुब हो शाम॥ कज नशये ओ नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम॥जिहे शराबे साफ के दर दिल शेख खुदारामें बीनम॥ बयकगरदिशे पयाला हरदो शरारामें बीनम॥ जेफजले कायम खुदा वद दाना फना बकारामें बीनम॥ दर मीनाये दिले खुद शम्स जुहारा में बीनम॥

शैर–चे जामें जम् बपेशे मनके मन आँ जाममें दारम॥ कजो यारे खुदा बूदम वोःबूदा बस खुदा यारम॥नमे दानम चिरोजे रोश नसतो चे शबे तारम॥कुनम बरबे नयाजेनाज वोरा दर दिलम आ-रम॥बराये ओः मय नियम वोःमीना सुराही ओ हम शीशो जाम॥ कजनशये वो नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम॥ हरसू जिनूरे बादे वहदत आफताब शुद जिलवा गर॥हर जर्रा शुद बसाने मुश्तरी जोहरा शम्सो कमर॥जिलवा नमूदा हरबुनी मोयम अजाँ रही के चूँ अख्तर॥खाने मन शुद कयामें जात पाक रब्बे अकबर॥

शैर–पसन्दीदा चूं चश्में मन शुदा मल बूस उरयानी।नमें दानम खुदारा बूदई हम शाने रब्बानी॥जनूरे जिलबये रब्बुल उला शुद चश्म,नूरानी॥जबां मन अज कुजा आरमूदमें साजम सना ख्वानी॥ जबांने हक मन जबाने दारम नाम खुदा मुदाम॥ दारम नाम कज नशये वो नजरमें आयद नूरे खुदा मन॥हिंन्दू हस्तम ओ ना

मुसल्मां यहूद तर्सानागबरम॥साकिर बरंब मन इस्तम गहे न चन्दाबे सब्ररम॥अयांरंग यकताई दारम् गू नागूं न मिस्ले अबरम॥राजे इलाहीरा दानम शुबह मसा दारद खबरम ॥

शैर—शराबे शौकमें नोशम वो मुश्ताके खुदा हस्तम॥बकब्जा गंज वहदत दारमोना बातही दसतम॥जेनशये बादे एकताई वो खालिक मन बसा मस्तम॥खुदा बूदः बमन शामिल यह मनबा हक्क पैवस्तम॥लुत्फे बादे वहदत दानद आंक्के शबद् चूं लाले फाम॥ कजनशये ओ नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम॥दबाये दर्द मरीज शुदा अजरोजे अजल वादे वहदत॥ हरके बिनोशद नजर बल्लाह चुना आयद कुदरत ॥ न जूल साजद साफ वसीना पाक अयां रब्बुत इज्जत ॥ दुयी नमानद जनूरे खुदा बसद शानो शौकत ॥

शैर—वसमये रोशने नूरे खुदा हस्तेम परवाना ॥ नाज नूरे खुदामन दारमों वल्लाह नबेगाना॥शुदा रोशन बशमये बादये पुरनूरका शाना॥खुमों मीना सुराही ओ सुबूओ जामों पैमाना॥देवीसिंह में नोशद आँ मैं अजांमवत्तर शुदह मशाम॥कज नशये ओ नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम ॥

बहेर खडी—ख्याल श्री जगन्नाथ जी की स्तुति में जो पढेगा सो घर बैठे दर्शन पावेगा ।

महोदधी सागरके किनारे पुरी वेदोंने बखानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ ओंकार और निरंकार वोही निर्भय और वोही नीरंजन ॥ वोही हैं अन्तरजामी वोही हैं स्वामी वोही हैं दुखभंजन ॥ ब्रह्म वोही और ब्रह्मा विष्णु वोही वोही भव मोचन॥वोहीहैं अपरम्पार पार नहिं पावें उनका त्रयलोचन ॥ और वोही हैं षट्र दर्शन ॥

तोडा—वोही शेष वोही शक्ती हैं वोही कैलासी ॥ वोही इन्द्र हैं नारद मुनि वोही अविनाशी॥होरहे आय पुरुषोत्तम पुरीके वासी॥

वो महिमा उनकी खासी मगन रहतेहैं जहाँ सब प्राणीं॥जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूपभयेनिर्वानी॥ १ ॥रत्नसिंहासनपर धर आसन विराजते दोनोंभाई॥जगन्नाथ बलभद्र बीचमें खडी सुभद्रा जग माई। शंख चक्र और गदा पद्म की शोभा नहिं वरणी जाई॥मस्तकपर झलकत हीरा सूरजसे ज्योति है सवाई॥है सांची जहाँ प्रभुताई ॥

तोडा–शिर मोर मुकुट और गल फूलोंके हारे॥केसर चन्दनका तिलक शीश पर धारे ॥ नाना प्रकारके होते हैं शृंगारे ॥ मैं कहां तलक कहूँ विस्तारे ॥ शेष थक हारे गत नहीं जानी ॥ जगन्नाथ जग तारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ २ ॥ श्यामवर्ण है जगन्नाथकी छबि सुन्दर लगती प्यारी॥श्वेत वर्ण बलभद्र सुभद्राके चरणोंकी बलिहारी ॥ बाहर है चन्दनका लकडा जहाँ खडे सब हितकारी॥हाथ जोड दंडवत् करें श्रीजगन्नाथको नर नारी॥ सब खडे हैं वहाँ पुजारी ॥

तोडा–वो वक्त २ पर पूजा प्रभुकी करते ॥ कोइ करवावें स्नान कोई जल भरते ॥ कोइ चन्दन घिसके हार फूल ला धरते॥ कोइ लेले अपने करते करते पूजा सब मन मानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ ३ ॥ उस मंदिरके ऊपर बैठे जगन्नाथ और बलभद्दर ॥ बीच सुभद्रा आन विराजीं दोनों भाई इधर उधर ॥ मुख दक्षिणकी ओर किये और पीठ किये बैठे उत्तर॥लंकामेंसे राज विभीषण रोज आरती ले ताकर॥ दें दरशन उसे वाँ पर॥

तोडा–हैं भक्तके वश भगवान् वेद यों गावे॥लंकासे दरशन रोज विभीषण पावे॥ और उसको वहांसे नजर वोः मन्दिर आवे॥स्वामीसे ध्यान लगावे राजा लंकाका है ध्यानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥४॥ महा प्रभुके बायें मदनमोहन घोडे पर असवारे ॥ मथुरा वृन्दावनको छोड पुरुषोत्तम पुरीको

सिधारे॥ग्वालिनका दधि खाया ग्वालिन खडी हाथको पसारे ॥ त्रिलोकीके नाथ अंगूठी देते हाथसे उतारे॥सुन वहांका चमत्कारे॥

तोडा–जहां अनेक ड्योढी अनेक हैंगे द्वारे ॥ हैं गरुड खंभपर गरुड रूपको धारे ॥ क्या कहूँ मैं ह्वांके जैसे हैं विस्तारे ॥ वोः हैं स्वामीके प्यारे उनकी महिमा मुशिकल पानी॥ जगन्नाथ जगताराण कारण बोध रूपभये निर्वानी॥५॥महाप्रभुके दहिने अक्षैवट मारकण्डेय औ बटेकृष्णा॥जिनके दर्शन करनेसे छुटजाय जन्म भरका पिसना॥और बना चन्दन घर वहां पर पंडोंको चन्दन पिसना॥बडे भाग्यहैं उनके जिनकी जीतेजीमिटगइतृष्णा॥उनको व्यापेविषना॥

तोडा–एक और वोः मन्दिरमें है बिम्बला देवा ॥ जिनके दर्शन करनेसे पार हो खेवा ॥ चढें पान सुपारी हार फूल और मेवा ॥ तू करले उनकी सेवा वोही हैं कुब्जाजी महारानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥६॥ महाप्रभुके पीछे हैं नरसिंह रूप विकराल बडा॥अपने भक्तके कारण मारा हरणाकुश था दैत्य कडा ॥ निश्चय थी प्रह्लाद भक्तको सेवामें वो रहा अडा ॥ सब संकट हरलिये प्रभूने जो था उसपे दुःख पडा॥रहेसदा सामने खडा॥

तोडा–हर रोज वो दर्शन पाता स्वामीजीका ॥ उनके चरणोंकी रजका देता टीका॥है मीठा रामका नाम और सब फीका॥सुन यही काम है नीका ॥ पिताकी आज्ञा कुछ नहिं मानी ॥ जगन्नाथ जग तारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥७॥ और सुनो बयान अजब स्थान स्वर्गसेहै आला॥चारोंतरफ हैं सभी देवता ऐन बीच में शीवाला॥सबके ऊपर नीलचक्र है ध्वजा फडकती गुल्लाला॥औरदेवते देवल परहैं हर एक तरह के सब बाला॥वो पहिने गलेमें माला ॥

तोडा--श्रीजगन्नाथका जप करें वो मनमें हरवक्त खढे रहैंस्वामी के सुमरनमें ॥ दिन रात ध्यान रहै प्रभुजीके चरणन में ॥ सब रहै उनकी शरणन में ॥ वर्णन करते सुन्ते ज्ञानी ॥ जगन्नाथ

जगतारण कारण बोध रूप भये निर्वानी॥८॥और सुनो अहवाल वो मन्दिर कंचनका,है रत्न जडे ॥ कलियुग में पत्थरका हमको तुमको सबको नजर पडे॥ चारों तरफ देवल पर देवते हाथ उठाये रहैं खडे॥और राक्षस असुर वो मन्दिर पर शिर उनके कटे पडे हैं उनके भाग भी बडे ॥

शैर-जिन्हें स्वामीने अपने हाथों संहारा॥और पकड पकड कर गदा चक्रसे मारा ॥ उन्हें मारा नहीं करदिया उनका निस्तारा ॥ मिला उन्हें स्वर्गका द्वारा ॥ होगये स्वामीके अगवानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ ९ ॥ और बना वैकुंठ यहां पर सभी यात्री आते हैं ॥जो जिसकी है यथाशक्ति वो अटका वहाँ चढाते हैं॥चार वर्ण एकी में भोजन करें और नहीं घिनातेहैं ॥ महाप्रसाद श्रीजगन्नाथका पावैं सब तर जाते हैं॥सब एकीमें खातेहैं

शैर-जहां ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र नहिं कोई॥और चार वर्ण की एक में होय रसोई ॥ वहां द्वैतभाव नहिं एक जात सब कोई ॥ और एकादशी है सोई अपने मनमें अति हर्षानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ १० ॥ चारों फाटक परहै चौकी चार वीरकी सुन भाई ॥ पूर्व दरवाजेपर पतितपावनकी फिरती दुहाई ॥ बाहर दोनों सिंह गर्जते संतोंपर रहैं सहाई ॥ अरुणखंभके दर्शन करते जिनकी सफल है कमाई ॥ तू पहुँच वहां पर जाई ॥

तोडा-हैं पश्चिम दरवाजेपर श्रीहनुमाने ॥ वीरों में वीर हैं महावीर बलवाने ॥ गये फाँद वो सागर एक क्षणक दर्म्याने॥त्रिलोकी उनको जाने अंजनीनन्दन हैं बलवानी॥जगन्नाथ जगतारणकारण बोध रूप भये निर्वानी ॥११॥ दक्षिण दरवाजे पर चौकीगणेशजी देते दाता ॥ जिकने दर्शन करनेको सारा आलम हैगा जाता ॥ महादेवके पुत्र और श्रीगौराजी जिनकी माता ॥ चतुर्भुजी मूरत सुन्दर तनु दर्श किये नर तर जाता ॥ वो परमधाम को पाता ॥

तोडा-एक हाथमें डमरू एक हाथ त्रिशूल॥और एक हाथमें लिये कमलका फूल ॥ एक हाथमें लाडू लम्बी सुंड रही झूल॥वो जडें दुश्मनको हूल उत्तर फाटक पर उत्राणी ॥ जगन्नाथजगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥१२॥ भोग शास्त्रकी महिमा ॥ उस मन्दिरके भीतर है सारी ॥ और कोककी लीला उसमें लिखी है सब न्यारी न्यारी ॥ कोइ पुरुष हैं नगन और कोइ निर्लज्जित बैठी नारी ॥ महाकाममें आतुर ऐसी बहुत मूरतें हैं प्यारी ॥ हैं वोः तौ सब ब्रह्मचारी ॥

तोडा-जो ब्रह्म विचारके भोग करे वोः योगी॥उसकोमतसमझो भोग वो बडे वियोगी॥रहे सदा सर्वदा उनकी देह निरोगी॥ मत इन्हें कहो संयोगी आत्मा जिसने है पहिचानी॥जगन्नाथजग तारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ १३ ॥ सुबह शाम स्वामीके आगे आवें दासी निरतकरन॥सुन्दर सुंदर कहैं विष्णुपद अच्छे२ गावें भजन॥ बडे भाग्य हैं उनके जिनकी जगन्नाथसे लगी लगन ॥ अष्टप्रहर हरवक्त हमेशां अपने मनमें रहें मगन ॥ और येही है उनका परन ॥

तोडा-हररोज आय स्वामीके आगे गाना॥ अपने स्वामीको खूबीतरह रिझाना॥हँस २ के मुसक्याना और भाव बताना॥और सभी वोः राग सुनाना श्रीपति सारंग और कल्यानी॥जगन्नाथ जगतारण कारण बोध रूप भये निर्वानी॥ १४॥पंचकोश में बना भैरवीचक्र वहांका सुनो मथन ॥ बडे २ जहां सिद्ध विराजें करैं तपस्या रहें मगन ॥ नौदुर्गेकी पूजन करते दशों द्वारसे लगी लगन ॥ प्राणायाम करैं वोः योगी योग युगतहै बडी कठिन॥ कोइ जाने विरला जन ॥

तोडा-आतममें परमातमके दरशन पावें॥जो जगन्नाथसे मनमें यान लगावें॥वोःआवागमनसे छूट ब्रह्म होजावें॥ और सगुणकेगुण

गावें निर्गुण होते हैं वोः प्राणी॥जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्बानी॥१५॥कर्मा बाईकी खिचडी और दूध मलाईकी पकवान॥भोग लगें नानाप्रकारके बडे बडे होते सामान॥खैरचूरके लाडू टुकडा मलूकका पावें भगवान ॥ उखडी मूरीका चरबन और कहां तलक मैं करूं बखान॥दिनरात उतरते धान ॥

तोडा–अटके पर अटकाचढे पकावें पण्डे॥सबसे पहिले ऊपरके पकते हण्डे॥है महिमा जिनकी सातद्वीप नौखण्डे॥सब उन्हींका है ब्रह्मण्डे अजको वेदोंकी धुन गानी॥जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी॥१६॥शुक्लपक्ष तिथिदूज महीना आषाढका जब आता है॥रथ पर हो असवार प्रभू सुसराल जनकपुर जाताहै॥ लाखों आलम खींचें रथ नहिं चले वोःजब अडजाताहै॥तबतो पंडा हँस २ कर और गाली उन्हें सुनाताहै॥और मनमें मुसुक्याताहै१७॥

तोडा–सब पंडे मिलके बात कहें ये प्रभुको ॥ हैं नन्द और वसुदेव पिता तुम्हरे दो ॥ तुम अहीरके घर पले बात ये सुनलो ॥ ये कर्म किये जो तुमने वेदके बाहर सो हम जानी ॥ जगन्नाथ जग० ॥१८॥ ग्वालिनके सँग किया भोग और भिलनीकी जूंठन खाई॥ मित्र तुम्हारे अति पुनीत रहे दास सदनसे कसाई ॥ धन्ना छीपी बडाभक्त और सैनभक्त तुम्हरा नाई ॥ घर घर चोरी करी प्रभुजी जरा शर्म तुम्हें नहिं आई ॥ अब रथकों देओ चलाई ॥

तोडा–सुसरालचलनमें काहे देर करोहो ॥ मालूमहुआ घरवालीसे भी डरो हो॥ चाहे कोई जात हो सबको तुम्हीं बरो हो॥ गोपियोंके चीर हरो हो ऐसी मन में तुम क्यों ठानी ॥ जगन्नाथ जग० ॥ १९॥ हुई यात्रा पूरी फिर अपने पंडेसे लई सुफल॥चरण धोये आ पुरीके बाहर लेके श्वेत गंगाका जल ॥ और स्वामीके दर्शन पाये हुआ मुक्ति होनेका फल ॥ ध्यान धरा प्रभुजीका मनमें क्षणमें कटी सारी कल मल ॥ हुई पहिली सुनो मंजिल ॥

तोडा–चल्तेरसाखी गुपालपर आये॥साखी दी उनके चरणमें शीश नवाये॥ और घरमें आके ब्राह्मण खूब जिमाये॥ मनमाँगे सो फल पाये॥छन्द कहे काशीगिरि ब्रह्मज्ञानी॥जगन्नाथ जगतारण२०

भजन निर्गुण वेदांत उपासना।

तोहिको रटत रटत सब हारे॥शेष थके तेरो नाम अनंता कोटिन पद उच्चारे॥ ब्रह्मा वेद बनायके थाके विष्णु लीन औतारे ॥ शिव निशि दिन तेरो ध्यान धरत और हैं कौन विचारे॥ तोहिको रटत रटत सब हारे॥ध्रुव प्रह्लाद व्यास नारदमुनि वाल्मीकि तनु धारे ॥ ज्ञान भयो ताहूपर देखो अलखै अलख पुकारे॥तोहिको रटतरटत० योगीयती तपसी संन्यासी कोउ गोरे कोउकारे॥यारसनासेजोकोइ सुमरें सो सबही तेरे प्यारे ॥ तोहिको रटत रटत०॥ आपही को तू आप भजतहै आपइ आप विचारे॥काशीगिर तोहि सबकुछ दीखत अबघटभयोउजियारे ॥१॥ प्रभुतुमसबहीपतितबनाये ॥ पुण्यको नाम लियो नहीं कबहूं पाप अधिक मन भाये॥प्रथम पतित तो काम बनाका द्वितिय क्रोध उपजाये ॥ तृतिये लोभ और मोह चतुर्थे सो सब अंग समाये ॥ प्रभु तुम सब०॥सृष्टिके कारण किये चतुरानन सो पुत्री पर धाये॥विष्णुसे कहा पालना करिहो सो बलिको छलि आये ॥ प्रलय करनको कीन महेशा हाथ त्रिशूल धराये ॥ ये तीनों गुण बने पातकी जगत्को कौन बचाये॥ प्रभु तुम०॥ तोहिं में पुण्य पाप नहिं कोऊ धर्म अधर्म बिलाये॥रज सत तामस पाप न आवत आपमें आप समाये॥ प्रभु तुम० ॥ जो जो पाप करे सो तरहीं पुण्य करे पछताये ॥याको अर्थ काशीगिरि जाने कोउके लगै न लगाये॥

इति काशीगिरि बनारसीकृतसंपूर्णख्याल
लावनी ब्रह्मज्ञान समाप्त ॥

श्रीसच्चिदानन्दार्पणमस्तु ।

पुस्तक मिलनेका पता–खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–बंबई.